चन्द्रोदय ग्रन्थमाला–ग्रन्थ १.

हिन्दी

व्याकरणचन्द्रोदय ।

(उच्च कक्षाओं केलिये)

लेखक,

रामलोचनशरण ।

प्रकाशक,

वैदेहीशरण,

हिन्दी पुस्तकभण्डार,

लहेरियासराय ।

बी० एल्० पावगी द्वारा

हितचिन्तक प्रेस, रामघाट, बनारस सिटी में मुद्रित ।

मूल्य १)

जिल्द केलिये ।) अधिक ।

व्याकरण, रचना, अलंकार, पिंगल और रस इत्यादि की पुस्तकें।

☞ हिन्दी का बृहद् व्याकरण लिखा जा रहा है। ☜

१. **हिन्दी व्याकरण चन्द्रोदय।** (छठी बार)—यह पुस्तक साहित्य सम्मेलन की प्रथमा और विशारद परीक्षाओं की, पंजाब सरकार की मैट्रिकुलेशन परीक्षा की, मध्य प्रदेश की नार्मल और मिडल परीक्षाओं की और राष्ट्रीय विद्यापीठों की परीक्षाओं की पाठ्य पुस्तक है। मूल्य १) सजिल्द १।)

२. **प्रवेशिका व्याकरण बोध।** (पाँचवीं बार) यह पुस्तक पटना युनिवर्सिटी की मैट्रिकुलेशन परीक्षा की पाठ्य पुस्तक है। मूल्य १) सजिल्द १।)

३. **मिडल व्याकरण बोध।** (सातवीं बार)—यह पुस्तक पंजाब, मध्यप्रदेश और बिहार की सरकार से और मुजफ्फरपुर की संस्कृत समाज, से स्वीकृत है। मूल्य ।)

४. **अपर व्याकरण बोध।** (दसवीं बार)—यह पुस्तक पंजाब, मध्यप्रदेश, युक्तप्रदेश और बिहार की सरकार से स्वीकृत है। इस पुस्तक के लिये युक्तप्रदेश की सरकार ने लेखक को १६७) रु० पारितोषिक दिया है। मूल्य =)॥

५. **व्याकरण चन्द्रिका।** (पाँचवीं बार)—यह बहुत ही प्रसिद्ध पुस्तक है। मूल्य ≡)

६. **हिन्दी रचना चन्द्रोदय।** (दूसरी बार)—साहित्य सम्मेलन राष्ट्रीय विद्यापीठ और हिन्दी के विद्वानों से प्रशंसित। पहला भाग १), दूसरा भाग १

७. **प्रवेशिका हिन्दी रचना।** (दूसरी बार)—मैट्रिकुलेशन की परीक्षा के लिये विद्वानों से प्रशंसित। मूल्य १), दूसरा भाग १।)

८. **आदर्श निबन्ध माला।** (२०२ लेख) १।)

९. **अलंकार चन्द्रिका।** अलंकार की अपूर्व पुस्तक। साहित्य-सम्मेलन और विद्यापीठ की परीक्षाओं के लिये ॥)

१०. **पिंगल प्रबोध।** (छन्द चन्द्रिका)—छन्द रचने की अपूर्व पुस्तक। मूल्य प्रायः ।=) (छप रहा है)

११. **रसनिर्णय।** रसों की विशदव्याख्या, हिन्दी के प्रेमियों और साहित्य सम्मेलन की परीक्षाओं के लिये। मूल्य =) (छप रहा है)

☞ "व्याकरण नवनीत," "हिन्दी व्याकरण और रचना इत्यादि और कई पुस्तकें शीघ्र ही निकलेंगी।

भूमिका ।

यह व्याकरण उच्चकक्षाओं के शिक्षार्थियों केलिये रचागया है। यों तो इसके सभी विषय मनोयोगपूर्वक लिखेगये हैं, परन्तु उन * पर विशेष ध्यान रक्खागया है जो हिन्दी सीखने केलिये अत्यन्त उपयोगी हैं।

हमने 'अपर व्याकरणबोध' और 'मिडल व्याकरणबोध' नाम की दो छोटी छोटी पुस्तकें भी लिखी हैं। ये पुस्तकें पंजाब, युक्तप्रदेश × मध्यप्रदेश और बिहार की टेक्स्टबुक-कमीटियों से पाठ्यपुस्तकों में निर्वाचित होचुकी हैं। हमारी यह पुस्तक उन्हीं दोनों का बड़ा संस्करण है, परन्तु शैली में भिन्न है। कारण, उच्चकक्षाओं केलिये 'अवरोहविधि' का प्रयोग अनुचित प्रतीत होता है।

हिन्दी व्याकरण की कई बातों में विद्वानों का मतभेद है। जहाँ ऐसा असमंजस आन पहुँचा है वहाँ प्रयोग पर ध्यान रखकर हमने अपना विचार दिया है और अन्य वैयाकरणों के मत भी उद्धृत करदिये हैं। इस पुस्तक में उदाहरणों के जितने वाक्य आये हैं प्रायः वे प्रसिद्ध विद्वानों के ग्रन्थों से लियेगये हैं। कहीं कहीं तो हमने एक या अधिक अनुच्छेद भी अविकल या कुछ परिवर्तन के साथ उद्धृत करलिये हैं। ऐसा करने में हमें भारतेन्दु बाबू हरिश्चन्द्र, राजा लक्ष्मणसिंह, पण्डित

---

* ऐसे विषयों की सूची अलग दीगई है।

× युक्तप्रदेश के शिक्षाविभाग ने अपर व्याकरणबोध केलिये ग्रन्थकर्ता को १६०) रु० का पारितोषिक भी दिया है।

सम्पादक।

अम्बिकादत्त व्यास, बाबू रामचरणसिंह, पण्डित केशवराम भट्ट, पण्डित रामावतार शर्मा, पण्डित कामताप्रसाद गुरु, पण्डित अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी, पण्डित महावीरप्रसाद द्विवेदी, बाबू मैथिलीशरण गुप्त, पण्डित अयोध्यासिंह उपाध्याय, पण्डित रामजीलाल शर्मा और बाबू श्याम सुन्दरदास इत्यादि विद्वानों के ग्रन्थों और सामयिक पत्रों से विशेष सहायता मिली है, इसलिये हम उनके बड़े ही ऋणी हैं।

साहित्यसागर में जितने ही गोते लगायेजायँ उतनी ही "गूढ़ विषयों की बारीकियाँ" दृष्टिगोचर होनेलगती हैं। यदि उन बारीकियों की ओर ध्यान दें तो यह पुस्तक विद्वानों की दृष्टि में अयोग्य ठहरेगी। ऐसी अवस्था में समझते हैं कि हमने इसके लिखने में अनधिकार चेष्टा की है, परन्तु साथ ही यह सोचकर मन को धीरज भी होता है कि मातृभाषा की सेवा करने का अधिकार सभा को है, बने या न बने। यदि बड़े विद्वान पुष्पों की माला चढ़ाकर उसकी आराधना करते हैं तो हमें भी एक साधारण पुष्प द्वारा उसकी पूजा करनी चाहिये।

शुभङ्करपुरनिवासी 'विमाता' के लेखक बाबू अवधनारायण तथा अपने सहयोगी पण्डित सिद्धिनाथ मिश्र और बाबू भूषणसिंह की प्रेरणा से हमने यह पुस्तक लिखी है, इसलिये इन बन्धुवरों के तथा हिन्दीप्रचारिणी सभा के मंत्री श्रीपण्डित गिरीन्द्रमोहन मिश्रजी के, जिन्होंने अपना अमूल्य समय लगाकर इसका संशोधन किया है, हम अत्यन्त कृतज्ञ हैं।

पाठकों से प्रार्थना है कि वे इस पुस्तक में यदि किसी प्रकार की भूल पावें तो कृपाकर हमें लिखभेजें कि पुनरावृत्ति में उसे सुधारने का प्रयत्न कियाजाय।

१. १. १६२०

रामलोचनशरण।

सम्पादक का वक्तव्य ।

प्रायः पाँच वर्ष हुए कि हमने बाबू रामलोचनशरण की लिखी 'व्याकरण की दो छोटी पुस्तकें' देखी थीं। उसी समय हमारी इच्छा हुई कि आप हिन्दी व्याकरण की कोई बड़ी पुस्तक लिखते। आज आपकी लिखी यह पुस्तक देखकर हमें सन्तोष हुआ। हिन्दीव्याकरण की ऐसी सर्वाङ्गसुन्दर पुस्तक अभी तक हमने नहीं देखी थी। आशा है, हिन्दी प्रेमी इसे देख-कर प्रसन्न होंगे।

गिरीन्द्रमोहन मिश्र।

मेरा वक्तव्य ।

" द्वितीयावृत्ति होने के पूर्व ग्रन्थकर्त्ता के अनुरोध से मैंने यह पुस्तक आद्यन्त पढ़ली है । जहाँ तहाँ संशोधन और परिवर्तन करदिये गये हैं । मुझे यह लिखते हर्ष होता है कि ग्रन्थकर्त्ता ने जिस उद्देश्य से यह पुस्तक लिखी है वह यथेष्ट रूप से चरितार्थ हुआ है । समय की जैसी माँग थी पुस्तक भी वैसीही बनी है । आशा है, हिन्दी चन्द्रिकाचकोर छात्रगण इस व्याकरण-चन्द्रोदय से अपनी तृषा शान्त करते हुए ग्रन्थकर्त्ता के उत्साह को ऐसे बढ़ायँगे, जिससे उन्हें इनकी रचनासुधा के पान करने का अवसर दिनानुदिन मिलता रहे ।"

श्री पण्डित जीवनाथ राय,
हेडपण्डित, नौर्थब्रुक स्कूल, दरभङ्गा ।

सम्मति ।

" आपकी रीति समीचीन है, आजकल की प्रचलित पद्धति के लिये अत्यन्त अनुकूल है । मेरी राय में आपकी पुस्तकें प्रचलित समस्त व्याकरणों से कई अंशों में अच्छी हैं । और भी अधिक विस्तार से एक चौथे भाग के लिखने की बड़ी आवश्यकता है ।"

रामदास गौड़, एम्. ए.,
हिन्दू विश्वविद्यालय, काशी ।

द्वितीयावृत्ति की भूमिका।

केवल एकही मास में यह पुस्तक पुनः छपने जारही है। माँग ऐसी हुई कि प्रायः एक सप्ताह से भण्डार में इसकी एक प्रति भी नहीं है। हमें ऐसी आशा नहीं थी। यह केवल हिन्दीहितैषी शिक्षकों का गुणग्राहकता और शिक्षाप्रेम के कारण हुआ है। अतः हम उन्हें हृदय से अनेकानेक धन्यवाद देते हैं।

इस शीघ्रता में हमें अवकाश नहीं मिला कि इस पुस्तक को कम से कम एक बार भी पढ़जाते और संशोधन तो दूर रहा। संयोग से स्थानीय नोर्थब्रूक स्कूल के हेडपण्डित और हिन्दी के मार्मिक लेखक श्री जीवनाथ रायजी से इसकी चर्चा हुई। उन्होंने आनन्द से इसका भार लिया और जहाँ तहाँ उचित संशोधन करदिये। हम इस कार्य केलिये पण्डितजी के बड़े आभारी हैं।

इस समय इस "माला" का दूसरा ग्रन्थ * "रचना" पर लिखा जारहा है। इसमें उक्त पण्डितजी भलीभाँति हाथ बटा रहे हैं। आशा है, यदि ईश्वर की दया बनी रही तो हिन्दीहितैषी उसे भी अपनावेंगे।

३१. १. १९२०।

रामलोचनशरण।

---

* छपकर तैयार है।—प्रकाशक।

विषयसूची ।

विषय	पृष्ठ
उपक्रमणिका—	१
वर्णविचार—	२
अक्षर	२
अक्षरों के भेद	४
स्वर	५
व्यञ्जन	६
उच्चारणस्थान	७
संयुक्त व्यञ्जन	१०
अनुच्चरित अ	१३
स्वराघात	१३
सन्धि	१४
शब्द और प्रत्यय का मेल	२२
मूर्द्धन्य ण	२३
मूर्द्धन्य ष	२४
ब या व	२४
शब्दविचार—	२५
शब्द	२५
सार्थक शब्द	२७
विकारी शब्द—	२६
संज्ञा	२६
सर्वनाम	६४
विशेषण	७८
क्रिया	८६
अविकारी शब्द (अव्यय)—	१२८
क्रियाविशेषण	१२८
सम्बन्धबोधक	१३२
समुच्चयबोधक	१३४
विस्मयादिबोधक	१३६
शब्दांश—	१३९

विषय	पृष्ठ
पसर्ग	१३९
प्रत्यय	१४३
कृदन्त	१४४
तद्धित	१५०
कारकचिन्ह	१५५
समास	१७२
द्विरुक्ति	१८०
कुछ अशुद्ध शब्दों पर विचार	१८२
शब्दभेदों में परिवर्तन	१८४
वाक्यविचार—	१८६
वाक्य	१८६
खण्डवाक्य और वाक्यांश	१८७
वाक्य के अंग	१८८
वाक्यभेद	१९१
वाक्यरचना	१९६
मेल	१९६
क्रम	२०८
लाघव	२१३
रोज़मर्रा	२१४
वाग्धारा या मुहावरा	२१५
वाक्यार्थबोध	२१६
वाक्यविभजन	२१७
परिवर्तन	२२२
अनुक्तपदों की पूर्ति	२३०
चिन्हविचार—	२३२
विराम	२३२
अन्य चिन्ह	२३८
अनुच्छेद	२४१
छन्दविचार—	२४५

विशेष मनन करने योग्य अंश ।

(१)	पृष्ठ
वर्णविचार के नोट...	९-१०
संयुक्त व्यञ्जन	१०
संधि के नोट, विकल्प और अपवाद	१४-२२
मूर्द्धन्य ण...	२३
मूर्द्धन्य ष	२४
ब या व	२४

(२)	
विशेषण की पादटिप्पणी	२८
संज्ञाओं की विशेषता	३२-३३
लिङ्ग	३४-४३
वचन का नोट	४४
कारकों के नोट	४५-४८
अविकृत आकारान्त शब्द	४९
रूप बनाने की रीतियाँ	५०
मैं, तू इत्यादि सर्व नामों के नोट	६७-७५
सर्वनाम सम्बन्धी अन्य बातें	७६
विशेषणों के रूप	८१
विशेषणों की अन्य बातें	८४
समानाधिकरण शब्द	८६
वाच्य का नोट	९३
विधि और पूर्वकालिक के नोट और पादटिप्पणी	९७
रूपरचना के नोट	१०२-११५
काल और रूपसम्बन्धी विशेष बातें	११६

यौगिक क्रिया के नोट	११८–१२६
अव्यय के नोट	१२८–१३६
न, नहीं और मत	१३१
शब्दांश	१३८
कृदन्त के नोट और प्रयोग	१४४–१५०
तद्धित के संस्कृत प्रत्यय	१५३
कारकचिन्ह ने, को इत्यादि	१५५
कारकचिन्हों के नोट और विकल्प अंश ...	१५५–१७१
कारकादि के चिन्हभेद से अर्थ भेद	१७१
समासप्रयोग	१७८
द्विरुक्ति	१८०
कुछ अशुद्ध शब्दों पर विचार	१८२
शब्दभेदों में परिवर्तन	१८४

(३)

वाक्यरचना	१९६
वाक्यार्थबोध	२१७
परिवर्तन (पद, वाक्यांश, खण्डवाक्य, वाक्य और वाच्यपरिवर्तन तथा उक्तिभेद)	२२२
अनुक्तपदों की पूर्ति...	२३०

(४)

अल्पविराम	२३२
योजकचिन्ह	२३९

हिन्दी व्याकरण ।

उपक्रमणिका (Introduction).

भाषा उसे कहते हैं जिसके द्वारा मनुष्य अपने मन के विचार स्पष्ट रूप से प्रकट करता है।

अपने विचारों को प्रकट करने के मुख्य दो प्रकार हैं-एक बोलना और दूसरा लिखना। जब मुझे भूख लगती है तब मैं दूसरों को कहता हूँ-"मुझे भूख लगी है, भोजन दो।" यह है बोलना। जब मैं परदेश रहता हूँ तब पत्र द्वारा घर से समाचार मँगाता हूँ। यह है लिखना।

बोलना ध्वनियों से और लिखना अक्षरों से बनता है। ध्वनियों और अक्षरों से शब्द, शब्दों से वाक्य × और वाक्यों से भाषा बनती है।

नोट-संकेतों से भी विचार प्रकट हो सकते हैं, परन्तु इस व्याकरण से उनका सम्बन्ध नहीं।

व्याकरण उस शास्त्र का नाम है जिसमें शब्दों के रूपों और प्रयोगों का निरूपण हो।

व्याकरण पढ़ने से शुद्ध शुद्ध बोलना और लिखना आता है।

× शब्दों से पद और पदों से वाक्य बनते हैं, यह सूक्ष्म विचार आगे दिया गया है।

व्याकरण के मुख्य तीन भाग हैं-वर्णविचार, शब्दविचार और वाक्यविचार।

वर्णविचार में अक्षरों के आकार, उच्चारण और उनके मिलने की बातें बताई जाती हैं। शब्दविचार में शब्दों के भेद, अवस्था और बनावट का वर्णन रहता है। वाक्यविचार में शब्दों के द्वारा वाक्य बनाने की रीतियाँ दिखाई जाती हैं।

नोट—इन दिनों हिन्दी में भी विरामादि चिन्हों की आवश्यकता हो गई है, तथा इनका कुछ कुछ सम्बन्ध व्याकरण से है भी। 'छन्दविचार' अंगरेजी व्याकरण का एक अङ्ग है, परन्तु संस्कृत में एक स्वतन्त्र शास्त्र है। कई हिन्दी व्याकरणों में छन्दविचार को भी स्थान मिला है अतएव हमने भी ये दोनों विषय इस व्याकरण में दिये हैं।

अभ्यास।

१. भाषा किसे कहते हैं? २. भारतवर्ष में भाषा शब्द से क्या समझा जाता है? ३. अपने विचार दूसरों पर कैसे प्रकाशित कर सकते हैं?

४. व्याकरण किसे कहते हैं? ५. व्याकरण के मुख्य भाग कितने हैं? ६. भाषा और शब्द किस प्रकार बनते हैं? ७. वाक्यविचार में क्या बताया जाता है?

वर्णविचार।

अक्षर (Letters)

शब्द के उस खण्ड का नाम वर्ण (अक्षर) है जिसका विभाग नहीं हो सकता और उसके पहचानने के लिये जो चिन्ह बनाये गये हैं वे भी अक्षर कहलाते हैं।

नोट—अक्षर मूल ध्वनि है, जिसके खण्ड नहीं हो सकते।

हिन्दी भाषा जिन अक्षरों में लिखी जाती है उन्हें देव-नागरी कहते हैं।

देवनागरी के ४९ अक्षर हैं—

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ+ए ऐ ओ औ

क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न प फ ब भ म

य र ल व श ष स ह

ं (अनुस्वार) : (विसर्ग)

ऊपर लिखे अक्षरों में ऌ और ॡ ये दो, हिन्दी में कभी नहीं आते तथा ॠ का प्रयोग भी कदाचित् * ही मिलता है।

ड, ढ, क, ख, ग, ज और फ के नीचे बिन्दी लगाकर आगे के अक्षर बनाये गये हैं–

ड़ ढ़ क़ ख़ ग़ ज़ फ़।

इनमें क़ ख़ ग़ ज़ फ़ ये पाँच हिन्दी में प्रयुक्त फ़ारसी अङ्गरेज़ी इत्यादि भाषाओं के शब्दों में मिलते हैं। इन दिनों हिन्दी के कतिपय लेखक अ, आ, इ, उ, आदि अक्षरों के साथ बिन्दी या अर्द्धचन्द्र (ॅ) लगाकर मअ़लूम, इ़ल्म, उ़म्र, लॉर्ड, जॉर्ज इत्यादि शब्द लिखने लगे हैं।

नोट–ड़ और ढ़ को छोड़ शेष अक्षरों के साथ बिन्दी और चिन्हों का प्रचार सर्वत्र नहीं है।

अभ्यास।

१. अक्षर क्या है? २. हिन्दी में देवनागरी के कौन कौन अक्षर आये हैं? ३. बिन्दीवाले अक्षर कौन कौन हैं? ४. फ़ारसी, अङ्गरेज़ी आदि भाषाओं

+ ऌवर्णस्य द्वादश भेदाः तस्य दीर्घाभावात्, परन्तु कलापव्याकरण और सारस्वत में ऌ का दीर्घत्व माना गया है।

* मातृृण, पितृृण इत्यादि शब्द सन्धि के उदाहरण में लिखे गये हैं, परन्तु उनका प्रयोग विशेषकर संस्कृत ही में होता है।

के शब्दों में बिन्दीवाले कौन कौन अक्षर मिलते हैं ? ५. किन किन अक्षरों के साथ बिन्दी आदि चिन्हों का प्रचार सर्वत्र नहीं है ?

अक्षरों के भेद (Kinds of Letters).

१. अक्षरों के दो भेद हैं-स्वर और व्यञ्जन।

२. स्वर उसे कहते हैं जो आप बोला जाय और जिसकी सहायता से व्यञ्जन का उच्चारण हो। जैसे—

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ए ऐ ओ औ

३. व्यञ्जन उसे कहते हैं, जिसका उच्चारण स्वर की सहायता से होता है, चाहे यह व्यञ्जन के पहले हो या आगे। जैसे- प्+अ=प, अ+ज=अज्। ऊपर क से ह तक सस्वर व्यञ्जनवर्ण हैं, क्योंकि उच्चारण करने के लिये उनमें अ मिला-दियागया है। यदि स्वर नहीं मिलावें तो वे नीचे के रूपों में लिखे जायँगे।

क् ख् ग् घ् ङ् च् छ् ज् झ् ञ् ट् ठ् ड् ढ् ण्
त् थ् द् ध् न् प् फ् ब् भ् म्
य् र् ल् व् श् ष् स् ह्

व्यञ्जन के इस (्) चिन्ह को हल् अर्थात् अ की मात्रा के काटने का चिन्ह कहते हैं।

४. (ं) अनुस्वार और (ः) विसर्ग भी व्यञ्जन * हैं, क्योंकि ये भी अन्य व्यञ्जनों के समान स्वर की सहायता से बोले जाते हैं। जैसे-अ+ं=अं, अ+ः=अः। ('अ+ज्=अज्' से मिलाओ)।

---

* (ं) और (ः) समय पर क्रम से ङ् ञ् ण् न् म और श् ष् स् र् होजाते हैं, इससे भी जानपड़ता है कि ये व्यञ्जन हैं।

नोट—अनुस्वार और विसर्ग के पहले स्वर सर्वदा आते हैं परन्तु अन्य व्यञ्जनों से आगे भी।

संस्कृत में अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) को अयोगवाह कहते हैं।

किसी अक्षर के आगे 'कार' मिलाकर बोलने से भी वही अक्षर समझा जाता है। जैसे–रकार, मकार, इत्यादि।

अभ्यास।

१. स्वर और व्यञ्जन में क्या भेद है? २. हल् किसे कहते हैं ३. अनुस्वार और विसर्ग को स्वर क्यों नहीं कह सकते? ४. सस्वर व्यञ्जन किसे कहते हैं? ५. स्वररहित व्यञ्जन के आगे अनुस्वार और विसर्ग ला सकते हो?

स्वर (Vowels).

स्वरों में 'अ, इ, उ, ऋ, ऌ,' मूल (ह्रस्व) और आ, ई, ऊ, ॠ, ॡ, ए, ऐ, ओ और औ दीर्घ हैं।

अ के बोलने में जितना समय लगता है उसे मात्रा कहते हैं। मात्रा का अर्थ काल का परिमाण है। जिस स्वर के उच्चारण में एक मात्रा हो उसे ह्रस्व या एकमात्रिक और जिस के उच्चारण में एक मात्रा का दूना काल लगे उसे दीर्घ या द्विमात्रिक कहते हैं।

'ए ऐ, ओ और औ' को संयुक्त स्वर भी कहते हैं। जैसे–अ + इ = ए, अ+ए = ऐ, अ + उ = ओ, अ+ओ = औ।

चिल्लाने और पुकारने में स्वर के उच्चारण में कभी कभी एक मात्रा का तिगुना काल लगता है उसे प्लुत कहते हैं। बापरे३ बाँप! रे३ सोहनां!

कोई स्वर जब व्यञ्जनों से मिलाया जाता है तब उसका रूप बदलजाता है और मात्रा कहलाता है। जैसे–

अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ
× ा ि ी ु ू ृ ॄ ॢ ॣ े ै ो ौ

नोट-(१) अ की कोई मात्रा नहीं है। इसके मिलाने से व्यञ्जन के नीचे का चिन्ह (्) गिरजाता है। जैसे-प् + अ = प।

(२) अनुस्वार या विसर्ग मात्रा का काम कभी नहीं दे सकता, क्योंकि दोनों व्यञ्जन हैं। 'कं, कः' वास्तव में नीचे लिखी रीति से बने हैं-

कं = क् + अ + ं

कः = क् + अ + ः

अभ्यास।

१. संयुक्त स्वर कौन कौन हैं? २. मात्रा के कौन कौन अर्थ हैं? ३. अ की मात्रा क्या है? ४. अनुस्वार या विसर्ग मात्रा का काम क्यों नहीं देता? ५. कां और दुः की बनावट बताओ।

व्यञ्जन (Consonants).

१. व्यञ्जनों के तीन प्रकार हैं-स्पर्श, अन्तस्थ और ऊष्म।

जो अक्षर कण्ठ, तालु आदि स्थानों को छूकर बोले जाते हैं उन्हें स्पर्शवर्ण कहते हैं। जिन अक्षरों के बोलने में एक प्रकार के घर्षण के साथ ऊष्मा अर्थात् गर्मवायु निकलती है उन्हें ऊष्मवर्ण कहते हैं। स्पर्श और ऊष्म के बीचवाले अक्षरों को अन्तस्थवर्ण कहते हैं।

नोट-स्वर के उच्चारण में वागिन्द्रिय का द्वार बन्द, स्पर्श के उच्चारण में खुला और अन्तस्थ या ऊष्म के उच्चारण में कुछ खुला रहता है।

स्पर्शवर्ण पाँच वर्गों में विभक्त हैं-कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग और पवर्ग।

क ख ग घ ङ-कवर्ग	स्पर्शवर्ण
च छ ज झ ञ-चवर्ग	
ट ठ ड ढ ण-टवर्ग	
त थ द ध न-तवर्ग	
प फ ब भ म-पवर्ग	

य र ल व—अन्तस्थवर्ण।

श ष स ह—ऊष्मवर्ण।

अनुस्वार (ं) स्पर्शवर्ण और विसर्ग (:) ऊष्मवर्ण हैं।

२. जिन अक्षरों में प्रायः ह की ध्वनि सुनाई देती है उन्हें महाप्राण और शेष को अल्पप्राण कहते हैं। वर्गों के पहले, तीसरे और पाँचवें अक्षरों को तथा अन्तस्थ और अनुस्वार को अल्पप्राण और शेष व्यञ्जनों को महाप्राण कहते हैं।

नोट—स्वर भी अल्पप्राण हैं।

३. जिन वर्णों के उच्चारण में केवल नाद का उपयोग होता है उन्हें घोष और जिनमें नाद के बदले केवल श्वास का उपयोग होता है उन्हें अघोष कहते हैं।

वर्गों के पहले, दूसरे और श, ष, स वर्णों को अघोष और शेष वर्णों को घोषवर्ण कहते हैं।

जब किसी व्यञ्जन के साथ स्वर की मात्रा मिलाई जाती है तब उसका रूप लिखने में कुछ विकृत होजाता है। जैसे—

क का कि की कु कू कृ कॄ के कै को कौ इत्यादि।

नोट—जब उ या ऊ की मात्रा र के साथ मिलाई जाती है तब इसका रूप कुछ विकृत हो जाता है। जैसे—रु, रू।

अभ्यास।

१. अन्तस्थ और ऊष्मवर्ण में क्या भेद है? २. स्पर्शवर्ण किसे कहते हैं? ३. महाप्राण और अल्पप्राण में क्या भेद है? ४. कौन कौन वर्ण अल्पप्राण हैं? ५. घोष और अघोष वर्णों में क्या भेद है? ६. अनुस्वार को स्पर्शवर्णों में क्यों गिनते हैं? ७. विसर्ग ऊष्मवर्ण क्यों है?

उच्चारणस्थान (Seats of Utterance).

मुख के जिस भाग से जिस अक्षर का उच्चारण होता है उस भाग को उस अक्षर का उच्चारणस्थान कहते हैं।

'अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ और ह' × कण्ठ से बोले जाते हैं, इसलिये ये कण्ठ्य कहलाते हैं।

'इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य और श' तालु पर जीभ लगाने से बोले जाते हैं, इसलिये ये तालव्य कहे जाते हैं।

'ऋ, ॠ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र और ष' मूर्द्धा * पर जीभ लगाने से बोले जाते हैं, इसलिये ये मूर्द्धन्य कहलाते हैं।

'ऌ, ॡ, त, थ, द, ध, न, ल और स' दाँतों पर जीभ लगाने से बोले जाते हैं, इसलिये ये दन्त्य कहलाते हैं।

'उ, ऊ, प, फ, ब, भ और म' ओठ से बोले जाते हैं, इसलिये ये ओष्ठ्य कहलाते हैं।

'ए और ऐ' कण्ठ और तालु से बोले जाते हैं, इसलिये ये कण्ठतालव्य कहलाते हैं।

'ओ और औ' कण्ठ और ओठ से बोले जाते हैं, इसलिये ये कण्ठोष्ठ्य कहलाते हैं।

'व' दाँत और ओठ से बोला जाता है, इसलिये यह दन्त्योष्ठ्य कहलाता है।

(ं) अनुस्वार नाक से बोला जाता है, इसलिये यह अनुनासिक कहलाता है।

जब अनुस्वार पूर्णरूप से तानकर उच्चरित होता है, तब यह (ं) चिन्ह लगाते हैं, परन्तु जहाँ कुछ भी तानना नहीं पड़ता वहाँ यह (ँ) चिन्ह लगाते हैं, जिसे अर्द्धानुस्वार या चन्द्रबिन्दु कहते हैं। जैसे—हंस, हँसी। आजकल लिपि में चन्द्रबिन्दु के बदले प्रायः अनुस्वार ही का प्रयोग होने लगा है।

× संस्कृत में 'क, ख, ग, घ और ङ को जिह्वामूलीय कहते हैं।

* मूर्द्धा का स्थान तालु के ऊपर है।

'ङ, ञ, ण, न और म' इन में से प्रत्येक, अपने वर्ग के स्थान और नाक से उच्चरित होने के कारण अनुनासिक भी कहलाता है।

(:) विसर्ग को आश्रयस्थानभागी कहते हैं, क्योंकि यह जिस स्वर के आगे आता है उसी का उच्चारणस्थान पाता है।

'ड़ और ढ़' जीभ के अग्रभाग को उलट कर मूर्द्धा में लगाने से उच्चरित होते हैं।

क़, ख़, ग़, ज़, फ़, आदि अक्षरों के बोलने में कुछ शिथिलता रहती है। ज़ और फ़ में दाँत भी लगाने पड़ते हैं ये क्रम से दन्ततालव्य और दन्त्योष्ठ्य कहलाते हैं।

नोट–(१) ऋ, ण, ष, ये अक्षर **केवल संस्कृत के शब्दों में** आते हैं जैसे–ऋण, ऋषि, पुरुष, गण, रामायण, इत्यादि। 'ङ, ञ और ण, हिन्दी के शब्दों के **आरम्भ में नहीं** आते। विसर्ग केवल **थोड़े से हिन्दी के शब्दों में** आते हैं जैसे–छिः, छः, इत्यादि।

(२) 'ढ़' ड़ का महाप्राण है। ये दोनों अन्तस्थवर्ण भी हैं। ये प्रायः शब्दों के **अन्त अथवा बीच** में आते हैं। जैसे–घोड़ा, बाढ़, बड़ाई, चढ़ाई। अनुनासिक दीर्घ स्वर वाले व्यञ्जन के आगे **ड़ या ढ़ के बदले क्रम से ड या ढ** भी ला सकते हैं। जैसे–मेंढ़ा मेंढा, खाँड़-खाँड़ इत्यादि।

(३) 'ऐ और औ' हिन्दी में प्रायः अय् और अव् तथा संस्कृत शब्दों में अ इ और अ उ के समान उच्चरित होते हैं, जैसे–कै, चौथा–सदैव, कौतुक।

(४) ऋ का उच्चारण 'रि' की भाँति होता है, भेद नहीं जानपड़ता। य और ष को कहीं कहीं ज और ख की भाँति भी बोलते हैं। जैसे–सूर्य, मनुष्य। मूर्द्धन्य ण को दन्त्य न और तालव्य श को दन्त्य स के सदृश उच्चारण करना अशुद्ध है। ब और व के बोलने और लिखने में भेद अवश्य रखना चाहिये। +

+ आगे 'मूर्द्धन्य ण,' 'मूर्द्धन्य ष' और 'ब या व' के पाठ देखो।

(५) अनुस्वार का उच्चारण प्रायः हल नकार के समान और विसर्ग का हकार के समान होता है।

(६) व्यञ्जनों के साथ बालकों को 'क्ष, त्र और ज्ञ' ये तीन अक्षर भी पढ़ाये जाते हैं, परन्तु ये संयुक्त वर्ण हैं। (आगे देखो।)

अभ्यास।

१. ङ, ञ, ज्ञ, क्ष, और श के उच्चारणस्थान बताओ। २. ए. और औ किस प्रकार उच्चरित होते हैं ? ३. कौन कौन अक्षर केवल संस्कृतशब्दों में आते हैं ? ४. कहाँ ड़ के बदले ड भी आता है ? ५. अनुस्वार (ं) कहाँ लगाते हैं और चन्द्रबिन्दु कहाँ ?

संयुक्त व्यञ्जन (Compound Consonants).

जब व्यञ्जनों में स्वर नहीं रहते तब वे मिलाकर लिखे जाते हैं। इस मिलने को संयोग कहते हैं और मिले हुए अक्षरों को संयुक्तवर्ण या युक्ताक्षर कहते हैं। युक्ताक्षर का केवल अन्तिम व्यञ्जन सस्वर बोला जाता है। जैसे—चम्पा, लम्बा, इत्यादि।

संयोग में जिस व्यञ्जन का उच्चारण पहले होता है वह पहले और जिसका पीछे होता है वह अन्त में लिखा जाता है। संयोग के पूर्व व्यञ्जन का रूप आधा और अन्त का पूरा लिखा जाता है, परन्तु ङ्, छ्, ट्, ठ् और ड् आरम्भ में भी पूरे ही लिखे जाते हैं, जैसे—गङ्गा, चिट्ठी, टिड्डी इत्यादि।

यदि किसी व्यञ्जन का संयोग उसी व्यञ्जन से हो तो इस प्रकार बना हुआ युक्ताक्षर द्वित्व कहलाता है। जैसे—क्क, त्त। ङ और ञ ये दो अक्षर कभी द्वित्व नहीं होते।

किसी वर्ग के दूसरे या चौथे अक्षर (महाप्राण) के द्वित्वाक्षर का उच्चारण नहीं हो सकता, इसलिये संयोग का पूर्ववर्ण क्रमशः पहला या तीसरा अक्षर (अल्पप्राण) रहता है। जैसे—अच्छा, शुद्ध, रक्खा, इत्यादि।

नोट—बोलचाल में उच्चारण का झुकाव, वर्ग के पहले और दूसरे या

तीसरे और चौथे अक्षरों के पूर्व और ह्रस्वस्वर के परे, **क्रमशः उसी वर्ग के प्रथमाक्षर के बिठाने की ओर है।** जैसे–कुत्ता, रक्खा, अच्छा, खट्टा, चिट्ठी, कत्था, इत्यादि। पता, चचा, छठा, चखा, लखा, रुपा इत्यादि इस नियम के अपवाद हैं, परन्तु इनपर भी झुकाव का प्रभाव पड़ रहा है जिस से कोई कोई चक्खा, छट्ठा, मिट्ठा इत्यादि बोल बैठते हैं। *

युक्ताक्षर के आदि में यदि पंचम वर्ण हो तो इसे लोग अनुस्वार में भी बदलने लगे हैं। जैसे–गङ्गा–गंगा, चञ्चल–चंचल, घण्टा–घंटा, नन्द–नंद, चम्पा–चंपा।

नोट–(१) वाङ्मय, सम्राट्, तिन्हें, उन्हें इत्यादि शब्दों में आये **पंचमवर्ण अनुस्वार में नहीं बदलते।**

(२) अंतस्थ और ऊष्मवर्णों के पहले का **अनुस्वार नहीं बदलता।** जैसे–संयोग, संसार, इत्यादि।

संस्कृतनियमानुसार प्रायः, दन्त्य स् के साथ त, थ का, तालव्य श् के साथ च छ का और मूर्द्धन्य ष् के साथ ट ठ का संयोग होता है। जैसे–स्थान, निश्चय, पुष्ट, इत्यादि।

नोट–यह नियम अंगरेज़ी शब्दों के लिये ग्राह्य नहीं है। मास्टर को माष्टर, वेस्ट को वेष्ट, मजिस्टर को मजिष्टर इत्यादि लिखना हम उचित नहीं समझते।

रकार जब संयोग के आदि में रहता है तब वह अपने साथी के ऊपर इस (र्‍) रूप से लिखा जाता है, परन्तु जब संयोग के अन्त में रहता है तब वह अपने आदि व्यञ्जन के नीचे इस (्र) रूप से लिखाजाता है। जैसे सूर्य, कर्म, चक्र, मुद्रा, इत्यादि।

---

* दिल्लीवाले प्रायः वर्ग के दूसरे और चौथे अक्षरों को क्रमशः पहले और तीसरे में बदलकर उच्चारण करने की ओर झुकते हैं। वे भूख, धंधा, धोखा और ठंढा इत्यादि शब्दों को क्रमशः भूक, धंदा, धोका और टंडा बोलते और लिखते हैं।

नोट—र्+य=र्य । जैसे—मार्यो ।

स्वर के आगे र के साथ हभिन्न किसी व्यञ्जन का संयोग हो तो वह व्यञ्जन विकल्प से दुहरा सकता है। जैसे-कर्म या कर्म्म, धर्म या धर्म्म, कार्य वा कार्य्य, सूर्य या सूर्य्य, कर्ता या कर्त्ता, इत्यादि । (दुहरा लिखने की चाल कम हो रही है ।)

जिन जिन अक्षरों की मिलावट से युक्ताक्षर बनाते हैं वे संयोग होने पर किसी न किसी अंश में अवश्य दिखाई पड़ते हैं, परन्तु क्ष (क्+ष), त्र (त्+र) और ज्ञ (ज्+ञ) के लिये यह बात नहीं है। यही कारण है कि ये तीन अक्षर वर्ण-माला ही में पढ़ाये जाते हैं ।

संयुक्त व्यञ्जनों मे क्ष और ज्ञ केवल संस्कृतशब्दों ही में आते हैं। जैसे-परीक्षा, आज्ञा ।

हिन्दी में ज्ञ का उच्चारण बहुधा ग्यँ के तुल्य होता है, परन्तु इसका शुद्ध उच्चारण कुछ कुछ ज्यँ के समान है ।

ङ् और ञ् हिन्दी में सदा संयुक्त ही लिखे जाते हैं, परन्तु ण, न् और म् अलग और संयुक्त दोनों लिखे जाते हैं । जैसे-गङ्गा, चञ्चल, लवण, मन, राम, घण्टा, दन्त, चम्पा ।

हिन्दी भाषा में संयोग बहुधा दो अक्षरों के मिलते हैं परन्तु कभी कभी तीन अक्षरों के भी आते हैं। जैसे-स्त्री, मन्त्री, मूर्द्धा, इत्यादि ।

अभ्यास ।

१. कौन कौन वर्ण संयोग के आदि में भी पूरे लिखेजाते हैं ? २. 'अच्छा, खट्टा और रक्खा, इन तीन शब्दों के युक्ताक्षर के लिये तुम ने क्या सीखा है ? ३. 'स्थान, निश्चय और पुष्प' इन तीन शब्दों में ' स, श और ष ' के लिये तुमने क्या सीखा है ? ४. किस अवस्था में पञ्चमवर्ण अनुस्वार से बदल जाता है ? ५. कर्म और कर्म्म दोनों लिख सकते हैं, क्यों ? ६. क्या 'क्ष और ज्ञ' संस्कृत शब्दों को छोड़ अन्य भाषाओं के शब्दों में भी मिलते हैं ?

अनुच्चरित अ (Silent) *

१. हिन्दी के अकारान्त शब्दों में अन्त्य अ का उच्चारण नहीं होता। जैसे-रात, दिन, मोहन, क़लम, लटकन, गपड़चौथ, इत्यादि।

अपवाद-एकाक्षरी शब्द का, शब्द के संयुक्त अन्त्याक्षर का और इ, ई या ऊ के आगे के य का अ पूर्ण उच्चरित होता है। जैसे-न, न, धर्म, द्वन्द्व, प्रिय, सीय, राजसूय, इत्यादि।

२. चार अक्षरों के अकारान्त शब्द में दूसरे अकारान्त वर्ण का अ अनुच्चरित रहता है। जैसे-झटपट, कामरूप, इत्यादि।

अपवाद-यदि दूसरा अक्षर संयुक्त हो या पहला अक्षर उपसर्ग हो तो दूसरे अक्षर का अ पूर्ण उच्चरित होता है। जैसे-सत्यलोक, प्रचलित

३. अकारान्तभिन्न तीन अक्षरों के शब्द के दूसरे या चार अक्षरों के शब्द के तीसरे अकारान्त वर्ण का अ अनुच्चरित रहता है। जैसे-कपड़ा, भागना, निकलना, समझना, इत्यादि।

४. यौगिक शब्दों के मूल अवयवों का अन्त्य अ अनुच्चरित रहता है। जैसे-देवलोक, प्रबलता, लड़कपन।

५. शब्द के आदिवर्ण का अ सदा उच्चरित रहता है।

अभ्यास।

१. शब्दों में कहाँ कहाँ अ का उच्चारण नहीं होता? २. कहाँ कहाँ अ का उच्चारण होता है? ३. 'काम' मोहन, अनबन, राजघाट' इन शब्दों में कहाँ कहाँ अनुच्चरित अ है? ४ चार वर्णों के शब्दों में कहाँ कहाँ अनुच्चरित अ आते हैं?

स्वराघात (Accentuation of Vowels).

किसी शब्द के उच्चारण में प्रत्येक अक्षर पर स्वर का जो धक्का लगता है उसे स्वराघात कहते हैं।

---

* या 'शब्द का उच्चारण।'

संयुक्त व्यञ्जन के पूर्वाक्षर का या अनुच्चरित अकारवाले अक्षर के पूर्वाक्षर का स्वर बोलने में तनजाता है। जैसे-पत्र, अश्व, पर, बोलकर।

संयोग के पूर्व का स्वर जहाँ तानकर बोलने में क्लेशकर होता है, वहाँ बोलना और लिखना पलट भी देते हैं। जैसे-विपत्ति-विपत्, सम्पत्ति-सम्पद्, दुःख-दुख, इत्यादि।

इ, उ या ऋ के पूर्ववर्ती वर्ण का स्वर भी बोलने में तनजाता है। जैसे-हरि, लघु, मातृ, इत्यादि।

विसर्गवाले अक्षर का उच्चारण झटके के साथ होता है। जैसे-दुःख, निःसन्देह, दुःशासन।

नोट-भिन्न भिन्न अर्थवाले एकही रूप के शब्दों के अर्थ स्वराघात ही से जाने जाते हैं। जैसे-तू मेरे लड़के को **पढ़ा**। मैंने ग्रन्थ **पढ़ा**।

अभ्यास।

१. विसर्ग का उच्चारण कैसा होता है ? २. स्वराघात किसे कहते हैं ? ३. बोलने में स्वर को कहाँ कहाँ तानते हैं ? ४. स्वराघात से क्या लाभ है ?

सन्धि (Conjunction of Letters).

दो वर्ण निकट होने से प्रायः मिलजाते हैं, उन के मिलने से जो कुछ विकार होता है उसे स्वर सन्धि कहते हैं।

संयोग और सन्धि में यह अन्तर है कि संयोग के अक्षर नहीं बदलते, परन्तु सन्धि में उच्चारण के अनुसार एक या दोनों अक्षरों में परिवर्त्तन होता है और कभी दोनों के बदले एक तीसरा ही अक्षर आजाता है। संयोग केवल व्यञ्जनों में होता है।

सन्धि के तीन भेद हैं-स्वरसन्धि, व्यञ्जनसन्धि और विसर्गसन्धि।

(१) स्वर के साथ स्वर के संयोग को स्वरसंधि कहते हैं।

(२) व्यञ्जन के साथ स्वर या व्यञ्जन के संयोग को व्यञ्जनसन्धि कहते हैं।

(३) विसर्ग के साथ स्वर या व्यञ्जन के संयोग को विसर्ग-सन्धि कहते हैं।

स्वरसन्धि (Conjunction of vowels).

स्वरसन्धि के पाँच भेद हैं—दीर्घ, गुण, वृद्धि, यण् और अयादि।

१ दीर्घ। (आ, ई, ऊ, ॠ,)

ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ या ऋ से परे क्रम से ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, या ऋ आवे तो दोनों मिलकर उसी क्रम से दीर्घ आ, ई, ऊ, या ॠ होजाते हैं। जैसे-परम + अर्थ = परमार्थ, देव, + आलय = देवालय, विद्या + अर्थी = विद्यार्थी, विद्या + आलय = विद्यालय, गिरि + इन्द्र = गिरीन्द्र, कपि + ईश = कपीश, मही + इन्द्र = महीन्द्र, नदी + ईश = नदीश, विधु + उदय = विधूदय, लघु + ऊर्मि = लघूर्मि, स्वयम्भू + उदय = स्वयम्भूदय, पितृ + ऋण = पित‍ॄण।

नोट-पित‍ॄण, मात‍ॄण इत्यादि के बदले पितृण, मातृण इत्यादि भी लिखते हैं।

(२) गुण। (ए, ओ, अर्)

ह्रस्व या दीर्घ अकार से परे ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, या ऋ रहे तो ह्रस्व या दीर्घ अ इ मिलकर ए, अ उ मिलकर ओ और अ ऋ मिलकर अर् होजाते हैं। इस विकार को गुणसन्धि कहते हैं। जैसे-देव + इन्द्र = देवेन्द्र, परम + ईश्वर = परमेश्वर, महा + ईश = महेश, हित + उपदेश = हितोपदेश, जल + ऊर्मि = जलोर्मि, महा + उत्सव = महोत्सव, गङ्गा + ऊर्मि

गङ्गोर्मि, हिम + ऋतु = हिमर्तु, महा + ऋषि = महर्षि।

अपवाद—अक्ष + ऊहिणी = अक्षौहिणी, प्र + ऊढ़ = प्रौढ़, इत्यादि।

(३) वृद्धि। (ऐ, औ)

ह्रस्व या दीर्घ अकार से परे ए, ऐ, ओ या औ रहे तो अ ए या अ ऐ मिलकर ऐ और अ ओ या अ औ मिलकर औ होजाते हैं। इस विकार को वृद्धिसन्धि कहते हैं। जैसे—एक + एक = एकैक, परम + ऐश्वर्य = परमैश्वर्य, तथा + एव = तथैव, महा + ऐश्वर्य = महैश्वर्य, सुन्दर + ओदन = सुन्दरौदन, महा + औषधि = महौषधि, परम + औषध = परमौषध।

विकल्प—यदि आगे ओष्ठ शब्द हो तो विकल्प से ओ भी होता है। जैसे—कण्ठ + ओष्ठ्य = कण्ठोष्ठ्य या कण्ठौष्ठ्य, दन्त्य + ओष्ठ्य = दन्त्योष्ठ्य या दन्त्यौष्ठ्य, इत्यादि।

(४) यण् (य्, व्, र्)

ह्रस्व या दीर्घ इ, उ या ऋ से परे कोई भिन्नस्वर हो तो क्रम से ह्रस्व या दीर्घ इ का य्, उ का व् और ऋ का र् होकर आगे के स्वर से मिलजाता है। इस विकार को यण्सन्धि कहते हैं। जैसे—यदि + अपि = यद्यपि, इति + आदि = इत्यादि, प्रति + उपकार = प्रत्युपकार, नि + ऊन = न्यून, प्रति + एक = प्रत्येक, अति + ऐश्वर्य = अत्यैश्वर्य, युवती + ऋतु = युवत्यृतु, गोपी + अर्थ = गोप्यर्थ, देवी + आगम = देव्यागम, सखी + उक्त = सख्युक्त, अनु + अय = अन्वय, सु + आगत = स्वागत, अनु + इत = अन्वित, अनु + एषण = अन्वेषण, बहु + ऐश्वर्य = बह्वैश्वर्य, सरयू + अम्बु = सरय्वम्बु, पितृ + अनुमति = पित्रनुमति, मातृ + आनन्द = मात्रानन्द।

(५) अयादि। (अय्, आय्, अव्, आव्)

'ए, ऐ, ओ और औ' के आगे कोई स्वर रहने से वे क्रम से

अय, आय्, अव्, आव् होजाते हैं। इस विकार को अयादि सन्धि कहते हैं। जैसे—ने + अन = नयन, नै + अक = नायक, पो + अन = पवन, पो + इत्र = पवित्र, पौ + अक = पावक, भौ + इनी = भाविनी, भौ + उक = भावुक।

नोट—संस्कृत में पदान्त के ए और ओ से परे अ रहने से इस का लोप हो जाता है और उसके स्थान में लुप्ताकार (ऽ) चिन्ह अपनी इच्छा से ला सकते हैं। जैसे—ते + अत्र = तेऽत्र, ते + अपि = तेऽपि।

अभ्यास।

(१) सन्धि करो और नियम लिखो—

महा + आत्मा, नै + अक, अनु + अय, तथा + एव।

(२) सन्धि अलगाओ—

तेऽपि, इत्यादि, नयन, अवरोध, गणेश।

व्यञ्जनसन्धि (Conjunction of Consonants).

यदि किसी वर्ग के प्रथम या तृतीय वर्ण से परे अनुनासिक वर्ण रहे तो वह निज वर्ग का अनुनासिक होकर आगेके वर्ण से मिलजायगा। जैसे—वाक् + मय = वाङ्मय, प्राक् + मुख = प्राङ्मुख, जगत् + नाथ = जगन्नाथ, उत् + मत्त = उन्मत्त, षट् + मास = षण्मास, अप् + मय = अम्मय, इत्यादि।

पदान्त म् आगे स्पर्शवर्ण रहने से उसी वर्ग का पञ्चमाक्षर और अन्तस्थ या ऊष्मवर्ण रहने से अनुस्वार होजाता है। जैसे—सम् (सं[1]) + आचार = समाचार, सं + उदाय = समुदाय, सं + ऋद्धि = समृद्धि, अहं + कार = अहङ्कार, सं + गम = सङ्गम, किं + चित् = किञ्चित्।

---

१. हिन्दी में पदान्त म् के बदले अनुस्वार भी लिखते हैं, इसीलिये आगे के उदाहरणों में अनुस्वार रक्खा है।

सं + चय = सञ्चय, सं + तोष = सन्तोष, सं + ताप = सन्ताप, सं + वत् = सम्वत्, सं + बन्ध = सम्बन्ध, सं + बुद्धि = सम्बुद्धि, सं + भव = सम्भव, सं + यम = संयम, सं + वाद = संवाद, सं + लय = संलय, सं + सार = संसार, सं + हार = संहार, इत्यादि

क्, च्, ट्, त्, या प् के आगे स्वर, अन्तस्थ या वर्गों के तीसरे, चौथे व्यञ्जनों में से कोई एक आवे तो क् इत्यादि प्रथम वर्ण क्रम से ग् इत्यादि तीसरे वर्ण होजाते हैं, परन्तु त् के आगे ल, ज, झ, ड, या ढ रहने से यह नियम नहीं लगता। जैसे-दिक् + गज = दिग्गज, वाक् + दत्त = वाग्दत्त, दिक् + अम्बर = दिगम्बर, वाक् + ईश = वागीश, धिक् + याचना = धिग्याचना, अच् + अन्त = अजन्त, षट् + दर्शन = षड्दर्शन, उत् + अय = उदय, सत् + आनन्द = सदानन्द, सत् + आचार = सदाचार, जगत् + इन्द्र = जगदिन्द्र, जगत् + ईश = जगदीश, सत् + उत्तर = सदुत्तर, महत् + ओज = महदोज, महत् + औषध = महदौषध, उत् + योग = उद्योग, भविष्यत् + वाणी = भविष्यद्वाणी, सत् + वंश = सद्वंश, पशुवत् + गामी = पशुवद्गामी, उत् + घाटन = उद्घाटन, महत् + धनुष = महद्धनुष, जगत् + बन्धु = जगद्बन्धु, अप् + ज = अब्ज, अप् + भूति = अब्भूति, इत्यादि।

'त, द्, या न्' आगे ल् रहने से ल् होजाता है, परन्तु न् केलिये अर्द्धानुस्वार भी लगता है। जैसे-उत् + लङ्घन = उल्लङ्घन, उत् + लेख = उल्लेख, महान् + लाभ = महाँल्लाभ, इत्यादि।

त् या द् आगे च छ रहने से च्, ज झ रहने से ज्, ट ठ रहने से ट् और ड ढ रहने से ड् होजाता है। जैसे = उत् + चारण = उच्चारण, सत् + चिदानन्द = सच्चिदानन्द, सत् + जाति = सज्जाति, उत् + ज्वल = उज्ज्वल, उत् + छिन्न = उच्छिन्न, विपद् + जाल = विपज्जाल, तत् + टीका = तट्टीका, तद् + जय = तज्जय,

उत्+डयन=उड्डयन, इत्यादि ।

त् या द् के आगे श् रहने से त् या द् का च् और श् का छ तथा ह् रहने से त् या द् का त् और ह् का ध् होजाता है। जैसे-सत्+शास्त्र=सच्छास्त्र, उत्+शिष्ट=उच्छिष्ट, तत्+शरण=तच्छरण, तद्+शरीर=तच्छरीर, उत्+हार=उद्धार, तत्+हित=तद्धित, उत्+हत=उद्धत, इत्यादि ।

ह्रस्व स्वर के आगे छ रहने से छ के पहले च् बढ़जाता है परन्तु दीर्घ स्वर के आगे विकल्प से बढ़ता है। जैसे=वि+छेद=विच्छेद, परि+छेद=परिच्छेद, अव+छेद=अवच्छेद वृक्ष+छाया=वृक्षच्छाया, श्री+छाया=श्रीच्छाया या श्रीछाया, लक्ष्मी+छाया=लक्ष्मीच्छाया या लक्ष्मीछाया, इत्यादि ।

च् या ज् के आगे न् का ञ् हो जाता है। जैसे-याच्+ना=याच्ञा, यज्+न=यज्ञ ।

मूर्द्धन्य ष् के आगे त् का ट् और थ का ठ् होजाता है। जैसे-आकृष्+त=आकृष्ट, उत्कृष्+त=उत्कृष्ट,षष्+थ=षष्ठ ।

स्वर के आगे का ढ् या र् अपने आगे ढ या र पाकर लुप्त हो जाता है और यदि ह्रस्व स्वर हो तो वह दीर्घ होजाता है। जैसे-मुढ्+ढ=मूढ, निर्+रस=नीरस, पुनर्+रचना=पुनारचना, निर्+रोग=नीरोग ।

नोट-संस्कृत में व्यञ्जनसन्धि का विस्तार ऐसा बढ़ाकर किया गया है कि उसका बोध बड़ी कठिनता से होता है। यहाँ जितने नियम दिये गये हैं वे बहुत ही थोड़े हैं।

अभ्यास ।

(१) सन्धि अलगाओ ।

नीरोग, सन्तोष, उच्चारण, तद्धित, अब्ज, सदाचार, अम्मय, उच्छिन्न, अनन्त ।

---

२ विसर्गसन्धि देखो ।

(१) सन्धि करो ।

जगत्+नाथ, वाक्+ईश, उत्+योग, तत्+शरण, अव+ छेद, यज्+न ।

विसर्गसन्धि (ConjunCtion of Visargas).

यदि इ या उ पूर्वक विसर्ग से परे क, ख, प या फ रहे तो विसर्ग का ष् होजाता है, परन्तु और स्थानों में विसर्ग ही बना रहता है। जैसे-निः+कपट=निष्कपट, निः+पाप = निष्पाप, निः+फल=निष्फल, दुः + कर=दुष्कर । अन्तः+ पुर=अन्तःपुर, अधः+पतन=अधःपतन ।

अपवाद-दुः+ख=दुःख, नमः+कार=नमस्कार, पुरः + कार=पुरस्कार, भाः+कर = भास्कर ।

यदि विसर्ग से परे च्, छ् या श रहे तो विसर्ग का श्-ट्, ठ् या ष् रहे तो ष् और त्, थ् या स् रहे तो स् होजाता है, परन्तु श्, ष् या स् रहने पर विकल्प है। जैसे-निः+चल=निश्चल, निः+चय=निश्चय, निः+छल=निश्छल, दुः+शासन= दुश्शासन (दुःशासन) धनुः+टङ्कार=धनुष्टङ्कार, बहिः+ षट्+बहिष्षट् (बहिःषट्), मनः+ताप=मनस्ताप, निः+ तार=निस्तार, दुः+तर=दुस्तर, निः+ सन्देह=निस्सन्देह (निःसन्देह) ।

यदि विसर्ग के पहले अ, आ को छोड़कर कोई दूसरा स्वर हो और आगे वर्ग के प्रथम, द्वितीय और श, ष, स वर्णों को छोड़ कोई व्यञ्जन वा स्वरवर्ण हो तो विसर्ग के स्थान में र् हो जाता है, परन्तु विसर्ग के आगे र रहने से विसर्गवाले र् का लोप और इसके पहले का स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे-निः+ गुण=निर्गुण, निः+घिन=निर्घिन, निः+जल=निर्जल, निः +झर=निर्झर, बहिः+देश=बहिर्देश, निः+धन=निर्धन,

निः + बल = निर्बल, निः + भय = निर्भय, निः + नाथ = निर्नाथ, निः + मल = निर्मल, निः + युक्ति = निर्युक्ति, निः + विकार = निर्विकार, निः + हस्त = निर्हस्त, निः + अर्थ = निरर्थ, निः + आधार = निराधार, निः + इच्छा = निरिच्छा, निः + उपाय = निरुपाय, निः + औषध = निरौषध, दुः + नीति = दुर्नीति, निः + रस = नीरस, नि + रोग = नीरोग, निः + रन्ध्र = नीरन्ध्र, निः + रेफ = नीरेफ, पितः + रक्त = पितारक्त, मातुः + रोदन = मातुरोदन।

विसर्ग के पहिले 'अ' हो और आगे वर्गों के प्रथम, द्वितीय और श, ष, स वर्णों को छोड़ कोई व्यञ्जन हो तो अ और विसर्ग दोनों मिलकर ओ हो जाते हैं। जैसे—मनः + गत = मनोगत, मनः + भाव = मनोभाव, मनः + ज्ञ = मनोज्ञ, मनः + योग = मनोयोग, मनः+रथ = मनोरथ, मनः + विकार = मनोविकार, मनः + नीत = मनोनीत, तेजः + मय = तेजोमय, मनः + हर + मनोहर, सरः + ज = सरोज, पयः + द = पयोद।

अ पूर्वक विसर्ग के आगे अ हो तो तीनों के बदले ओ आता है और विसर्ग के आगे के अ के लिये लुप्ताकार (ऽ) भी लाते हैं, परन्तु आगे अ भिन्न कोई दूसरा स्वर रहे तो केवल विसर्ग का लोप हो जाता है और फिर संधि नहीं होती। जैसे—नवः + अङ्कुर = नवोऽङ्कुर, प्रथमः + अध्याय = प्रथमोऽध्याय, मनः + अनुसार = मनोऽनुसार, मनः + अवधान = मनोऽवधान, यशः + अभिलाषी = यशोऽभिलाषी, तेजः + आभास = तेजआभास, यशः + इच्छा = यशइच्छा, देवः + ऋषि = देवऋषि, अतः + एव = अतएव।

यदि अ के आगे (र्) के बदले का विसर्ग रहे और उसके आगे वर्गों के प्रथम, द्वितीय और श, ष, स वर्णों को छोड़ कोई वर्ण हो तो विसर्ग फिर र् में बदलजाता है। जैसे—पुनः + अपि = पुनरपि, पुनः + आगतः = पुनरागतः, अन्तः + धालम् =

अन्तर्धानम्, पुनः+जन्म=पुनर्जन्म, अन्तः+गत=अन्तर्गत।

'भोः' पद के आगे वर्गों के प्रथम, द्वितीय और श, ष, स वर्णों को छोड़ कोई वर्ण हो तो विसर्ग का लोप होजाता है और कभी आगे स्वर रहने से विसर्ग का य भी होता है। जैसे-भोः+गदाधर=भोगदाधर, भोः+माधव=भोमाधव, भोः+ईशान=भोयीशान।

नोट-अन्त्य स् के बदले भी विसर्ग होता है, इसलिये विसर्ग संबंधी सब नियम ऐसे 'स' केलिये भी काम आते हैं। ऊपर के उदाहरणों में स् वाले विसर्ग के 'निर्गुण' मनोविकार' इत्यादि कई शब्द आये हैं।

अभ्यास।

(१) सन्धि करो--

अन्तः+करण, दुः+तर, निः+धन, देवः+ऋषि।

(२) सन्धि अलगाओ—

प्रथमोध्याय, मनोहर, पुनर्जन्म, निर्गुण, दुस्तर।

शब्द और प्रत्यय×का मेल।

जब शब्द और प्रत्यय संयुक्त होते हैं तब शब्दान्त वर्ण के साथ प्रत्यय का आदिवर्ण, यदि मिलने योग्य हो तो मिला देते हैं। जैसे-लड़का+आई=लड़काई, बाप+औती=बपौती इत्यादि।

शब्द और प्रत्यय की मिलावट में कहीं तो सन्धि * के नियम लगते हैं और कहीं नहीं। मिलावट में यदि शब्द के

× जिनके जोड़ने से शब्द की अवस्था और अर्थ में अन्तर पड़ता है उन्हें उपसर्ग और प्रत्यय कहते हैं, परंतु उपसर्ग शब्द के पूर्व और प्रत्यय अन्त में आते हैं। जैसे-दुर्जन में 'दुर्' उपसर्ग और धनवान् में 'वान्' प्रत्यय हैं।

* पीछे संधि के जितने नियम दिये गये हैं वे सब के सब संस्कृत भाषा के हैं।

अन्त्याक्षर के पूर्व दीर्घ स्वर हो तो ह्रस्व होजाता है, ऐसी अवस्था में ए को इ से और ओ को उ से बदल देते हैं। शब्द के अन्त्य वर्ण को कहीं लुप्त, कहीं ह्रस्व और कहीं स्वररहित कर देते हैं। नीचे उदाहरण दिये जाते हैं—

स्वरयोग—

(१) लड़ + आई = लड़ाई, बूढ़ा + आपा = बुढ़ापा, गोड़ + ऐत = गोड़ैत, सिल + औटा = सिलौटा, पी + आस = प्यास, लखनऊ + ई = लखनवी, गुरु + आनी = गुरुवानी, इत्यादि।

(२) गाई + इया = गईया, = गैया, खाट + इया = खटिया, घर + ऊ = घरू, चौबे + आइन = चौबाइन, इत्यादि।

स्वर और व्यञ्जनयोग-

(१) ब और ह मिलकर भ तथा त और द् मिलकर द्द होजाते हैं। जैसे-तब + ही = तभी, जब + ही = जभी, पोत + दार = पोद्दार, इत्यादि।

(२) वह + ही = वही, यहाँ + ही = यहीं, हम + ही = हमी, तुम + ही = तुमी या तुम्ही, उस + ही = उसी, तिस + ही = तिसी, जिन + ही = जिन्ही, दूध + हाँडी = दुधाँड़ी, इत्यादि।

अभ्यास।

(१) मिलाओ—

बड़ा + आई, माई + इया, अब + ही, जहाँ + ही।

(२) विच्छेद करो—

कभी, उसी, निठास, भुखा, गोला।

मूर्द्धन्य ण (Changes of न into ण)

ऋ, र् और ष् के आगे न् के बदले ण् आता है। जैसे-ऋण, तृष्णा।

यदि स्वर, कवर्ग, पवर्ग, य, व, ह और अनुस्वार में से

कोई 'ऋ र् या ष्' और 'न' के बीच में आवे तो भी न् के बदले ण् आता है। जैसे-रण, वरुण, रामायण, रावण, ग्रहण, श्रवण, प्रमाण।

अपवाद-दुर्नाम, दुर्निवार, दुर्नीति, इत्यादि।

मूर्द्धन्य ष (Changes of स into ष).

अ, आ को छोड़ और किसी स्वर, क् या र् के आगे स् के बदले ष् होता है। जैसे-जिगीषा, विवक्षा = विवक्षा, निषिद्ध, विषम, सुषुप्ति।

अपवाद-विस्मरण, अनुसरण, विसर्ग इत्यादि।

व या व (ब or व)

बोलने और लिखने में ब और व में भेद अवश्य रखना चाहिये। जो बेद को वेद और बात को वात लिखते हैं वे भूल करते हैं। प्रायः अधिकतर विद्यार्थी तो ब कभी लिखते ही नहीं। जहाँ ब आना चाहिये वहाँ व और जहाँ व लिखना चाहिये वहाँ ब् लिखते हैं, यह बड़ी भूल है। ब और व के उच्चारणस्थानों पर सदा ध्यान रखना उचित है।

संस्कृत में निम्नलिखित बकरादिक शब्द हिन्दी में बहुधा आते हैं-ब्रह्म, बोध, ब्रह्मा, बधिर, ब्राह्मण, बहुधा, बुद्ध, ब्रह्मचर्य, बुध, बन्धु, बहु, बुद्धि, बृहस्पति, बन्ध्या, बाला, बाहु, बलि, बाल (बालक), बड़वानल, बन्धन, बन्ध, बिम्ब, बीज, बिल्व, बीभत्स, बालुका, बिल, बिन्दु, बलात्कार, इत्यादि।

संस्कृत के निम्नलिखित शब्द वैकल्पिक हैं—

वाल्मीकि (बाल्मीकि), वाणिज्य (बाणिज्य), वल (बल), वाली (बाली), वाधा (बाधा), वाण (बाण), वाल (बाल = केश), वक, (बक), वाष्प (बाष्प), इत्यादि।

अभ्यास ।

शुद्ध करो-

ब्राह्मनी, बिम्बोस्ट, सूर्यग्रहन, मनुस्य, वेद, भववंधण, धनुसवान, बिष्मरन, चेस्टा, विसमकोन ।

मिश्रित अभ्यास ।

१. नीचे जहाँ अशुद्ध वर्ण हो उसे शुद्ध करो और कारण दो—

गन्डक में बाढ आई है। गुफ्फा में साधु रहता है। अच्छी पुश्तक पढ़ो। सन्सार में बुरे लोग भी हैं। निस्चय नहीं हुआ है कि यह किस श्थान का पुस्प है। अक्षोहिनी एक बड़ी सेना का नाम है। आप को नमष्कार है। राम को पुरष्कार दो। भाषाभाष्कर के कई नियम अब नहीं मानेजाते। इस चिन्ह को विशर्ग कहते हैं। यह बात निश्सन्देह है। मैं आपको अन्तष्करण से आशीर्बाद देता हूँ। निरोग रहने के नियम कहिये। वृढापा आगया। पीआस लगी है। रामायन में राम और रावन की कहानी है। इस का क्या प्रमान है? विसमकोन किसे कहते हैं? ब्राह्मन से ग्रहन की बात पूछो। मुझे यह बात स्मरन नहीं। चार वेद हैं और अठारह पुरान।

शब्दविचार ।

शब्द (Words).

कान से जो सुन* पड़े उसे शब्द कहते हैं। शब्द दो प्रकार के हैं-सार्थक और निरर्थक। सार्थक शब्द उसे कहते हैं जिसका कुछ अर्थ हो। जैसे-जल, घर। निरर्थक शब्द उसे कहते हैं जिस का कुछ अर्थ न हो। कभी कभी निरर्थक शब्दों का भी व्यवहार होता है। वे वाक्य की थोड़ी सी शोभा बढ़ा देते हैं या कभी उनसे कोई अर्थ (जैसे-अनुकरण या इत्यादि का) समझ लिया

* सुने हुए शब्द या तो ध्वन्यात्मक होते हैं या वर्णात्मक। जिनके अक्षर स्पष्ट न सुन पड़ें वे ध्वन्यात्मक और जिनके अलग अलग सुनपड़ें वे वर्णात्मक शब्द कहलाते हैं। व्याकरण में वर्णात्मक शब्दों का विचार होता है।

जाता है। जैसे-अरे राम, कुछ पानी वानी पिलाओगे या नहीं? क्या अलबल बकता है!

अर्थ भी तीन प्रकार के हैं-वाच्य, लक्ष्य और व्यङ्ग्य।

१. जिस शब्द का जो अर्थ नियत है, जब वह उसी अर्थ में बोला जाय तब वाच्य* कहलाता है। जैसे-बैल एक पशु है। यहाँ बैल शब्द का अर्थ पैर, सींग और खुर आदिवाला स्वनामप्रसिद्ध पशु है, इसलिये यह अर्थ 'वाच्य' हुआ और बल शब्द 'वाचक'।

२. यदि कोई शब्द नियत अर्थ का बोध न कराके अपने सादृश्य या गुण का बोध करावे तो ऐसा अर्थ लक्ष्य कहलाता है। जैसे-वह मनुष्य बैल है। यहाँ बैल शब्द अपने नियत अर्थ का बोध नहीं कराता, क्योंकि मनुष्य कभी चार पैरोंवाला पूँछदार बैल नहीं हो सकता। यहाँ बैल शब्द 'बैल के सदृश' इस अर्थ का बोध कराता है अर्थात् इससे उस मनुष्य की जड़ता मूर्खता इत्यादि का बोध होता है। वह मनुष्य बैल है = वह मनुष्य मूर्ख है, इसलिये यह अर्थ 'लक्ष्य' हुआ और बैल शब्द 'लक्षक'।

३. एक अर्थ व्यङ्ग्य भी होता है। जैसे-किसी ने कहा कि 'सूर्यास्त हुआ'। इतने में छात्रों ने समझा कि सन्ध्योपासन केलिये आचार्य आज्ञा देते हैं।

नोट-हिन्दी में जितने शब्द बोलेजाते हैं वे व्युत्पत्ति के अनुसार चार प्रकार के हैं-तत्सन, तद्भव, देशज और विदेशी।

---

* वाच्यार्थ के कई भेद हैं—१. सामान्य-(उदाहरण ऊपर देखो)। २. विशेष-(जैसे-पङ्कज। यहाँ पङ्क = कीच, ज = जन्मा, इसलिये पङ्कज का अर्थ हुआ-'कीच से जन्मा हुआ पदार्थ,' परन्तु इस शब्द से कीच से जन्मे हुए सब सामान्य पदार्थों के अर्थ छोड़कर 'विशेष अर्थ' कमल का बोध होता है। (आगे योगरूढ़ि संज्ञा देखो)।

(१) तत्सम वे संस्कृत शब्द हैं जो अपने असली स्वरूप में हिन्दी में आये हैं। जैसे-माता कवि, वायु (२) तद्भव वे हैं जो संस्कृत शब्दों से बने हैं। जैसे-खेत, राय, मेह। (३) देशज शब्द संस्कृत से नहीं निकले हैं, वे भरत-खण्ड के आदिम निवासियों की बोलियों से लियेगये हैं। जैसे—डाभ, पेट।

(४) विदेशी शब्द फ़ारसी, अगरेजी इत्यादि अन्य भाषाओं से आये हैं। जैसे-आदमी, इम्तिहान, तोप, नीलाम, नोटिस, इत्यादि।

सार्थकशब्द (Articulate Words).

रूपान्तर के अनुसार सार्थक शब्दों के दो भेद हैं-विकारी और अविकारी।

लिङ्ग, वचन और पुरुष के कारण जिस शब्द के रूप में कोई विकार होता है उसे विकारीशब्द कहते हैं। जैसे—

लड़का—लड़की, लड़के लड़कों। वह—उस, उन, वे, उन्हों। अच्छा—अच्छी, अच्छे, अच्छों। पढ़—पढ़ना, पढ़ा, पढ़ी, पढूँ, पढ़के।	विकारीशब्द

लिङ्ग, वचन इत्यादि के कारण जिस शब्द के रूप में विकार नहीं होता उसे अविकारी (अव्यय) कहते हैं। जैसे—

अभी, अब, तब ... ... पास, समीप, आगे ... ... और, व, या, वा, ... हाय! अरे! वाह!	अविकारीशब्द। (अव्यय)

प्रयोग के अनुसार 'संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया' विकारी के तथा क्रियाविशेषण, सम्बन्धबोधक, समुच्चयबोधक और विस्मयादिबोधक, अविकारी (अव्यय) के भेद हैं। इस प्रकार सब मिलाकर सार्थकशब्दों के आठ भेद होते हैं।

१. संज्ञा किसी वस्तु के नाम को कहते हैं। जैसे—पुस्तक, काशी।

२. जो शब्द संज्ञा के स्थान में आता है उसे सर्वनाम कहते हैं। जैसे-राम ने कहा कि मैं जाऊँगा। कौन जायगा? जो आवेगा वह पढ़ेगा।

३. जो संज्ञा की विशेषता बतलावे उसे विशेषण कहते हैं। जैसे—काली गाय आती है। वह अच्छे ग्रन्थों को पढ़ता है। ×

४. जिससे किसी व्यापार या काम का बोध हो उसे क्रिया कहते हैं। जैसे-मैं कहता हूँ। राम सोता है।

५. जो क्रिया के अर्थ में कोई विशेष बात पैदा करे उसे क्रियाविशेषण कहते हैं। जैसे-काम झटपट करडालो। राम धीरे धीरे पढ़ता है।

६. जो अव्यय संज्ञा या संज्ञा के समान उपयोग में आनेवाले शब्द के बहुधा आगे आकर उसका सम्बन्ध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ मिलाता है उसे सम्बन्धबोधक कहते हैं। जैसे-इस कविता का अन्वय सहित अर्थ लिखो। राम अपने परिवार समेत घर चलागया। धन के बिना काम नहीं चलता।

७. जो अव्यय क्रिया की विशेषता न बतलाकर दो वाक्यों का परस्पर अन्वय मिलाता है उसे समुच्चयबोधक या उभयान्वयी कहते हैं। जैसे-राम और लक्ष्मण बन से आये। जाओ या बैठो।

× विशेषण संज्ञा की व्यापकता को बाँध देता है। विशेषणरहित संज्ञा से जितनी वस्तुओं का बोध होता है, विशेषणसहित से उससे कम का होता है। गाय शब्द जितने प्राणियों का बोध कराता है 'काली गाय' से उतने का नहीं होता, क्योंकि 'काली' शब्द 'गाय' की व्यापकता को बाँध देता है।

८. जो मनोविकार को अर्थात् आश्चर्य, हर्ष, पीड़ा, आदि को प्रकट करता है उसे विस्मयादिबोधक कहते हैं। ओह ! तुम आगये। वाह ! हाय ! *

नोट—व्युत्पत्ति के विचार से शब्दों के भेद आगे संज्ञाप्रकरण की टिप्पणी में देखो।

अभ्यास।

१. शब्द किसे कहते हैं ? २. शब्द कितने प्रकार के हैं ? ३. व्युत्पत्ति के अनुसार कितने प्रकार के शब्द हिन्दी में बोलेजाते हैं ? ४. अर्थ कितने प्रकार के हैं ? उदाहरण दो। ५. रूपान्तर के अनुसार सार्थक शब्दों के कुल कितने भेद हैं ? प्रत्येक की परिभाषा और उदाहरण दो। ६. विशेषण संज्ञा को क्या करता है ? ७. गाय और काली गाय में क्या भेद है ?

विकारीशब्द (Declinable Words).

संज्ञा (Nouns).

(१) व्युत्पत्ति के विचार से भेद।

व्युत्पत्ति के विचार से संज्ञाओं के तीन भेद हैं—रूढ़, यौगिक और योगरूढ़।

जिस शब्द के खण्ड × सार्थक न हो सकें उसे रूढ़ संज्ञा

---

* संस्कृत भाषा में शब्दों के केवल तीन ही भेद हैं—संज्ञा, क्रिया और अव्यय। हमने ऊपर लिखे आठ भेद विद्यार्थियों के लाभ केलिये करादिये हैं।

* व्युत्पत्ति के विचार से संज्ञा से भिन्न शब्द दो ही प्रकार के होते हैं—रूढ़ और यौगिक।

× कोष के विचार से अक्षर का भी अर्थ होता है, परन्तु वह अर्थ रूढ़ शब्द के अर्थ से कुछ भी सम्बन्ध नहीं रखता। यही कारण है कि रूढ़ शब्द के खण्ड सार्थक नहीं समझेजाते।

कहते हैं। जैसे-धन, गज, इत्यादि। धन शब्द में ध और न दोनों निरर्थक हैं। इसी प्रकार उदाहरण के शब्दों के सब खण्ड अलग अलग निरर्थक हैं, परन्तु प्रत्येक समूचा शब्द एक अर्थ का बोधक है।

किसी रूढ़शब्द में उपसर्ग, प्रत्यय या दूसरे शब्द के मिलाने से जो संज्ञा बने उसे यौगिक संज्ञा कहते हैं। ऐसे शब्द के खण्ड सार्थक होते हैं तथा खण्डार्थ और शब्दार्थ में पूर्ण सम्बन्ध भी रहता है। जैसे-दुर्जन (दुर् + जन), धनवान् (धन + वान्), पाठशाला (पाठ + शाला), इत्यादि।

जो यौगिक संज्ञा के समान ही बने, परन्तु सामान्यार्थ को छोड़ विशेषार्थ का प्रकाश करे उसे योगरूढ़ संज्ञा कहते हैं। जैसे-पङ्कज, जलज, चक्रपाणि, इत्यादि।

पङ्क=कीच, ज=जन्मा, इस लिये पङ्कज का अर्थ हुआ कीच से जन्मा हुआ पदार्थ, परन्तु इस शब्द से कीच से जन्मे हुए सब सामान्य पदार्थों के अर्थ छोड़ विशेषार्थ कमल का बोध होता है।

चक्रपाणि में चक्र एक अस्त्र का नाम है और पाणि, हाथ का। इस का सामान्य अर्थ हुआ 'जिसके हाथ में चक्र हो,' परन्तु इसका विशेषार्थ केवल विष्णु होता है।

ऐसी यौगिक संज्ञा को योगरूढ़ कहते हैं। यह संज्ञा भी दोहरी होती है, परन्तु इसके शब्दार्थ और खण्डार्थ में पूर्ण सम्बन्ध नहीं रहता।

(२) अर्थ के विचार से भेद।

अर्थ के विचार से संज्ञाओं के पाँच भेद हैं-जातिवाचक, व्यक्तिवाचक, भाववाचक, समूहवाचक और द्रव्यवाचक।

१. जिस शब्द से जातिभर का बोध हो उसे जातिवाचक

संज्ञा कहते हैं। जैसे–हाथी, मनुष्य, कुत्ता, बालक, घोड़ा इत्यादि।

इन शब्दों में प्रत्येक किसी एकही वस्तु केलिये नहीं आता, किन्तु उसप्रकार की सब वस्तुओं को प्रकट करता है। हम सब हाथियों को हाथी शब्द से पुकारते हैं। बालक शब्द प्रत्येक बालक के लिये आता है। इत्यादि ।

२. जिस शब्द से केवल एक ही पदार्थ का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–राम, पटना, हिमालय, गङ्गा, भारत।

इन शब्दों से एक मनुष्य, एक नगर, एक पहाड़, एक नदी और एक देश से अधिक का बोध नहीं होसकता। राम एक पुरुषविशेष का नाम है और गङ्गा एक नदीविशेष का। सब नदियों को गङ्गा नहीं कह सकते। इसी प्रकार सब पहाड़ों को हिमालय भी नहीं कह सकते। इत्यादि।

३. जिस शब्द के कहने से पदार्थ में पाये जानेवाले किसी धर्म (गुण, अवस्था या व्यापार) का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे–लड़कपन, शीतलता, उष्णता, लम्बाई, चढ़ाव, इत्यादि।

प्रत्येक पदार्थ में कोई न कोई धर्म अवश्य पायाजाता है। लड़के में लड़कपन, जल में शीतलता, आग में उष्णता और किसी पदार्थ में लम्बाई रहती है। "कोई कोई धर्म कई पदार्थों में पायेजाते हैं। जैसे–लम्बाई, चौड़ाई, मुटाई, आकार, इत्यादि।"

नोट–किसी पदार्थ का धर्म उससे अलग नहीं रह सकता, अर्थात् हम यह नहीं कह सकते कि यह लड़का है और वह लड़के का लड़कपन, यह जल है और वह जल की शीतलता, इत्यादि। तौभी हम अपनी कल्पनाशक्ति द्वारा परस्पर सम्बन्ध रखनेवाली भावनाओं को अलग कर सकते हैं। हम जल के और और धर्मों की भावना न कर केवल उसकी शीतलता की भावना मन में ला सकते हैं और इसे किसी दूसरे पदार्थ (जैसे–पाला)

की भावना के साथ मिला सकते हैं।

४. जिस शब्द के कहने से बहुत से पदार्थों के एक समूह का बोध हो उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—भीड़, सभा, झुंड, गुच्छा, मेला, इत्यादि।

५. जिस शब्द के कहने से किसी द्रव्य का बोध हो उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे—पानी, दूध, घी, आटा, सोना, इत्यादि। व्यवहार में इन द्रव्यों को नापते या तौलते हैं।

नोट—संज्ञाओं के पाँच भेद हिन्दी और अंगरेजी भाषाओं का एकीकरण करके कियेगये हैं, परन्तु समूहवाचक और द्रव्यवाचक वास्तव में जातिवाचक ही के अन्तर्गत हैं।

विशेषता—

कुछ जातिवाचक संज्ञाएँ प्रयोग में व्यक्तिवाचक के समान आती हैं। जैसे—पुरी (जगन्नाथ), देवी (दुर्गा), दाऊ (बलदेव), संवत् (विक्रमी संवत्), इत्यादि। कुछ उपनाम के शब्द—सितारेहिन्द (राजा शिवप्रसाद), भारतेन्दु (बाबू हरिश्चन्द्र), गुसाईं जी (गोस्वामी तुलसीदास), दक्षिण (दक्षिणी हिन्दुस्तान), इत्यादि। कुछ योगरूढ संज्ञाएँ—गणेश, हनुमान, हिमालय, गोपाल, इत्यादि।

कभी कभी व्यक्तिवाचक संज्ञा व्यक्तिविशेष के गुण की प्रसिद्धि के कारण उस गुण के रखनेवाले सब पदार्थों के लिये आती है, ऐसी अवस्था में वह जातिवाचक हो जाती है। जैसे—'अल्प्स यूरोप का हिमालय है। शेक्सपियर यूरोप के कालिदास थे।' इन वाक्यों में हिमालय का अर्थ है 'ऊँचा पहाड़' और कालिदास का अर्थ 'महाकवि'। इसलिये यहाँ इनको व्यक्तिवाचक न कहकर जातिवाचक कहेंगे।

व्यक्तिवाचक, भाववाचक, समूहवाचक और द्रव्यवाचक का बहुवचन नहीं होता। जब इनका प्रयोग बहुवचन में होता है तब ये संज्ञाएँ जातिवाचक होजाती हैं। जैसे—मेरे वर्ग में तीन राम हैं पानीपत में तीन लड़ाइयां हुईं। दोनों सेनाओं में यह समाचार फैलगया। तेली के पास भिन्न भिन्न प्रकार के तेल बिकते हैं। आश्चर्य है कि छोटी मोटी कृपाएँ मन को मुग्ध करलें! उनकी

नानतोड कोशिशें प्रजा को मनुष्यकोटि में लाने का यत्न कर रही हैं। उसके आगे सब रूपवती स्त्रियाँ निरादर हैं। ये सब कैसे अच्छे पहिरावे हैं।

नोट–'गुप्तों की शक्ति क्षीण होने पर यह स्वतन्त्र होगया था।' इस वाक्य में 'गुप्तों' शब्द से अनेक का बोध होने पर भी वह व्यक्तिवाचक संज्ञा है, क्योंकि उस से कुछ व्यक्तियों के एक विशेष समूह का बोध होता है।

भाववाचक शब्द तीन प्रकार से बनते हैं—

१. संज्ञा से—लड़का–लड़कपन, शत्रु–शत्रुता, मनुष्य–मनुष्यत्व, मित्र–मित्रता, चोर–चोरी, इत्यादि।

२. विशेषण से—मीठा–मिठास, गर्म–गर्मी, बुद्धिमान्–बुद्धिमानी, सरल–सरलता, मूर्ख–मूर्खता, इत्यादि।

३. क्रिया से–लड़ना–लड़ाई, दौड़ना–दौड़, मारना–मार, कूदना–कूद, लेना देना–लेनदेन, इत्यादि।

अभ्यास।

१. व्युत्पत्ति के विचार से संज्ञाओं के कितने भेद हैं? प्रत्येक के दो दो उदाहरण दो। २. अर्थ के विचार से संज्ञाओं के कितने भेद हैं? प्रत्येक की परिभाषा कहो। ३. व्यक्तिवाचक संज्ञा, जातिवाचक कब होती है? उदाहरण दो। ४. पांच उदाहरण ऐसे दो, जिनसे जानपड़े कि प्रयोग में जातिवाचक संज्ञाएँ भी व्यक्तिवाचक होती हैं। ५. किन किन संज्ञाओं का बहुवचन नहीं होता। ६. 'ये सब कैसे अच्छे पहिरावे हैं!' इस वाक्य में 'पहिरावे' कौन संज्ञा है? ७. भाववाचक शब्द किन किन शब्दभेदों से बनते हैं उदाहरण दो।

संज्ञाओं के हेरफेर (Inflections of Nouns).

लिङ्ग, वचन और कारक इत्यादि के कारण प्रायः संज्ञा के रूप और अर्थ में विकार होजाते हैं। जैसे–घोड़ा–घोड़ी, घोड़ा-घोड़े, घोड़े ने–घोड़ों ने, घोड़ी ने, घोड़ियों ने, इत्यादि।

लिङ्ग उसे कहते हैं जिससे पुरुष या स्त्री का ज्ञान हो। जैसे-घोड़ा (पुरुष)–घोड़ी (स्त्री)।

बचन उसे कहते हैं जिससे एक या अनेक का ज्ञान हो। जैसे–घोड़ा (एक)–घोड़े (अनेक), घोड़ी (एक) घोड़ियाँ (अनेक)।

कारक उसे कहते हैं जो क्रिया की उत्पत्ति में सहायक हो अर्थात् जो किसी शब्द का सम्बन्ध क्रिया से बतावे। जैसे–घोड़े ने खाया। घास को खाया। खेत में खाया।

रूपों में विकार या हेरफेर होजाने के कारण कुछ संज्ञाएँ विकृत होजाती हैं और कुछ अविकृत ही रहती हैं। जैसे–घोड़े ने खाया। पिता ने पुकारा। (आगे शब्दों की रूपावली देखो)।

लिङ्ग (Genders).

लिङ्ग दो हैं–पुल्लिङ्ग * और स्त्रीलिङ्ग।

पुरुषजातिबोधक शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीजातिबोधक शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे–घोड़ा (पुल्लिङ्ग) और घोड़ी (स्त्रीलिङ्ग)।

संस्कृत तथा अन्य कई भाषाओं में तीन लिङ्ग होते हैं—पुल्लिङ्ग, स्त्रीलिङ्ग और नपुंसकलिङ्ग, परन्तु हिन्दी में नपुंसकलिङ्ग इसलिये नहीं माना जाता कि इस भाषा में सब सजीव निर्जीव पदार्थों के लि व्यवहारानुसार पुल्लिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग के अन्तर्गत हो जाते हैं।

जिन जीवधारियों के जोड़े होते हैं उनके लिङ्ग जानने में कठिनता नहीं होती। जैसे–घोड़ा (पु०)–घोड़ी (स्त्री०) पुरुष (पु०)–स्त्री (स्त्री०), नर (पु०)–नारी (स्त्री०) (आगे स्त्रीप्रत्यय देखो)।

जोड़ेवाले शब्दों को छोड़ शेष शब्दों के लिङ्गसूचक नियम नीचे दिये गये हैं।

---

* शुद्ध संस्कृत 'पुंलिङ्ग' है।

पुल्लिङ्ग होते हैं—

१. थोड़े से प्राणिवाचक शब्द—

चीलर, तीतर, नीलकण्ठ, बेंग, झींगुर, काग, भेड़िया, छुछुँदर, कौआ, चीता, झिंगा, पक्षी, पंछी, पिल्लु, आदि ।

नोट–(१) नीचे लिखे शब्द दोनों लिङ्गों केलिये हैं, परन्तु पुल्लिङ्ग ही बोले जाते हैं—

वछरू (बाछा, बाछी), पठरू (पाठा–पाठी), शिशु (लड़का–लड़की), कुतरू (कुत्ता–कुत्ती), दम्पति (पति–पत्नी), परिवार, इत्यादि ।

(२) बुलबुल शब्द पुल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग दोनों में बोलाजाता है ।

२. मटर, उर्द, जौ, गेहूँ, धान, बूट, चना, गन्ना, तिल, धनिया, नींबू, इत्यादि ।

३. संस्कृत के नपुंसक और पुल्लिङ्ग शब्द ।

अपवाद–जय, देह, सन्तान, प्रारब्ध, वास, गन्ध, दाह, सौगन्ध, शपथ, तान, औषध, इन्द्रिय, पुस्तक, उपाधि, राशि, विधि, मृत्यु, ऋतु, वस्तु, आय, इत्यादि स्त्रीलिंग हैं ।

वैकल्पिक–विनय, विजय, समाज, तरङ्ग, सामर्थ्य, कुशल, वायु, पवन, अग्नि, इत्यादि शब्द प्रयोग में स्त्रीलिङ्ग और पुल्लिङ्ग दोनों हैं ।

४. अकारान्त और आकारान्त शब्द*—

कीचड़, बाल, बैल, मुँह, कन्धा, जाड़ा, पहिया, इत्यादि ।

अपवाद–(१) बाँस, आँच, बाँह, आँव, बूँद, सौंह, आँख, दूब, मीच, नाक, साँस, लहर, सड़क, घास, दाल, हींग, मिर्च, ईंट, लार, कींच, भौंह मूँछ, काँख, शक्कर, इत्यादि स्त्रीलिङ्ग हैं । +

---

* इस नियम में संस्कृत के नपुंसक और पुल्लिङ्ग से बने तद्भव शब्द भी रक्खेगये हैं ।

+ स्त्रीलिङ्ग शब्दों की सूची आगे देखो ।

(२) लघुतासूचक **इया** प्रत्ययान्त शब्द स्त्रीलिङ्ग होते हैं। जैसे—डिबिया, पिढ़िया, हँड़िया, खटिया, पटिया, इत्यादि ।+

(३) संस्कृत में आत्मन्, महिमन् इत्यादि शब्द पुलिङ्ग हैं। इन से बने **आत्मा, महिमा** इत्यादि शब्द हिन्दी में स्त्रीलिङ्ग व्यवहृत हैं, परन्तु कोई कोई आत्मा को पुलिङ्ग भी लिखते हैं।

५. प्रायः उर्दू ढंग के आबभागान्त, बकारान्त और शकारान्त शब्द—गुलाब, जुलाब, हिसाब, कबाब, ख़िज़ाब, जवाब, पेशाब, नसीब, मज़हब, मतलब, ताश, गोश, ग़श, जोश, इत्यादि।

अपवाद—शराब, किताब, राब, मिहराब, तलब, किमखाब, तर्कीब, दाब, शब, इत्यादि स्त्रीलिङ्ग हैं।+

६. आव, त्व, पन, पा, आपा, पना और य प्रत्ययान्त शब्द—चढ़ाव, मनुष्यत्व, लड़कपन, बुढ़ापा, गुंडपना, राज्य।

७—पहाड़ों, ग्रहों, दिनों, महीनों, नगों और धातुओं के नाम-विंध्य, चन्द्रमा, सोमवार, वैसाख, नीलम, सोना, इत्यादि।

अपवाद—धातुओं में चांदी और पीतल स्त्रीलिंग हैं।

इ, ई, ऋ, ॠ, ऌ और ॡ को छोड़ शेष अक्षरों के नाम।

९. स्त्रीलिङ्ग होते हैं—

१. थोड़े से प्राणिवाचक शब्द।

लीख, उड़िस, चील, भेड़, बटेर, कोयल, मैना, हिल्सा, दीमक, श्यामा, चिड़िया, जूँई, तूती, जूँ, जोंक, इत्यादि।

नोट—'सन्तान' शब्द दोनों लिङ्गों के लिये है, परन्तु प्रायः स्त्रीलिङ्ग ही लिखाजाता है।

२. मिर्च, मूंग, अरहर, गाजर, दाख, सरसों, घिया, इत्यादि।

३. संस्कृत के स्त्रीलिङ्ग शब्द—

+ स्त्रीलिङ्ग शब्दों की सूची आगे देखो।

दया, कृपा, आशा, माला, माया चन्द्रिका, इत्यादि।

अपवाद–' तारा और देवता ' प्रयोग में पुल्लिङ्ग हैं।

४. अरबी के आकारान्त और ' त फ् अ ई ल ' के वजन वाले शब्द—

जमा, हवा, दग़ा, सज़ा, दवा, दुआ, हया, खता, बला, रज़ा, क़ज़ा, अदा, ग़िज़ा, वफ़ा, तमन्ना, कीमिया, दुनिया, तस्वीर, तद्बीर, तर्कीब, तफ़सील, तक्सीर, तहरीर, इत्यादि।

अपवाद–ताबीज पुल्लिङ्ग है।

५. ईकारान्त, तकारान्त तथा आस और इशभागान्त शब्द–

रोटी, चिट्ठी, रात, छत, गत, पत, तान, नौबत, दौलत, यास, आस, मिठास, उँचास, कोशिश, बख्शिश, इत्यादि।

अपवाद–पानी, घी, दही, जी, मोती, भात, दाँत, गात, गीत, मूत, सूत, शर्बत, वक्त, दरख्त, सुबूत, कौत, खत, खिलअत, गश्त, गोश्त, दस्तखत, बन्दोबस्त, निकास, तख्त, भूत, प्रेत, इत्यादि पुल्लिङ्ग हैं।

६. आई, ता, वट, हट, न और कृदन्तीय शून्य प्रत्ययान्त शब्द–

लड़ाई, मित्रता, बनावट, चिकनाहट, कतरन, चालचलन, चलन, उलझन, चमक, पकड़, पूछ, मारपीट, चालढाल, इत्यादि।

नोट–' चालचलन ' को कोई कोई पुल्लिङ्ग भी लिखते हैं।

अपवाद–खेल, बिगाड़, बोझ, बोल, इत्यादि पुल्लिङ्ग हैं।

७. तिथियों, नदियों और नक्षत्रों के नाम—

परिवा, दूज, तीज, गंगा, यमुना, अश्विनी, भरणी, इत्यादि।

अपवाद–पुनर्वसु, पुष्य, हस्त, मूल, पूर्वाषाढ़ और उत्तराषाढ़ ' नक्षत्र पुल्लिङ्ग हैं।

८. इ, ई, ऋ, ॠ, ऌ और ॡ अक्षरों के नाम।

९. पुल्लिङ्ग नियमों के अपवादवाले शब्द।*

---

* व्यवहार में आनेवाले स्त्रीलिङ्ग शब्दों की एक बड़ी सूची आगे दी गई है।

नोट–१. यौगिक शब्द का लिङ्ग उसके अन्तिम खण्ड के अनुसार होता है। जैसे–पाठशाला (स्त्रीलिङ्ग), दयासागर (पुलिङ्ग), इत्यादि।

अपवाद–परमात्मा, महात्मा, इत्यादि पुल्लिङ्ग हैं।

नोट–यदि यौगिक शब्द का अन्तिम खण्ड अव्ययसूचक हो तो उसका लिङ्ग प्रथमखण्ड के अनुसार रखते हैं *। जैसे–आज्ञानुसार (स्त्रीलिङ्ग), शिक्षानिमित्त (स्त्रीलिङ्ग), प्रश्नानुसार (पुलिङ्ग), इत्यादि।

२. अङ्गरेज़ी के बहुतसे शब्द हिन्दी में आये हैं, जिन में बोतल, डेस्क, इंजन, लालटेन, पेन्सिल, रिपोर्ट, रेल, लैम्प, कांग्रेस, कान्फरेन्स और लिस्ट इत्यादि स्त्रीलिङ्ग हैं।

३. जो शब्द दोनों लिङ्गों में बोला जा सके उसे स्त्रीलिङ्ग और जिस के लिङ्ग में सन्देह हो उसे पुलिङ्ग बोलना उचित है।–(सितारे हिन्द)।

☞ अप्राणिवाचक शब्दों के लिङ्गों के लिये कोई नियम ठहराना बहुत ही कठिन है। ऊपर जितने नियम दियेगये हैं वे केवल पथप्रदर्शन के लिये हैं। यदि लिङ्गज्ञान भलीभाँति प्राप्त करना चाहो तो अच्छे अच्छे लेखकों की पुस्तकें पढ़ाकरो। पढ़ने के समय वाक्यों के शब्दों को जाँचाकरो कि किस लिङ्ग में कौन शब्द आया है।

पुल्लिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के नियम। +

१. अकारान्त या आकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों में ई लगाने से–देव–देवी, नर–नारी, घोड़ा–घोड़ी, साधु–साध्वी, अच्छा–अच्छी, तेरा–तेरी।

२. 'वा' प्रत्ययान्त पुल्लिङ्ग शब्दों में इया लगाने से–कुतवा (कुत्ता)–कुतिया, बुढ़वा (बुड्ढा, बूढ़ा)–बुढ़िया, घोड़वा (घोड़ा)–घोड़िया, बछवा (बच्छा) बछिया।

---

* कुछ यौगिक शब्दों के लिङ्गों के लिये 'समासप्रयोग' देखो।

+ ये नियम प्रायः उन्हीं प्राणिवाचक शब्दों में लगते हैं जिनके जोड़े हैं।

३. प्रायः व्यापारवाची पुल्लिङ्ग शब्दों में इन लगाने से-
ग्वाला-ग्वालिन, तेली-तेलिन, चमार-चमारिन, लुहार-लुहारिन, अहीर-अहीरिन, इत्यादि ।

अन्य शब्द-ऊँट-ऊँटिन, बाघ-बाघिन, हंस-हंसिन, इत्यादि ।

नोट-(१) कुँजड़न, दुलहन, कसेरन, इत्यादि प्रयोग उर्दू के विद्वान करते हैं ।

(२) अहीरिन और चमारिन के लिये अहीरी और चमारी शब्द भी मिले हैं ।

(३) बोलचाल में लुहारिन और चमारिन के बदले लोहइन और चमइन की प्रधानता है ।

४. कुछ शब्दों में नी लगाने से—
ऊँट-ऊँटनी, सिंह-सिंहनी, चोर-चोरनी, विजयी-विजयिनी । हाथी-हथिनी, इत्यादि ।

५. कई उपनामवाची शब्दों में आइन लगाने से—
चौबे-चोबाइन, पंडा-पंडाइन, ठाकुर-ठकुराइन, इत्यादि ।

६. कई उपनामवाची तथा थोड़े से अन्य पुल्लिङ्ग शब्दों में आनी लगाने से—
ठाकुर-ठकुरानी, खत्री-खत्रानी, पण्डित-पण्डितानी, देवर-देवरानी, मामू-ममानी, चाचा-चचानी, जेठ-जेठानी, इत्यादि।

नोट-बोलचाल में ममानी और चचानी के बदले मामी और चाची की प्रधानता है ।

७. संस्कृत के कई पुल्लिङ्ग शब्दों में आ लगाने से—
बाल-बाला, पाठक-पाठिका, बालक-बालिका, नायक-नायिका, प्रिय-प्रिया, प्रियतम-प्रियतमा, पूज्य-पूज्या, इत्यादि ।

नोट-नायिका के समान नायिकी का प्रयोग भी भारतेन्दु ने किया है ।

८. अनियमित—
पिता-माता, बाप-मा, राजा-रानी, बैल या साँड़-गाय,

भाई–भाभी या भौजाई, *ससुर–सास, पुरुष–स्त्री, बेटा–पतोहू या बहू, दामाद–बेटी, मियाँ–बीबी, साहेब–मेम या बीबी।

नोट–(१) 'रानी' राना शब्द का स्त्रीलिङ्गरूप जानपड़ता है। यह भी संभव है कि यह राज्ञी शब्द का अपभ्रंश हो।

(२) यदि **साहेबशब्द** आदरार्थ किसी अन्यशब्द के अन्त में मिलायाजाय तो उसका स्त्रीलिङ्ग रूप **'साहिबा'** होगा। जैसे–राजा**साहेब**बनारस गये। रानी**साहिबा** महल में हैं।

(३) साँड़िनी = ऊँटनी।

९. थोड़ेसे अप्राणिवाचक आकान्त पुल्लिङ्ग शब्दों में 'इया' लगाने से—

डिब्बा–डिबिया, पीढ़ा–पिढ़िया, लोटा–लुटिया, इत्यादि

स्त्रीलिङ्ग से पुल्लिङ्ग बनाने के नियम।

१. कतिपय प्राणिवाचक स्त्रीलिङ्ग शब्दों में ओई, आ और आव लगाने से—

बहन–बहनोई, ननद–ननदोई, राँड–रंडा, भैंस–भैंसा, बिल्ली–बिलाव।

२. कतिपय अप्राणिवाचक स्त्रीलिङ्ग शब्दों में आ, अ और औटा लगाने से—

पोथी–पोथा, गाड़ी–गाड़ा, लकड़ी–लकड़ा, अधन्नी–अधन्ना, गठड़ी–गट्ठड़, लकड़ी–लक्कड़, टिकड़ी–टिक्कड़, सिल–सिलौटा, इत्यादि।

व्यवहार में आनेवाले स्त्रीलिङ्ग शब्द।

अकारान्त शब्द—

अहेर, अकड़, अचकन, अटक, अदक, अधवाड़, अवेर, अजड़बलड़, अक्र, अफ़यून, (अफ़ीम), अफ़वाह, अमावस, अम्ल, अनबन, अपील, अरहर।

---

* 'भ्रातृजाया' शब्द का अपभ्रंश भौजाई और 'भ्रातृभार्या' का भाभी है।

आतश, आमद, आब, आवाज़, आस्तीन, आह, आपद, आँट, आड़, आन, आप, आँख, आँव, आवभाव, आशीस, आसिख। इलम। ईट, ईख। उशीर, उठवैठ, उड़ान, उतारन, उरेब, उलझन, उमीद, उम्र। ऊख। एड़, एवज़। ऐंठ। ओट, ओझल, ओप। औलाद। क़दर, कन्दील, कमर, कमान, कल, क़लक़, क़लम, कचक, कचकच, कचपच, कचमच, कतरन, कसर, कमीज, कसम, कान्फरेन्स, कांग्रेस, काँख, काटकूट, किमखाब, किताब, किशमिश, किवाड़, किरण, किरीच, कुल, कूक, कोयल, कोशिश, कौम, चेम। खरीद, खरभर, खबर, खल, खजार, खट, खटक, खाज, खातिर, खाज, खाल, खाट, खान, खिझ, खीर, खीज, खींच, खुशामद, खोर, खोंच, खोरिश। गच, ग़ज़ल, गपशप, ग़रज़ा, गर्ज, गर्द, गमक, गलबाँह, गवर्नमेंट, गहवर, गाज, गाँठ, गागर, गाजर, गुज़ार, गोद, गोलमिर्च, गंध। घाल, घास, घिन, घुमण्ड, घूस। चरब, चश्म, चलन, चशमक, चखचुख, चपरास, चपेट, चमक, चकाचक, चकाचौंध, चटक, चटशाल, चटाक, चट्टान, चसक, चहकार, चहलपहल, चाह, चाय, चास, चाट, चाल, चालचलन, चादर, चाप, चालढाल, चिट, चिल, चिलवन, चोल, चीज़ा, चुहल, चुरुट, चूक, चेन, चोट, चोंच, चौक, चौक, चंग। छटाँक, छठ, छड़, छलक, छलाँग, छाँछ, छाँट, छाँद, छाँटन, छान, छाप, छार, छींट, छींक, छूट, छेम, छेंक। जगह, ज़मीन, ज़बान, जड़ावर, जय, जलन, जान, जागीर, जायदाद, जाजिम, जाँघ, जाँच, जीभ, जेब, जोख। झकोर, झटास, झलक, झाँक, झाँझ, झाड़न, झालर, झाड़, झिझक, झिड़क, झिलम, झील, झूमक, झूल, झोंक। टक, टकसाल, टक्कर, टंकोर, टनक, टमक, टर, टसक, टहक, टाँक, टाँग, टाँड़, टाप, टाल, टीस, टूट, टूम, टेक, टेम, टेर, टेव, टोक, टोकटाक, टोल। ठठक, ठसक, ठिठक, ठिठुर, ठुनुक, ठेक, ठाँक, ठोकर, ठोर, ठौर, ठंढ, ठंढक। डकार, डग, डगर, डाक, डाढ़, डार, डाल, डाह, डाँट, डींग, डीठ, डोर। ढलक, ढार, ढाल, ढील, ढूँक, ढूक। तड़क, तड़प, तड़फ, तमक, तरंग, तरफ, तलवार, तस, तलछट, तहसील, तरफ, तकरार, तकलीफ़, तदबीर, तफ़सील, तर्ज, तर्कीब, तलब, तलाक़, तस्वीर, तहवील, तलाश, तकसीर, तनख़्वाह, तहरीर, ताक, तान, तातील, तारीख़ तारीफ़, तालीम, तुपक, तोंद, तोल। दखल, दलील, दपट, दरकार, दरगाह, दलक, दस्तावेज़, दाल, दाढ़, दामन, दाख, दाब, दाद, दिक, दीपक, दीठ, दुम, दूर, दूकान, देह, देखरेख

देर, दोज़ख, दोहर, दौड़, दौड़धूप। धधक, धमक, धरहर, धरोहर, धाँयधाँय, धाह, धाक, धाँधल, धुन, धूर, धूप, धूम, धौल। नकेल, नस, नक़ल, नज़र, नजीर, नज़्म, नक्श़ा, नख, नवेद, नस्ल, नसर, नाव, नास, नालिश, निकल, निछावर, निगाह, निमाज़ नींद, नेव, नेवार, नेयाज, नोकचोक, नोकझोंक। पकड़, पलटन, परेड, परवरिश, परवाह, पलक, पहुँच, परस, पहचान, पत्तल, परख, पह, पहल, पखाल, पचक, पछाड़, पजेव, पटकन, पढ़न, पतवार, पागुर, पायल, पाँत, पाग, पिस्तौल, पीनक, पीच, पीठ, पीब, पीर। पुलिस, पुरसिश, पुस्तक, पुकार पूछ, पूँछ, पेठ, पैठ, पैंठ, पोय, पो। फटकन, फड़, फब, फबन, फस्ल, फाँक, फाँट, फिकिर, फीस, फुनंग, फूंक, फूट, फूटन, फूहार, फेंक, फूंट, फोंक, फ़ौज। बक, बम, बहर, बहल, बहीर, बन्दूक, बकझक, बकबक, बटन, बत्रामीर, बहस, बख़्शिश, बतास, बर्फ़, बगल, बाँक, बाँह, बाग, बाछ, बाड, बाढ़, बान, बार, बारूद, बालछड़, बास, बाग़डोर, बिकाव, बिध, बिलबन्द, बिलावल, बिहनौर, बीट, बोन, बुहारन, बुनियाद, बूँद, बूझ, बेन, बैठक, बैग, बोतल, बौछार, बन्धेज। भगेल, भड़क, भस्म, भर, भनक, भरमार, भाँवर, भाँग, भाफ, भीख, भीड़, भूख, भूल, भेंट, भूंस। मचक, मटक, मड़न, मरिच, मरोड़, मलार, मसक, महक, मदद, मसजिद, मसनद, महताब, मलमल, मंजिल, मजलिस, मार्ग, माँद, मालिश, मार, मिठास, मिर्च, मिस्ल, मीच, मीयाद, मीज़ान, मीनार, मुहिम, मुराद, मुश्किल, मुहनाल, मुश्क, मुहर, मूँग, मूँछ, मूँज, मेंड, मेहराब, मेज, मेख, मेक़दार, मेक़राज, मोच, मोज़, मंजिल। याद। रगड़, रपट, रसीद, रहकल, रहट, रहन, रहाइस, रसद, रकम, रग, रविश, राख, राव, राल, रान, रास, राह, राय, रिस, रिपोर्ट, रीझ, रीढ़, रीस, रुच, रूह, रूबकार, रेंट, रेंड, रेख, रेल, रेलपेल, रेह, रोक, रोकड़, रोकन, रोर, रंग,। लकीर, लचक, लट, लटक, लड़, लताड़, लप, लपक, लपट, लपेट, लपेटझपेट, ललक, लहक, लहकावर, लहर, लहरबहर, लश, लगाम, लाज, लाद, लार, लाश, लाठ, लाह, लाग, लिम, लीक, लीद, लीर, लू, लूक, लूख, लूह, लेव, लोटन, लोथ, लौंग। वयस, वजह, वार, विध, विजय। शक्ल, शमशेर, शर्म, शरह, शव, शराब, शक्कर, शरण। शाल, शाम, शाहरा, ह, शिकार। सकुच, सज, सटक, सटल, सटासट, सड़क, सड़न, समझ, समेट, सरकार, सम्हाल, सहन, समाद, सनद, सतह, सलाह, साँक, साँकर, साँग, साँझ, साख, साथ, सान, साँस, साजिश, सिनक, सिरफोड़ौवल,

सिफ़ारिश, सींक, सीख, सीम, सुगन्ध, सुड़कन, सुड़प, सुध, सुरंग, सुबह, सुलह, सूज, सूझ, सूँड़, सूजन, सेंध, सैन, सोंह, सोच, सोंठ, सौंफ, सौगन्ध, सौंह। हड़, हरावल, हलचल, हद, हाँफ, हाट, हिर्स, हीक, हींग, हैकल, होड़, हौल, हौस।

आकारान्त शब्द—

अदा, अँगिया, अँटिया, अढ़ैया, अर्घा। आत्मा। इस्तिफ़ा। उखड़ा। कज़ा, कगारा, कटिया, कठोलिया, किरिया, कीला, कीमिया, कुटिया, कुल्हिया। खता, खटिया, खड़िया, खड़खड़िया, खूँटा। गठिया, गुड़िया, गुफा, गुजिया, गुटका, गोखा। घँघरा, घटा। जमा, जँघिया। झल्ला। टिकिया। ठिलिया, ठीका। डिबिया। तकिया, तमन्ना, तुतिया, तौलिया, थचिया। दफा, दवा, दगा, दुनिया, दोआ। धोंका। नरिया। पगिया, पटिया, पुड़िया, पिढ़िया। फलियाँ, फरिया। बाहवा बला, बिरिया बुँदिया। मनसा, मलिया, मचिया, मड़ैया, मिर्चा। वफा। लूका। राजा, रुटिया, रांचा, रुविया। शलूका, शमा। हवा, हवासा।

अन्य स्वरान्त शब्द—

अपमृत्यु, आयु, कुहु वायु, वेणु, आवरू, आरज़ू, झाड़ू, खड़ाऊँ, खूँ, गुफ़्तगू, तराज़ू, बालू, बू, हूँ, कूँ, सेवें, जें, सरसों, गो, दाओ, टेओ, अधगो, पतियारो, भौं, गौं, कादौं, परचों, इत्यादि।

अभ्यास।

१. लिङ्ग कितने हैं? २. संस्कृत शब्दों के लिङ्ग कैसे जाने जाते हैं? ३. जोड़ेवाले शब्दों को छोड़ शेष में पुल्लिङ्ग शब्दों के पहचानने के कौन कौन नियम हैं? ४. पाँचप्राणिवाचक शब्दों को कहो, जो सदा स्त्रीलिङ्ग ही बोलेजाते हैं। ५. यौगिक शब्दों के लिङ्ग कैसे जानेजाते हैं? ६. प्राणिवाचक पुल्लिङ्ग शब्दों से स्त्रीलिङ्ग बनाने के कौन कौन नियम हैं? ७. स्त्रीलिङ्ग से पुल्लिङ्ग बनाने के कौन कौन नियम हैं? उदाहरण दो। ८. पाँच ऐसे शब्द कहो, जो दोनों लिङ्गों में बोलेजाते हों। ९. नीचे लिखे शब्दों के लिङ्ग बताओ–

उड़िस, झींगुर, दीमक, बुलबुल, तारा, दाख, हवा, निकास, तिल, तान, समाज, जाड़ा, घास, पीतल, नीलम, छत, काँख, मिठास, किताब, चिराग़, गन्ध।

वचन (Numbers).

वचन दो हैं-एकवचन और बहुवचन।

शब्द के जिस रूप से एक पदार्थ का बोध होता है उसे एकवचन कहते हैं। जैसे-लड़का आता है। दासी काम करती है।

शब्द के जिस रूप से एक से अधिक पदार्थों का बोध होता है उसे बहुवचन कहते हैं। जैसे-लड़के आते हैं। दासियाँ काम करती हैं।

अपने लिये और आदर में भी बहुवचन का प्रयोग होता है। जैसे-पण्डितजी आये। हम गये।

बहुतसे शब्द ऐसे हैं जिनके रूप एकवचन और बहुवचन में एकसे रहते हैं। इसलिये उन शब्दों के आगे लोग, गण, सब, जाति, वर्ग और जन' इत्यादि शब्द लगाकर बहुवचन बनालेते हैं। जैसे-ब्राह्मणलोग, बालकगण, गुरुजन, बन्धुवर्ग, इत्यादि।

नोट-'स्त्रीलोग' लिखना उचित नहीं, क्योंकि 'लोग' शब्द पुल्लिङ्ग है और इसका स्त्रीलिङ्ग 'लुगाई' है।

वाक्य में किसी संज्ञा का वचन, विशेषण और क्रिया से भी जानाजाता है। जैसे-अच्छा बालक आया। अच्छे बालक आये। बालक आया, बालक आये।

जातिवाचक संज्ञा के बहुवचन में भी एकवचन का प्रयोग होता है। जैसे-घोड़ा बली पशु है। यहाँ घोड़ा शब्द से सब घोड़ों का बोध होता है। 'घोड़े बली पशु हैं' ऐसे वाक्य भी प्रयोग में हैं।

यदि कोई शब्द ही बहुवचनबोधक हो तो उसका बहुवचन नहीं बनाना चाहिये। जैसे-मेरे भोजन की सामग्री खरीदो।

जाने की तैयारी करो। ऐसी जगह सामग्रियाँ और तैयारियाँ लिखना उचित नहीं, परन्तु भिन्नता के अर्थ में बहुवचन भी लिख सकते हैं। जैसे- दोनों सेनाओं में लड़ने की तैयारियाँ होने लगीं।

नोट-' बहुवचन के चिन्ह ' आगे ' रूपरचना ' में दियेगये हैं।

कारक (Cases).

क्रिया की उत्पत्ति में छः प्रकार के सहायक हैं—

१. जो काम करे उसे कर्त्ता कहते हैं। जैसे-राम पुस्तक पढ़ता है। राम ने पुस्तक पढ़ी। राम से पुस्तक पढ़ीगई। रानी से बैठा नहीं जाता।

कर्त्ता के तीन चिन्ह हैं-शून्य, ने, से।

नोट-शून्य चिन्ह से तात्पर्य चिन्हरहित का है।

कर्त्ता दो प्रकार के होते हैं-प्रधान और अप्रधान। वाक्य में यदि क्रिया के लिङ्ग वचन कर्त्ता के अनुसार हों तो वह कर्त्ता प्रधान (उक्त) कहलाता है। जैसे-राम पुस्तक पढ़ता है। सीता ग्रन्थ पढ़ती है। यदि क्रिया के लिङ्ग वचन कर्त्ता के अनुसार न हों तो उसका कर्त्ता अप्रधान (अनुक्त) कहलाता है। जैसे-राम ने पुस्तक पढ़ी। राम से पुस्तक पढ़ीगई। रानी से बैठा नहीं जाता।

जिसकी प्रेरणा से क्रिया का व्यापार हो उसे प्रेरककर्ता और जो व्यापार करे उसे प्रेर्यकर्त्ता कहते हैं। जैसे-शिक्षक विद्यार्थी से पत्र लिखवाते हैं। इस वाक्य में ' शिक्षक ' प्रेरक और विद्यार्थी प्रेर्य है। (प्रेरक को प्रधान और प्रेर्य को अप्रधान में गिनते हैं।)

' ने और से ' अप्रधान कर्त्ता के चिन्ह हैं। *

२. जिस पर काम का फल हो उसे कर्म कहते हैं। जैसे-श्याम ने पुस्तक पढ़ी। राम ने सीता को पुकारा। किसे कहूँ ?

---

* उद्देश्य किस कारक में रहता है ? वाक्य प्रकरण में देखो।

कर्म के चिन्ह ये हैं—शून्य, को।

कर्म भी प्रधान और अप्रधान होते हैं। 'श्याम ने पुस्तक पढ़ी। श्याम से पुस्तक पढ़ीगई। इन वाक्यों में कर्म उक्त है, क्योंकि पुस्तक के अनुसार क्रियाएँ हैं।' 'राम दुष्टों को मारता है। सीता आम खाती है। इन वाक्यों में कर्म अनुक्त हैं, क्योंकि क्रियाएँ कर्त्ता के अनुसार हैं।'

कई सकर्मक क्रियाएँ दो कर्म लेती हैं। जैसे-उसने **राम को ग्रन्थ** दिखाया। मैंने **उसको एक रीति** बताई। ऐसी क्रिया का एक कर्म वस्तुबोधक और दूसरा प्राणिबोधक होता है। वस्तुबोधक को मुख्य कर्म और प्राणिबोधक को गौणकर्म + कहते हैं।

यदि किसी अकर्मक किया के साथ उसी के धातु से बना हुआ या उससे मिलताजुलता कोई कर्म आवे तो वह सजातीय कर्म कहलाता है। जैसे-राम प्रतिदिन एक लम्बी दौड़ दौड़ता है। मेरी सेना अच्छी लड़ाई लड़ती है।

३. जिसके द्वारा काम हो उसे करण कहते हैं। जैसे-बालक क़लम से लिखता है।

करण का चिन्ह 'से' है।

नोट—हेतु, द्वारा, कारण, पूर्वक, करके इत्यादि शब्दों के लगाने से भी करण कारक का अर्थ निकलता है। जैसे-आलस्य के हेतु राम नहीं पढ़ सका। ज्ञान द्वारा सुख मिलता है। दया के कारण वह परीक्षोत्तीर्ण हुआ। राम ने दया करके देखा।

अनेक स्थानों में करण का चिन्ह 'से' लुप्त भी रहता है। जैसे—न आँखों देखा न कानों सुना।

४. जिसके लिये काम कियाजाय उसे सम्प्रदान कहते हैं। जैसे-भूखे को अन्न और प्यासे को पानी दो।

+ गौणकर्म सम्प्रदान कारक में होता है, पर कहीं कहीं अपादान में भी। (यह बात आगे मिलेगी)।

सम्प्रदान का चिन्ह ' को ' है।

नोट–केलिये, के अर्थ, के निमित्त इत्यादि शब्दों के लगाने से भी सम्प्रदान का अर्थ निकलता है। जैसे–विद्यार्थी केलिये पुस्तक खरीदो। ब्राह्मण के निमित्त कपड़े लाये हैं। धन के अर्थ कर्म करो।

५. जिस से कोई वस्तु अलग हो उसे अपादान कहते हैं। जैसे–पेड़ से पत्ते गिरते हैं। पहाड़ से नदियाँ निकलती हैं।

अपादान का चिन्ह ' से ' है।

नोट–सकर्मक क्रिया का गौणकर्म (ऊपर देखो) सम्प्रदान कारक में रहता है, परन्तु कहना, पूछना, दुहना, जाँचना, पकाना, इत्यादि क्रियाओं के साथ अपादान कारक में आता है। जैसे–उसने राम को ग्रन्थ दिखाया। राम ने मुझे एक रीति बताई। मैं तुम से (को) एक बात कहता हूँ। उसने आप से (को) क्या पूछा ? रसोइया चावल से भात पकाता है। दरिद्र धनी से धन जाँचता है। हम गाय से दूध दुहते हैं। अंतिम तीनों वाक्यों के बदले नीचे लिखे वाक्य भी प्रयोग में हैं–रसोइया चावल (को) पकाता है। दरिद्र धनी को जाँचता है। हम गाय को दुहते हैं।

६. आधार को अधिकरण कहते हैं। जैसे–लोटे में जल है। वह घर में है। वह चटाई पर बैठा है।

अधिकरण के चिन्ह ' में ' और ' पर ' हैं।

नोट–को से भी अधिकरण का अर्थ लेते हैं। जैसे–राम हाट (को) गया। तुम कलकत्ते (को) गये।

आधार तीन प्रकार के हैं–औपश्लेषिक, वैषयिक और अभिव्यापक। (१) औपश्लेषिक उस आधार को कहते हैं जिसके किसी अवयव से संयोग हो। जैसे-वृक्ष पर पक्षी है। दरी पर बैठता है। वह घर में है। (२) वैषयिक वह आधार है जिस से विषय का बोध हो। जैसे–ईश्वर में मन लगा है। भोजन में चित्त लगा है। इन वाक्यों में मन का विषय ईश्वर और चित्त का विषय भोजन है। (३) अभिव्यापक वह आधार है जिस में आधेय × सम्पूर्ण

× आधेय = धरने योग्य पदार्थ, आधार का पूरक।

रूप से व्याप्त हो। जैसे-परमेश्वर सब में हैं। तिल में तेल है।

सम्बन्ध और सम्बोधन।

जो लगाव, स्वत्व या अपनापन का बोध करावे, उसे सम्बन्ध कहते हैं और जिसके साथ लगाव हो वह सम्बन्धी कहलाता है। जैसे-राम का बेटा, पीतल का लोटा, घड़े का जल, पाणिनि का व्याकरण।

सम्बन्ध का चिन्ह 'का' है।

किसी को पुकार या चिताकर अपनी ओर सावधान करने को सम्बोधन कहते हैं। जैसे-हे राम ! दया करो। अरे लड़के, कहाँ जाते हो ?

सम्बोधन के चिन्ह हे, अरे इत्यादि हैं। चिन्हरहित प्रयोग भी करते हैं। जैसे-मोहन ! आज इधर कहाँ ? सम्बोधन के चिन्ह दो प्रकार के हैं-आदरसूचक (हे राम), अनादरसूचक (अरे लड़के)।

नोट-सम्बन्ध और सम्बोधन का क्रिया के साथ सम्बन्ध नहीं है, इसलिये इन्हें संस्कृत के वैयाकरणों ने कारक नहीं माना है। भाषाभास्कर, भाषाप्रभाकर आदि पुस्तकों में ये कारक मानेगये हैं।

अभ्यास।

१. कारक कितने हैं? २. 'सम्बन्ध और सम्बोधन' कारक हैं या नहीं ? कारण बताओ। ३. आधार कितने प्रकार के हैं ? उदाहरण दो। ४. 'से' किस कारक का चिन्ह है ? उदाहरण दो। ५. कर्म और सम्प्रदान में क्या भेद है ? ६. कर्त्ता कितने प्रकार के होते हैं ? उदाहरण दो। ७. प्रेरक और प्रेर्य में क्या भेद है ? ८. सजातीय कर्म के दो उदाहरण दो। ९. दो उदाहरण दो, जिन में कारकों के चिन्हलुप्त हों। १०. 'स्त्रीलोग आई हैं।' क्या यह वाक्य शुद्ध है ? कारण बताओ। ११. गौण कर्म किस कारक में रहता है ?

संज्ञा के रूप (Declension of Nouns).

रूपों में हेरफेर होने के कारण संज्ञाएँ दो प्रकार की हैं—विकृत और अविकृत।

जिस स्वरान्त संज्ञा का अन्तिम स्वर कारकादि के कारण बदलजाता है, वह विकृत कहलाती है। जैसे-लड़का पढ़ता है। लड़के ने पढ़ा। (ऐसी संज्ञाएँ प्रायः हिन्दी और फ़ारसी भाषाओं की होती हैं।)

जिस स्वरान्त संज्ञा का अन्तिम स्वर कारकादि के कारण नहीं बदलता वह अविकृत कहलाती है। जैसे-चन्द्रमा से शीतल प्रकाश पाते हैं। चन्द्रमा में भी कलङ्क है। (ऐसी संज्ञाएँ प्रायः संस्कृत और अरबी भाषाओं की होती हैं।)

अविकृत आकारान्त शब्द—

१. संस्कृत के ऋकारान्त शब्दों से बने शब्द-पिता, माता, भ्राता, जामाता, दाता, इत्यादि।

२. संस्कृत के अन् प्रत्ययान्त शब्दों से बने शब्द-राजा, ब्रह्मा, आत्मा, इत्यादि।

३. संस्कृत के सकारान्त शब्दों से बने शब्द-चन्द्रमा, वेधा, इत्यादि।

४. संस्कृत की आकारान्त स्त्रीलिङ्ग संज्ञाएँ-सभा, माला, पाठशाला, दया, लता, आशा, निशा, इत्यादि।

५. सम्बन्धवाचक आकारान्त शब्द-बाबा, नाना, काका, चाचा, दादा, इत्यादि।

६. अरबी और फ़ारसी के कई शब्द-ख़ुदा, बला, हवा, सज़ा, कज़ा, दवा, इत्यादि।

७. कुछ स्थानवाचक शब्द-गया, एशिया, अफ्रिका, अमेरिका, इत्यादि।

नोट-(१) राजा, महाराजा, पाठशाला, देवता, तारा+इत्यादि शब्द कहीं कहीं विकृत रूपों में भी मिलते हैं। इनमें **तारा** शब्द के विकृत रूप विशेष प्रचलित हैं। जैसे-देश देश के **राजे** आये। **महाराजों** की कौन चलावे! मैं सब **पाठशालों** को देखचुका। **देवतों** के ध्यान में भी जो नहीं आता कभी। **तारे** निकल आये।

(२) दादा, दुलहा, जरा, अदना, आला, इत्यादि शब्द वैकल्पिक हैं।

(३) बहुतसे स्थानवाचक शब्द विकृत हैं।

पटना, आरा, दर्भङ्गा, छपरा, कलकत्ता, इत्यादि।

(कोई कोई लेखक स्थानवाचक विकृत शब्द को भी अविकृत के समान व्यवहार करते हैं जिससे उसकी कोमलता नष्ट होजाती है, परन्तु यह उचित नहीं। अतएव 'छपरा मे आया। दरभङ्गा से गया। कलकत्ता में रहता है।' इत्यादि वाक्य अशुद्ध हैं।)

☞ **अन्य स्वरान्त शब्दों के विकृत और अविकृत प्रयोग आगे देखो।**

रूप बनाने की रीतियाँ।

१. संज्ञाओं के रूप-ने, को आदि चिन्हों के पहले—

(क) एकवचन संज्ञाओं में कुछ विकार नहीं होता।

अपवाद-आकारान्त विकृत संज्ञा का अन्त्य स्वर 'ए' से बदलजाता है। *

+तारा=नक्षत्र।

* (१) कुछ विकृत आकारान्त शब्दों का प्रयोग सम्बोधन के एकवचन में अविकृतसा होता है। जैसे-छिपे हो कौन से पर्दे में बेटा! रे बबुआ!

(२) कोई कोई लेखक हिन्दी में आये हुए संस्कृत के कतिपय तत्सम शब्दों के सम्बोधन एकवचन रूप संस्कृत ही के नियमानुसार रखते हैं। जैसे-हे भगवन्, हे, सीते, हे सखे, हे देवि, हे प्रभो, हे मातः, इत्यादि।

जैसे-बालक ने, बात ने, लड़के ने, चिड़िये ने, पिता ने, माता ने, हरि ने, तिथि ने, माली ने, देवी ने, भानु ने, धेनु ने, बाबू ने, बहू ने, दुबे ने, हरें ने, चौबे ने, जै ने, कोदो ने, सरसों ने, जौ ने, गो ने, इत्यादि (इसी प्रकार को, से, इत्यादि दूसरे चिन्ह भी लगाओ ।)

(ख) बहुवचन संज्ञाओं में ओं मिलाते हैं ।

(अकारान्त और विकृत आकारान्त संज्ञाओं के अन्त्य स्वरों के बदले तथा शेष संज्ञाओं के आगे ओं लाते हैं । ओं लगाने के पहिले दीर्घ ईकारान्त और ऊकारान्त संज्ञाओं के अन्त्य स्वरों को ह्रस्व करदेते हैं । दोनों इकारान्त के आगे ओं, यों से बदलजाता है । सम्बोधन में अर्द्धानुस्वार गिरपड़ता है । जैसे-

बालकों ने, बातों ने, लड़कों ने, चिड़ियों ने, पिताओं ने, माताओं ने, हरियों ने, तिथियों ने, मालियों ने, देवियों ने, भानुओं ने, धेनुओं ने, बाबुओं ने, बहुओं ने, दुबेओं * ने, हरेंओं ने, चौबेओं ने, जैओं ने, कोदोओं ने, सरसोंओं ने, जौओं ने, गोओं ने, इत्यादि । (इसी प्रकार को, से इत्यादि दूसरे चिन्ह भी लगाओ, परन्तु सम्बोधन में हे बालको, हे बातो, हे लड़को, हे चिड़ियो, हे पिताओ, हे देवियो इत्यादि रूप होते हैं ।)

☞ **यदि चिन्ह छिपा हो, परन्तु उस का संस्कार रहे तो भी एकवचन और बहुवचन में ऊपर ही के नियम लगते हैं । जैसे- न आँखों देखा न कानों सुना । बच्चा घुटनों चलता है । बालको, सत्य बोलो ।**

(२) संज्ञाओं के रूप-कर्ता और कर्म में, शून्यचिन्ह के पहले-

* कोई कोई एकारान्त और ओकारान्त संज्ञाओं के अन्त्य स्वरों के बदले भी ओं लाते हैं । जैसे-दुबों ने, हरों ने, कोदों ने, सरसों ने, इत्यादि । ऐसे रूपों से कभी कभी अकारान्त संज्ञाओं के रूपों का बोध होता है, इसलिये इन्हें त्यागना ही उचित है ।)

(क) एकवचन में कोई विकार नहीं होता। जैसे–बालक आता है। बात अच्छी है। मैं यह बात सुनता हूँ। इत्यादि।

(ख) बहुवचन में–१. पुल्लिङ्ग संज्ञाओं में कोई विकार नहीं होता, परन्तु विकृत आकारान्त का अन्त्य स्वर ए से बदल जाता है। जैसे–दो बालक आये हैं। दो लड़के आये हैं। मैं दो घोड़े बेचूँगा

२. स्त्रीलिङ्गसंज्ञाओं में एँ (अकारान्त और विकृत आकारान्त सञ्ज्ञाओं के अन्त्य स्वरों के बदले तथा शेष संज्ञाओं के आगे) लाते हैं। जैसे–बातें अच्छी हैं। मैं अच्छी बातें सुनता हूँ। तीनों धेनुएँ अच्छी हैं। दोनों बहुएँ चलीगईं। सब गौएँ चर रही हैं। मैं नाना प्रकार की लताएँ देखता हूँ। इत्यादि।

☞ ऊपर के नियमानुसार विकृत आकारान्त तथा दोनों ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के चिडियें, देविएँ, तिथिएँ इत्यादि बने हुए रूप प्रयोग में कदाचित् × ही आते हैं। उनके बदले चिड़ियाँ, तिथियाँ, देवियाँ, इत्यादि रूप प्रयोग में हैं।

नोट–अब यह भली भाँति समझ में आगया होगा कि एकवचन संज्ञाओं को बहुवचन बनाने में ए, एँ, ओं, यों, ओ, यो और याँ चिन्ह लगाये-जाते हैं।

रूपावली। +

(१) पुल्लिङ्ग शब्द।

अकारान्त पुल्लिङ्ग बालक शब्द।

	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	बालक, बालक ने	बालक, बालकों ने

× विशेषकर मुरादाबाद की ओर के कतिपय लेखक ऐसे रूप लिखते हैं।

+ ऊपर लिखी रीतियाँ समझ लेने पर रूपावली की आवश्यकता नहीं. परन्तु पूरी रूपावली दिखादेने की इच्छा से लिखते हैं।

	एकवचन	बहुवचन।
कर्म	बालक, बालक को	बालक, बालकों को।
करण	बालक से	बालकों से।
सम्प्रदान	बालक को	बालकों को।
अपादान	बालक से	बालकों से।
सम्बन्ध	बालक का,-की,-के	बालकों का,-की,-के
अधिकरण	बालक में,-पर	बालकों में,-पर।
सम्बोधन	(हे) बालक	(हे) बालको।

नोट—सभी अकारान्त पुलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

विकृत आकारान्त पुल्लिङ्ग घोड़ा शब्द।

कर्त्ता	घोड़ा, घोड़े ने	घोड़े, घोड़ों ने।
कर्म	घोड़ा, घोड़े को	घोड़े, घोड़ों को।
करण	घोड़े से	घोड़ों से।
सम्प्रदान	घोड़े को	घोड़ों को।
अपादान	घोड़े से	घोड़ों से।
सम्बन्ध	घोड़े का,-की,-के	घोड़ों का,-की,-के
अधिकरण	घोड़े में,-पर	घोड़ों में,-पर।
सम्बोधन	(हे) घोड़े	(हे) घोड़ो।

नोट—सभी विकृत आकारान्त पुलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं, परन्तु 'बेटा शब्द' का सम्बोधन एकवचन रूप अविकृत रहता है। जैसे—छिपे हो कौन से पर्दे में **बेटा** !

अविकृत आकारान्त पुल्लिङ्ग पिता शब्द।

कर्त्ता	पिता, पिता ने	पिता, पिताओं ने।
कर्म	पिता, पिता को	पिता, पिताओं को।
करण	पिता से	पिताओं से।
सम्प्रदान	पिता को	पिताओं को।
अपादान	पिता से	पिताओं से।

	एकवचन	बहुवचन ।
सम्बन्ध	पिता का,-की,-के	पिता का,-की,-के ।
अधिकरण	पिता में,-पर	पिताओं में,-पर ।
सम्बोधन	(हे) पिता	(हे) पिताओ ।

नोट—सभी अविकृत आकारान्त पुलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं परन्तु **राजा, महाराजा, देवता** और **तारा** शब्दों के विकृत रूप भी मिलते हैं। इनमें से **तारा** शब्द के विकृतरूप अधिक प्रचलित हैं। जैसे-देश देश के **राजे** आये। **महाराजों** की कौन चलावे ! **देवतों** के ध्यान में भी जो नहीं आता कभी। **तारे** निकल आये।

इकारान्त पुल्लिङ्ग मुनि शब्द ।

कर्त्ता	मुनि, मुनि ने	मुनि, मुनियों ने
कर्म	मुनि, मुनि को	मुनि, मुनियों को
करण	मुनि से	मुनियों से ।
सम्प्रदान	मुनि को	मुनियों को ।
अपादान	मुनि से	मुनियों से
सम्बन्ध	मुनि का,-की,-के	मुनियों का,-की,-के
अधिकरण	मुनि में,-पर	मुनियों में,-पर ।
सम्बोधन	(हे) मुनि	(हे) मुनियो ।

नोट—सभी इकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

ईकारान्त पुल्लिङ्ग माली शब्द ।

कर्त्ता	माली, माली ने	माली, मालियों ने
कर्म	माली, माली को	माली, मालियों को ।
करण	माली से	मालियों से ।
सम्प्रदान	माली को	मालियों को ।
अपादान	माली से	मालियों से ।

+ तारा = नक्षत्र ।

	एकवचन	बहुवचन।
सम्बन्ध	माली का,-की,-के	मालियों का,-की,-के।
अधिकरण	माली में,-पर	मालियों में,-पर।
सम्बोधन	(हे) माली	(हे) मालियो।

नोट–सभी ईकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

उकारान्त पुल्लिङ्ग गुरु शब्द।

कर्त्ता	गुरु, गुरु ने	गुरु, गुरुओं ने।
कर्म	गुरु, गुरु को	गुरु, गुरुओं को।
करण	गुरु से	गुरुओं से।
सम्प्रदान	गुरु को	गुरुओं को।
अपादान	गुरु से	गुरुओं से।
सम्बन्ध	गुरु का,-की,-के	गुरुओं का,-की,-के।
अधिकरण	गुरु में,-पर	गुरुओं में,-पर।
सम्बोधन	(हे) गुरु	(हे) गुरुओ।

नोट–सभी उकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

ऊकारान्त पुल्लिङ्ग डाकू शब्द।

कर्त्ता	डाकू, डाकू ने	डाकू, डाकुओं ने।
कर्म	डाकू, डाकू को	डाकू, डाकुओं को।
करण	डाकू से	डाकुओं से।
सम्प्रदान	डाकू को	डाकुओं को।
अपादान	डाकू से	डाकूओं से
सम्बन्ध	डाकू का,-की,-के	डाकुओं का,-की,-के।
अधिकरण	डाकू में, पर	डाकुओं में,-पर।
सम्बोधन	(हे) डाकू	(हे) डाकुओ।

नोट–सभी ऊकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

एकारान्त पुल्लिङ्ग चौबे शब्द।

कर्त्ता	चौबे, चौबे ने	चौबे, चौबेओं ने।

	एकवचन	बहुवचन ।
कर्म	चौवे, चौवे को	चौवे, चौवेओं को ।
करण	चौवे से	चौवेओं से ।
सम्प्रदान	चौवे को	चौवेओं को ।
अपादान	चौवे से	चौवेओं से ।
सम्बन्ध	चौवे का,-की,-के	चौवेओं का,-की,-के ।
अधिकरण	चौवे में,-पर	चौवेओं में,-पर ।
सम्बोधन	(हे) चौवे	(हे) चौवेओ ।

नोट– (१) सभी एकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं। (२) चौवों ने, चौवों को इत्यादि केलिये पीछे देखो ।

ऐकारान्त पुल्लिङ्ग बरैं शब्द ।

कर्त्ता	बरैं, बरैं ने	बरैं, बरैंओं ने।
कर्म	बरैं, बरैं को	बरैं, बरैंओं को ।
करण	बरैं से	बरैंओं से ।
सम्प्रदान	बरैं को	बरैंओं को।
अपादान	बरैं से	बरैंओं से।
सम्बन्ध	बरैं का,–की,--के	बरैंओं का,--की,--के ।
अधिकरण	बरैं में,--पर	बरैंओं में,--पर ।
सम्बोधन	(हे) बरैं	(हे) बरैंओ ।

नोट–(१) सभी ऐकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

ओकारान्त पुल्लिङ्ग कोदो शब्द ।

कर्त्ता	कोदो, कोदो ने	कोदो, कोदोओं ने ।
कर्म	कोदो, कोदो को	कोदो, कोदोओं को ।
करण	कोदो से	कोदोओं से ।
सम्प्रदान	कोदो को	कोदोओं को ।
अपादान	कोदो से	कोदोओं से ।
सम्बन्ध	कोदो का,--की,–के	कोदोओं का,-की,-के ।
अधिकरण	कोदो में,–पर	कोदोओं में,--पर ।

	एकवचन	बहुवचन ।
सम्बोधन	(हे) कोदो	(हे) कोदोओ ।

नोट-(१) सभी ओकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ।

(२) कोदो ने, कोदो को इत्यादि पीछे देखो ।

औकारान्त पुल्लिङ्ग जौ शब्द ।

कर्त्ता	जौ, जौ ने	जौ, जौओं ने
कर्म	जौ, जौ को	जौ, जौओं को ।
करण	जौ से	जौओं से ।
सम्प्रदान	जौ को	जौओं को ।
अपादान	जौ से	जौओं से ।
सम्बन्ध	जौ का,-की,-के	जौओं का,-की,-के ।
अधिकरण	जौ में,-पर	जौओं में,-पर ।
सम्बोधन	(हे) जौ	(हे) जौओ ।

नोट-सभी औकारान्त पुल्लिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ।

(२) स्त्रीलिङ्ग शब्द ।

अकारान्त स्त्रीलिङ्ग बात शब्द ।

कर्त्ता	बात, बात ने	बातें, बातों ने ।
कर्म	बात, बात को	बातें, बातों को ।
करण	बात से	बातों से ।
सम्प्रदान	बात को	बातों को ।
अपादान	बात से	बातों से ।
सम्बन्ध	बात का,-की,-के	बातों का,-की,-के ।
अधिकरण	बात में,-पर	बातों में,-पर ।
सम्बोधन	(हे) बात	(हे) बातो ।

नोट-सभी अकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ।

विकृत आकारान्त स्त्रीलिङ्ग चिड़िया शब्द ।

	एकवचन	बहुवचन ।
कर्त्ता	चिड़िया, चिड़िये ने	चिड़ियाँ ×, चिड़ियों ने ।
कर्म	चिड़िया, चिड़िये को	चिड़ियाँ ×, चिड़ियों को ।
करण	चिड़िये से	चिड़ियों से ।
सम्प्रदान	चिड़िये को	चिड़ियों को ।
अपादान	चिड़िये से	चिड़ियों से ।
सम्बन्ध	चिड़िये का,-की,-के	चिड़ियों का,-की,-के ।
अधिकरण	चिड़िये में,-पर ।	चिड़ियों में,-पर ।
सम्बोधन	(हे) चिड़िये	(हे) चिड़ियो ।

नोट–सभी विकृत आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ।

अविकृत आकारान्त स्त्रीलिङ्ग माता शब्द ।

कर्त्ता	माता, माता ने	माताएँ, माताओं ने ।
कर्म	माता, माता को	माताएँ, माताओं को ।
करण	माता से	माताओं से ।
सम्प्रदान	माता को	माताओं को ।
अपादान	माता से	माताओं से ।
सम्बन्ध	माता का,-की,-के	माताओं का,-की,-के ।
अधिकरण	माता में,-पर	माताओं में,-पर ।
सम्बोधन	(हे) माता	(हे) माताओ ।

नोट–(१) सभी अविकृत आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ।

(२) 'पाठशाला' शब्द के रूप विकृत आकारान्त के समान भी मिलते हैं । जैसे–मैं सब **पाठशालों** को देखचुका ।

× आगे नदी शब्द का दूसरा नोट देखो ।

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग तिथि शब्द ।

	एकवचन	बहुवचन ।
कर्त्ता	तिथि, तिथि ने	तिथियाँ ×, तिथियों ने ।
कर्म	तिथि, तिथि को	तिथियाँ ×, तिथियों को ।
करण	तिथि से	तिथियों से ।
सम्प्रदान	तिथि को	तिथियों को ।
अपादान	तिथि से	तिथियों से ।
सम्बन्ध	तिथि का,-की,-के	तिथियों का,-की,-के ।
अधिकरण	तिथि में,-पर	तिथियों में,-पर ।
सम्बोधन	(हे) तिथि	(हे) तिथियो ।

नोट—सभी इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ।

ईकारान्तस्त्रीलिङ्ग नदी शब्द ।

कर्त्ता	नदी, नदी ने	नदियाँ, नदियों ने ।
कर्म	नदी, नदी को	नदियाँ, नदियों को ।
करण	नदी से	नदियों से ।
सम्प्रदान	नदी को	नदियों को ।
अपादान	नदी से	नदियों से ।
सम्बन्ध	नदी का,-की,-के	नदियों का,-की-के ।
अधिकरण	नदी में	नदियों में ।
सम्बोधन	(हे) नदी	(हे) नदियो ।

नोट- (१) सभी ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं ।

(२) चिड़ियें, तिथिएँ, नदिएँ इत्यादि रूप भी कोई कोई लेखक लिखते हैं परन्तु, सर्वत्र प्रचलित नहीं है। (पीछे "रूप बनाने की रीतियाँ" देखो।)

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग वस्तु शब्द ।

कर्त्ता	वस्तु, वस्तु ने	वस्तुएँ, वस्तुओं ने ।

× ऊपर नदी शब्द का दूसरा नोट देखो ।

	एकवचन	बहुवचन
कर्म	वस्तु, वस्तु को	वस्तुएँ, वस्तुओं को।
करण	वस्तु से	वस्तुओं से।
सम्प्रदान	वस्तु को	वस्तुओं को।
अपादान	वस्तु से	वस्तुओं से।
सम्बन्ध	वस्तु का,--की,--के	वस्तुओं का,--की,--के।
अधिकरण	वस्तु में,--पर	वस्तुओं में,--पर।
सम्बोधन	(हे) वस्तु	(हे) वस्तुओ।

नोट-सभी उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग बहू शब्द।

कर्त्ता	बहू बहू ने	बहुएँ, बहुओं ने।
कर्म	बहू, बहू को	बहुएँ, बहुओं को।
करण	बहू से	बहुओं से।
सम्प्रदान	बहू को	बहुओं को।
अपादान	बहू से	बहुओं से।
सम्बन्ध	बहू का,--की,--के	बहुओं का,--की,--के।
अधिकरण	बहू में,--पर	बहुओं में,--पर।
सम्बोधन	(हे) बहू	(हे) बहुओ।

नोट-सभी ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

एकारान्त स्त्रीलिङ्ग हरें शब्द।

कर्त्ता	हरें, हरें ने	हरेंएँ, हरेंओं ने।
कर्म	हरें, हरें को	हरेंएँ, हरेंओं को।
करण	हरें से	हरेंओं से।
सम्प्रदान	हरें को	हरेंओं को।
अपादान	हरें से	हरेंओं से।
सम्बन्ध	हरें का,--की,--के	हरेंओं का,--की--के।
अधिकरण	हरें में,--पर	हरेंओं में,--पर।

	एकवचन	बहुवचन।
सम्बोधन	(हे) हरं	(हे) हरेंओ।

नोट-(१) सभी एकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।
(२) हरें ने, हरें को इत्यादि रूपों केलिये पीछे देखो।

ऐकारान्त स्त्रीलिङ्ग जै शब्द।

कर्ता	जै, जै ने	जैएँ, जैओं ने।
कर्म	जै, जै को	जैएँ, जैओं को।
करण	जै से	जैओं से।
सम्प्रदान	जै को।	जैओं को
अपादान	जै से	जैओं से।
सम्बन्ध	जै का,-की,--के	जैओं का,--की,--के।
अधिकरण	जै में,--पर	जैओं में,--पर।
सम्बोधन	(हे) जै	(हे) जैओ।

नोट-सभी ऐकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

ओकारान्त स्त्रीलिङ्ग सरसों शब्द।

कर्ता	सरसों, सरसों ने	सरसोंएँ, सरसोंओं ने।
कर्म	सरसों, सरसों को	सरसोंएँ, सरसोंओं को।
करण	सरसों, से	सरसोंओं से।
सम्प्रदान	सरसों को	सरसोंओं को।
अपादान	सरसों से	सरसोंओं से।
सम्बन्ध	सरसों का,--की,--के	सरसोंओं का,--की,-के।
अधिकरण	सरसों में,--पर	सरसोंओं में,--पर।
सम्बोधन	(हे) सरसों	सरसोंओ।

नोट-सभी ओकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।
(२) बहुवचन सरसों ने, सरसों को इत्यादि रूपों केलिये पीछे देखो।

औकारान्त स्त्रीलिङ्ग गौ शब्द।

कर्ता	गौ, गौ ने	गौएँ, गौओं ने।

	एकवचन	बहुवचन ।
कर्म	गौ, गौ को	गौएँ, गौओं को।
करण	गौ से	गौओं से।
सम्प्रदान	गौ को	गौओं को।
अपादान	गौ से	गौओं से।
सम्बन्ध	गौ का,--की,--के	गौओं का,--की,--के।
अधिकरण	गौ में,--पर	गौओं में,--पर।
सम्बोधन	(हे) गौ	(हे) गौओ।

नोट--सभी औकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप इसी प्रकार होते हैं।

अभ्यास।

१. कारकादि के कारण कैसे शब्दों के अन्त्यस्वर अविकृत रहते हैं? २. इन शब्दों के रूप लिखो--सिलौटी राजा, आज्ञा, लड़का, लड्डू, मधु, लात, खटिया, वधु। ३. आगे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो--तीन नदी से चार मछली लाया। उन किताब को क्या करोगे? गायों जा रही हैं। चार ग्राम से आठ बालकों आये। पाँच बैल को लाओ। खेते पर जाकर अन्नों ले आओ। कलकत्ता से आया। छपरा में रहता है। देविएँ आती हैं। मातें चली गई। हे बालको, कहां जाते हो? तारा निकल आये। नदियें बह रही हैं।

पदच्छेद (Parsing).

किसी वाक्य के शब्दों में व्याकरण घटाने के समय संज्ञा क्रिया आदि भेद प्रभेदों को बिलगाने, लिङ्ग वचन आदि को बिलराने और दूसरे दूसरे शब्दों से उन का सम्बन्ध बताने को पदच्छेद कहते हैं।

नोट--वाक्यविवरण, पदपरिचय, पदनिर्देश, पदनिर्णय, पदविन्यास शब्दबोध और व्याकरणघटना ये नाम भी पदच्छेद के पर्यायवाचक हैं।

संज्ञा के पदच्छेद में संज्ञा, संज्ञा के भेद, लिङ्ग, वचन, कारक आदि और अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध--इतनी बातें बताई जाती हैं।

उदाहरण-नारायण कहता है कि मैं **राम** की **पुस्तकें** पढ़ूँगा।

नारायण-संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन, कर्त्ताकारक, 'कहता है' क्रिया का कर्त्ता।

राम-संज्ञा, व्यक्तिवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन, सम्बन्ध, इसका सम्बन्धी शब्द 'पुस्तकें'।

पुस्तकें-संज्ञा, जातिवाचक, स्त्रीलिङ्ग, बहुवचन, कर्मकारक, पढ़ूँगा क्रिया का कर्म।

अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों की संज्ञाओं का शाब्दबोध बताओ।

आश्चर्य है कि छोटी मोटी कृपाएँ मन को मुग्ध करलें। उसके आगे सब रूपवती स्त्रियाँ निरादर हैं। गुप्तों की शक्ति क्षीण होने पर यह स्वतन्त्र होगया था। हे मोहन, राम ने पाठशाला में आलमारी से अपने विद्यार्थी केलिये हाथ से पण्डितजी की पुस्तक को निकाला।

सर्वनाम (Pronouns).

सर्वनामों के ६ भेद हैं-पुरुषवाचक, निजवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक और प्रश्नवाचक।

१. जो सर्वनाम, बोलनेवाले, सुननेवाले, और जिसके विषय में कुछ कहाजाय उस का बोध कराते हैं उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे-मैं तुझ से उस **की** कथा **कहता हूँ। इस वाक्यमें** मैं **बोलनेवाले के बदले,** तुझ (तू **शब्द का रूप**) **सुननेवाले के बदले और जिस की कथा कहीगई है उस व्यक्ति के बदले** उस (वह **शब्द का रूप**) **का प्रयोग हुआ है।**

बोलनेवाले को उत्तमपुरुष, सुननेवाले को मध्यमपुरुष और जिस का वर्णन हो उसे अन्यपुरुष कहते हैं।

आदर केलिये मध्यम और अन्यपुरुषों में तू और वह के बदले आप शब्द आता है। मध्यमपुरुष-आप आइये। आप कहाँ

जाते हैं ? **अन्यपुरुष**-(किसी वस्तु पर लक्ष्य करने या उस की ओर संकेत करने से। जैसे-रामजी अनुसूया की ओर संकेत करके सीता जी से कहते हैं) "**आप दक्षप्रजापति की कन्या हैं।**" *

पुरुषवाचक सर्वनामों के भेद और उदाहरण।

(१) **उत्तमपुरुष-मैं।**

(२) **मध्यमपुरुष-तू** और **आप।**

(३) **अन्यपुरुष-वह** (नीचे का नोट पढ़ो) और **आप।**

नोट-मैं, तू और आप (म. पु.) को छोड़ शेष सभी सर्वनाम (संज्ञाएँ भी) अन्यपुरुष हैं, क्योंकि इनके विषय में बोलनेवाला सुननेवाले को कुछ न कुछ कह सकता है। इसी कारण उत्तम और मध्यम पुरुषों को प्रधान और शेष को अप्रधान पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। ऊपर लिखे सर्वनामों के भेदों में निजवाचक निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, सम्बन्धवाचक और प्रश्नवाचक-ये पाँचो वास्तव में अप्रधान पुरुषवाचक ही के भेद हैं। इन सबों के बदले अन्यपुरुष के उदाहरण में केवल '**वह**' शब्द लाते हैं।

२. जो सर्वनाम 'स्वयं या निज' का बोधक हो उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे- मैं आप **वहाँ से आया हूँ।** वह अपने **को सुधारता है।**

३. जो सर्वनाम किसी निश्चित पदार्थ का बोध करावे उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे-दोनों पुस्तकों में यह **अच्छी है और** वह **बुरी। इसका दूसरा नाम निर्देशार्थक या संकेतवाचक भी है।**

---

* किसी से किसी वाटिका के बारे में पूछाजाय कि यह किस की वाटिका है और वह उसी की हो तो वह मनुष्य यह कहने के बदले कि "**मेरी है**" कहता है "**आपकी है।**"

निश्चयवाचक सर्वनाम के दो भेद हैं-निकटवर्ती और दूरवर्ती। 'यह' निकटवर्ती है, क्योंकि निकट के पदार्थों केलिये आता है। 'वह' दूरवर्ती है, क्योंकि दूर के पदार्थों को बतलाता है।

पूर्वकथित दो वस्तुओं में से पहली केलिये 'वह' और दूसरी केलिये 'यह' प्रयोग करते हैं। जैसे-महात्मा और दुरात्मा में इतना ही भेद है कि उन के मन, वचन और कर्म एक रहते हैं और इन के भिन्न भिन्न।

४. जो सर्वनाम किसी निश्चित पदार्थ का बोध न करावे उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे-ऐसा न हो कि कोई आजाय। पानी में कुछ है।

५. जो सर्वनाम किसी संज्ञा से सम्बन्ध सूचित करता है उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे-बाघ जो बैठा था, मारागया। जो बोले सो घी को जाय। जिसकी लाठी उसकी भैंस।

जो के साथ सो या वह का नित्यसम्बन्ध रहता है, जिन्हें नित्यसम्बन्धी सर्वनाम कहते हैं। ये सर्वनाम निश्चयवाचक हैं। सम्बन्धवाचक और नित्यसम्बन्धी सर्वनाम एकही संज्ञा के बदले आते हैं।

जो और सो के बदले कभी कभी क्रम से जौन और तौन भी मिलजाते हैं। जैसे-जौन आवेगा तौन पढ़ेगा। इन दोनों प्रयोगों में केवल जो और वह अधिक आते हैं, शेष के प्रयोग कम हो रहे हैं।

६. जिस सर्वनाम से प्रश्न का बोध हो उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे-हे महाराज, आप कौन हैं? तुम क्या कर सकते हो?

नोट-यदि सर्वनाम न हो तो वाक्य में वारबार संज्ञाओं के प्रयोग से एक तो वह भद्दा जानपड़ेगा और दूसरे बढ़ भी जायगा। जैसे-मोहन कल घर गया, वहाँ जाकर मोहन ने मोहन की माता से कहा कि मोहन को भूख लगी है, भोजन देदो। माता ने कहा कि हे मोहन, मोहन के पिताजी कल

लाते होंगे, फल खाकर मोहन की भूख शांत कर लेना। ऊपर के वाक्य सर्वनाम रहित हैं, इसलिये वे व्यर्थ बढ़े हुए और भद्दे जान पड़ते हैं। उनके बदले नीचे के वाक्य प्रयोग में हैं—

मोहन कल घर गया वहाँ जाकर उसने अपनी माता से कहा कि मुझे भूख लगी है, भोजन देदो। उसने कहा कि हे मोहन, तुम्हारे पिताजी फल लाते होंगे, उन्हें खाकर अपनी भूख शांत कर लेना।

अभ्यास।

१. सर्वनाम कितने प्रकार के हैं ? उदाहरण दो। २. अन्यपुरुष सर्वनाम कौन कौन हैं ? ३. 'आप' कौन सर्वनाम है ? वाक्यों में प्रयोग करो।

४. 'वह' कौन सर्वनाम है ? कारण दो। ५. 'यह' और 'वह' के प्रयोग में क्या भेद है ? ६. सर्वनाम से क्या लाभ है ?

सर्वनामों के हेरफेर (Inflection of pronouns)

संज्ञा के समान सर्वनाम में भी वचन और कारकादि के कारण हेरफेर होते हैं। जैसे—हमको क्या कहते हो ? मुझ को बुलाना।

सर्वनाम का कोई लिङ्ग नियत नहीं है, इसलिये लिङ्ग के कारण उसके रूपों में कुछ विकार नहीं होता। जैसे—सीता ने कहा कि मैं आऊँगी। राम ने कहा कि मैं जाऊँगा।

जिस संज्ञा के स्थान में सर्वनाम आता है उसी के अनुसार उसके लिङ्ग और वचन होते हैं। जैसे—सीता अच्छी लड़की है, वह झूठ नहीं बोलती। तीनों लड़के पढ़ने गये हैं, वे सन्ध्या को आवेंगे।

नोट—प्राय: सर्वनाम के साथ कर्म और सम्प्रदान के चिन्ह 'को' के अर्थ में एकवचन में 'ए' और बहुवचन में 'एँ' भी लाते हैं।

☞ सर्वनामों में सम्बोधन प्रायः* नहीं होता ।

सर्वनामों के रूप ।

मैं और तू ।

रूप वनाने की रीति–

कर्त्ता के एकवचन में मैं **और** तू **दोनों ज्यों के त्यों बने रहते हैं, परन्तु बहुवचन में वे क्रम से** हम **और** तुम **होजाते हैं। शेष कारकों के एकवचन में मैं को** मुझ **और तू को** तुझ **तथा बहुवचन में** हम **और** तुम **करदेते हैं, परन्तु ' केलिये ' और सम्बन्धचिन्हों के पहले, मैं और तू को एकवचन में क्रम से** मे **और** ते **तथा बहुवचन में** हमा **और** तुम्हा **करते हैं और चिन्हों के 'क' को भी 'र' से बदल देते हैं।**

रूपावली ।

मैं ।

	एकवचन	बहुवचन ।
कर्त्ता	मैं, मैंने	हम, हम ने ।
कर्म	मुझ को, मुझे	हम को, हमें ।
करण	मुझ से	हम से ।
सम्प्रदान	मेरे लिये, मुझ को, मुझे	हमारे लिये, हम को, हमें ।
अपादान	मुझ से	हम से ।
सम्बन्ध	मेरा, मेरी, मेरे	हमारा, हमारी, हमारे ।
अधिकरण	मुझ में, मुझ पर	हम में, हम पर ।

नोट–(१) मैं का बहुवचन हम है, परन्तु इस बहुवचन का अर्थ संज्ञा के बहुवचन से भिन्न है। 'लड़के' शब्द एक से अधिक लड़कों का सूचक है, परन्तु 'हम' शब्द प्रायः एक से अधिक मैं (बोलनेवालों) का सूचक नहीं ।

* ऐ तू, जिसने सम्पूर्ण वस्तुएँ बनाईं, मेरी सुन –व्याख्याविधिः

एक साथ गाने, प्रार्थना करने या सबकी ओर से लिखे हुए लेख में हस्ताक्षर करने के सिवा प्रायः कभी एक से अधिक लोग मिलकर नहीं बोल सकते ऐसी अवस्था में इन का ठीक अर्थ यही है कि वक्ता अपने साथियों की ओर से प्रतिनिधि होकर अपने साथियों के विचार एक साथ प्रकट करता है। हम से बहुत्व का बोध कराने केलिये उस के साथ बहुधा 'लोग, सब' इत्यादि शब्द लगादेते हैं। **जैसे—हम ने पहले किसी अङ्क में यह बात लिखी है। हमलोग प्रथम वर्ग में पढ़ते हैं। हम सब बड़े घर की स्त्रियाँ हैं।**

(२) मेरे को, मेरे. में, हमारे में इत्यादि प्रयोग भी मिलते हैं। जैसे—**भगवान् जाने, हमारे में यह सुमति कब आयगी। (प्रताप)**

तू।

	एकवचन	बहुवचन।
कर्त्ता	तू, तूने	तुम, तुम ने।
कर्म	तुझ को, तुझे	तुम को, तुम्हें।
करण	तुझ से	तुमसे।
सम्प्रदान	तेरे लिये, तुझ को, तुझे	तुम्हारे लिये, तुमको, तुम्हें।
अपादान	तुझ से	तुम से।
सम्बन्ध	तेरा, तेरी, तेरे	तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे।
अधिकरण	तुझ में, तुझ पर	तुम में, तुम पर।

नोट—(१)हम जिस अर्थ में आता है, 'तुम' का भी उसी अर्थ में प्रयोग होता है। तुम से बहुत्व का बोध कराने के लिये उसके साथ बहुधा **लोग, सब** इत्यादि शब्द लगाते हैं। जैसे—तुमलोग अभी तक कहाँ थे? तुम सब कहाँ जाती हो?

(२) तैं, तैं ने, तेरे को, तेरे से, तेरे में, तेरे पर, तुम्हारे में, तुम्हारे पर, इत्यादि रूप भी कहीं बोले जाते हैं।

आदरसूचक आप।

रीति-एकवचन में 'आप' शब्द में कोई विकार नहीं होता, परन्तु बहुवचन में बहुत्ववाचक 'लोग, सब' इत्यादि शब्द जोड़कर बालक शब्द के समान रूप बना लेते हैं। जैसे-आपलोगों ने कहा। आप सब कहाँ गये थे? आपलोग दीनों की अच्छी सहायता करते हैं।

रूप

	एकवचन	बहुवचन।
कर्त्ता	आप, आप ने	आपलोग, आपलोगों ने।
कर्म	आप को	आपलोगों को।
करण	आप से	आपलोगों से।
सम्प्रदान	आप केलिये,--को	आपलोगों केलिये,--को।
अपादान	आप से	आपलोगों से।
सम्बन्ध	आप का,--की,--के	आपलोगों का,--की,--के।
अधिकरण	आप में,--पर	आपलोगों में,--पर।

नोट-आपलोग ने, आपलोग को इत्यादि प्रयोग भी मिलते हैं।

निजवाचक।

आप और (इसी में सम्बन्धसूचक ना प्रत्यय लगाकर आदि का आकार ह्रस्व कर देने से बना हुआ) अपना-ये दो निजवाचक सर्वनाम हैं। 'अपना' शब्द सार्वनामिक अर्थ देने के सिवा विशेषण और (आगे विशेष्य लुप्त रहने पर) संज्ञा का बोध भी कराता है। जैसे-मैं आप वहाँ जाऊँगा। कृपा कर मेरा अपराध क्षमा करें, अब मैं अपने को अवश्य सुधारूँगा। मेरा अपना पराया कोई काम नहीं आया। जब अपनों ने कोई सहायता नहीं की तब पराये की कौन आशा! सभी अपनों की खोज खबर लेते हैं। अपनों से विरोध करनेवाला नष्ट होता है।

आप और अपना दोनों निजसूचक सार्वनामिक अर्थ में सदा एकवचन रहते हैं, परन्तु 'अपना' जब अन्य अर्थ देता है तब बहुवचन भी होता है।

रूप बनाने की रीतियाँ—

(१) निजसूचक आप शब्द के रूपों केलिये आदरसूचक आप शब्द के एकवचन रूप देखो। उन रूपों में ने, केलिये और सम्बन्ध चिन्हवाले रूप निजसूचक अर्थ में नहीं आते।

(२) अपना शब्द की रूपावली 'घोड़ा' शब्द के समान होती है, परन्तु सार्वनामिक अर्थ में कर्त्ता का एकवचन रूप नहीं आता, 'के लिये' के बदले केवल 'लिये' लगाते हैं तथा सम्बन्ध में चिन्ह नहीं आते, क्योंकि 'ना' स्वयं सम्बन्धसूचक है।

	एकवचन	बहुवचन।
कर्त्ता	अपने ने १	अपनों ने।
कर्म	अपने को	अपनों को।
करण	अपने से	अपनों से।
सम्प्रदान	अपने केलिये,--को २	अपनों केलिये,--को।
अपादान	अपने से	अपनों से।
सम्बन्ध	अपने का,--की,--के ३	अपनों का,—की,—के
अधिकरण	अपने में,--पर	अपनों में,--पर।

परस्परबोधक 'आपस'—

'आपस' शब्द आप ही का अनियमित रूप है। केवल सम्बन्ध और अधिकरण में इस के रूप आते हैं। जैसे-आपस

---

१. सार्वनामिक अर्थ में नहीं। २ सार्वनामिक अर्थ में 'अपने लिये'।
३. सार्वनामिक अर्थ में 'अपना, अपनी, अपने'।

की लड़ाई आपस ही में निपटा लेनी चाहिये। आपस की फूट बुरी होती है। उनलोगों की बातें आपस में नहीं मिलतीं।

अभ्यास।

१ सर्वनाम का कौन लिङ्ग है? २. 'हम' का क्या अर्थ है? उदाहरण दो। ३. तू और तुम में क्या भेद है? उदाहरण दो। ४. 'अपना' शब्द कौन कौन अर्थ देता है? ५. 'आपस' क्या है? ६. 'आप' शब्द से कौन कौन सर्वनाम बने हैं? ७. 'अपना' शब्द की रूपावली सार्वनामिक अर्थ में करो। ८. चार ऐसे वाक्य बनाओ जिन में 'अपना' शब्द 'संज्ञा' का अर्थ दे। ९. 'तुम कहाँ जाते हो? तुम लोग कहाँ जाते हो'—इन दो वाक्यों में क्या भेद है?

यह, वह, कोई, जो (जौन), सो (तौन) और कौन।

रीति-शून्यचिन्ह के पहले कुछ विकार नहीं होता, परन्तु बहुवचन में यह को ये और वह को वे करदेते हैं। कोई शब्द का बहुवचन रूप नहीं होता। अन्य चिन्हों के पहले ऊपर के शब्द क्रम से एकवचन में इस, उस, किसी, जिस, तिस और किस तथा बहुवचन में इन, उन, ०*, जिन, तिन और किन हो जाते हैं।

नोट–(१) इन्हों ने, उन्हों को, जिन्हों से, तिन्हों केलिये, किन्हों में इत्यादि रूप भी प्रयोग में मिलते हैं। इन में इन्हों ने, उन्हों ने इत्यादि कर्त्ता के रूप, नियमानुसार बने रूपों से अधिक प्रचलित हैं, परन्तु अन्य रूप × कम आते हैं।

---

* कोई शब्द का बहुवचन रूप नहीं होता, इसी कारण शून्य (०) देदिया।

× विशेष कर गुजराती और महाराष्ट्र लेखक लिखते हैं।

(२) एँ चिन्ह के साथ नियमानुसार इनें, उनें, इत्यादि रूप बनते हैं, परन्तु ये बहुत कम प्रचलित हैं। प्रचलित रूप "इन्हें, उन्हें, इत्यादि" हैं।+

रूपावली।

यह।

	एकवचन।	बहुवचन।
कर्त्ता	यह, इस ने *	ये, इन ने, इन्हों ने।
कर्म	यह, इस को, इसे	ये, इन को, इन्हें।
करण	इस से	इन से।
सम्प्रदान	इस केलिये, इस को, इसे	इन केलिये, इनको, इन्हें।
अपादान	इस से	इन से।
सम्बन्ध	इस का,-की,-के	इन का,-की,-के।
अधिकरण	इस में,-पर	इन में,-पर।

वह।

कर्त्ता	वह, उस ने	वे, उन ने, उन्हों ने।
कर्म	उस को, उसे	उन को, उन्हें।
करण	उस से	उन से।
सम्प्रदान	उस केलिये, उस को, उसे	उन केलिये, उन को, उन्हें।
अपादान	उस से	उन से।
सम्बन्ध	उस का,-की,-के	उन का,-की,-के।
अधिकरण	उस में,-पर	उन में,-पर।

नोट-(१) बहुवचन ये और वे के बदले क्रम से **यह** और **वह** भी बोलते हैं। जैसे-**यह** दोनों लड़के बड़े सुशील हैं। वह दोनों भाई पटने चले गये।

+ उर्दूवाले प्रतिष्ठा केलिये 'वह' के बदले 'वो' भी बोलते हैं। जैसे-उनके देखे से जो आजाती है रौनक़ मुँह पर, 'वो' समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है।

* कोई कोई इस्ने, उस्ने, जिस्ने, किस्को, तिस्में इत्यादि लिखते हैं, परन्तु गद्य में ऐसे प्रयोग अब नहीं होते।

(२) निश्चय अर्थ में '**यह**' और '**वह**' के साथ 'ही' भी लाते हैं । जैसे **यही** तो चाहते हैं । जिस की खोज में थे **वही** मिलगया । **इसी** की आवश्यकता है । **उन्हीं** को बुलाया था । **इन्हीं** ने ऐसा किया ।

(३) 'यह' क्रियाविशेषण भी होता है । जैसे–लीजिये महाराज **यह** मैं चला ।

कोई ।

	एकवचन	बहुवचन ।
कर्त्ता	कोई, किसी ने ।	
कर्म	किसी को × ।	
करण	किसी से ।	रूप नहीं होते ।
सम्प्रदान	किसी केलिये, किसी को × ।	
अपादान	किसी से ।	
सम्बन्ध	किसी का,--की,--के ।	
अधिकरण	किसी में ।	

नोट–(१) कोई शब्द के बहुवचन रूप नहीं होते, परन्तु जब वाक्य में दोहरा आता है तब क्रिया भी बहुवचन होजाती है । जैसे–**कोई कोई** कहते हैं । **किसी किसी** को यह रीति पसंद नहीं आती ।

(२) आदर में भी 'कोई' के साथ बहुवचन क्रिया आती है । जैसे-आप के यहाँ **कोई आये हैं ?**

(३) 'कोई' के बदले 'एक' का भी प्रयोग मिलता है । जैसे–सभा में **एक** आता है तो **एक** जाता है ।

(४) 'कोई' शब्द क्रियाविशेषण भी होता है । जैसे–उस ने **कोई** बीस पुस्तकें पढ़ीं । इस में **कोई** २०० पृष्ठ हैं ।

(५) कतिपय लेखक कोई शब्द का बहुवचन रूप 'किन्हीं' लिखते हैं ।

× 'कोई' के साथ 'को' अर्थ में 'ए' का प्रयोग नहीं होता।

जो (जौन)।

	एकवचन	बहुवचन ।
कर्त्ता	जो (जौन), जिस ने	जो (जौन), जिन ने, जिन्हों ने ।
कर्म	जो (जौन), जिस को, जिसे	जो (जौन), जिनको, जिन्हें ।
करण	जिस से	जिन से ।
सम्प्रदान	जिस केलिये, जिस को, जिसे,	जिन केलिये, जिन को, जिन्हें ।
अपादान	जिस से	जिन से ।
सम्बन्ध	जिस का,--की,--के	जिन का,--की, के ।
अधिकरण	जिस में,--पर	जिन में,--पर ।

नोट—'जो' शब्द अव्यय भी है । जैसे—**जो** पढ़े तो विद्वान होय । जो कौड़ी दोगे तो पैसा पाओगे । +

सो (तौन)।

कर्त्ता	सो (तौन), तिस ने	सो (तौन), तिन ने, तिन्हों ने
कर्म	सो (तौन), तिस को, तिसे	सो (तौन), तिनको, तिन्हें ।
करण	तिस से	तिन से ।
सम्प्रदान	तिस केलिये, तिस को, तिसे	तिन केलिये, तिन को, तिन्हें ।
अपादान	तिस से	तिन से ।
सम्बन्ध	तिस का,--की,--के	तिन का,--की,--के ।
अधिकरण	तिस में,--पर	तिन में,--पर ।

कौन ।

कर्त्ता	कौन, किस ने	कौन, किन ने, किन्हों ने ।
कर्म	कौन, किसको, किसे	कौन, किन को, किन्हें ।
करण	किस से	किन से ।

+ जो वाके तन की दसा, देख्यो चाहत आप । तो बलि नेक विलोकिये, चलि औचक चुपचाप ॥ मँगनी भलो न बापसों, जो प्रभु राखे टेक ।

	एकवचन	बहुवचन ।
सम्प्रदान	किसके लिये, किसको, किसे	किन केलिये, किनको, किन्हें ।
अपादान	किस से	किन से ।
सम्बन्ध	किस का,-की,-के	किन का,-की,-के ।
अधिकरण	किस में,-पर	किन में, पर ।

क्या और कुछ ।

क्या—

कौन शब्द के समान 'क्या' भी प्रश्नवाचक है ।

इस के भिन्न भिन्न रूप नहीं होते । काहे को, काहे से, काहे केलिये, काहे का इत्यादि रूप एक दो पुस्तकों में मिले हैं, परन्तु ये शुद्ध हिन्दी में कदाचित् ही आते हैं । हाँ, उर्दू वाले तो बोलते हैं ।

नोट—(१) 'क्या' अव्यय भी होता है । जैसे—घोड़े दौड़े **क्या** हैं, उड़ आये हैं । **क्या**, गाड़ी चलीगई ?

(२) कौन और क्या जब अकेले आवे तब कौनसे **प्राणी** का और क्या से प्रायः **अप्राणी** का बोध होता है । जैसे—कौन पढ़ता है ? कौन है! क्या गिरा ? क्या है ? (यदि **कौन** और **क्या** के विषय में पहले से कुछ भी ज्ञान प्राप्त हो तो नियम नहीं लगता ।)

कुछ—

कोई शब्द के समान 'कुछ' भी अनिश्चयवाचक है ।

'कुछ' के भिन्न भिन्न रूप नहीं होते । जैसे—मेरी इच्छा है कि इस से कुछ पूछूँ । आप के मन में कुछ है । क्या, पानी में कुछ मिलादिया है ?

नोट—(१) कुछ क्रियाविशेषण भी होता है । जैसे—लड़की **कुछ** छोटी है । तेरे शरीर का ताप **कुछ** घटा या नहीं ।

सर्वनाम सम्बन्धी अन्य बातें।

१. निज, स्वतः, स्वयं इत्यादि।

'निज' विशेषण है। स्वतः, स्वयं, खुद इत्यादि अव्यय हैं। ये निजसूचक सर्वनाम के अर्थ में भी आते हैं। निज का प्रयोग केवल सम्बन्धकारक में आता है। जैसे—हम तुम्हें एक अपने निज के काम में भेजा चाहते हैं। राजा स्वतः वहाँ गये थे। हम आज अपने आप को भी हैं स्वयं भूले हुए। तुम खुद यह बात समझ सकते हो।

२. एक, दो, दोनों, दूसरा, एक दूसरा, कई, बहुतेरे, सब, अन्य, इत्यादि।

ऊपर के शब्द वास्तव में विशेषण हैं, क्योंकि इन के रूप और प्रयोग विशेषणों के समान होते हैं। जब ये बिना विशेष्य के आते हैं तब संज्ञाओं के अर्थ देते हैं, परन्तु प्रयोग की भिन्नता कई शब्दों में पाई जाती है। (आगे विशेषण का वर्णन देखो।)

३. सर्वनाम के आगे विशेष्य आने से वह विशेषण कहलाता है। ऐसी अवस्था में सर्वनाम कारकादि के चिन्ह छोड़ तो देता है, परन्तु उस में संस्कार अवश्य बना रहता है। जैसे—इस विषय पर किसी प्रकार की चर्चा मत कीजिये।

नोट—कौन, जौन, तौन इत्यादि यदि 'सा' से, सी, प्रकारार्थक प्रत्ययों के साथ आवें तो वे ऊपर की अवस्था में नहीं बदलते। जैसे—छिपे हो कौन से पर्दे में बेटा! रहा जौन से देश में। इत्यादि।

४. इस, उस, जिस, तिस और किस के इ को ऐ और उ को वै करके शब्दान्त स्वर को दीर्घ करने से गुणवाचक (सादृश्य या प्रकार अर्थ में) विशेषण बनते हैं। जैसे—ऐसा, वैसा, जैसा, तैसा, कैसा। इसी प्रकार ऊपर के शब्दों के स को

तना कर देने से परिमाणवाचक विशेषण बनते हैं । जैसे—
इतना, उतना, जितना, तितना, कितना ।

५. 'यहाँ, वहाँ जहाँ, तहाँ और कहाँ' ये पाँच स्थानवाचक अव्यय क्रम से 'यह, वह, जो, तौन और कौन' के आद्य व्यञ्जनों के आगे हाँ मिलाने से बने हैं। इसी प्रकार 'अब, जब, तब, और कब' ये चार अव्यय क्रम से 'यह, जो, तौन और कौन' के प्रथमाक्षर को अ, ज, त और क करके आगे ब लगाने से बने हैं।

अभ्यास ।

१. 'कोई, यह और वह' इन तीन सर्वनामों को अविकृत रूपों में बहुवचन में प्रयोग करो । २. 'कौन' और 'क्या' इन दोनों सर्वनामों में क्या भेद है ? उदाहरण दो । ३. 'सो' कौन सर्वनाम है ? कारण दो । ४. 'एक' को सार्वनामिक अर्थ में प्रयोग करो । ५. 'किन्हीं' शब्द के विषय में तुम्हारा क्या विचार है ? ६. 'आप दौड़े क्या हैं, उड़ आये हैं ।' इस वाक्य में 'क्या' को सर्वनाम क्यों नहीं कह सकते ? ७. आजकल 'जो' के बदले कौन सर्वनाम अधिकतर बोलाजाता है ? उदाहरण दो । ८. 'कौन' और 'जौन' में कब विकार नहीं होता ? उदाहरण दो । ९. सर्वनाम कब विशेषण कहलाता है ? १०. किन किन सर्वनामों से कौन कौन अव्यय बने हैं ?

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो —

हम कोई दिन में तुमके यहाँ जायँगे और तुम केलिये उचित प्रबन्ध करा-देंगे । मैं पर वह की बात विदित हो गई । कौन किताब को पढ़ोगे ? जौन तौन बालक के साथ मत जाओ । उन्हीं से काहे को बोजते हो ? मैं मेरे लिये पढ़ता हूँ ।

नीचे के वाक्यों में रिक्त स्थानों में उचित सर्वनाम रक्खो —

–लाठी उसकी भैंस । तुम ने–पाठ याद कर लिया । आप–पढ़ाते हैं ?–कौन कहता है ? क्या–नहीं जानता कि तुझे ही लिखना होगा ? जो परिश्रम करते हैं–सुख पाते हैं । मैं–उसकी कथा कहता हूँ ।

पदच्छेद (Parsing)

सर्वनाम के पदच्छेद में संज्ञा ही के समान सर्वनाम, सर्वनाम के भेद, पुरुष, लिङ्ग, वचन, कारक और अन्य शब्दों के साथ सम्बन्ध–इतनी बातें बताईजाती हैं।

उदाहरण–कौन कहता है कि **मैं ने किसी को इस केलिये** यत्न करते नहीं देखा ? बाघ, **जो** जंगल में बैठा था, मारागया।

कौन–सर्वनाम, प्रश्नवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन, 'कहता है' क्रिया का कर्त्ता।

मैं ने– सर्वनाम, पुरुषवाचक, उत्तमपुरुष, पुल्लिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग, एकवचन, 'देखा' क्रिया का कर्त्ता।

किसी को–सर्वनाम, अनिश्चयवाचक, पुल्लिङ्ग या स्त्रीलिङ्ग, एकवचन, 'देखा' क्रिया का कर्म।

इस केलिये–सर्वनाम, निश्चयवाचक, पुल्लिङ्ग, या स्त्रीलिङ्ग, एकवचन, 'देखा' क्रिया का सम्प्रदान।

जो–सर्वनाम, सम्बन्धवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन, 'बैठा था' क्रिया का कर्त्ता' यह सर्वनाम 'बाघ' के बदले आया है।

अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों में सर्वनामों का पार्जिङ्ग करो--

जिस की लाठी उस की भैंस। मैं तुम से उनकी कथा कहता हूँ। उन लोगों की राय आपस में नहीं मिलती। मेरी इच्छा है कि इस से कुछ पूछूँ। कौन कहता है कि मैं ने यह काम नहीं किया ?

विशेषण (Adjectives).

विशेषणों के भेद।

विशेषणों के चार भेद हैं– गुणबोधक, संख्याबोधक, परिमाणबोधक और सार्वनामिक।

१. गुणबोधक से गुण, अवस्था या दशा इत्यादि का बोध होता है। जैसे–चतुर **बालक आता है**। रोगी **मनुष्यों की सेवा करो**। नीची **भूमि पर मत रहो**।

२. संख्याबोधक से किसी वस्तु की संख्या समझी जाती है। जैसे–चार **मनुष्य**, छठा **वर्ग**, दसगुने **रुपये**, हर **मनुष्य**, तीनों **काल**, बहुत **मनुष्य, इत्यादि**।

[संख्यावाचक विशेषण दो प्रकार के होते हैं–**निश्चयबोधक** और **अनिश्चयबोधक**। (१) निश्चयबोधकसे निश्चित संख्या जानीजाती है। जैसे–चार मनुष्य, छठा वर्ग, तीनों लोक, हर मनुष्य, इत्यादि। (२) अनिश्चय-बोधक से निश्चित संख्या नहीं जानीजाती। जैसे–सब वृक्ष, बहुतेरे घोड़े, थोड़े मनुष्य, कुछ गाड़ियाँ, अधिक विद्यार्थी।

निश्चयबोधक विशेषण **पाँच** प्रकार के होते हैं—

(१) **गणनावाचक**-एक, दो, पाव, आधा, पौन। (२) **क्रमवाचक**-पहला, दूसरा, तीसरा। (३) **आवृत्तिवाचक**–दुगुना, तिगुना, चौगुना। (४) **समुदायवाचक**–तीनों, चारों, बीसों, पचीसों, पचासों। (५) **प्रत्येकवाचक**-हर मनुष्य, प्रत्येक पुस्तक, प्रतिवर्ष, हर दूसरे वर्ष।

गणनावाचक विशेषण दो प्रकार के हैं–(१) **पूर्णाङ्कबोधक** एक, दो, तीन, चार। (२) **अपूर्णाङ्कबोधक**—पाव, आधा, पौन, सवा, डेढ़।]

३. परिमाणबोधक से किसी वस्तु के परिमाण का बोध होता है। जैसे–थोड़ा **पानी दो**। बहुत **भात मत खाओ**। सब **जंगल**। सारा **देश**। **इत्यादि**।

४. जो सर्वनाम विशेषण होकर आते हैं उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। जैसे–उस **पुस्तक को ध्यान से पढ़ना**। किस **व्यक्ति को** यह **कार्य सौंपते हो ?**

[सार्वनामिक विशेषणों के भेद सर्वनाम के ही अनुसार होते हैं। जैसे–**उस** पुस्तक को ध्यान से पढ़ना। **कौन** विद्यार्थी आवेगा ? इन वाक्यों में ' उस ' **संकेतवाचक** और ' कौन ' **प्रश्नवाचक** विशेषण हैं।

व्युत्पत्ति के अनुसार सार्वनामिक विशेषण दो प्रकार के हैं-मूल और यौगिक। (१) **मूल** वह है जो बिना किसी रूपान्तर के संज्ञा के साथ आवे। जैसे-यह बात, कोई पुस्तक, कुछ आम, इत्यादि। (२) **यौगिक** वह है जो मूल सर्वनाम में प्रत्यय लगाने से बने जैसे-**जैसी** तानी **वैसी** भरनी **इतना** पानी।]

विशेषण जिस का गुण बताता है उसे विशेष्य कहते हैं। जैसे—चतुर बालक, **अच्छा** काम, **मीठी** बात।

विशेषण विशेष्य के साथ दो प्रकार से आता है, विशेष्य के पहले और आगे। पहले आने से विशेष्यविशेषण **और आगे आने से** विधेयविशेषण **कहलाता है। जैसे-विशेष्यविशेषण-यह अच्छा लड़का है। वह चतुर बालक है। विधेयविशेषण-लड़का अच्छा है। बालक चतुर है। रघुनाथ चौबे सोये हैं। दया बड़ी है।**

नोट-(१) सर्वनाम के पहले विशेषण का प्रयोग प्रायः नहीं होता। जैसे-तुम बड़े सीधे हो। वह अच्छा है। आप नेक हैं।

अपवाद-सब कोई कहते हैं। यह काम **हर** कोई नहीं कर सकता। हम समझते **सब** कुछ है। वह **बहुत** कुछ जानता है।

(१) 'यह बालक **निरा बैल** है। रामचन्द्र **सच्चा आदमी** है। कुत्ता भी है **शेर** अपनी गली के अन्दर। देह सुखकर **लकड़ी** होगई। राधा **कृष्ण** बन गई।' इन वाक्यों में 'निरा बैल, सच्चा आदमी, शेर, लकड़ी, और कृष्ण' संज्ञाओं के साथ विधेयभाव में हैं।

विशेषणों के हेरफेर।

विशेषण के लिङ्ग, वचन और कारक आदि विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे-काला घोड़ा चरता है। काली घोड़ी चरती है। अच्छा लड़का आता है। अच्छे लड़के आते हैं।

अच्छे लड़के को बुलाओ। अच्छे लड़कों को बुलाओ। भले घर (में) कन्या ब्याही।

विशेषणों के रूप।

आकारान्त विशेषण।

(१) आकारान्त विशेषण स्त्रीलिङ्ग में ईकारान्त हो-जाता है।

जैसे-मैंने काली गाय खरीदी। वह गोरी कन्या हरी साड़ी पहनेहुई है। इन लचकीली लताओं की हरी हरी पत्तियाँ मन को अच्छी लगती हैं। सारी पृथ्वी इस वसंत की वायु से कैसी सुहावनी होरही है!

(२) 'बहुवचन में' और 'कारकादि के चिन्ह या संस्कार रहने पर एकवचन में' पुल्लिङ्ग संज्ञा का आकारान्त विशेषण एकारान्त होजाता है। जैसे-अच्छे लड़के आते हैं (बहुवचन)। अच्छे लड़कों को बुलाओ (बहुवचन)। अच्छे लड़के को बुलाओ (चिन्हयुक्त एकवचन)। भले घर कन्या ब्याही (चिन्हसंस्कारयुक्त एकवचन)।

अकारान्त विशेषण।

हिन्दी में अकारान्त विशेषणों के रूपों में विशेष्य के कारण कोई हेरफेर नहीं होता। जैसे-सुडोल शरीर, सुडोल लकड़ी।

नोट-संस्कृत विशेषणों में जो स्त्रीलिङ्गप्रयोग करने से खटकते हैं उन्हें परिवर्तन करदेते हैं तथा जो किसी रूप में नहीं खटकते उन्हें दोनों रूपों में लिख सकते हैं और बहुतसे तो अविकृत ही लिखेजाते हैं। जैसे-श्रीमान् राजा-श्रीमती रानी, गुणवान् पुरुष-गुणवती स्त्री, बुद्धिमान् बालक-बुद्धिमती बालिका, सुन्दर पुरुष-सुन्दर स्त्री या सुन्दरीस्त्री, चञ्चल बालक-चञ्चल शिखा या चञ्चला नारी, शोभित गृह-शोभित लता या

शोभिता लता।

सार्वनामिक विशेषण के रूप सर्वनाम ही के अनुसार होते हैं। जैसे–किसी **पुरुष को बुलाओ**। ये **पुस्तकें अच्छी हैं। (** पीछे सर्वनामप्रकरण में '**अन्य बातें**' शीर्षक पाठ का तीसरा नोट देखो।)

जब विशेषण संज्ञाप्रयोग में आता है तब उस के रूप संज्ञा ही के समान बनायेजाते हैं। जैसे–अच्छों **का संग करो**। बुरों **से बचो**।

नोट– 'सब' बहुवचन का द्योतक है, परन्तु परिमाण में एकवचन **भी होता है**। रूपान्तर करने में दोनों वचनों में 'सब' ज्यों का त्यों बना रहता है। कोई कोई बहुवचन में अन्त्य स्वर को ओं से भी बदलदेते हैं। जैसे-सब ने–सब ने, सबों ने, सबको–सबको, सबों को, इत्यादि बहुवचन में कुछ लोग ब को भ से भी बदलदेते हैं। जैसे–सभों ने, सभों को, इत्यादि।

अभ्यास।

१. विशेषण के कितने भेद हैं? २. सार्वनामिक विशेषण किसे कहते हैं? ३. सार्वनामिक विशेषण कितने प्रकार के हैं? लक्षण और उदाहरण कहो। ४. विशेषण वाक्य में कहाँ आता है? उदाहरण दो। ५. विशेषण का कौन लिङ्ग है और कौन वचन? ६. आकारान्त विशेषण के बदलने के कौन कौन नियम हैं? ७. संस्कृत विशेषणों में किस रीति पर परिवर्तन होता है? ८. 'सब' किस वचन में आता है?

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो--

श्रीमान् सीतादेवी की कथा बड़ा मीठा है। गोरा श्री पीला साड़ी पहने हुई है। रूखा सूखा बात बड़ा कड़वा होता है। यह किताबका क्या मोल है? वह लड़की को बुलाओ। कौन घर में रहते हो? कोई काम में शीघ्रता मत करो। इस पुस्तकों का क्या मोल है? उस घरों में कौन रहते हैं?

तुलना (Comparison).

दो या अधिक वस्तुओं के गुणों के मिलान को तुलना

कहते हैं। तुलना के विचार से गुणबोधक तथा थोड़ेसे परिमाण और संख्याबोधक विशेषणों की तीन अवस्थाएँ होती हैं—स्वरूप अवस्था, आधिक्यबोधक अवस्था और अतिशय-बोधक अवस्था।

१. जब विशेषण में सामान्यता रहती है, कुछ विशेषता नहीं तब उसे स्वरूप अवस्था कहते हैं। जैसे-मोहन अच्छा बालक है।

२. जब दो वस्तुओं के बीच न्यूनता या अधिता की तुलना होती है तब विशेषण की आधिक्यबोधक अवस्था होती है। जैसे-मोहन श्याम से अच्छा है। दोनों में मोहन अच्छा है।

आधिक्यबोधक चिन्ह 'से' और 'में' हैं। कभी कभी स्वरूप अवस्था में 'से' या 'में' के आगे। 'अधिक' या 'अधिक-न्यून' इत्यादि शब्द लगाकर भी 'आधिक्यबोधक' बनालेते हैं। जैसे-राम मोहन से अधिक चतुर है। मेरा भाग उस से अधिक न्यून है।

३. जब दो से अधिक वस्तुओं में तुलना करते हैं और उन में से एक को श्रेष्ठता देते हैं तब विशेषण की अतिशयबोधक अवस्था होती है। जैसे-विद्यार्थियों में मोहन सब से अच्छा है। रामचन्द्र सब में दानी है।

अतिशयबोधक में 'सब से' और 'सब में' लगाते हैं।

संस्कृत के शब्दों में आधिक्यबोधक अवस्था में तर और अतिशयबोधक में तम लगाते हैं। जैसे-प्राचीन से प्राचीनतर, प्राचीनतम। गुरु से गुरुतर, गुरुतम। स्त्री का, परिवार प्रिय है, पुत्र प्रियतर है और पति प्रियतम है। इत्यादि।

नोट-(१) 'सा' से बराबरी का बोध होता है। जैसे-भीम हनुमान सा बलवान पुरुष था।

(२) 'थोड़ा सा, कुछ' इत्यादि शब्दों के लगाने से न्यूनता का तथा

अति, अत्यन्त, अधिक, बहुत, और **बहुत ही'** इत्यादि शब्दों के लगाने से अधिकता का बोध होता है। जैसे—थोड़ा सा पीला, कुछ लाल, अतिसुन्दर, अत्यन्त सुन्दर, बहुत लाभदायक, बहुत ही छोटा, इत्यादि।

(३) जब विशेषण की अतिशयता प्रकट करनी होती है तब विशेषण को दुहरादेते हैं। जैसे—**लाल लाल** आँखें दिखलाने से मैं नहीं डरूँगा! **भीनी भीनी** सुगन्धों से मन प्रसन्न होगया। **वह वह** तमाशे दिखावेंगे कि अक्ल दंग होजायगी। +

अभ्यास।

१. तुलना किसे कहते हैं? २. 'रामचन्द्र सब में दानी है।' यदि इस वाक्य में 'सब में दानी' के बदले केवल 'दानी' आता तो क्या भेद पड़ता है? ३. विशेषण कब दुहरायाजाता है? ४. 'सा' से क्या बोध होता है? ५. 'छोटा' और 'बहुत ही छोटा' में क्या भेद है?

अन्य बातें—

१. बहुतसे परिमाणबोधक विशेषण, बहुवचन विशेष्य के साथ अनिश्चित संख्याबोधक होजाते हैं। जैसे-थोड़े मनुष्य, बहुत लड़के, इत्यादि।

२. निश्चयबोधक संख्याओं के पहले 'लगभग, प्रायः' इत्यादि शब्दों के लगाने से या दो पूर्णाङ्क संख्याओं को एक साथ लिखने से अनिश्चयबोधक विशेषण बनते हैं। जैसे-लगभग चालीस विद्यार्थी, प्रायः बीस लड़के, चारपाँच ग्राम, पाँचसात दिन, इत्यादि।

नोट—डेढ़ दो रुपये, अढ़ाई तीन वर्ष, इत्यादि इत्यादि प्रयोग भी इसी अर्थ में हैं। किसी पूर्णाङ्क संख्या के आगे एक लगाने से 'लगभग' का अर्थ निकलता है। जैसे—चालीस एक आदमी।

३. बीसो, पचीसो, पचासो, हजारो इत्यादि संख्याएँ निश्चय-बोधक विशेषण हैं, परन्तु जब इनके अन्त्य स्वर 'ओ' रहें तब

+ आगे द्विरुक्ति का पाठ देखो।

अनिश्चय का बोध होता है । जैसे-बीसों आदमी आये (पहले से केवल बीस ही का निश्चय था)। बीसों आदमी आये (कई बीस आदमी, अनिश्चय)।

नोट—आजकल बीसों, पचीसों, पचासों, सैकड़े, हजारों, लाखों इत्यादि कतिपय अनिश्चयबोधक संख्याओं को छोड़, शेष दोनों, तीनों, चारों इत्यादि शब्द दोनो, तीनो, चारो के समान 'निश्चयबोधक' में भी लिखे जाते हैं।

४. थोड़ेसे विशेषण अकेले भी आते हैं, ऐसी अवस्था में उन के लुप्तविशेष्य अनुमान से समझते हैं । जैसे-बापुरे बटोही पर बड़ी कड़ी बीती । महाराज जी ने बिछावन पर लम्बी तानी ।

५. विशेष्यरहित विशेषण, संज्ञा का अर्थ देता है जैसे-बड़ों का कहना मानो। इतने में ऐसा हुआ। जैसे को तैसे मिले। पण्डित जी आये।

नोट—ऐसी संज्ञाएँ कभी जातिवाचक होती हैं और कभी व्यक्तिवाचक। जैसे-झूठ बोलना पण्डितों को उचित नहीं (जातिवाचक), पण्डितजी नहीं आये (व्यक्तिवाचक)।

६. कुछ विशेषण सर्वनामों की भाँति आते हैं। जैसे- सभा में एक (कोई) आता है तो एक (कोई) जाता है। एक दूसरे (आपस) में प्रेमव्यवहार रहना चाहिये। दुविधामें दोनों गये, माया मिली न राम। इत्यादि।

७. कोई कोई विशेषण क्रियाविशेषण भी होते हैं। जैसे- राम ने सीता को बहुत समझाया । एक तुम्हारे ही दुःख से हम दुखी हैं। वह मरने से इतना क्यों डरता है ? इत्यादि ।

८. विशेषण का भी विशेषण होता है । जैसे-अतिशय दयालु पुरुष, बहुत बड़ा लड़का, बहुत ही हानिकारक पदार्थ, इत्यादि ।

९. सा, नाम, नामक, सम्बन्धी, रूपी इत्यादि शब्दों को

संज्ञा के साथ मिलाकर विशेषण बनाते हैं। 'सा' सर्वनाम के साथ भी आता है। जैसे–फूलसा शरीर, बाहुक नाम सारथी, दशरथ नामक राजा, पाठशाला सम्बन्धी काम, तृष्णारूपी नदी, इत्यादि।

१०. कभी कभी निरर्थक शब्द संज्ञा के साथ लगकर इत्यादि का अर्थ देता है, इस को निरर्थक अनुक्रमी कहते हैं। जैसे–पानी वानी पिलाओ। जूता ऊता लाओ।

११. सभी प्रकार के शब्दों से विशेषण बनते हैं—

संज्ञा से–धनी, पेटू, मैला, पहाड़ी, इत्यादि।

सर्वनाम से–जैसा, इतना, आपवाला, इत्यादि।

विशेषण से–लघुतर, प्राचीनतम, इत्यादि।

क्रिया से–पढ़नेवाला (बालक), खाया (मुंह), नहाया (बदन), पढ़ता (सुग्गा), चलती (गाड़ी), इत्यादि।

अव्ययसे–भीतरी (बातें), बाहरी (मनुष्य), इत्यादि।

नोट–विशेष वर्णन तद्धित और कृदन्त में देखो।

१२. विशेषण के स्थान पर विशेष्य और विशेष्य के स्थान पर विशेषण रखना अनुचित है। जैसे–'वह सन्तोष होगया।' यह वाक्य अशुद्ध है, इस के बदले 'वह सन्तुष्ट होगया' या 'उसे सन्तोष होगया' लिखना उचित है।

१३. बहुत्व के अर्थ में विशेषण और विशेष्य दोनों में किसी एक ही को बहुत्वबोधक रखना उचित है। जैसे–बहुसंख्यक बालक या बालकगण, बहुतसे आदमी या आदमी लोग। ऐसी जगह 'बहुसंख्यक बालकगण' और 'बहुतसे आदमी लोग' अशुद्ध हैं।

समानाधिकरणशब्द (Words in Apposition)

किसी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने केलिये जो शब्द आता है

उसे समानाधिकरण शब्द कहते हैं। जैसे–मैं रामप्रसाद इकरार करता हूँ। इस वाक्य में मैं और रामप्रसाद दोनों आपस में समानाधिकरण हैं, क्योंकि मैं शब्द विशेषण के समान रामप्रसाद संज्ञा की व्यापकता को बाँध नहीं देता, बल्कि यहाँ रामप्रसाद शब्द मैं के अर्थ को स्पष्ट करता है।

जो विशेषण संज्ञा की व्यापकता को नहीं बाँधता उसे समानाधिकरण विशेषण कहते हैं। जैसे–प्रतापी भोज को कौन नहीं जानता! इस वाक्य में प्रतापी शब्द भोज के अर्थ को केवल स्पष्ट करता है। 'भोज' और 'प्रतापी भोज' एक ही व्यक्ति के सूचक हैं।

व्यक्तिवाचक के विशेषण और जातिवाचक के साधारण धर्म सूचित करनेवाले विशेषण, समानाधिकरण विशेषण होते हैं। जैसे–पतिव्रता सीता की जीवनी पढ़ो। ठंढी बर्फ, काला कौआ, मूक पशु, अबोध बच्चा, इत्यादि।

पुरुषवाचक और निजवाचक सर्वनाम भी समानाधिकरण होते हैं। जैसे–मैं रामप्रसाद इकरार करता हूँ। लड़की आप आई थी।

अभ्यास।

१. नीचे लिखे प्रत्येक जोड़े में क्या भेद है?

सारा देश--सारे देश। पाँच आम-चार पाँच आम। चालीस आदमी-चालीस एक आदमी। पचासों आदमी-पचासों आदमी।

२. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो।

बीस विद्यार्थी परीक्षा में गये थे। बीसों उत्तीर्ण होगये। माली ने सब पेड़ को काटडाला। सैकड़ों बार हम ने समझाया। बहुसंख्यक मनुष्यगण यहाँ आये थे। बहुतसे आदमीलोगोंको हमने देखा था।

३. नीचे लिखे वाक्यों में विशेषण, विशेषण के भेद और तुलना बताओ।

बुरे आदमी का कोई मनुष्य मान नहीं करता। सच्ची बात कहने से कभी डरना न चाहिये। आठ बुरे आदमियों ने दोनों पाओं को लूटलिया। राम का दूसरा बेटा धीरे धीरे पढ़ता है। मोहन रामसा तेज है। श्याम सब से तेज है। यह पुस्तक उस से अच्छी है।

४. दो ऐसे वाक्य कहो, जिन में परिमाणबोधक विशेषण प्रयोग में अनिश्चित संख्याबोधक बनगये हों। ५. दो ऐसे वाक्य बताओ जिन में विशेषण बिना विशेष्य के आये हों। ६. 'पण्डित जी आये।' इस वाक्य में 'पण्डित जी' कौन संज्ञा है ? ७. चार ऐसे वाक्य कहो, जिन में विशेषण क्रियाविशेषण होकर आये हों। ८. किन किन शब्दभेदों से विशेषण बनते हैं ? उदाहरण दो। ९. संज्ञा में किन किन शब्दों के लगाने से वह विशेषण हो जाती है ? १०. विशेषण संज्ञा को क्या करता है ११. जो विशेषण संज्ञा की व्यापकता को नहीं बाँधता उसे क्या कहते हैं ? १२. समानाधिकरण शब्द किसे कहते हैं ? १३. समानाधिकरण शब्द और विशेषणमें क्या भेद है ? १४. समानाधिकरण विशेषण कौन कौन होते हैं ? १५. कौन कौन सर्वनाम समानाधिकरण होते हैं ? १६. प्रयोग के अनुसार कुछ विशेषण सर्वनाम की भाँति भी आते हैं, उदाहरण दो।

पदच्छेद (Parsing).

विशेषण के पदच्छेद में संज्ञा ही के समान सब बातें कहनीपड़ती हैं, अर्थात् विशेषण, विशेषण के भेद, लिङ्ग, वचन, कारक आदि और विशेष्य।

उदाहरण—इस पत्र में लिखा है। **चौथे** बालक ने **दीन** मनुष्यों को **थोड़ा** आटा दिया था।

इस—विशेषण, सार्वनामिक संकेतवाचक, पुल्लिङ्ग, एकवचन, अधिकरण कारक, इस का विशेष्य 'पत्र' है।

चौथे—विशेषण, क्रमवाचक (संख्याबोधक का भेद) पुल्लिङ्ग, एकवचन, कर्त्ताकारक, इस का विशेष्य 'बालक' है।

दीन—विशेषण, गुणबोधक, पुल्लिङ्ग, बहुवचन, सम्प्रदानकारक, इस का विशेष्य 'मनुष्य' है।

थोड़ा-विशेषण, परिमाणबोधक, पुल्लिङ्ग, एकवचन, कर्मकारक, इस का विशेष्य 'आटा' है।

अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों में संज्ञाओं, सर्वनामों और विशेषणों का पदनिर्देश करो-

राम का बड़ा बेटा आप आया था। प्रतापी भोज को कौन नहीं जानता! दुविधा में दोनों गये, माया मिली न राम। मोहन रामसा तेज है। बुरे आदमी का कोई मनुष्य मान नहीं करता।

क्रिया (Verbs).

'ना' अन्तवाला शब्द, जिससे किसी व्यापार का बोध हो, क्रिया का साधारण रूप है। जैसे-आना, खाना, जाना, पीना, पढ़ना, लिखना, इत्यादि।

नोट-यदि व्यापार का बोध न हो तो ना अन्तवाले शब्द, क्रिया नहीं कहला सकते। जैसे-सोना (एक द्रव्य), कोना, दाना, नाना, अँगना, पटना, भगिना, इत्यादि। ÷

क्रिया का साधारण रूप क्रियार्थक संज्ञा भी कहलाता है। जैसे-यहाँ का 'रहना' हमें पसन्द नहीं। मेरे 'खाने पीने' का कोई ठिकाना नहीं। इत्यादि। *

क्रिया के साधारण रूप के 'ना' का लोप करके जो शेष रहता है, वह क्रिया का धातु है। क्रिया के सब रूपों में धातु सदा अटल रहता है। जैसे-पढ़, लिख, जा, पी, खा, आ, इत्यादि।

नोट-धातुओं के दो अर्थ हैं-व्यापार और फल। जैसे-गुरु ने पुस्तक पढ़ी। इस वाक्य में पढ़ने का व्यापार गुरु करता है और पढ़ने का फल

÷ बेलना' संज्ञा और क्रिया दोनों है। जैसे-यह बेलना चन्दन का है, इससे रोटियाँ बेली जाती हैं।

* संज्ञा होने के कारण इसकी कारकरचना भी होती है। यह संज्ञा कृदन्तीय-भाववाचक का एक भेद है। (आगे देखो)।

पुस्तक पर पड़ता है। 'राम सोता है।' इस वाक्य में सोने का व्यापार राम करता है और सोने का फल भी उसी पर पड़ता है अर्थात् वही सोता है।

क्रिया के भेद (Classes of Verbs).

क्रियाओं के दो भेद हैं—सकर्मक और अकर्मक। जिस में कर्म लग सके अर्थात् जिस क्रिया का फल कर्त्ता को छोड़ कर्म पर पड़े उसे 'सकर्मक क्रिया' कहते हैं। जैसे—"गुरु ने लड़कों को पढ़ाया। हम राम को देखते हैं। मोहन ने श्याम को मारा होगा।" इन वाक्यों में कर्म आये हैं जिन पर क्रियाओं के फल पड़ते हैं। पहले वाक्य में 'पढ़ाया' क्रिया का व्यापार गुरु में है और पढ़ाने के व्यापार का फल गुरु को छोड़ 'लड़कों' पर पड़ता है अर्थात् पढ़ाने के कार्य लड़कों पर किये गये हैं, इसलिये 'पढ़ाया' क्रिया सकर्मक हुई। इसी प्रकार 'देखते हैं' और 'मारा होगा' भी सकर्मक क्रियाएँ हैं।

जिस में कर्म नहीं लग सके अर्थात् जिस क्रिया का व्यापार और फल दोनों कर्त्ता ही में रहें उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे—"राम सोता है। हम हँसते थे।" इन वाक्यों में कर्म नहीं आये हैं। पहले वाक्य में सोने का व्यापार राम करता है और सोना भी वही है अर्थात् सोने का काम और सोना दोनों कर्त्ता ही में हैं, इसलिये 'सोता है' क्रिया अकर्मक हुई। इसी प्रकार 'हँसते थे' अकर्मक क्रिया है।

कुछ क्रियाएँ अकर्मक और सकर्मक दोनों होती हैं। जैसे—उस का सिर खुजलाता है (अकर्मक)—वह सिर को खुजलाता है (सकर्मक)। जी घबराता है (अ०)—विपद् मुझे घबराती है (स०)। आप का जी ललचाता है (अ०)—वह असबाब की खरीदारी के लिये श्याम को ललचाता है (स०)। बूँद बूँद करके तालाब भरता है (अ०)—प्यारी ने आँखें भरके कहा (स०)।

सकर्मक क्रिया—

बहुतेरी सकर्मक क्रियाएँ केवल एक कर्म लेती हैं। जैसे-कुत्ते ने लड़के को काटा।

कई सकर्मक क्रियाएँ दो कर्म लेती हैं, क्योंकि एक कर्म से उनके अर्थ पूर्ण नहीं होते, ऐसी क्रियाएँ द्विकर्मक कहलाती हैं। जैसे-उसने नंगों को वस्त्र दिये। मैंने उसको एक रीति बतलाई। देना, बतलाना, कहना, सिखाना, पढ़ाना, पूछना इत्यादि द्विकर्मक क्रियाएँ हैं। द्विकर्मक क्रिया का पहला कर्म वस्तु-बोधक और दूसरा प्राणिबोधक होता है। वस्तुबोधक को मुख्यकर्म और प्राणिबोधक को गौणकर्म कहते हैं। (पीछे कारकप्रकरण देखो)।

कई सकर्मक क्रियाएँ ऐसी हैं, जो एक कर्म लेती हैं और कुछ शब्द अपने अर्थ पूर्ण करने केलिये चाहती हैं, ऐसी क्रियाएँ अपूर्ण सकर्मक कहलाती हैं। जैसे-सरकार ने धावले को जज बनाया। मैं ने उसे स्वतन्त्र करदिया। राम उस चोर को दण्ड दिलाना चाहता है। सकर्मक क्रिया की पूर्ति 'कर्म-पूर्ति' कहलाती है। उदाहरण के वाक्यों में 'जज,' 'स्वतन्त्र' और 'दण्ड दिलाना' ये तीनों पूर्त्तियाँ हैं।

नोट—जब ये क्रियाएँ पूर्ति नहीं चाहतीं तब अपूर्ण भी नहीं कहलातीं जैसे-कुम्हार घड़ा बनाता है। विद्यार्थी पाठ समझते हैं।

जब कोई अकर्मक क्रिया अपने ही धातु से बना हुआ या उस से मिलता जुलता सजातीय कर्म चाहती है तब वह सकर्मक कहलाती है। जैसे-राम प्रतिदिन एक लम्बी दौड़ दौड़ता है। मेरी सेना अच्छी लड़ाई लड़ती है।

अकर्मक क्रिया—

अकर्मक क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं—पूर्ण अकर्मक और अपूर्ण अकर्मक।

पूर्ण अकर्मक वह है जिसके कहने से पूरा अर्थ प्रतीत हो। जैसे-मैं सोता हूँ।

अपूर्ण अकर्मक वह है जो पूर्ण अर्थ केलिये पूर्ति की अपेक्षा करे। जैसे-वह मनुष्य बीमार हो गया।

होना, बनना, दिखना, निकलना, कहलाना, पड़ना, रहना, इत्यादि अपूर्ण अकर्मक हैं +। अकर्मक क्रिया की पूर्ति को उद्देश्यपूर्ति कहते हैं।

नोट ये क्रियाएँ जब पूर्ति नहीं चाहतीं तब अपूर्ण भी नहीं कहलातीं। जैसे-ईश्वर है। सवेरा हुआ। चाँद दिखाईदेता है। सूरज निकला। इत्यादि।

यदि कर्म की विवक्षा न रहे अर्थात् क्रिया का केवल कार्य मात्र ही प्रगट हो तो सकर्मक क्रिया भी अकर्मक सी होजाती है। जैसे-ईश्वर की कृपा से बहरा सुनता है और गूँगा बोलता है।

अभ्यास।

१. धातु किसे कहते हैं? २. धातुओं के कौन कौन अर्थ हैं? समझाओ। ३. क्रियार्थक संज्ञा किसे कहते हैं? ४. सकर्मक क्रिया कब अकर्मक होती है? उदाहरण दो। ५. अकर्मक क्रिया कब सकर्मक होती है? उदाहरण दो। ६. कौन कौन क्रियाएँ अकर्मक और सकर्मक दोनों होती हैं। ? अपूर्ण सकर्मक किसे कहते हैं? उदाहरण दो।। ८. अपूर्ण अकर्मक किसे कहते हैं? उदाहरण दो। ९. द्विकर्मक क्रिया किसे कहते हैं? १०. कर्मपूर्ति और उद्देश्यपूर्ति में क्या भेद है? पाँच ऐसे वाक्य बनाओ, जिनकी क्रियाएँ अपूर्ण अकर्मक हों। १२. दो ऐसे वाक्य बनाओ, जिनकी अपूर्ण अकर्मक क्रियाओं से पूर्णता का अर्थ निकले।

+ कियाजाना, बनायाजाना समझाजाना, पायाजाना और रक्खाजाना इत्यादि संयुक्त क्रियाएँ भी अपूर्ण हैं। जैसे-मेरा भाई राजा बनायागया। कौआ चालाक समझाजाता है। यह बात झूठी पाईगई। लड़के होशियार किये जायँगे। बच्चे का नाम मैथिलीशरण रक्खाजायगा।

वाच्य (Voices).

क्रिया के तीन वाच्य हैं-कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

यदि कर्त्ता के अनुसार क्रिया के लिङ्ग, वचन आदि हों तो वह कर्तृवाच्य कहलाती है। जैसे-राम पुस्तक पढ़ता है। सीता ग्रन्थ पढ़ती है।

नोट—"कलम नहीं चलती। भोजन बनता है। फल पकते हैं। मेह बरसता है। कपड़े भीगते हैं। पानी बहता है।" ऐसे वाक्यों में कर्म करनेवाला कर्त्ता नहीं बतायाजाता और दिखायाजाता है कि काम आप से आप होता है। ऐसी क्रियाएँ वास्तव में कर्मकर्तृवाच्य हैं।

यदि कर्म के अनुसार क्रिया के लिङ्ग, वचन आदि हों तो वह क्रिया कर्मवाच्य कहलाती है। जैसे-सीता ने भात खाया। राम ने रोटी खाई। मोहन से पुस्तक पढ़ीजाती है। राम से रोटी खाईगई।

यदि कर्त्ता या कर्म के अनुसार क्रिया के लिङ्ग वचन आदि न हों, बल्कि वह सदा एकवचन, पुल्लिङ्ग और अन्यपुरुष में रहे तो वह क्रिया भाववाच्य कहलाती है। जैसे-रानी ने सहेलियों को बुलाया। मुझसे सोया नहीं जाता। आयाजाय।

कर्तृवाच्य के कर्त्ता में और कर्मवाच्य के कर्म में कोई चिन्ह नहीं लगता। भाववाच्य के कर्त्ता में ने और कर्म में को लगाते हैं।

कर्मवाच्य और भाववाच्य के कर्त्ता में ने लाते हैं, परन्तु इस का अपवाद, 'खाजा' इत्यादि जा धातु से युक्त 'संयुक्त धातुओं' के प्रयोगों में पायाजाता है। ऐसे धातुओं के साथ कर्त्ता में ने के बदले 'से' लगाते हैं। जैसे-'मैं खागया' इसका कर्मवाच्य 'मुझ से खायागया' है न कि 'मुझ ने खायागया'।

'खायागया' खाजा इस संयुक्त धातु का कर्मवाच्य है, रूढ़ धातु 'खा' का नहीं। (पं० रामावतार शर्मा)

कर्मवाच्य क्रिया केवल सकर्मक होती है, परन्तु कर्तृवाच्य और भाववाच्य क्रियाएँ अकर्मक और सकर्मक दोनों होती हैं।

अभ्यास।

१. वाच्य कितने प्रकार के होते हैं? २. 'कलम नहीं चलती। फल पकते हैं।' इन वाक्यों में क्रियाएँ किस वाच्य में हैं? ३. कर्मवाच्य और भाववाच्य में क्या भेद है? ४. 'से' चिन्ह किस वाच्यवाली क्रिया के कर्ता में आता है? ५. 'मुझ से रोटी खाईगई।' इस वाक्य में क्रिया किस वाच्य में है और यह किस क्रिया से बनी है? कर्मवाच्य क्रिया अकर्मक होती है या सकर्मक? उदाहरण दो।

काल (Tenses).

क्रिया के करने में जो समय लगता है उसे भूतकाल कहते हैं।

काल के तीन भेद हैं—भूत, वर्तमान और भविष्यत्।

जिस से बीता हुआ समय जानाजाय उसे भूतकाल कहते हैं। जैसे-मैं ने खाया। राम ने खाया है। तू ने खाया था। सीता खाती थी। मोहन ने खायाहोगा। यदि श्याम नहीं खाता तो भात बचजाता।

जिस का आरम्भ होचुका हो, पर समाप्ति नहीं हुई तो उसे वर्तमानकाल कहते हैं। जैसे-मोहन पढ़ता है। राम पढ़ता होगा।

आनेवाले समय को भविष्यत्काल कहते हैं। जैसे-राम पुस्तक पढ़ेगा। वे पढ़ें।

भूतकाल—

भूतकाल के ६ भेद हैं-सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत, अपूर्णभूत, सन्दिग्धभूत और हेतुहेतुमद्भूत।

१. जिस से भूतकाल की सामान्यता समझीजाती है, कोई विशेषता नहीं उसे सामान्यभूतकाल की क्रिया कहते हैं। जैसे-राम बैठा। वह आया। मैं ने पढ़ा। श्याम कलकत्ते गया।

२. जिस से जानपड़ता है कि काम भूतकाल में आरम्भ होकर अभी समाप्त हुआ है उसे आसन्नभूतकाल की क्रिया कहते हैं! जैसे-मैं ने अभी भोजन किया है। वह बाजार से आया है। तू ने मुझे यह बात कही है।

३. जिस से जानपड़ता है कि काम बहुत ही पहले पूर्ण हुआ उसे पूर्णभूतकाल की क्रिया कहते हैं। जैसे-श्याम आया था। मैं ने गत वर्ष परीक्षा दी थी। मुझे पिता जी से भेंट हुई थी।

४. भूतकाल की जो क्रिया पूरी नहीं हुई उसे अपूर्णभूतकाल की क्रिया कहते हैं। जैसे-वह खाता था। मैं पुस्तक पढ़ता था।

नोट-जिस अपूर्णभूत का होतारहना उसी क्षण जानपड़े उसे तात्कालिक भूत कहते हैं। जैसे-मैं खारहा था। वह पुस्तक पढ़रहा था।

५. जिस के होने में सन्देह विदित हो उसे सन्दिग्ध भूतकाल की क्रिया कहते हैं। जैसे-मैं ने लिखा होगा। श्यामलाल आया होगा।

६. जिस क्रिया में कार्य और कारण का फल भूतकाल का कहना होता है उसे हेतुहेतुमद्भूतकाल की क्रिया कहते हैं। जैसे-धन रहने पर मैं अवश्य पढ़ता। यदि परीक्षा देते तो अवश्य उत्तीर्ण होते। वह जाता तो खाना पाता। *

---

* कार्य कारण का सम्बन्ध भविष्यत और वर्तमान में भी पायाजाता है। जैसे-पैसा होगा तो वस्तु खरीदेंगे। पढ़ता है तो विद्वान होता है। वह जाय तो भोजन पावे।

वर्तमानकाल—

वर्तमानकाल के दो भेद हैं—सामान्यवर्तमान और सन्दिग्ध वर्तमान।

१. जिस से वर्तमानकाल की सामान्यता समझीजाती है उसे सामान्यवर्तमानकाल की क्रिया कहते हैं। जैसे—राम खाता है। मैं पढ़ता हूँ। तू लिखता है। सूर्य्य दिन में और चन्द्रमा रात में उगते हैं।

नोट—जिस वर्तमानकालिक क्रिया का होतारहना उसी क्षण जानपड़ता है उसे तात्कालिकवर्तमानकाल की क्रिया कहते हैं। जैसे—राम खा रहा है। मैं पढ़रहा हूँ। तू लिख रहा है। (यह सामान्यवर्त्तमान का ही भेद है।)

२. जिस वर्तमानकालिक क्रिया से सन्देह प्रकट हो उसे संदिग्धवर्तमानकाल की क्रिया कहते हैं। जैसे—राम खाता होगा। हम पढ़ते होंगे। तुम लिखते होगे।

भविष्यत्काल—

भविष्यत्काल के दो भेद हैं—सामान्यभविष्यत् और सम्भाव्यभविष्यत्।

जिस क्रिया से भविष्यत् काल की सामान्यता समझीजाय उसे सामान्य भविष्यत् काल की क्रिया कहते हैं। जैसे—मैं करूँगा। तू लड़ेगा। वह बैठेगा।

यदि भविष्यत्काल में काम करने या होने की केवल इच्छामात्र समझोजाय, चाहे वह हो या न हो तो उसे सम्भाव्य भविष्यत् काल को क्रिया कहते हैं। जैसे—मैं बैठूँ। तू बैठे। वे बैठें। तू खावे।

नोट—इसका दूसरा नाम सम्भावना भी है। क्रिया कभी कभी धातुरूप में आती है। जैसे—यदि आना तो हम से मिलना।

विधि (आज्ञा)-

विधि से आज्ञा का बोध होता है। जैसे-आओ, आइये, आइयेगा, आइयो। इन उदाहरणों में 'आओ' साधारणविधि, 'आइये' * आदरविधि, 'आइयेगा' प्रार्थनाविधि और 'आइयो' परोक्षविधि हैं।

नोट-(१) कहीं केवल धातु ही विधि का अर्थ देता है। जैसे-माता, थोड़ा पानी देना। तुम प्रतिदिन दूध पीना। 'लगा कहने चल भाग रे फिर न आना। मियाँ मैं भी चलता हूँ टुक रहके जाना।'

(२) विधि में कर्त्ता 'तू और तुम' प्रायः लुप्त रहते हैं।

पूर्वकालिक—

जब कोई कर्त्ता एक क्रिया समाप्त करके दूसरी क्रिया किसी काल में करता है तब पहली क्रिया पूर्वकालिक कही जाती है। जैसे-'चोर उठभागा। राम खाके सोता था। वह पढ़कर जाता है। मैं लाकर के जाऊँगा।' यह क्रिया अकेली प्रयोग में नहीं आती, दूसरी क्रिया के साथ आती है।

पूर्वकालिक के चिन्ह '० के, कर और करके' हैं।

नोट-"लड़के दौड़ते दौड़ते थकगये। ईश्वर की माया को लोग सोचते और विचारते ही रहते हैं परन्तु उस का भेद किसी को पता नहीं लगता। खाया मुँह नहाया बदन नहीं छिपता। कृष्ण आयेहुए रथ

---

* चाह (चाहना) धातु से बना 'चाहिये' आदरविधि का अर्थ कदाचित् ही देता है। 'तुम खाओ' के बदले आदरविधि में 'आप खाइये' बोलते हैं, परन्तु 'तुम चाहो' के बदले 'आप चाहिये' प्रायः नहीं बोलते। "मुझे एक पुस्तक चाहिये-आप को जाना चाहिये" इत्यादि वाक्य बोलेजाते हैं। इन वाक्यों में 'चाहिये' का प्रयोग क्रियाविशेषण के समान है और उसके आगे होना क्रिया लुप्त दिखाई देती है। ऐसे वाक्यों में उद्देश्य (कर्त्ता) सम्प्रदान कारक में रहता है और कर्म या क्रिया का साधारण रूप ही कर्त्ता सा दीख पड़ता है। (आगे वाक्य प्रकरण देखो)।

पर शीघ्र बैठगये। दाता से बिना **दिये** रहा नहीं जाता। **बैठेबैठे** मन नहीं लगता।" इन वाक्यों में **मोटे अक्षरों** में छपे अंश क्रिया ही से बने हैं, परन्तु व विशेषण या क्रियाविशेषण हैं (आगे कृदन्त और तद्धित प्रकरण देखो।)

प्रकार (Moods).

सभी क्रियाओं के प्रकारकृत तीन भेद हैं—साधारण, सम्भाव्य और आज्ञार्थक (विधि)।

१. साधारण अवस्था की क्रिया को 'साधारण क्रिया' कहते हैं। साधारण क्रिया में सम्भव या आज्ञा नहीं पाईजाती। जैसे–मैं ने खाया। तुम कहाँ जाते हो ?

२. जिस क्रिया से सम्भव अर्थात् ' अनिश्चय, इच्छा, या संशय' पायाजाय उसे सम्भाव्य क्रिया कहते हैं। जैसे–यदि हम खाते थे **तो आप क्यों नहीं ठहरगये ? धन रहता तो वह अवश्य** पढ़ता। **मैं ने** खायाहोगा **तो केवल भात ही। मैं वहाँ** जाऊँ **तो क्या मिलेगा ?**

नोट–हेतुहेतुमद्भूत, सम्भाव्य भविष्यत् और सन्दिग्धक्रियाएँ इसी श्रेणी के हैं। ' यदि ' और इसी अर्थ के अन्य शब्दों के साथ शेष क्रियाएँ भी सम्भाव्य होजाती हैं।

३. आज्ञार्थक (विधि) से आज्ञा, उपदेश और प्रार्थना सूचक क्रियाओं का बोध होता है। जैसे–यहाँ से जाओ। भलाई कियाकरो। कृपा करके पत्र का उत्तर अवश्य दीजिये।

अभ्यास।

१. काल किसे कहते हैं ? २. 'खाता था' और 'खा रहा था' में क्या भेद है ? ३. 'पढ़ता हूँ' और 'पढ़ रहा हूँ' में क्या भेद है ? ४. भविष्यत् काल के कितने भेद हैं ? प्रत्येक का लक्षण कहो। ५. 'चाहिये' क्या है ? उदाहरण दो। ६. पूर्वकालिक क्रिया किस काल में होती है ? ७. 'आइये, आइयो और आओ' में

क्या भेद है ? ८. क्रियाओं के प्रकारकृत कितने भेद है ? ९. किन किन कालों की क्रियाएँ सम्भाव्य होती हैं ? १०. 'सूर्य दिन में और चन्द्रमा रात में उगरहे हैं।' क्या यह वाक्य शुद्ध है ? क्यों ?

क्रियाओं के हेरफेर।

क्रियाओं में भी * लिङ्ग वचन और पुरुष होते हैं। जैसे–मैं पढ़ता हूँ। हम पढ़ती हैं। तू बैठा। तुम बैठी। वह आवेगा। वह आवेगी। इत्यादि।

ने चिन्हयुत कर्त्ता की क्रिया, कर्म चिन्हरहित हो तो कर्म के लिङ्ग वचन आदि के अनुसार और कर्म चिन्हसहित हो तो सदा एकवचन, पुल्लिङ्ग और अन्यपुरुष में होती है। (पीछे वाच्य प्रकरण देखो।)

पहले लिख आये हैं कि ने चिन्ह कर्मवाच्य और भाव-वाच्य की क्रियाओं में कर्त्ता के आगे आता है। यहाँ इसे यों भी लिखते हैं कि ने चिन्ह केवल सकर्मक क्रिया सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्ध भूतकालों में कर्त्ता के आगे आता है।(विशेष वर्णन आगे मिलेगा)

---

* क्रिया में लिङ्गभेद आजाना अत्यन्त आश्चर्य है, क्योंकि यद्यपि क्रिया को विशेषणत्व संस्कृत में भी माना है, तथापि उसे लिङ्गद्योतक किसी ने नहीं माना। यहाँ तक कि प्राकृत में भी 'एसा आ अच्छइ-एसो आ अच्छइ' इत्यादि ही होते हैं। सूक्ष्म विचार से जानपड़ता है कि संस्कृत के कृदन्त मे क्रिया में लिङ्ग होने होते 'क्रियापद' में भी लिङ्गविकार होगया। जैसे-हसन्ती अस्ति = हँसती है। हसन् अस्ति = हँसता है। नपुंसक तो हिन्दी में है ही नहीं। फिर सामान्यजनों की बोली के परिवर्तन से था-थी, गा-गी इत्यादि भेद भी होगये।-श्री पण्डित अम्बिकादत्त व्यास।

ऊपर लिखे कारणों से क्रिया के भिन्न भिन्न रूप होते हैं, इसलिये क्रिया की रूपरचना नीचे बताईजाती है।

क्रियाओं के रूप (Conjugations).

रीतियां-

सभी क्रियाएँ धातु से बनती हैं. परन्तु धातु में नाममात्र के हेरफेर करने से सामान्य भूत और हेतुहेतुमद्भूत क्रियाएँ बनती हैं। जैसे-बैठ (धातु), बैठ + आ = बैठा (सामान्य भूत), बैठ + ता = बैठता (हेतुहेतुमद्भूत)।

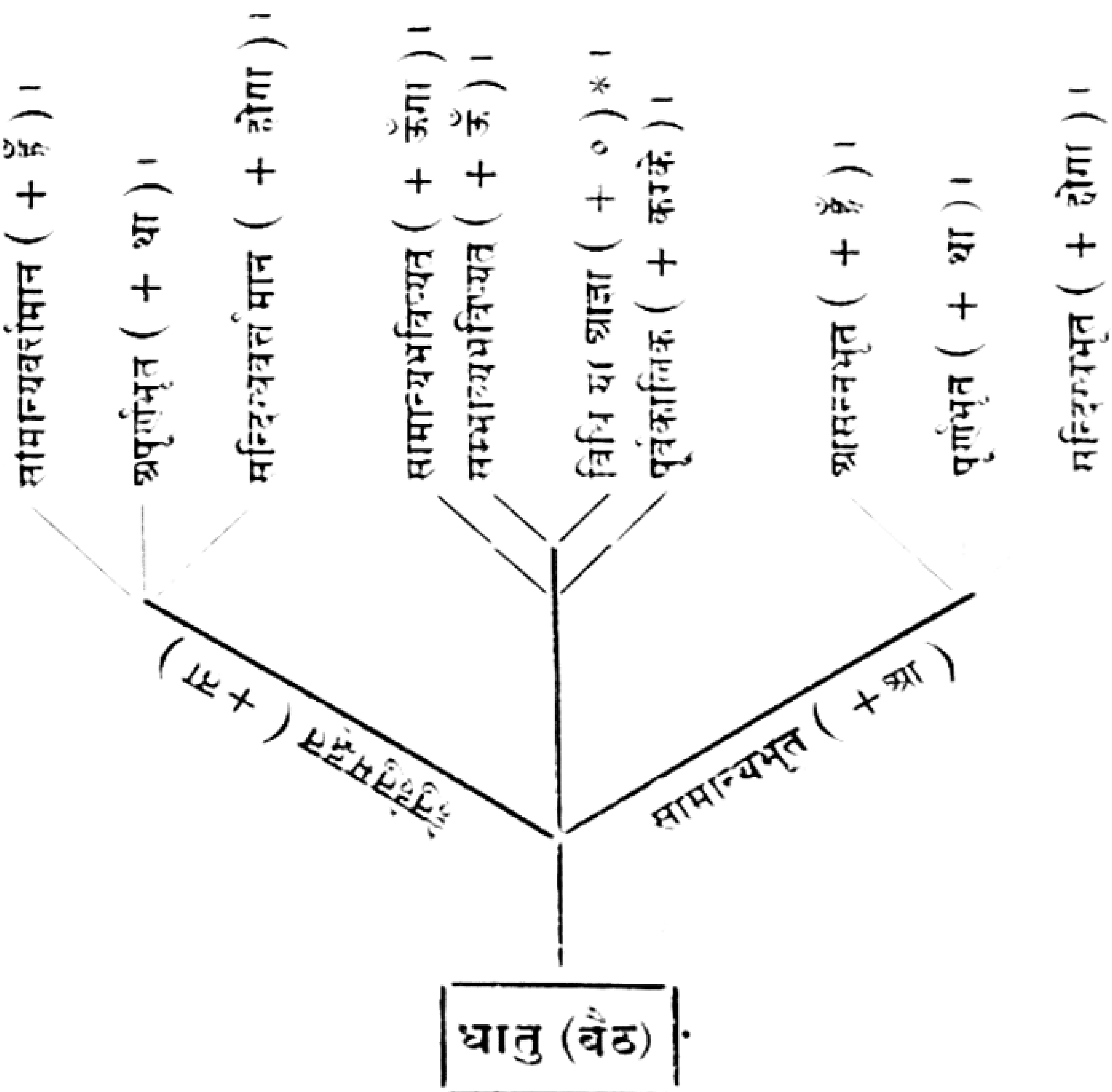
१. सामान्यभूत से आसन्नभूत, पूर्णभूत और सन्दिग्ध भूतकालों की क्रियाएँ बनती हैं। जैसे-बैठा + हूँ = बैठा हूँ (आसन्नभूत), बैठा + था = बैठा था (पूर्णभूत), बैठा + होगा = बैठा होगा (सन्दिग्धभूत)

२ हेतुहेतुमद्भूत से अपूर्णभूत, सामान्यवर्तमान और सन्दिग्धवर्तमानकाल की क्रियाएँ बनती हैं। जैसे-बैठता + था = बैठता था (अपूर्णभूत), बैठता + हूँ = बैठता हूँ (सामान्य वर्तमान) बैठता + होगा = बैठता होगा (सन्दिग्धवर्तमान)।

३. धातु से बननेवाली शेष क्रियाएँ। जैसे-बैठ + ० = बैठ (विधि, मध्यमपुरुष, एकवचन), बैठ + ऊँ = बैठूँ (सम्भाव्यभविष्यत्), बैठूँ + गा = बैठूँगा (सामान्यभविष्यत्, बैठ + ०, के, कर या करके = बैठ, बैठके, बैठकर, बैठकरके (पूर्वकालिक)।

नोट-(१) विधि को छोड़ शेष क्रियाओं के जितने रूप ऊपर बनाये-गये हैं, वे सब उत्तमपुरुष, एकवचन और पुल्लिङ्ग में हैं।

(२) नीचे क्रियावृक्ष दियाजाता है-



अभ्यास।

१. किन किन कारणों से क्रिया के रूपों में हेरफेर होता है ? २. हेतुहेतुमद्भूत से कौन कौन क्रियाएँ बनती हैं ? उदाहरण दो। ३. सामान्यभूत से कौन कौन क्रियाएँ बनती हैं ? उदाहरण दो। ४. पूर्वकालिक क्रिया कैसे बनाते हैं ? ४. सामान्यभूत और हेतुहेतुमद्भूत क्रियाएँ कैसे बनती हैं? उदाहरण दो।

---

*मध्यमपुरुष एकवचन रूप। (वास्तव में यही रूप विधि का भी है)।

रूपरचना (विस्तृत)।

(१)

सामान्यभूत और इससे बननेवाली क्रियाएँ।

(सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत और सन्दिग्धभूत)

१. सामान्यभूत—धातुओं के अन्तिम स्वरों में अ के बदले और ऊ के आगे एकवचन में आ और बहुवचन में ए तथा शेष स्वरों के आगे एकवचन में या और बहुवचन में ये लाने से पुल्लिङ्ग और सभी के लिये एकवचन में ई और बहुवचन में ईं लाने से स्त्रीलिङ्ग सामान्यभूत की क्रियाएँ बनती हैं। प्रत्यय जोड़ने के पहले धातुओं के अन्त्य स्वरों में ई × और ए को इ से तथा ऊ को उ से बदल देते हैं। जैसे-बैठ से बैठा-बैठे, बैठी-बैठीं। खा से खाया-खाये, खाई-खाईं। पी से पिया-पिये, पी-पीं। छू से छुआ-छुए, छुई-छुईं। दे से दिया-दिये, दी-दीं। सो से सोया-सोये, सोई-सोईं। इत्यादि।

नोट-(१.) 'सोआ, धोआ, रोआ,' ये रूप भी प्रयोग में हैं।

(२.) हो (होना), जा (जाना) और कर (करना) ये धातु अनियमित हैं। जैसे-हो से हुआ-हुए, हुई-हुईं। जा से गया-गये, गई-गईं। कर से किया-किये, की-कीं।

(३) मर (मरना) से मरा और मुआ दोनों रूप होते हैं।

☞ (१) कोई कोई स्त्रीलिङ्ग में आई, खाई, गई, दी इत्यादि को आयी, खायी, गयी, दियी (दिई) इत्यादि लिखते हैं, परन्तु यह रीति अनुचित प्रतीत होती है। इससे 'य' अनुच्चरित वर्ण का दोष देवाक्षर की पवित्र वर्ण-माला पर लगता है। हाँ, संस्कृत शब्दों को-जो संस्कृत व्याकरण से शुद्ध हैं-लिखना अनुचित नहीं। जैसे-धराशायी, सामयिक, दायित्व निराश्रयी, इत्यादि।

× प्रस्तुत है पय पियो, उठो, नवजीवन से जियो, उठो (श्रीमैथिली शरण गुप्त)

(२) 'हुआ' के बदले हुवा और हुया तथा 'हुए' के स्थान में हुये प्रयोग भी त्याज्य हैं।

२. आसन्नभूत- अकर्मक धातु की सामान्यभूतकालिक क्रियाओं के आगे वचन और पुरुष के अनुसार 'हूँ-हैं, है-हो, है-हैं' के लगाने से और सकर्मक धातु की सामान्यभूतकालिक क्रियाओं के आगे है-हैं के लगाने से आसन्नभूतकालिकक्रियाएँ बनती हैं।

३. पूर्णभूत-सामान्यभूतकालिक क्रियाओं के आगे लिङ्ग और वचन के अनुसार था-थे, थी-थीं के लगाने से पूर्णभूत-काल की क्रियाएँ बनती हैं।

४. सन्दिग्धभूत-सामान्यभूतकालिक क्रियाओं के आगे लिङ्ग और वचन के अनुसार होगा-होंगे, होगी-होंगी के लगाने से सन्दिग्धभूतकाल की क्रियाएँ बनती हैं, परन्तु मध्यमपुरुष के बहुवचन में अर्द्धानुस्वाररहित होगे और होगी लगाते हैं।

नोट-होऊँगा, हूँगा, होवेगा, होवेंगे, होओगे, होयँगे, होयेंगे इत्यादि रूप भी प्रयोग में आते हैं, परन्तु सरलता और अधिक प्रचार के कारण हमने थोड़े से रूप प्रयोग किये हैं।

(१) रूपावली।

अकर्मक क्रिया।

बैठना (बैठ धातु)।

कर्त्ता पुंलिङ्ग।   कर्त्ता स्त्रीलिङ्ग।

(१) सामान्यभूत।

पुरुष	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन।
उ०	मैं बैठा	हम बैठे।	मैं बैठी	हम बैठीं।
म०	तू बैठा	तुम बैठे।	तू बैठी	तुम बैठीं।
अ०	वह बैठा	वे बैठे।	वह बैठी	वे बैठीं।

(२) आसन्नभूत ।

उ०	मैं बैठा हूँ	हम बैठे हैं ।	मैं बैठी हूँ	हम बैठी+हैं ।
म०	तू बैठा है	तुम बैठे हो ।	तू बैठी है	तुम बैठी हो ।
अ०	वह बैठा है	वे बैठे हैं ।	वह बैठी है	वे बैठी हैं ।

(३) पूर्णभूत ।

उ०	मैं बैठा था	हम बैठे थे ।	मैं बैठी थी	हम बैठी थीं ।
म०	तू बैठा था	तुम बैठे थे ।	तू बैठी थी	तुम बैठी थीं ।
अ०	वह बैठा था	वे बैठे थे ।	वह बैठी थी	वे बैठी थीं ।

(४) सन्दिग्धभूत ।

उ०	मैं बैठा होगा	हम बैठे होंगे ।	मैं बैठी होगी	हम बैठी होंगी ।
म०	तू बैठा होगा	तुम बैठे होगे ।	तू बैठी होगी	तुम बैठी होगी ।
अ०	वह बैठा होगा	वे बैठे होंगे ।	वह बैठी होगी	वे बैठी होंगी ।

सकर्मक क्रिया ।

लिखना (लिख धातु)

(१) सामान्यभूत ।

कर्म पुल्लिङ्ग—

एकवचन—मैंने—हमने, तूने—तुमने, उसने—उन्होंने ग्रन्थ लिखा ।
बहुवचन— " " " ग्रन्थ लिखे ।

कर्म स्त्रीलिङ्ग—

एकवचन—मैंने-हमने, तूने—तुमने, उसने-उन्होंने पुस्तक लिखी ।
बहुवचन— " " " पुस्तकें लिखीं ।

+नियमानुसार बैठीं हैं, बैठी हों इत्यादि रूप उचित हैं, परन्तु भद्देपन के कारण प्रयोग में नहीं आते ।

(२) आसन्नभूत ।

कर्म पुल्लिङ्ग—

एक०—मैंने—हमने, तूने—तुमने, उसने—उन्होंने ग्रन्थ लिखा है।
बहु०— ,, ,, ,, ग्रन्थ लिखे हैं।

कर्म स्त्रीलिङ्ग—

एक०—मैंने—हमने, तूने—तुमने, उसने—उन्होंने पुस्तक लिखी है।
बहु०— ,, ,, ,, पुस्तकें लिखी हैं।

(३) पूर्णभूत ।

कर्म पुल्लिङ्ग—

एक०—मैंने—हमने, तूने—तुमने, उसने—उन्होंने ग्रन्थ लिखा था।
बहु०— ,, ,, ,, ग्रन्थ लिखे थे।

कर्म स्त्रीलिङ्ग—

एक०—मैंने—हमने, तूने—तुमने, उसने—उन्होंने पुस्तक लिखी थी।
बहु०— ,, ,, ,, पुस्तकें लिखी थीं।

(४) सन्दिग्धभूत ।

कर्म पुल्लिङ्ग—

एक०—मैंने—हमने, तूने—तुमने, उसने—उन्होंने ग्रन्थ लिखा होगा।
बहु०— ,, ,, ,, ग्रन्थ लिखे होंगे।

कर्म स्त्रीलिङ्ग—

एक०—मैंने—हमने, तूने—तुमने, उसने—उन्होंने पुस्तक लिखी होगी।
बहु०— ,, ,, ,, पुस्तकें लिखी होंगी।

अभ्यास ।

१. 'खाई' और 'खायी' में किस रूप को अच्छा समझते हो? कारण दो। २. 'हुवा, हुया, हुये, ये रूप त्याज्य हैं या नहीं? क्यों? ३. 'मुआ' के विषय में तुम्हारा क्या विचार है? ४. आसन्नभूतकाल की क्रियाएँ किस प्रकार बनती हैं? ५. खाना क्रिया के रूप पूर्णभूतकाल में लिखो। ६. नीचे लिखे रूप किन किन कालों की क्रियाओं के हैं—

पढ़ा होगा,खाया था,लाया है,लाया होगा, खाईं,पढ़ी थी,चला,चली थी।

(२)

हेतुहेतुमद्भूत और इस से बननेवाली क्रियाएँ।

(हेतुहेतुमद्भूत, अपूर्णभूत, सामान्यवर्तमान और सन्दिग्धवर्त्तमान)

१. हेतुहेतुमद्भूत–धातु के आगे लिङ्ग और वचन के अनुसार ता–ते, ती–तीं के लगाने से अपूर्णभूतकाल की क्रिया बनती है।

२. अपूर्णभूत–हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे लिङ्ग और वचन के अनुसार 'था–थे, थी–थीं' के लगाने से अपूर्णभूतकाल की क्रिया बनती है।

३. सामान्यवर्तमान–हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे लिङ्ग, वचन और पुरुष के अनुसार 'हूँ–हैं, है–हो, है–हैं' के लगाने से सामान्यवर्तमान काल की क्रिया बनती है।

४. सन्दिग्धवर्तमान–हेतुहेतुमद्भूत क्रिया के आगे लिङ्ग और वचन के अनुसार 'होगा–होंगे, होगी–होंगी' के लगाने से सन्दिग्धवर्तमानकाल की क्रिया बनती है, परन्तु मध्यमपुरुष के बहुवचन में लिङ्गानुसार अनुस्वार रहित 'होगे या होगी' लगाते हैं।

(२) रूपावली।

अकर्मक क्रिया।

बैठना (बैठ धातु)

कर्त्ता पुल्लिङ्ग। कर्त्ता स्त्रीलिङ्ग।

हेतुहेतुमद्भूत।

पुरुष	एकवचन	बहुवचन।	एकवचन।	बहुवचन।
उ०	मैं बैठता ×	हम बैठते।	मैं बैठती	हम बैठतीं।

× सक धातु का हेतुहेतुमद्भूत 'सकता' है, परन्तु कोई कोई 'सक्ता' लिखते हैं।

म०	तू बैठता	तुम बैठते ।	तू बैठती	तुम बैठती ।
अ०	वह बैठता	वे बैठते ।	वह बैठती	वे बैठतीं ।

(२) अपूर्णभूत ।

उ०	मैं बैठता था	हम बैठते थे ।	मैं बैठती थी	हम बैठती थी ।
म०	तू बैठता था	तुम बैठते थे ।	तू बैठती थी	तुम बैठती थी ।
अ०	वह बैठता था	वे बैठते थे ।	वह बैठती थी	वे बैठती थीं ।

(३) सामान्यवर्तमान ।

उ०	मैं बैठता हूँ	हम बैठते हैं ।	मैं बैठती हूँ	हम बैठती हैं ।
म०	तू बैठता है	तुम बैठते हो ।	तू बैठती है	तुम बैठती हो ।
अ०	वह बैठता है	वे बैठते हैं ।	वह बैठती है	वे बैठती हैं ।

(४) सन्दिग्धवर्तमान ।

उ०	मैं बैठता होगा	हम बैठते होंगे ।	मैं बैठती होगी	हम बैठती होंगी ।
म०	तू बैठता होगा	तुम बैठते होंगे ।	तू बैठती होगी	तुम बैठती होंगी ।
अ०	वह बैठता होगा	वे बैठते होंगे ।	वह बैठती होगी	वे बैठती होंगी ।

☞ **सकर्मक क्रिया के रूप भी इसी प्रकार होते हैं ।**

नोट-(१) तात्कालिक वर्तमान-धातु के आगे लिङ्ग, वचन और पुरुष के अनुसार '**रह**' धातु के आसन्नभूतकालिक रूप लगादेने से तात्कालिकवर्तमानकाल की क्रियाएँ बनती हैं । जैसे—मैं बैठरहा हूँ—हम बैठरहे हैं, तू बैठरहा है—तुम बैठरहे हो, वह बैठरहा है—वे बैठरहे हैं । मैं बैठरही हूँ-हम बैठरही हैं, तू बैठरही है-तुम बैठरही हो, वह बैठरही है-वे बैठरही हैं

(२) तात्कालिक भूत-धातु के आगे लिङ्ग, वचन और पुरुष के अनुसार '**रह**' धातु के पूर्णभूतकालिक रूप लगादेने से तात्कालिक भूत की क्रियाएँ बनती हैं । जैसे-मैं बैठरहा था-हम बैठरहे थे, तू बैठ रहा था-तुम बैठरहे थे, वह बैठरहा था-वे बैठरहे थे । मैं बैठरही थी-हम बैठ

रही थीं, तू बैठरही थी—तुम बैठरही थीं, बैठरही थी—वे बैठरही थीं।

अभ्यास।

१. खाना क्रिया के रूप सन्दिग्ध वर्तमानकाल में कहो। १. सोना क्रिया के रूप तात्कालिक वर्तमान काल में बनाओ। ३ 'घर बनता था' और 'घर बनरहा था' में क्या भेद है? ४. नीचे लिखे रूप किन किन कालों की क्रियाओं के हैं-खारहा है, खाता है, खाता होगा, पढ़ती थी, पढ़रही थी, सोता, आतीं।

(३)

शेषक्रियाएँ जो धातु से बनती हैं।

(सम्भाव्यभविष्यत्, सामान्यभविष्यत्, विधि और पूर्वकालिक)

१. सम्भाव्य भविष्यत्—धातुओं के अन्त्य स्वरों में अ के बदले वचन और पुरुष के अनुसार ऊँ-एँ, ए-ओ, ए-एँ के लाने से तथा अन्यस्वरों के आगे ऊपर के चिन्हों में से ऊँ और ओ को बिना बदले तथा शेष में व् या य् मिलाकर लगाने से सम्भाव्य भविष्यत्काल की क्रियाएँ बनती हैं। (सम्भाव्य भविष्यत् में लिङ्गभेद नहीं है।)

२. सामान्य भविष्यत्—सम्भाव्य भविष्यत् क्रियाओं के आगे लिङ्ग और वचन के अनुसार गा—गे, गी—गीं के लगाने से सामान्यभविष्यत्काल की क्रियाएँ बनती हैं।

३. विधि—इस के रूप ठीक सम्भाव्यभविष्यत् के समान होते हैं, परन्तु मध्यमपुरुष एकवचन में धातुमात्र ही रूप होता है। (विधि में लिङ्ग भेद नहीं है।)

नोट—सम्भाव्यभविष्यत् और विधि के रूपों में प्रयोग और स्वराघात से भेद जानपड़ते हैं। जैसे—यदि तुम **बैठो** तो मैं कार्य समाप्त कर लूँ। तुम **बैठो**, मैं अभी आता हूँ।

धातु में 'इये' लगाने से आदरविधि, 'इयो' से परोक्ष-

विधि और आदरविधि के आगे 'गा' लगाने से प्रार्थनाविधि की क्रियाएँ बनती हैं।

नोट–करना, पीना, लेना, देना और होना इत्यादि धातुओं के अनियमित रूप होते हैं। जैसे–कीजिये-कीजियेगा-कीजियो, पीजिये–पीजियेगा–पीजियो, लीजिये–लीजियेगा–लीजियो, दीजिये–दीजियेगा–दीजियो, हूजिये-हूजियेगा, हूजियो, इत्यादि।

४. पूर्वकालिक–धातु के अन्त में ०, के, कर और करके मिलाकर पूर्वकालिक बनाते हैं। (इसमें लिङ्ग वचन और पुरुष का भेद नहीं है।)

(३) रूपावली।

अकर्मक क्रिया।

सम्भाव्यभविष्यत्।

	बैठना (बैठधातु)		होना (हो धातु)	
पुरुष	एकवचन	बहुवचन।	एकवचन	बहुवचन।
उ०	मैं बैठूँ	हम बैठें।	मैं होऊँ	हम होवें, होयें।
म०	तू बैठे	तुम बैठो।	तू होवे, होये	तुम होओ।
अ०	वह बैठे	वे बैठें।	वह होवे, होये	वे होवें, होयें।

नोट–सम्भाव्यभविष्यत् में हम होयँ, तू होय, तुम हो, वह होय, वे होयँ इत्यादि अनियमित रूप भी आते हैं। + तुम होओ, तुम खाओ के बदले तुम होवो, तुम खावो लिखना उचित नहीं जानपड़ता।

सामान्यभविष्यत्

बैठना (बैठधातु)

	कर्त्ता पुल्लिङ्ग		कर्त्ता स्त्रीलिङ्ग	
उ०	मैं बैठूँगा	हम बैठेंगे।	मैं बैठूँगी	हम बैठेंगी।

+ पीना, सीना इत्यादि क्रियाओं के रूप ऊपर के अनियमित रूपों की भाँति प्रयोग में नहीं आते।

म०	तू बैठेगा	तुम बैठोगे।	तू बैठेगी	तुम बैठोगी।
अ०	वह बैठेगा	वे बैठेंगे।	वह बैठेगी	वे बैठेंगी।

होना (हो धातु)

उ०	मैं होऊँगा हम होवेंगे, होयेंगे।	मैं होऊँगी हम होवेंगी, होयेंगी।
म०	तू होवेगा, होयेगा तुम होओगे।	तू होवेगी, होयेगी तुम होओगी।
अ०	वह होवेगा, होयेगा वे होवेंगे, होयेंगे।	वह होवेगी, होयेगी वे होवेंगी, होयेंगी।

नोट—ऊपर के रूप नियमानुसार बने हैं, परन्तु होयगा, होयँगे, होयगी होयँगी भी प्रयोग में हैं। इनके अतिरिक्त नीचे लिखे रूप अधिकतर प्रचलित हैं। पुल्लिङ्ग—मैं होगा (हूँगा)—हम होंगे, तू होगा—तुम होगे, वह होगा—वे होंगे। स्त्रीलिङ्ग—मैं होगी (हूँगी)—हम होंगी, तू होगी—तुम होगी, वह होगी—वे होंगी। इसी प्रकार देना, लेनामें भी 'दूँगा—दोगे, देंगे, लूँगा-लोगे-लेंगे' इत्यादि बोलते और लिखते हैं। जाना धातु में उत्तमपुरुष पुल्लिङ्ग बहुवचन रूप जाँयगे और जाँगे दोनों बोलेजाते हैं, इसीके मध्यमपुरुष बहुवचन रूप 'तुम जाओगे—जाओगी' के बदले 'तुम जावोगे—जावोगी' लिखना उचित नहीं। इसी प्रकार 'आवोगे-आवोगी' इत्यादि रूप भी अनुचित हैं।

विधि।

उ०	मैं बैठूं	हम बैठें।	आदरविधि-	बैठिये।
म०	तू बैठ	तुम बैठो।	प्रार्थनाविधि-	बैठियेगा।
अ०	वह बैठे	वे बैठें।	परोक्षविधि-	बैठियो।

पूर्वकालिक।

बैठ, बैठके, बैठकर, बैठकरके।

इस धातु के दो प्रयोग हैं—(१) विद्यमानताबोधक और (२) उत्पत्तिबोधक।

'मैं पण्डित हूँ।' इस वाक्य में 'हूँ' से पाण्डित्य की विद्यमानता समझी जाती है। 'मैं पण्डित होता हूँ।' इस वाक्य में 'होता हूँ' से पाण्डित्य की उत्पत्ति और विद्यमानता दोनों का बोध होता है। इन दोनों वाक्यों में 'हूँ' और 'होता हूँ' दोनों क्रियाएँ सामान्यवर्तमान हैं और हो धातु से बनी हुई भिन्न भिन्न प्रयोगों में हैं।

इन दोनों प्रयोगों के रूप केवल सामान्यवर्तमान और पूर्णभूत में भिन्न भिन्न होते हैं परन्तु अन्य क्रियाओं में एक ही से होते हैं।

सामान्यवर्तमान।

विद्यमानताबोधक। उत्पत्तिबोधक।

पुल्लिङ्ग।

	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं हूँ	हम हैं।	मैं होता हूँ	हम होते हैं।
म०	तू है	तुम हो।	तू होता है	तुम होते हो।
अ०	वह है	वे हैं।	वह होता है	वे होते हैं।

स्त्रीलिङ्ग।

स्त्रीलिङ्ग रूप भी पुल्लिङ्ग के समान होते हैं।

मैं होती हूँ	हम होती हैं।
तू होती है	तुम होती हो।
वह होती है	वे होती हैं।

पूर्णभूत।

पुल्लिङ्ग।

उ०	मैं था	हम थे।	मैं हुआ था	हम हुए थे।
म०	तू था	तुम थे।	तू हुआ था	तुम हुए थे।
अ०	वह था	वे थे।	वह हुआ था	वे हुए थे।

स्त्रीलिङ्ग ।

उ०	मैं थी	हम थीं ।	मैं हुई थी	हम हुई थीं ।
म०	तू थी	तुम थीं ।	तू हुई थी	तुम हुई थीं ।
अ०	वह थी	वे थीं ।	वह हुई थी	वे हुई थीं ।

नोट—हूँ, है, हैं—था, थे, थी, थीं—होगा, होगे, होंगे, होगी, होंगी इत्यादि इत्यादि' हो धातु के रूप अन्य क्रियाओं के अंग होकर भिन्न भिन्न कालों के रूप साधने में सहायता देते हैं, इस दशा में इन्हें **सहायक क्रियाएँ** कहते हैं। जैसे—मैं खाता हूँ। मोहन खाता था। राम खाता होगा, इत्यादि। इन उदाहरणों में 'हूँ', 'था' और 'होगा' सहायक क्रियाएँ हैं।

अभ्यास ।

१. सम्भाव्यभविष्यत् और विधि के रूपों में क्या भेद है? २. जावोगे, जावोगी, आवोगे, आवोगी' ये रूप त्याज्य हैं या नहीं? कारण दो। ३. क्या 'जायँगे' के समान पीना और सीना क्रियाओं के रूप भी प्रयोग में हैं? ४. पीना धातु के रूप सम्भाव्यभविष्यत् में कहो। ५. होना क्रिया के सम्भाव्यभविष्यत् में कौन कौन रूप अधिकतर प्रचलित हैं? ६. 'मैं विद्यार्थी हूँ' और मैं विद्यार्थी होता हूँ' इन दोनों वाक्यों की क्रियाओं में कौन धातु है?

कर्मवाच्य क्रिया ।

ने चिन्हयुक्त कर्त्ता के साथ कर्मवाच्य के रूप पीछे कहे गये हैं। ऐसे रूप केवल सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्ध भूतों में उन सकर्मक धातुओं से बनते हैं, जिनके कर्त्ता में ने चिन्ह* आता है, परन्तु सभी सकर्मक धातुओं से एक अन्य प्रकार से भी कर्मवाच्य क्रियाएँ बनती हैं। रीति नीचे देखो।

नोट—इस दशा में जो रूप बनते हैं वह मूल धातु के कर्मवाच्य रूप नहीं कहलाते, बल्कि **'जा' अन्तवाले यौगिक धातु के रूप** कहलाते हैं। (पण्डित रामावतार शर्मा)

---

* ने चिन्ह कहाँ आता है? साधारण वर्णन पीछे और विशेष वर्णन आगे देखो।

रीति–सामान्यभूतकालिक रूपों के आगे काल, पुरुष, लिङ्ग और वचन के अनुसार **जा (जाना) धातु** के रूपों को जोड़ने से किसी भी सकर्मक धातु की कर्म वाच्य क्रिया बन जाती है ।

रूपावली ।

कर्मवाच्य--पढ़ा जा (यौगिक) ।

सामान्यभूत ।

कर्म पुल्लिङ्ग		कर्म स्त्रीलिङ्ग ।	
एकवचन	बहुवचन ।	एकवचन	बहुवचन ।
उ० मैं पढ़ागया	हम पढ़ेगये ।	मैं पढ़ीगई	हम पढ़ीगईं ।
म० तू पढ़ागया	तुम पढ़ेगये ।	तू पढ़ीगई	तुम पढ़ीगईं ।
अ० वह पढ़ागया	वे पढ़ेगये ।	वह पढ़ीगई	वे पढ़ीगईं ।

नोट–नीचे रूपों के साथ उ०, म०, अ०, तथा इन के सर्वनाम नहीं दिखाये गये हैं । पढ़ते समय मिलाकर पढ़ो ।

आसन्नभूत ।

१. पढ़ागया हूँ	पढ़ेगये हैं ।	पढ़ीगई हूँ	पढ़ीगई हैं ।
२. पढ़ागया है	पढ़ेगये हो ।	पढ़ीगई है	पढ़ीगई हो ।
३. पढ़ागया है	पढ़ेगये हैं ।	पढ़ीगई है	पढ़ीगई हैं ।

पूर्णभूत ।

१. पढ़ागया था	पढ़ेगये थे ।	पढ़ीगई थी	पढ़ीगई थीं ।
२. पढ़ागया था	पढ़ेगये थे ।	पढ़ीगई थी	पढ़ीगई थी ।
३. पढ़ागया था	पढ़ेगये थे ।	पढ़ीगई थी	पढ़ीगई थीं ।

सन्दिग्धभूत ।

१. पढ़ागया होगा	पढ़ेगये होंगे ।	पढ़ीगई होगी	पढ़ीगई होंगी ।
२. पढ़ागया होगा	पढ़ेगये होंगे ।	पढ़ीगई होगी	पढ़ीगई होंगी ।
३. पढ़ागया होगा	पढ़ेगये होंगे ।	पढ़ीगई होगी	पढ़ीगई होंगी

हेतुहेतुमद्भूत ।

एकवचन	बहुवचन ।	एकवचन	बहुवचन ।
१. पढ़ाजाता	पढ़ेजाते ।	पढ़ीजाती	पढ़ीजातीं ।
२. पढ़ाजाता	पढ़ेजाते ।	पढ़ीजाती	पढ़ीजाती ।
३. पढ़ाजाता	पढ़ेजाते ।	पढ़ीजाती	पढ़ीजातीं ।

अपूर्णभूत ।

१. पढ़ाजाता था	पढ़ेजाते थे ।	पढ़ीजाती थी	पढ़ीजाती थीं ।
२. पढ़ाजाता था	पढ़ेजाते थे ।	पढ़ीजाती थी	पढ़ीजाती थी ।
३. पढ़ाजाता था	पढ़ेजाते थे ।	पढ़ीजाती थी	पढ़ीजाती थीं ।

नोट–तात्कालिक भूत में ' पढ़ाजारहा था–पढ़ेजारहे थे ' ' पढ़ीजारही थी–पढ़ीजारही थीं ' रूप होते हैं ।

सामान्यवर्तमान ।

१. पढ़ाजाता हूँ	पढ़ेजाते हैं ।	पढ़ीजाती हूँ	पढ़ीजाती हैं ।
२. पढ़ाजाता है	पढ़ेजाते हो ।	पढ़ीजाती है	पढ़ीजाती हो ।
३. पढ़ाजाता है	पढ़ेजाते हैं ।	पढ़ीजाती है	पढ़ीजाती हैं ।

नोट–तात्कालिक वर्तमान में ' मैं पढ़ाजारहा हूँ–हम पढ़ेजारहे हैं, तू पढ़ाजारहा है–तुम पढ़ेजारहे हो, वह पढ़ाजारहा है–वे पढ़ेजारहे हैं और मैं पढ़ीजारही हूँ–हम पढ़ीजारही हैं, तू पढ़ीजारही है– तुम पढ़ीजारही हो, वह पढ़ीजारही है–वे पढ़ीजारही हैं ' रूप होते हैं ।

सन्दिग्धवर्तमान ।

१. पढ़ाजाता होगा	पढ़ेजाते होंगे ।	पढ़ीजाती होगी	पढ़ीजाती होंगी ।
२. पढ़ाजाता होगा	पढ़ेजाते होंगे ।	पढ़ीजाती होगी	पढ़ीजाती होगी ।
३. पढ़ाजाता होगा	पढ़ेजाते होंगे ।	पढ़ीजाती होगी	पढ़ीजाती होंगी ।

सम्भाव्यभविष्यत् ।

१. पढ़ाजाऊँ	पढ़ेजावें,–जायें ।	पढ़ीजाऊँ	पढ़ीजावें,–जायें ।
२. पढ़ाजावे,–जाये	पढ़ेजाओ ।	पढ़ीजावे,–जाये	पढ़ीजाओ ।
३. पढ़ाजावे,–जाये	पढ़ेजावें,–जायें ।	पढ़ीजावे, जाये	पढ़ीजावें, जायें ।

नोट–'पढ़ाजाय, पढ़ेजाँय–पढ़ीजाय, पढ़ीजाँय' अनियमित रूप भी अधिकतर प्रयोग में आते हैं।

सामान्यभविष्यत्।

१. पढ़ाजाऊँगा,–पढ़ेजावेंगे,–जायेंगे।	पढ़ीजाऊँगी,–पढ़ी जावेंगी, जायेंगी।
२. पढ़ाजावेगा,–पढ़ेजाओगे। जायेगा	पढ़ीजावेगी,–पढ़ीजाओगी। जायेगी।
३. पढ़ाजावेगा,–पढ़ेजावेंगे, जायेंगे। जायेगा	पढ़ी जावेगी,–जायेगी, पढ़ी जावेंगी, जायेंगी।

नोट–'पढ़ाजायगा, पढ़ेजाँयगे–पढ़ीजायगी, पढ़ीजायँगी' अनियमित रूप भी अधिकतर प्रयोग में हैं।

विधिक्रिया।

१. पढ़ाजाऊँ	पढ़ेजावें,–जायें	पढ़ीजाऊँ	पढ़ीजावें, जायें।
२. पढ़ाजा	पढ़ेजाओ	पढ़ीजा	पढ़ीजाओ।
३. पढ़ाजावे,–जाये	पढ़ेजावें,–जायें	पढ़ीजावे,–जाये	पढ़ीजावें,–जायें।

नोट–'पढ़ाजाय, पढ़ेजायँ,–पढ़ीजाय, पढ़ीजायँ, अनियमित रूप भी अधिकतर प्रयोग मे हैं।

आदरविधि–पढ़ेजाइये। **प्रार्थनाविधि**–पढ़ेजाइयेगा। **परोक्षविधि**–पढ़ेजाइयो।

पूर्वकालिक।

पढ़ाजाके, पढ़ाजाकर, पढ़ाजाकरके।

नोट–ऊपर कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य के जितने बहुवचनरूप आये हैं वे आदरसूचक **'आप'** के साथ नहीं आते। इसके साथ **अन्यपुरुषवाले बहुवचन रूप आते हैं, परन्तु कहीं कहीं परिचय, बराबरी और लघुता के विचार से मध्यमपुरुषवाले बहुवचन रूप भी आते हैं। जैसे-(१)** आप बैठे हैं। आप बैठते हैं। आप बैठें। आप खावें।

आप लिखे जायँ (२) आप सूर्यकुल के भूषण हो। आप मोल लोगे? आप अगलों की रीति पर चलते हो।

काल और रूप सम्बन्धी विशेष बातें–

१. समीपी भूत और भविष्यत् में वर्तमानकाल का व्यवहार होता है। जैसे—

आप कब आये? मैं अभी आता हूँ।
जो तुम कहते हो हम समझते हैं।
आप कब जायँगे? मैं शीघ्रही जाता हूँ।
तुम यहाँ बैठो, हम अभी आते हैं।
कचहरी कब खुलेगी? बस, परसों खुलती है।

२. लेखक कभी कभी भूतकाल के लिये वर्तमान का प्रयोग करते हैं, जिसे ऐतिहासिक वर्तमान कहते हैं। जैसे-गोस्वामी तुलसीदास कहते हैं–"धीरज धर्म मित्र अरु नारी, आपद काल परेखिये चारी।"

३. धमकी आदि के अर्थ में भविष्यत् के लिये भूतकाल का प्रयोग करते हैं। जैसे-यदि बात खुली तो मारेजाओगे। बचोगे न तुम और न साथी तुम्हारे, अगर नाव 'डूबी' तो डूबोगे सारे।

४. पूर्णभूत के लिये सामान्य और आसन्नभूतों की क्रियाएँ भी कभी कभी आती हैं। जैसे-पिता की आज्ञा से रामचन्द्रजी बन गये। गीता में श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा है।

५. जब कहनेवाला तनिक क्रोध के साथ या उदासी से कुछ कहता है तब क्रिया का लोप होजाता है। जैसे–जब किया नहीं तब डर कैसा? आप को इस से क्या मतलब?

६. (क) जब सामान्यवर्तमानकाल की क्रिया के आगे 'नहीं' आवे तब हूँ, है, हैं, इत्यादि सहायक अंशों को लोप करदेते

हैं। जैसे–अब वह यहाँ नहीं आता। आप मेरे यहाँ कभी नहीं खाते।

(ख) रचना की उत्तमता के लिये और अभ्यास के अर्थ में कभी कभी क्रिया के सहायक अंश था, थे इत्यादि को छोड़ भी देते हैं। जैसे–जब वह आता तब पसे लेजाता। दानों वली दिनभर तो युद्ध करते और साँझ को घर आ एक साथ भोजन कर विश्राम। × (प्रेमसागर)

७. कभी कभी क्रियार्थक संज्ञा में सम्बन्ध के चिन्ह जोड़कर उस से भविष्यत् का अर्थ निकालते हैं। जैसे–अब यह विपत्ति की घड़ी टलने का नहीं गया तो फिर यह नहीं मेरे हाथ आने का (भट्टजी)

८. क्रिया के साधारण रूप के आगे–'वाला' प्रत्यय मिलाकर या योंही–विद्यमानता बाचक हो (होना) धातु के सामान्य वर्तमानकालिक रूप लगाने से भविष्यत् का अर्थ निकलता है। जैसे–यदि कुछ काटना है तो बोना पड़ेगा। डरो उसे जो वक्त है आनेवाला। (भट्टजी)

अभ्यास।

१. पढ़ना क्रिया के रूप सामान्यभूत में लिखो। २ 'आप' के साथ क्रियाओं के कौन रूप आते हैं? ३. कर्ता पुल्लिङ्ग और बहुवचन हो तो देना क्रिया का रूप आसन्नभूत में कैसा होगा? ४. नीचे लिखे वाक्यों की क्रियाएँ क्या अर्थ देती हैं?

आप कब खायँगे? मैं अभी खाता हूँ? शुकदेव मुनि राजा परीक्षित से कहते हैं। अगर नाव डूबी तो डूबोगे सारे। रामायण में गुसाईं जी ने कहा है।

+ वाक्यरचना में 'कर्त्ता और क्रिया का मेल' शीर्षक पाठ का बारहवाँ नियम देखो।

५. नीचे लिखे वाक्यों के व्यर्थ अंशों को हटादो—

आप को इससे क्या मतलब है ? आप उसके यहाँ कभी नहीं जाते हैं। यह बात उचित नहीं है। जब किया नहीं है तब डर कैसा है ?

यौगिक क्रिया (Derivative Verbs.)

व्युत्पत्ति के अनुसार दो प्रकार के धातु होते हैं–मूल और यौगिक। जो धातु किसी दूसरे शब्द से न बने वह मूल × और जो दूसरे शब्द से बने वह यौगिक कहलाता है। जैसे– 'चलना' मूल और 'चलाना, रंगना और चलदेना' यौगिक हैं।

यौगिक धातु तीन प्रकार से बनते हैं—(१) धातु में प्रत्यय मिलाने से (लिख–ना से लिखवा–ना)। (२) कई धातुओं को संयुक्त करने से (लिख–ना + दे–ना = लिखदेना) (३) दूसरे शब्दभेदों में प्रत्यय जोड़ने से (बात से बतियाना)।

(१) धातु में प्रत्यय मिलाने से।

(प्रेरणार्थक क्रिया–Causative Verbs).

जिस वाक्य की क्रिया के व्यापार में कर्त्ता पर किसीकी प्रेरणा समझीजाती है उसे प्रेरणार्थक कहते हैं। जैसे–शिक्षक विद्यार्थी से पत्र लिखवाते हैं। इस वाक्य में 'लिखवाते हैं' प्रेरणार्थक क्रिया, शिक्षक 'प्रेरक'* तथा विद्यार्थी प्रेर्य* कर्त्ता है।

नोट–जिस वाक्य में कर्त्ता स्वयं बिना किसीकी प्रेरणा के, क्रिया के व्यापार को करता है उसकी क्रिया **स्वार्थक** कहलाती है। प्रेरणार्थक क्रिया के साथ एक से अधिक प्रेरक कर्त्ता आ सकते हैं।

× जो धातु हिन्दी में मूल समझे जाते हैं उन में बहुतसे, संस्कृत धातुओं से बने हैं, परन्तु हिन्दी में इस विचार की आवश्यकता नहीं।

* पीछे कारक प्रकरण देखो।

जैसे—वह पुस्तक लिखता है। (**स्वार्थक**)

मैं उससे पुस्तक लिखवाता हूँ। (**प्रेरणार्थक**)

तू मुझसे उससे पुस्तक लिखवाता है। (**द्विप्रेरणार्थक**)

प्रयोग में द्विप्रेरणार्थक वाक्य कम आते हैं, क्योंकि वे अच्छे नहीं लगते और उनके अर्थ भी भलीभाँति नहीं झलकते। हाँ, एक प्रेरक कर्त्ता के आगे द्वारा इत्यादि शब्द मिलाकर द्विप्रेरणार्थक वाक्य बोलते हैं। जैसे—तू **मेरे द्वारा** उससे पुस्तक लिखवाता है।

प्रेरणार्थक बनाने के नियम।

नियम सम्बन्धी बातें—

(क) **आना, जाना, सकना, चुकना, रुकना** और **होना** इत्यादि अकर्मक धातुओं से प्रेरणार्थक क्रियाएँ नहीं बनतीं। इनको छोड़ शेष सभी धातुओं से दो प्रकार की प्रेरणार्थक क्रियाएँ बनती हैं। जैसे—ढोल बजता है—राम ढोल बजाता है—श्याम राम से ढोल बजवाता है। बेटा पुस्तक पढ़ता है—बाप बेटे को पुस्तक पढ़ाता है—बाप शिक्षक से बेटे को पुस्तक पढ़वाता है

(ख) सभी प्रेरणार्थक क्रियाएँ सकर्मक होती हैं, परन्तु **खाना, पीना, पढ़ना, सुनना, देखना** और **समझना** इत्यादि से बनी प्रेरणार्थक क्रियाएँ द्विकर्मक होती हैं। जैसे—बेटे को पुस्तक पढ़ाओ। श्रोताओं को कथा सुनाइये।

नियम—

१. मूल धातु के अन्त में आ बढ़ाने से पहला और वा से दूसरा प्रेरणार्थक धातु बनाते हैं। जेसे—उठना, उठाना, उठवाना। गलना, गलाना, गलवाना। चलना, चलाना, चलवाना। गिरना, गिराना, गिरवाना। चढ़ना, चढ़ाना, चढ़वाना। फिरना, फिराना, फिरवाना। बजना, बजाना, बजवाना।

(क) तीन अक्षरों के धातु में पहले प्रेरणार्थक का दूसरा अक्षर अनुच्चरित 'अ' रखना है। जैसे–भटकना, भटकाना, भटकवाना। खटकना, खटकाना, खटकवाना। पिघलना, पिघलाना, पिघलवाना। चमकना, चमकाना, चमकवाना। बदलना, बदलाना, बदलवाना। समझना, समझाना, समझावना।

(ख) यदि दो अक्षरों के धातु का पहला अक्षर दीर्घ हो तो उसे ह्रस्व * करदेते हैं, परन्तु 'ऐ और औ' ज्यों के त्यों बनेरहते हैं। जैसे–जागना, जगाना, जगवाना। भागना, भगाना, भगवाना। बीतना, बिताना, बितवाना। छींकना, छिकाना, छिकवाना। जीतना, जिताना, जितवाना। घूमना, घुमाना, घुमवाना। भूलना, भुलाना, भुलवाना। लेटना, लिटाना (लेटाना×), लिटवाना। बोलना, बुलाना, + बुलवाना। ओढ़ना, उढ़ाना, उढ़वाना। फैलना, फैलाना, फैलवाना। औंटना, औंटाना, औंटवाना।

नोट–(१) कुछ सकर्मक धातुओं के केवल दूसरे प्रेरणार्थक रूप बनते हैं। जैसे–गाना–गवाना, खेना–खिवाना, लेना–लिवाना, खोलना–खुलवाना, इत्यादि।

(२) कुछ धातुओं के पहले प्रेरणार्थक में एक और रूप होते हैं, जो प्रायः 'ओ' स्वर लेते हैं। जैसे–चुभना, चुभाना–चुभोना, चुभवाना। डूबना, डुबोना–डुबाना, डुबवाना। भीगना, भिगाना–भिगोना, भिगवाना।

२. एकाक्षरी धातु के दीर्घ स्वर को ह्रस्व करके 'ला' बढ़ाने

---

* 'आ, ई, ऊ, ओ और ए के बदले क्रम से अ, इ, उ, उ, और इ लाते हैं। ए को कभी नहीं बदलते।

× लिटाना (सुलाना), लेटाना (कीचड़ में लेटाना)।

+ 'बोलना' अपने प्रेरणार्थक रूपों से भिन्न अर्थ रखता है।

से पहला और 'लवा' बढ़ाने से दूसरा प्रेरणार्थक धातु बनाते हैं। जैसे-जीना, जिलाना, जिलवाना। सीना, सिलाना, सिलवाना। पीना पिलाना, पिलवाना। चूना, चुलाना, चुलवाना। छूना, छुलाना, छुलवाना। देना, दिलाना, दिलवाना। रोना, रुलाना, रुलवाना। सोना, सुलाना, सुलवाना।

नोट-(१) 'खाना' के आद्यस्वर को 'इ' से बदलकर प्रेरणार्थक रूप बनाते हैं। जैसे-खाना, खिलाना, खिलवाना।

३. कुछ धातुओं के पहले प्रेरणार्थक रूप वैकल्पिक हैं, अर्थात् आ और ला दोनों से बनते हैं, परन्तु दूसरे प्रेरणार्थक में केवल वा लगाते हैं। जैसे-

कहना-कहाना, कहलाना-कहवाना।
सूखना-सुखाना, सुखलाना-सुखवाना।
सीखना-सिखाना, सिखलाना-सिखवाना।

नोट-(१) बैठना के कई प्रेरणार्थक रूप प्रयोग में हैं। जैसे-बैठाना, बैठालना, बिठाना, बिठालना बिठलाना बिठवाना।

(२) 'कहाना' और 'कहलाना' प्रयोग में अकर्मक भी है, इसी प्रकार दिखाना और दिखलाना भी। जैसे-विभक्ति सहित शब्द पद कहलाता है। ऐसे ही लोग मूर्ख कहलाते हैं। बिना तुम्हारे यहाँ न कोई रक्षक अपना दिखलाता।

कुछ धातुओं के दोनों प्रेरणार्थक रूप एक ही अर्थ देते हैं। जैसे-कटना, कटाना, कटवाना। गड़ना, गड़ाना, गड़वाना। बाँधना, बँधाना, बँधवाना। रखना, रखाना, रखवाना। सीना, सिलाना, सिलवाना। खुलना, खुलाना, खुलवाना। देना, दिलाना, दिलवाना। इत्यादि।

कुछ धातु वास्तव में मूल अकर्मक या सकर्मक हैं, परन्तु स्वरूप से

प्रेरणार्थकसे जानपड़ते हैं। जैसे—घबराना, कुम्हलाना, इठलाना, मचलाना, इत्यादि।

अकर्मक से सकर्मक बनाने के नियम—

२. दो अक्षरों के धातु के प्रथमाक्षर को और तीन अक्षरों के द्वितीयाक्षर को दीर्घ करने से अकर्मक धातु सकर्मक हो जाते हैं।

जैसे—लदना-लादना, कटना-कटाना, मरना-मारना, टलना-टालना, गड़ना—गाड़ना, फँसना—फाँसना, कढ़ना—काढ़ना, पिसना—पीसना, पिटना—पीटना, लुटना—लूटना, उखड़ना-उखाड़ना, सम्हलना-सम्हालना, निकलना—निकालना, बिगड़ना—बिगाड़ना, इत्यादि।

२. यदि अकर्मक धातु के प्रथमाक्षर में इ या उ स्वर हो तो इसे गुण करके सकर्मक धातु बनते हैं। जैसे—घिरना—घेरना, दिखना—देखना, फिरना—फेरना, छिदना—छेदना, खुलना—खोलना, मुड़ना—मोड़ना, इत्यादि।

३. कई टकारान्त अकर्मक धातुओं के ट को ड़ में बदलकर पहले या दूसरे नियम से सकर्मक बनाते हैं। जैसे—फटना-फाडना, जुटना—जोड़ना, छूटना—छोड़ना, टूटना-तोड़ना, इत्यादि।

४. कुछ अकर्मक धातुओं से सकर्मक अनियमित रूप से बनते हैं। जैसे—बिकना—बेचना, रहना—रखना, इत्यादि।

नोट—कई धातुओं के सकर्मक और प्रथम प्रेरणार्थक रूप भिन्न भिन्न अर्थ देते हैं। जैसे—गड़ना—गाड़ना (धरती के भीतर रखना)—गड़ाना (चुभाना)। घुलना—घोलना (मिलाना)—घुलाना (गलाना)। चलना-चालना (आटा चालना)—चलाना (फेंकना)।

इच्छार्थक धातु—

कतिपय धातुओं में 'वास' प्रत्यय के मिलाने से इच्छार्थक

धातु बनते हैं। जैसे-बकना-बकवासना, भूकना-भुकवासना, इत्यादि।

अभ्यास।

१. व्युत्पत्ति के अनुसार धातु कितने प्रकार के होते हैं? २. यौगिक धातु कितने प्रकार से बनते हैं? उदाहरण दो। ३. प्रेरणार्थक क्रिया किसे कहते हैं? ४. स्वार्थक क्रिया से क्या समझते हो? ५. द्विप्रेरणार्थक वाक्यों में क्या भेद डालने से वे मधुर होजाते हैं? ६. प्रेरणार्थक बनाने के कौन कौन नियम हैं? उदाहरण दो। ७. किन किन क्रियाओं से प्रेरणार्थक क्रियाएँ नहीं बनतीं? ८. अकर्मक से सकर्मक बनाने के कौन कौन नियम हैं? नीचे लिखी क्रियाओं से प्रेरणार्थक बनाओ -

चलना, फटना, खुलना, लदना, देना, बैठना, गाना।

(२) कई धातुओं को संयुक्त करने से)

(संयुक्त क्रिया-ComPound Verbs).

जो क्रिया दो या दो से अधिक धातुओं के योग से बनती है और नया अर्थ देती है उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे-खालिया, देदिया, घुमाफिराकर बातें करलीं।

अर्थ के विचार से संयुक्त क्रियाओं के कई भेद हैं—

१. निश्चयबोधक-धातु के आगे उठना, बैठना, आना, जाना, पड़ना, डालना, लेना, देना, चलना और रहना आदि के लगाने से निश्चयबोधक संयुक्त क्रियाएँ बनती हैं। ऐसी कई क्रियाओं से पूर्णता और नित्यता इत्यादि का भी बोध होता है। जैसे-बोलउठना, मारबैठना, कहआना, लेजाना, गिरपड़ना। देडालना, लेलेना, चलदेना, लेचलना, सोरहना, इत्यादि।

२. शक्तिबोधक-धातु के आगे 'सकना' मिलाने से शक्तिबोधक क्रिया बनती है। जैसे-चलसकना, उठसकना, मारसकना, पीटसकना, बैठसकना, देसकना, इत्यादि।

३. समाप्तिबोधक–धातु के आगे चुकना × मिलाने से समाप्तिबोधक क्रिया बनती है। जैसे–कहचुकना, मारचुकना इत्यादि।

४. नित्यताबोधक–सामान्य भूतकालिक क्रियाओं के आगे 'करना' जोड़ने से नित्यताबोधक (पौनःपुन्य अर्थसूचक) क्रियाएँ बनती हैं। जैसे–आयाकरना। बैठाकरना, खेलाकरना, पढ़ाकरना, देखाकरना, जायाकरना, + इत्यादि।

५. तत्कालबोधक–सामान्य भूतकालिक क्रियाओं के अन्तिम स्वर 'अ' को 'ए' करके आगे डालना या देना लगाने से तत्कालबोधक क्रियाएँ बनती हैं। जेसे–कहेडालना, कहेदेना, दियेडालना, दियेदेना, इत्यादि।

६. इच्छाबोधक–सामान्य भूतकालिक क्रियाओं के आगे चाहना लगाने से इच्छाबोधक क्रियाएँ बनती हैं, इन क्रियाओं से कुछ तत्काल व्यापार का बोध होता है। जैसे–लिखाचाहना, पढ़ाचाहना, गिराचाहना, जायाचाहना या गयाचाहना, इत्यादि।

७. आरम्भबोधक–क्रिया के साधारण रूप के 'ना' को 'ने' करके लगना मिलाने से आरम्भबोधक क्रिया बनती है। जेसे–पढ़नेलगना, देनेलगना, इत्यादि।

८. अवकाशबोधक–क्रिया के साधारण रूप के 'ना' को 'ने' करके पाना या देना मिलाने से अवकाशबोधक क्रिया बनती है। जैसे–जानेपाना, जानेदेना, बोलनेपाना, बोलने देना इत्यादि।

× चुकना, अकेले भी आता है। जैसे–घर में जो अन्न आया था अभी नहीं चुका।

+ 'जा' का सामान्यभूतकालिक रूप 'गया' है, परन्तु संयुक्त क्रियाओं में 'जाया' भी आता है।

९. परतन्त्रताबोधक–क्रिया के साधारण रूप के आगे पड़ना लगाने से परतन्त्रताबोधक क्रिया बनती है। जैसे–लिखना-पड़ना (लिखनापड़ा), उठानापड़ना, इत्यादि।

१०. कुछ संयुक्त क्रियाएँ एकार्थबोधक होती हैं। जैसे–बोलनाचालना, समझनाबूझना, देखनाभालना, चलनाफिरना, कूदनाफाँदना, मारनापीटना, लेटनापोटना, इत्यादि।

☞ अन्य शब्दभेदों के साथ भी धातु मिलाते हैं। जैसे ध्यान करना, भय खाना, अच्छा करना, बाहर करना इत्यादि।

नोट–(१) संयुक्त क्रियाएँ केवल सकर्मक धातुओं के मिलाने से या केवल अकर्मक धातुओं के मिलाने से या दोनों के मिलाने से बनती हैं। जैसे—

केवल सकर्मक धातुओं के मिलाने से–खालेना, देखलेना।

केवल अकर्मक धातुओं के मिलाने से–सोजाना, उठबैठना।

सकर्मक और अकर्मक दोनों के मिलाने से–चलदेना, देआना।

(२) संयुक्त क्रिया के अर्थ करने में आदि का खण्ड मुख्य समझा-जाता है। जैसे–मैं रोटी खा लेता हूं। वह पुस्तक देजाता है। इन वाक्यों में खा और दे से अर्थ निकलते हैं। (ने चिन्ह के प्रयोग में इस प्रधानता से विशेष लाभ नहीं। आगे देखो)

अतिशयार्थक धातु—

कतिपय धातुओं को द्वित्व करने से अतिशयार्थक धातु बनते हैं। जैसे—जलना–जलजलाना, गोदना–गुदगुदाना, इत्यादि।

☞ नामधातुओं को छोड़ शेष सभी धातु 'धातुजधातु' हैं।

(३) दूसरे शब्द भेदों में प्रत्यय जोड़ने से।

(नामधातु +)

क्रिया को छोड़ दूसरे शब्द भेदों से जो धातु बनते हैं

+ क्रिया के सिवा अन्य शब्द भेदों को संस्कृत में 'नाम' कहते हैं।

अविकारी शब्द।

[अव्यय—Indeclinables].

क्रियाविशेषण (Adverbs).

अर्थ के अनुसार क्रियाविशेषण चार प्रकार के हैं—कालवाचक, स्थानवाचक, परिमाणवाचक, और रीतिवाचक।

(१) कालवाचक से समय का बोध होता है। जैसे—अब, तब, कब, जब, आज, कल, परसों, तरसों, नरसों, फिर, सवेरे, तड़के, तुरन्त, अभी, तभी, कभी, जभी, पहले, पीछे, इतने में, सदा, आजकल, अबतक, लगातार, दिनभर, बारबार, बहुधा, प्रतिदिन, घंटेघंटे, शीघ्र, देर से, इत्यादि।

(२) स्थानवाचक से स्थान का बोध होता है। जैसे—यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, आगे, पीछे, बाहर, भीतर, ऊपर, नीचे, पास, सर्वत्र, इधर, उधर, जिधर, तिधर, किधर, आर-पार, चारों ओर, अगलबगल, दूर, परे, इत्यादि।

(३) परिमाणवाचक से परिमाण या अनिश्चित संख्या का बोध होता है। जैसे--अति, अतिशय, अत्यन्त, बहुत, भारी, खूब, बिलकुल, सर्वथा, कुछ, ज़रा, लगभग, थोड़ा, किञ्चित् अनुमान, केवल, काफ़ी, बस, अधिक, कम, इतना, उतना, जितना, कितना, और, थोड़े, यथाक्रम, क्रमक्रम से, बारीबारी से, इत्यादि।

(४) रीतिवाचक से प्रकार, स्वीकार, निषेध, निश्चय, अनिश्चय, अवधारण और कारण इत्यादि का बोध होता है। जैसे—ऐसे, वैसे, जैसे, तैसे, यों, ज्यों, त्यों, यथा, तथा, मानों, धीरे, अचानक, सहज, सेंतमेंत, योंही, आपही आप, यथाशक्ति, तड़तड़, फटसे, हाँ, जी, न, नहीं, मत, अवश्य, निःसन्देह,

अलबत्ता, वस्तुतः, कदाचित्, शायद, यथासम्भव, तो, ही, भर, तक, सा, मात्र, इत्यादि।

नोट-(१) **रूप के अनुसार** क्रियाविशेषणों के तीन भेद है-(क) **मूल**-ठीक, दूर, अचानक। (ख) **यौगिक**-दिनभर, इसलिये, वैसे, देखते-हुए, सोतेहुए, यहाँतक, आतेही। (ग) **स्थानीय** (दूसरे शब्दभेद)-तुम मेरी मदद **पत्थर** करोगे! लीजिये, महाराज, मैं **यह** चला। विद्यार्थी **अच्छा** लिखता है। वह **पढ़कर** खाता है। (इन चारों वाक्यों में 'पत्थर, यह, अच्छा पढ़कर' प्रयोग में क्रियाविशेषण हैं।)

(२) **प्रयोग के अनुसार** क्रियाविशेषणों के तीन भेद हैं-(क) **साधारण** (जो किसी खण्डवाक्य से सम्बन्ध नहीं रक्खे,-राम **कहाँ** गया? हाय, **अब** वह क्या करे! तुम **शीघ्र** आओ। (ख) **संयोजक** (जो किसी खण्डवाक्य से सम्बन्ध रक्खे)-जहाँ मेरी वाटिका है **वहाँ** पहले जंगल था। जब धर्म ही नहीं **तब** धन कहाँ से! (ग) **अनुबद्ध** (जो अवधारण के लिये किसी भी शब्द के साथ आवे)-अपना नाम **मात्र** कहो, सब समझ जाऊँगा। तू-ने अभी खाया **तक** नहीं।

क्रियाविशेषणों की रचना।

यौगिक क्रियाविशेषण नीचे लिखे शब्दभेदों से बनते हैं-

(१) संज्ञा से-रातभर, दिनतक, कृपापूर्वक। (२) सर्वनाम से यहाँ, वहाँ, जहाँ, तहाँ, किसलिये, इसलिये, अब, तब, जब, कब। (३) विशेषण से-ऐसे, वैसे, जैसे, तैसे, कैसे, (४) धातु से-बैठते, लिये, चाहे। (५) अव्यय से-यहाँतक, झटपट, योंही।

संयुक्त क्रियाविशेषण नीचे लिखे शब्दों के मेल से बनते हैं-

(१) शब्दों की द्विरुक्ति से—

(क) संज्ञाओं की द्विरुक्ति से-हाथोंहाथ, घड़ीघड़ी पुर्जेपुर्जे।

(ख) विशेषणों की द्विरुक्ति से–एकाएक, साफसाफ।

(ग) अनुकरणवाचक शब्दों की द्विरुक्ति से–धड़ाधड़, सटासट, गटगट।

(घ) क्रियाविशेषणों की द्विरुक्ति से–धीरेधीरे, बैठेबैठे, कभीकभी।

भिन्न भिन्न शब्दों के मेल से--

(क) दो भिन्न भिन्न संज्ञाओं के मेल से–रातदिन, देशविदेश।

(ख) दो भिन्न भिन्न क्रियाविशेषणों के मेल से–जबकभी, जहाँ तहाँ।

(ग) दो क्रियाविशेषणों के बीच में न रखने से–कहीं न-कहीं, जबनतब।

(घ) संज्ञा और विशेषण के मेल से–एकसाथ, हरदम।

(ङ) अव्यय और दूसरे शब्दभेदों के मेल से–यथाशक्ति अनजाने।

(च) पूर्वकालिक और विशेषण के मेल से–मुख्यकरके, बहुतकरके।

नीचे भिन्न भिन्न शब्दों के आगे प्रत्यय या अन्य शब्द मिलाकर यौगिक क्रियाविशेषण बनायेगये हैं—

संस्कृत–नियमानुसार, कृपया, वस्तुतः, भयवश, सर्वदा, कृपापूर्वक, सर्वत्र, सर्वदा, क्रमशः, पूर्ववत, नाममात्र, बहुधा, कदाचित, इत्यादि।

हिन्दी–पैठा, लिये, खाता, राततक, देखकर, पढ़करके, गयासा, रातभर, अन्तको, इधर से, कबका, इतनेमें, कैसे, कहाँ, किधर, क्यों, किसलिये, कब।

उर्दू–फौरन, मसलन, जबरन, इत्यादि।

नीचे भिन्न भिन्न शब्दों के पहले उपसर्ग या अन्य शब्द मिलाकर यौगिक क्रियाविशेषण बनायेगये हैं *—

संस्कृत–प्रतिदिन, आजन्म, निस्सन्देह, अनायास, सम्मुख, यथाशक्ति, व्यर्थ, यावज्जीवन।

हिन्दी–अनजाने, निधड़क।

उर्दू–हरघड़ी, दरअसल, बदस्तूर, बेशक।

नोट–(१) कई क्रियाविशेषणों के अन्त में ही या हीं मिलाने से निश्चय का बोध होता है। जैसे–ज्यों ही, यहीं, कभी, कभी, इत्यादि।

क्रियाविशेषणों की द्विरुक्ति से भी निश्चय का बोध होता है। जैसे–ज्यों ज्यों, त्यों त्यों।

दो क्रियाविशेषणों के बीच में न लगाने से अनिश्चय का बोध होता है। जैसे-कहीं न कहीं, जब न तब, जहाँ न तहाँ।

(२) क्रियाविशेषण के शब्द, विशेषण और क्रियाविशेषण के भी विशेषण होते हैं। जैसे–लगभग चालीस आम। जरा धीरे पढ़ो। इत्यादि।

नहीं, न और मत में भेद—

(१) सामान्यवर्तमान, तात्कालिकवर्तमान, आसन्नभूत और किसी प्रश्न में उत्तर में 'नहीं' का प्रयोग होता है। जैसे–मैं नहीं खाता। वह नहीं आरहा है। इस वर्ष मैंने आम नहीं खाया है। तुमने परीक्षा दी है? नहीं।

(२) 'दो या अधिक में किसी का निषेध जताना हो तब' और 'विधि में' न का प्रयोग होता है। जैसे-न धर्म, न विद्या, न धन, कुछ काम न आया। न खाया, न पिया, न कुछ बात ही की–योंही चलागया। इसे न ले। अभी उपन्यास कभी न पढ़ना। यह पुस्तक और किसी के हाथ में न दीजियो।

(३) ऊपर की क्रियाओं को छोड़ अन्यत्र न और नहीं

---

* ये यौगिक शब्द अव्ययीभाव समास हैं।

दोनों आते हैं, भेद इतना ही है कि केवल निषेध में 'न' और निषेध की निश्चयता में 'नहीं' का प्रयोग होता है। जैसे वह न आया–वह नहीं आया। मैं न पढूँगा–मैं नहीं पढूँगा।

(४) 'मत' केवल विधि में लाते हैं। जैसे–तुम मत जाओ।

नोट–(१) 'न' निश्चय के अर्थ में प्रश्नार्थक अव्यय है। जैसे–तुम तो इसी समय पढ़ोगे न ? बोलो न जाओगे ?

(२) 'न–न' जब समुच्चयबोधक होकर आते हैं तब पहले 'न' से 'न तो' और दूसरे 'और न' का बोध होता है। जैसे–उसने न पढ़ा, न पढ़ेगा।

सच पूछिये तो—

यह वाक्यांश क्रियाविशेषण के समान आता है। इसका अर्थ है–सचमुच। जैसे–सच पूछिये तो मैं यह बात नहीं जानता।

अभ्यास।

१. अर्थ के अनुसार क्रियाविशेषण कितने प्रकार के हैं ? प्रत्येक के दो दो उदाहरण दो। २. रूप के अनुसार क्रियाविशेषण कितने प्रकार के हैं। उदाहरण दो। ३. प्रयोग के अनुसार क्रियाविशेषण कितने प्रकार के हैं। उदाहरण सहित लक्षण बताओ। ४. कैसे क्रिया विशेषणों से निश्चयका बोध होता है? उदाहरण दो। ५. नहीं और न के प्रयोग में क्या भेद है ? उदाहरण दो। ६. 'मत' कहाँ आता है ? ७ कैसे क्रियाविशेषणों से अनिश्चय का बोध होता है ? ८. संयुक्त क्रियाविशेषण किन किन शब्दों के मेल से बनते हैं ? उदाहरण दो। ९. पाँच ऐसे क्रियाविशेषण बताओ, जो अन्य शब्दों के पहले उपसर्गों या दूसरे शब्दों के मिलाने से बने हैं। १० सभी शब्दभेदों से बने हुए क्रियाविशेषणों के दो दो उदाहरण दो। ११. नीचे लिखे शब्दों से क्रियाविशेषण बनाओ।

हाथ, एक, देश, शक्ति, कृपा, भय, पढ़ा, जन्म।

सम्बन्धबोधक (Prepositions).

प्रयोग के अनुसार सम्बन्धबोधक अव्यय दो प्रकार के हैं–सम्बद्ध और अनुबद्ध।

(१) 'सम्बद्ध' संज्ञाओं की विभक्तियों के आगे आते हैं।

जैसे-बिना, नाईं, पहले, लिये, मारे, विरुद्ध, पास, इत्यादि। (प्रयोग-धन के बिना, नर की नाईं, पूजा से पहले, धन के लिये, भूख के मारे, उसके पास, इत्यादि।)

(२) 'अनुबद्ध' संज्ञा के विकृत रूप के साथ आते हैं। जैसे-तक, भर, सहित, समेत, इत्यादि। (प्रयोग-किनारे तक, सखियों सहित, कटोरे भर, पुत्रों समेत, इत्यादि।)

नोट-१. "सम्बद्ध अव्ययों" के पहले बहुधा 'के' का प्रयोग होता है।

२. ओर, तरफ, तरह, मार्फत, नाईं, खातिर, अपेक्षा, जगह, बदौलत इत्यादि के पहले "की" का प्रयोग होता है। जैसे-राम की ओर, खेत की तरफ, लड़के की तरह, उस की मार्फत, इत्यादि। (यदि संख्यावाचक विशेषण आगे रहे तो 'ओर' के पूर्व कोई कोई 'के' भी लाते हैं। जैसे-नगर के चारों ओर।)

३. 'परे' और 'रहित' के पहले **से** आता है। आगे, पीछे, पहले, बाहर, ऊपर, नीचे इत्यादि के पहले 'के' के बदले 'से' भी लाते हैं। जैसे-घर से परे, दोष से रहित, समय से पहले, घर से पीछे, जाति से बाहर, इत्यादि।

४. आगे, पीछे, तले, बिना आदि कभी कभी **बिना विभक्ति के** भी आते हैं। जैसे-पैर तले, पीठ पीछे, कुछ दिन आगे, घर बिना, इत्यादि।

५. रहित, सहित, समेत, पर्यन्त इत्यादि के आगे कारकों के चिन्ह नहीं मिलते।

६. जब सम्बन्धबोधक अव्ययों के आगे कारक चिन्ह आते हैं तब वे संज्ञा कहलाते हैं। जैसे-देवमन्दिर घर के **आगे** में है।

७. बहुत से अव्यय क्रियाविशेषण और सम्बन्धबोधक दोनों हैं। जैसे-मैं **पीछे** आया (क्रियाविशेषण)। मैं राम के **पीछे** आया (सम्बन्धबोधक)।

व्युत्पत्ति के अनुसार सम्बन्धबोधक अव्यय दो प्रकार के हैं-मूल और यौगिक।

(१) **मूल**-बिना, पर्यन्त, नाईं, समेत, पूर्वक, इत्यादि।

(हिन्दी में मूल शब्द बहुत कम हैं।)

(२) **यौगिक**–(ये दूसरे शब्दभेदों से बने हैं।)

(क) **संज्ञा से**–पलटे, वास्ते, ओर, अपेक्षा 'नाम' लेखे, विषय, मार्फत, इत्यादि। (ख) **विशेषण से**–तुल्य, समान, उलटा, जबानी, सरीखा, जैसे ऐसा, इत्यादि। (ग) **क्रियाविशेषण से**– ऊपर, भीतर, यहाँ, बाहर, पास, परे पीछे, इत्यादि (घ) **क्रिया से**–लिये, मारे, करके, इत्यादि।

समुच्चयबोधक (Conjunctions).

समुच्चयबोधक अव्ययों के दो मुख्य भेद हैं–समानाधिकरण और व्यधिकरण।

(१) समानाधिकरण अव्ययों के द्वारा मुख्य वाक्य जोड़े जाते हैं। ये चार प्रकार के हैं—

(क) **संयोजक**–जो दो या अधिक वाक्यों का संग्रह करता है। जैसे–और, एवं, तथा व, भी इत्यादि।

नोट–'व' यावनी शब्द है, इसका प्रयोग अच्छे लेखक नहीं करते। 'तथा' और शब्द की द्विरुक्ति का निवारण करता है। जैसे–इस बात की पुष्टि में चटर्जी महाशय ने रघुवंश के तेरहवें सर्ग का एक पद्य और रघुवंश तथा कुमारसम्भव में व्यवहृत 'संघात' शब्द भी दिया है। 'भी' यह पहले वाक्य से कुछ सादृश्य मिलाने के लिये आता है। जैसे–कुछ महात्म ही पर नहीं, गंगाजी का जल भी ऐसा ही उत्तम और मनोहर है।

(ख) **विभाजक**–जो दो या अधिक से किसी एक का ग्रहण या दोनों का त्याग कराता है। जैसे-वा, अथवा किंवा, कि, या, क्या–क्या, या–या, चाहे–चाहे, न–न, नकि, नहीं तो इत्यादि

नोट–'कि' का अर्थ यहाँ 'या' के समान है, इसका प्रयोग कविता में होता है। जैसे–राखिहहिं भवन कि लेहहिं साथा। 'कि' से कभी कभी दो शब्दों को भी मिलाते हैं। जैसे–यद्यपि कृपण कि अपव्ययी ही हैं धनी दानी यहाँ।

'या–या, क्या–क्या, न–न, न–कि' के उदाहरण–या तो इस पेड़ में

फाँसी लगाकर मर जाऊँगी या गंगा में कूद पड़ूँगी। क्या स्त्री क्या पुरुष सब ही के मन में आनन्द छाय रहा था (प्रेम०)। न उसे नींद आती थी न भूख प्यास लगती थी। अंगरेज लोग व्यापार के लिये आये थे न कि देश जीतने के लिये।

(ग) विरोधदर्शक ये अव्यय वाक्य के द्वारा पहले का निषेध वा परिमित सूचित करते हैं। जैसे—परन्तु, लेकिन, मगर, पर, किन्तु, वरन्, बल्कि, इत्यादि।

(घ) परिणामदर्शक—इन अव्ययों से जाना जाता है कि इनके आगे के वाक्य का अर्थ पिछले वाक्य के अर्थ का फल है। जैसे—अतः, अतएव, इसलिये, सो, इत्यादि।

(२) व्यधिकरण अव्ययों के द्वारा एक मुख्य वाक्य में एक या अधिक आश्रित वाक्य जोड़े जाते हैं। ये भी चार प्रकार के हैं—

(क) कारणबोधक—इस अव्यय से आरम्भ होने वाला वाक्य पूर्ववाक्य का समर्थन करता है। जैसे—क्योंकि, जोकि, इसलिये कि। (प्रयोग—इस नाटिका का अनुवाद करना मेरा काम नहीं था क्योंकि मैं संस्कृत अच्छी नहीं जानता।)

(ख) उद्देशवाचक—इस अव्यय के पश्चात् आने-वाला वाक्य दूसरे वाक्य का उद्देश सूचित करता है। जैसे—कि, जो, ताकि, इसलिये कि। प्रयोग—हम तुम्हें वृन्दावन भेजा चाहते हैं कि तुम उनका समाधान कर आओ। किया क्या जाय जो देहातियों की प्राणरक्षा हो।

(ग) संकेतवाचक—इस अव्यय के कारण पूर्व वाक्य में जिस घटना का वर्णन रहता है उससे उत्तर वाक्य की घटना का संकेत पायाजाता है। जैसे—कि, यदि—तो, जो—तो, चाहे—परन्तु, यद्यपि—तथापि या तौभी। (प्रयोग—शैव्या

रोहिताश्व का मृतक-कम्बल फाड़ा चाहती है कि रङ्गभूमि की पृथ्वी हिलती है। शेष उदाहरण आगे मिलेंगे।)

(घ) स्वरूपवाचक-इसके द्वारा जुड़े हुए शब्दों या वाक्यों में से पहले शब्द या वाक्य का स्पष्टीकरण पिछले शब्द या वाक्य से जाना जाता है। जैसे--कि, जो, अर्थात्, याने, इत्यादि। (प्रयोग-श्री शुकदेव मुनि बोले कि महाराज, अब आगे कथा सुनिये। मेरे मन में आता है कि इससे कुछ पूछूँ। यही विचारो जो मथुरा और वृन्दावन में अन्तर ही क्या है।)

टी०—समुच्चयबोधक अव्ययों के जो मुख्य वर्ग माने गये हैं उनकी आवश्यकता वाक्यविभजन के विचार से है।

जो व्यय्य दो दो करके एकसाथ आते हैं वे नित्य-सम्बन्धी कहलाते हैं। जैसे-'यदि-तो, जो-तो, यद्यपि-तथापि या तौभी, इत्यादि। प्रयोग-यदि ठंढ न लगे तो यह हवा बहुत दूर तक चली जाती है। जो आप आज्ञा करें तो हम जन्मभूमि देख आवें। यद्यपि मैं वहाँ नहीं गया तथापि मैंने वहाँ का सारा वृत्तान्त सुना।

अन्य नित्यसम्बन्धी अव्यय-जब-तब, ज्यों-त्यों, जहाँ-वहाँ या तहाँ, जिधर-उधर, जोभी-सोभी, अगर्चे-ताहम, इत्यादि।

नोट-समुच्चयबोधक अव्यय का सम्बन्ध समान शब्दों या वाक्यों इत्यादि के अन्वय से होता है। 'श्याम और खाते हैं'-यह वाक्य अशुद्ध है, क्योंकि 'श्याम' संज्ञा है और 'खाते हैं' क्रिया। 'श्याम और राम खाते हैं-यह वाक्य शुद्ध है, क्योंकि श्याम और राम दोनों संज्ञाएँ हैं, जो एक ही क्रिया से अन्वित होती हैं।

विस्मयादिबोधक (InterjeCtions).

विस्मयादिबोधक अव्यय कई प्रकार के हैं-

आश्चर्यसूचक--ओहो! एँ! अरे! ओफ!

आनन्दसूचक–धन्य ! वाह ! अहा !
क्लेशसूचक–हाय ! आह ! ऊह ! बापरे !
अनादरसूचक–छिः ! धिक् ! फिश ! हुश !
स्वीकारसूचक–हूँ ! हाँ ! अच्छा !
अनुमोदनसूचक–ठीक ! वाह ! अच्छा ! भला !
सम्बोधनसूचक–हे, अरे, अरी, ऐ, इत्यादि ।

नोट–(१) दैया रे ! मैया रे ! बप्पा रे ! बाप रे बाप ! इत्यादि में केवल 'रे' मात्र अव्यय है, परन्तु दुःख, विस्मय इत्यादि की सूचना में सभी 'समस्त शब्द' अव्यय होते हैं ।

(२) "जो है सो, राम आसरे, क्या कहना है, क्या नाम करके" इत्यादि को कोई कोई वाक्यों में बिना आवश्यकता के बोलते हैं, इनको **पादपूरक** कहते हैं । इनसे अर्थ में कोई भी बाधा नहीं आती ।

अभ्यास ।

१. सम्बन्धबोधक अव्यय कितने प्रकार के हैं ? २. किन किन सम्बन्धबोधक अव्ययों के पहले 'की' लाते हैं ? ३. सम्बन्धबोधक अव्यय कब संज्ञा होजाता है ? उदाहरण दो । ४. 'पीछे, आगे' ये शब्द क्रियाविशेषण भी होते हैं ? उदाहरण दो ।

६. समुच्चयबोधक अव्ययों के कौन कौन भेद हैं ? उदाहरण दो । ७. नित्यसम्बन्धी अव्यय किसे कहते हैं ? ८. चार ऐसे वाक्य बताओ, जिनमें नित्यसम्बन्धी अव्यय हों । ९. सम्बन्धबोधक और समुच्चयबोधक अव्ययों में क्या भेद है ? १०. विस्मयादिबोधक अव्ययों के भेद उदाहरण सहित बताओ ।

११. नीचे लिखे वाक्यों में शब्दभेदों को बताओ–

तुम अवश्य जाओ । मैं पीछे गया । धिक् धिक् ! ऐसा काम मत करो । पशुओं को कभी न सताओ । राम और श्याम पढ़ते हैं । मैं आऊँगा, परन्तु कुछ खाऊँगा नहीं । वाह ! मैं नहीं जाऊँगा ।

पदच्छेद (Parsing).

अव्यय के पदच्छेद में अव्यय, अव्यय का भेद, और यदि

अव्यय सम्बन्ध रखनेवाला हो तो सम्बन्धी शब्द—इतनी बातें लिखी जाती हैं।

उदाहरण—हाय ! आप कहाँ जाते हैं ? अपने भाई सहित आना। राम और मोहन घर गये।

हाय !—विस्मयादिबोधक अव्यय (क्लेशसूचक)।

कहाँ—स्थानवाचक क्रिया विशेषण, 'जाते हैं' क्रिया की विशेषता बतलाता है।

सहित—सम्बन्धबोधक अव्यय, 'भाई' शब्द से सम्बन्ध रखता है।

और—समुच्चयबोधक अव्यय, 'राम' और 'मोहन' को मिलाता है।

अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों के प्रत्येक शब्द का पदनिर्देश करो—

तुम अवश्य जाओ। मैं पीछे गया। राम आपके पीछे गया। घोड़े दौड़े गया हैं, उड़ आये हैं। लीजिये, महाराज, मैं यह चला। तुम मेरी मदद पश्चात करोगे !

शब्दांश (Prefixes and Suffixes).

कुछ ध्वनियाँ ऐसी हैं जो स्वयं अर्थ नहीं देतीं, परन्तु जब वे शब्दों के साथ मिलाई जाती हैं तब सार्थक हो जाती हैं, ऐसी परतन्त्र ध्वनियों को शब्दांश कहते हैं। जैसे—दुर्, निर्, प्र, वि, त्व, पन, वाला, ने, को, इत्यादि। ये शब्दों के साथ मिलकर सार्थक होते हैं। जैसे—दुर्जन, निर्दोष, प्रबल, मनुष्यत्व, लड़कपन, घरवाला, राम ने, सीता को।

शब्दांश दो प्रकार से आते हैं—(१) शब्दों के पूर्व में और (२) शब्दों के अन्त में।

जो शब्दांश किसी शब्द के पूर्व में जोड़ा जाता है उसे उपसर्ग कहते हैं। ऊपर 'दुर्जन, निर्दोष और प्रबल' में 'दुर्, निर् और प्र, उपसर्ग हैं। जो शब्दांश किसी शब्द के अन्त

में जोड़ा जाता है उसे प्रत्यय कहते हैं। ऊपर 'मनुष्यत्व, लड़कपन, घरवाला, राम ने और सीता को' में 'त्व, पन, वाला, ने और को' प्रत्यय हैं।

'पनिहारिन को' इसमें हारा, इन और को तीन प्रत्यय हैं। यहाँ 'को' के लिये पनिहारिन 'इन' के लिये 'पनिहारा' और 'हारा' के लिये 'पानी' मूल शब्द है। इस उदाहरण में 'को' के बाद फिर कोई प्रत्यय नहीं आ सकते। जिन प्रत्ययों के बाद दूसरे प्रत्यय नहीं लगते उन्हें चरम प्रत्यय कहते हैं। चरम प्रत्यय लगने से शब्द का जो रूपान्तर होता है वही उसकी यथार्थ विकृति है और उसे पद कहते हैं।

नोट—चरम प्रत्ययों को विभक्ति भी कहते हैं।

अभ्यास।

१. शब्दांश किसे कहते हैं? २. शब्दांश कितने प्रकार के हैं? प्रत्येक का उदाहरण सहित लक्षण बताओ। ३. चरम प्रत्यय किसे कहते हैं? ४. पद किसे कहते हैं? ५. विभक्ति किसे कहते हैं?

(३) उपसर्ग (PrefiXes).

'उपसर्ग' शब्दों के पूर्व में मिलकर उनके अर्थ बदल देते हैं। जैसे--यश–अपयश, गुण-अवगुण, जय--पराजय, योग–वियोग, इत्यादि।

भिन्नभिन्न उपसर्गों के साथ एक मूल शब्द के (विशेषकर संस्कृत के किसी धातु के) भिन्नभिन्न अर्थ हो जाते हैं। जैसे--प्रहार (मारना), आहार (भोजन), संहार (क्षय), विहार (क्रीड़ा, खेल), परिहार (मोचना, त्यागना), उपहार (भेंट), व्यवहार (आचरण), इत्यादि। इन शब्दों में संस्कृत का हृ (हरना) धातु है।

कहीं एक, कहीं दो, कहीं तीन और कहीं चार उपसर्ग भी एक साथ आते हैं। जैसे-वि–विहार, वि + अव–व्यवहार, सु + वि + अव–सुव्यवहार, सम् + अभि + वि + आ–समभिव्याहार, इत्यादि।

हिन्दी में अधिकतर संस्कृत के उपसर्ग आते हैं, परन्तु कुछ हिन्दी के और दो एक फारसी के भी हैं।

(१) संस्कृत के बीस उपसर्ग हैं—प्र, परा, अप, सम, अनु, अव, निर, दुर, अभि, वि, अधि, सु, उत, नि, प्रति, परि, अपि, उप, आ।+

संयोग से उत्पन्न उपसर्गों के प्रधान अर्थ या भाव उदाहरण सहित आगे लिखे जाते हैं—

प्र—अतिशय, उत्कर्ष, गति यश, उत्पत्ति और व्यवहार आदि का प्रकाशक है। जैसे—प्रबल, प्रणाम, प्रताप, प्रसिद्ध, प्रयोग, इत्यादि।

परा—विपरीत, नाश और अनादर आदि का प्रकाशक है। जैसे—पराजय, पराभव, परास्त, पराधीन, इत्यादि।

सम्—सहित और उत्तमता आदि का प्रकाशक है। जैसे—सन्तुष्ट, सम्बन्ध, सम्मुख, संस्कार, संस्कृत, इत्यादि।

अप—हीनता, लघुता आदि का प्रकाशक है। जैसे-अपयश, अपवाद, अपशब्द, अपमान, अपकार, इत्यादि।

अनु—सादृश्य, पश्चात् और क्रम आदि का प्रकाशक है जैसे—अनुरूप, अनुगामी, अनुचर, अनुताप, इत्यादि।

अव--अनादर, भ्रंश और हीनता आदि का प्रकाशक है। जैसे-अवज्ञा, अवगुण, अवनति, अवतार, इत्यादि।

निर्--निषेध और रहित आदि का प्रकाशक है। जैसे—निर्दोष, निराकार, निर्जीव, निर्भय, निर्धन, इत्यादि।

दुर्—कठिनता, दुष्टता, निन्दा और हीनता आदि का प्रकाशक है। जैसे—दुर्गम, दुर्जन, दुर्दशा, दुर्बुद्धि, दुर्मति, इत्यादि।

अभि--अधिकता और इच्छा आदि का प्रकाशक है। जैसे—अभिमत, अभिप्राय, अभिमान, इत्यादि।

+ प्रपरापसमन्ववनिर्दुरभि, व्यधिसूदतीनिप्रतिपर्यपयः।
उपआङिति विंशतिरेष सखे, उपसर्गविधिः कथितः कविना॥

वि–भिन्नता, हीनता, असमानता और विशेषता आदि का प्रकाशक है। जैसे–वियोग, विलाप, विकार, विवरण, विहार, विशेष, विलक्षण, इत्यादि।

अधि–प्रधानता, समीपता और उपरिभाव आदि का प्रकाशक है। जैसे–अधिराज, अधिपति, अध्यक्ष, अधिकार, इत्यादि।

सु–उत्तमता, सुगमता, और श्रेष्ठता आदि का प्रकाशक है। जैसे–सुजाति, सुगम, सुयश, सुजन, सुलभ, इत्यादि।

उत्–उच्चता और उत्कर्ष आदि का प्रकाशक है। जैसे–उदय, उद्गम, उदाहरण, उत्पत्ति, इत्यादि।

अति–अतिशय और उत्कर्ष आदि का प्रकाशक है। जैसे–अतिकाल, अतिभाव, अतिगुन इत्यादि।

नि–बहुत और निषेध आदि का प्रकाशक है। जैसे–निरोध, निवारण, निषेध, नियोग, इत्यादि।

प्रति × प्रत्येक, बराबरी, विरोध और परिवर्तन आदि का प्रकाशक है। जैसे–प्रतिदिन, प्रतिशब्द, प्रतिवादी, प्रत्युत्तर, इत्यादि।

परि–सर्वतोभाव, अतिशय और त्याग इत्यादि का प्रकाशक है। जैसे–परिपूर्ण, परिजन, परितोष, परिच्छेद, इत्यादि।

अपि–निश्चय और छिपाव आदि का प्रकाशक है। जैसे–अपिधान।

उप–समीपता, लघुता और सहायता आदि का प्रकाशक है। जैसे–उपवन, उपग्रह, उपकार, इत्यादि।

आ–सीमा, ग्रहण, विरोध, चढ़ाव, और खिंचाव आदि का प्रकाशक है। जैसे–आसमुद्र, आजन्म, आदान, आगमन, आरोहण, आकर्षण, इत्यादि।

ऊपर लिखे उपसर्गों के सिवा नीचे लिखे शब्दांश भी उपसर्गवत् आते हैं।

× 'प्रति' सम्बन्धबोधक अव्यय भी है। जैसे–मेरे प्रति क्यों झुकते हो?

अ, अन्-निषेध और अभाव आदि का प्रकाशक है। जैसे-अपवित्र, अयश, अनादि, अनन्त, इत्यादि।

कु-बुराई और नीचता आदि का प्रकाशक है। जैसे-कुपुत्र, कुजाति, कुपात्र, कुयश, इत्यादि।

स-साथ, संयोग आदि का प्रकाशक है। जैसे-साकार सप्रेम, सपत्नीक, इत्यादि।

सह-साथ, संगति आदि का प्रकाशक है। जैसे-सहगमन, सहयोगी, सहचर, इत्यादि।

(२) हिन्दी उपसर्ग (या संस्कृत के तद्भव उपसर्ग)-

अ, अन-निषेध और अभाव के प्रकाशक हैं। जैसे-अतोल, अमाल, अजान, अपढ़, अनमिल, अनरीति, अनपढ़, इत्यादि।

अप-हीनता, लघुता आदि का प्रकाशक है। जैसे-अपसगुन, अपजस।

नि-निषेध और अभाव आदि का प्रकाशक है। जैसे-निकाम, निडर, निकम्मा, निगोड़ा, इत्यादि।

स (सु)-उत्तमता, साथ आदि या प्रकाशक है। जैसे-सपूत, सजग।

क (कु)-बुराई और नीचता आदि का प्रकाशक है। जैसे-कपूत, कुटेव, कुढङ्गा, कुखेत, इत्यादि।

बि-'बिना' का प्रकाशक है। जैसे-बिचारा।

(३) उर्दू ढंग के उपसर्ग—

ला, बे-अभाव अर्थ में आते हैं। जैसे-लाचार, लापरवाह, बेशक, बेकार, बेशुमार, इत्यादि।

ब-अनुसार का अर्थ देता है। जैसे-बदस्तूर, बजिन्स, इत्यादि।

हर-प्रति का अर्थ देता है। जैसे-हररोज़, हरघड़ी, हरसाल, हरजगह।

दर-में का अर्थ देता है। जैसे-दरअसल, दरहकीकत, इत्यादि।

अभ्यास ।

१. उपसर्ग शब्द को क्या करता है ? २. भिन्नभिन्न उपसर्गों के साथ एक मूल शब्द के भिन्न अर्थ होते हैं। उदाहरण द्वारा समझाओ। ३. नीचे लिखे शब्दों में जो उपसर्ग आये हैं उनके अर्थ लिखो-

आगमन, परिपूर्ण, प्रत्युत्तर, कुपात्र, निषेध, विहार, अनुचर, प्रयोग, अवतार, दुर्जन, उत्पत्ति, अतोल, अपजस, सपूत, कपूत, बेशक, बदस्तूर, दरअसल।

४. ऊपर लिखे शब्दों के अर्थ बताओ।

(२) प्रत्यय (SuffiXes).

प्रत्यय दूसरे शब्द के अन्त में रहकर उसके अर्थ और अवस्था में परिवर्तन करते हैं। ये 'संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और अव्यय' सभी प्रकार के शब्दों में आते हैं। जैसे-

मनुष्यत्व = मनुष्य (संज्ञा) + त्व।

आपवाला = आप (सर्वनाम) + वाला।

सुन्दरता = सुन्दर (विशेषण) + ता।

लिखावट = लिखा (धातु) + वट।

आया = आ (धातु) + या।

बाहरी = बाहर (अव्यय) + ई।

प्रत्यय दो प्रकार के हैं-(१) वे जो धातु के अन्त में आते हैं। (२) वे जो नाम के अन्त में आते हैं। ऊपर 'वट' और 'या' पहले के तथा त्व, वाला, ता और ई दूसरे के उदाहरण हैं।

धातु के अन्त में आनेवाले प्रत्यय दो प्रकार के हैं-कृत् प्रत्यय और क्रियाप्रत्यय। धातुओं में जिन प्रत्ययों के लगाने से नाम बनते हैं वे कृत् और जिनके लगाने से क्रियाएँ बनती हैं वे क्रियाप्रत्यय कहलाते हैं। ऊपर लिखावट में वट कृत्प्रत्यय है और आया में या क्रियाप्रत्यय।

नाम के अन्त में आनेवाले प्रत्यय भी दो प्रकार के हैं-तद्धितप्रत्यय और कारकान्त। नाम में जिन प्रत्ययों के लगाने

से शब्दभेद बनते हैं वे तद्धित और जिनके लगाने से कारक बनते हैं वे कारकान्त कहलाते हैं। ऊपर त्व, वाला, ता और ई तद्धित प्रत्यय हैं। ने, को इत्यादि कारकान्त प्रत्यय पीछे कारकप्रकरण में दियेगये हैं।

नोट-(१) इस प्रकार सब मिलाकर प्रत्ययों के चार भेद होजाते हैं-कृतप्रत्यय, क्रियाप्रत्यय, तद्धितप्रत्यय और कारकान्त प्रत्यय।

(२) क्रियापद और कारक बनानेवाले प्रत्यय 'चरम प्रत्यय' हैं। (पीछे शब्दांश का नोट देखो।)

(३) धातु के अन्त में प्रत्यय लगाने से धातुजशब्द और नाम में लगाने से नामज शब्द बनते हैं।

(४) कृतप्रत्ययान्त शब्द कृदन्त भी कहलाते हैं।

अभ्यास।

१. 'प्रत्यय' शब्द को क्या करता है? २. प्रत्यय कितने प्रकार के हैं? ३. तद्धितप्रत्यय किसे कहते हैं? ४. कृतप्रत्यय किसे कहते हैं? ५. क्या क्रिया में भी चरम प्रत्यय आते हैं?

धातुज शब्द।

धातुजनाम (कृदन्त)।

(१) संज्ञा।

(क) भाववाचक—

प्रत्यय-०, आ, आई, आन, आप, आव, आस, ई, औनी, त, ती, न्ती, न, ना, नी, र, वट, हट, इत्यादि।

शब्द-मार, दौड़, देख, सोच, विचार। गुजारा, घाटा, छापा, घेरा। लड़ाई, चढ़ाई, गढ़ाई, पढ़ाई। उठान, लगान। मिलापजुलाप। चढ़ाव, उतराव, बनाव, घुमाव। निकास, हुलास, प्यास। बोली, हँसी। पढ़ौनी, लिखौनी, कमौनी। बचत, लागत, लगत, खपत। चढ़ती, घटती। बढ़न्ती, घटन्ती। लेन, देन, मारन, मोहन, उच्चाटन। होना, चलना। होनी,

कटनी, मरनी । ठोकर । मिलावट, सजावट, लिखावट । चिल्लाहट, खुजलाहट, इत्यादि । *

नोट—" उनके **देखे** से जो आजाती है रौनक मुँह पर, वह समझते हैं कि बीमार का हाल अच्छा है । आन **संभाले** जान थी जाती, जान **बचाये** आन थी जाती । एक न संभला मेरा **संभाला** । न आये अगर वह तुम्हारे **कहे** से । " इन वाक्यों में 'देखे से, संभाले, बचाये, संभाला और कहे से' ये पाँच कृदन्तीय भाववाचक हैं, जो 'देखने से, संभालने से, बचाने से और कहने से' के संक्षिप्त रूप हैं ।

(ख) कर्तृवाचक *—

प्रत्यय—आ, री, का, इत्यादि ।

शब्द—भूँजा (भूँजनेवाला कांडू) । कटारी । उचक्का । झालर इत्यादि ।

नोट—कर्तृवाचक प्रत्ययान्त शब्द वास्तव में विशेषण होते हैं, परन्तु ऊपर के शब्द प्रयोग में संज्ञाएँ हैं । (आगे देखो)

(ग) कर्मवाचक *—

प्रत्यय—ना, नी, इत्यादि ।

---

* संस्कृत नियमों से बने कुछ भाववाचक शब्द जो हिन्दी में आये हैं—

प्रत्यय—अ (घञ्, अच्), अन (ल्युट्), आ (अङ्), न (नङ्) ति (क्ति), इत्यादि ।

शब्द—प्रभाव, जय, शोक, भाव, पाक । गमन, दर्शन, शयन, कारण भोजन, कथन, दान, भवन, दया, क्रिया, कृपा । यत्न, प्रश्न । गति, मति, प्रकृति, शक्ति, भ्रान्ति, भक्ति, नीति, रीति, विभूति, सम्पत्ति ।

नोट—शुद्ध संस्कृत शब्द को धातु और प्रत्यय से सिद्ध करना हिन्दी के व्याकरण का उद्देश्य नहीं है, किन्तु वह संस्कृत से सिद्ध होता है । यहाँ केवल बहुज्ञतामात्र के लिये संस्कृत के कुछ प्रत्यय और शब्द दिये गये हैं ।

* कर्तृ शब्द से करनेवाले पदार्थ का, कर्म से कर्मत्व का और करण से जिसके द्वारा काम हो उस पदार्थ का बोध होता है ।

शब्द–ओढ़ना। सूँघनी (एक प्रकार की वस्तु जिसको सूँघते हैं), ओढ़नी, खैनी, पीनी, इत्यादि।

(घ) करणवाचक *—

प्रत्यय–आ, आनी, ई, ऊ, औटी, न, ना, नी, पा, इत्यादि।

शब्द–झूला, घोटा, डोला, जाता, लग्गा। मथानी। रेती, जोती, लग्गी। झाड़ू। कसौटी। बेलन, चलान। घोटना, बेलना, ढकना, छनना, चलना, झरना, ढपना। घोटनी, बेलनी, ढकनी, चलनी, करनी, कतरनी, छोलनी सुमरनी, कुरेलनी, खोदनी। खुरपा। इत्यादि। ×

[२] विशेषण।

(क) कर्तृवाचक *—

प्रत्यय–आऊ, आक, आका, आड़ी, आलू, इयाँ, उआ, ऊ, एरा, ऐत, ऐया, ओड़, ओड़ा, क, क्कड़, टा, ता, ना, वाला, वैया, सार, हार, हारा, इत्यादि।

शब्द–टिकाऊ, कमाऊ। तैराक, पैराक। लड़ाका, उड़ाका। खिलाड़ी। झगड़ालू। बढ़ियाँ, घटियाँ। पढुआ। डरू, खाऊ। लुटेरा, नोचेरा। फनैत, ढलैत। बटैया। हँसोड़। भगोड़ा। घालक, जाचक। भुलक्कड़, कुदक्कड़। चट्टा। रोना (जैसे-रोनी

× संस्कृत में अच्, अन (ल्युट्) और त्र इत्यादि प्रत्ययों से करणवाचक शब्द बनते हैं। जैसे-कर, चरण, नयन, पत्र, स्तोत्र, शस्त्र, इत्यादि।

* संस्कृत के कुछ कर्तृवाचक शब्द जो हिन्दी में आये हैं—

प्रत्यय–अक (ण्वुल्), अ (क, अण्, ट), अन (ल्यु), इन (णिनि), ता (तृच, तृण्), ट, इत्यादि—

शब्द–कारक, पाचक, धावक, नायक, पाठक, गणक, भेदक, दायक। धनद, जलद, मधुप, गृहस्थ-मालाकार, सूत्रधार, कुम्भकार-पङ्कज। मदन, नन्दन, नाशन, घातन, पावन, मर्द्दन। धराशायी। नेता, कर्त्ता, दाता, श्रोता, वक्ता, भर्ता, विजेता। वनचर, दिवाकर, निशाकर, खेचर, किङ्कर। इत्यादि

नोट–पीछे इसी प्रकरण में भाववाचक की पादटिप्पणी का नोट देखो।

सूरत)। पढ़नेवाला। पढ़वैया। मिलनसार। होनहार। राखनहारा। इत्यादि।

नोट—(१) आजकल 'हारा, हार' इन प्रत्ययों से बने बहुतसे शब्द गद्य नहीं आते। जैसे—राखनहारा, सिर्जनहार, इत्यादि।

(२) कुछ कर्तृवाचक प्रत्यय पीछे दिये गये हैं।

(ख) भूतकालिक कृदन्त विशेषण +—

प्रत्यय—आ।

शब्द—पढ़ा, धोआ, खाया, नहाया, इत्यादि। ×

☞ कभी कभी आ प्रत्यय के आगे 'हुआ' लगाते हैं जैसे—पढ़ाहुआ, खायाहुआ, इत्यादि।

प्रयोग—(१) 'खाया' मुँह 'नहाया' बदन नहीं छिपता।

(२) 'बीती' ताहि बिसारि दे आगे की सुधि लेय।

(३) 'मरे' को मारनो न सूर की बड़ाई है।

(४) ऐ 'जानी पहचानी' रातो !
तनहाई की डरानी रातो !

(५) 'गया' वक्त फिर हाथ आता नहीं।

(६) 'आयेहुए' को मत जानेदो।

नोट—(१) 'आ' प्रत्यय के अर्थ में इत, ऊ इत्यादि भी मिलते हैं। जैसे—थकित, जड़ित। जरू (कर्मजरू) इत्यादि।

+ भाषाभास्कर में इसका नाम कर्मवाचक है।

× संस्कृत के कुछ ऐसे शब्द बनानेवाले प्रत्यय—

प्रत्यय—त (क्त), तव्य, अनीय, य। (ये प्रत्यय 'उचित' और 'योग्य' के अर्थ भी देते हैं।)

शब्द—कृत, उक्त, दत्त, पठित, मृत, भूत, स्थित, भीत, जागरित, गत, आरूढ़, लिखित, अनुभूत, विजित, हत, शिक्षित, शान्त, प्रकाशित, अनुवादित, ज्ञात। दातव्य, भवितव्य, कर्तव्य, मन्तव्य, द्रष्टव्य। श्रवणीय, रमणीय, ग्रहणीय, प्रशंसनीय। देय, श्राव्य, भव्य, पाठ्य, गम्य, भोज्य। इत्यादि।

(२) **औआ** प्रत्यय भी इसी अर्थ में है। जैसे—चढ़ौआ (चढ़ाया हुआ) बनौआ (बनायाहुआ) जब यह 'वाला' अर्थ में आता है तब कर्तृवाचक प्रत्यय होता है। जैसे—चढ़ौआ (चढ़नेवाला), बिकौआ (बिकनेवाला)।

(३) पूजनीय, पालनीय, दलित, पालित इत्यादि शब्द वास्तव में संस्कृत प्रत्ययों के लगाने से बने हैं, परन्तु वे हिन्दी धातुओं में **नीय** और **इत** प्रत्यय लगे हुए से भी जानपड़ते हैं।

(ग) वर्तमानकालिक कृदन्त विशेषण*—

प्रत्यय—ता।

शब्द—पढ़ता, बहता, चलता, दौड़ता, इत्यादि। ×

☞ कभी कभी ता के आगे 'हुआ' भी लाते हैं। जैसे—पढ़ताहुआ, दौड़ताहुआ, इत्यादि।

प्रयोग—बहता पानी निर्मला बंधा गंदा होय।

बहती गंगा में हाथ धोलो।

चलती गाड़ी उलटगई।

दौड़ताहुआ घोड़ा अड़गया।

(३) अव्यय।

(क) भूतकालिक और वर्तमानकालिक विशेषण क्रिया इत्यादि की विशेषता बतलाने के कारण अव्यय भी होजाते हैं। ऐसे अव्यय द्विरुक्त होकर अधिकतर आते हैं, परन्तु अकेले कम। जैसे—

(१) **बैठेबैठे** दिन नहीं कटता।

(२) लड़का **दौड़तेदौड़ते** थकगया।

---

* भाषाभास्कर में इसका नाम क्रियाद्योतक है।

× संस्कृत धातुओं में 'ता' की जगह शतृ (अत) और शानच् (आन, मान) प्रत्यय आते हैं। जैसे-हसत, धावत, शयान, वर्तमान, वर्द्धमान, क्रियमाण, इत्यादि। हिन्दी में शतृप्रत्ययान्त शब्द कदाचित ही प्रयुक्त होते हैं।

(३) लड़की **दौड़तेदौड़ते** थकगई ।

(४) इस जीव को शरीर में न तो किसी ने **आते** देखा न **जाते** ।

(५) ईश्वर की माया को लोग **सोचते** और **विचारते** ही रहे, परन्तु आजतक उसका भेद किसी ने नहीं पाया ।

(६) थकगई मैं दुःख **सहतेसहते**, थकगये आँसू **बहते बहते** । **उठते बैठते** रोका सबको, **सोतेजागते** टोका सबको ।

(७) तेरे **आते** ही **आते** काम आखिर होगया ।

(ख) क्रिया का पूर्वकालिक रूप भी अव्यय का अर्थ देता है । जैसे–नन्द जी से **मिल** कुशलक्षेम **पूछ** कहनेलगे । वह **पूछके** आता है । मैं **खाकर** जाता हूँ । मैं **खाकरके** जाता हूँ ।

नोट–(१) इये, इयेगा, इयो और **ना** (केवल विधि में) प्रत्ययान्त क्रियाएँ अविकारी हैं, क्योंकि उनमें लिङ्ग, वचन और पुरुष के कारण कोई विकार नहीं होता । जैसे–**चाहिये * खाइये, बैठियेगा, चलियो,** लगा कहने चल भाग रे फिर न **आना**, मियाँ मैं भी चलता हूँ टुक रहके **जाना** ।

(२) संस्कृत के जितने तत्सम और तद्भव शब्द हिन्दी में आये हैं, संस्कृतनियमानुसार प्रायः सभी–नहीं तो तीन चौथाई से अधिक शब्द, धातुज हैं । **हिन्दी व्याकरण में केवल उन्हीं शब्दों को धातुज मानना उचित जानपड़ता है जो 'खाना, पीना, करना' इत्यादि के समान हिन्दी क्रियाओं से सम्बन्ध रखते हों ।** नहीं तो लुहार (लोहकार का अपभ्रंश, लोहकर्म पूर्व में रहते कृ धातु से अण् प्रत्यय) और सुनार इत्यादि शब्दों को भी कृदन्त में गिनना पड़ेगा, जो हिन्दी भाषा के-लिये एक भारी खटक है ।

धातुजधातु और क्रियापद––

पीछे क्रियाप्रकरण में इन्हीं दोनों के विस्तृत वर्णन दिये गये हैं ।

---

* पीछे विधि क्रिया की 'पादटिप्पणी' देखो ।

अभ्यास ।

१. हिन्दी व्याकरण में किन शब्दों को धातुज मानना उचित है ? क्यों ? २. धातुज प्रत्ययों से कितने प्रकार के शब्द बनते हैं ? एक एक उदाहरण दो। ३. क्या जातिवाचक संज्ञाएँ भी धातुज प्रत्ययों से बनती हैं ? उदाहरण दो। ४. धातुज अव्ययों के पाँच उदाहरण दो। ५. 'पढ़ता सुग्गा उड़गया।' इसमें 'पढ़ता' किस प्रकार का विशेषण है ? ६. धातुजप्रत्ययों से बनी कर्तृवाचक संज्ञाओं के पाँच उदाहरण दो। ७. कर्तृवाचक के किन किन प्रत्ययों का प्रयोग आजकल की हिन्दी में नहीं होता ? ८. करणवाचक 'आ' और 'ई' प्रत्ययों से बनी संज्ञाओं को बताओ।

९. नीचे लिखे वाक्यों में कौन कौन शब्द किन किन कृत्-प्रत्ययों से और किन किन अर्थों में बने हैं ?

पढ़ता सुग्गा उड़गया। उठते बैठते रोका सबको, सोते जागते टोका सब को। दाता से बिना दिये रहा नहीं जाता। गया वक्त फिर हाथ आता नहीं। छैनी मत खाओ। झालर हटादो। आन संभाले जान थी जाती, जान बचाये आन थी जाती। सब ही से मिल बोलना, मीठे मीठे बोल। मीठी बोली बोलकर बनो यार अनमोल। उसकी निशानियाँ और यादगारें सैंतसैंतकर रखते थे। बहुतेरों ने उसकी रीस से गुलूबन्द बाँधना छोड़ दिया। हरी भरी वर वृक्षाली, लिये फूलों की है डाली। झोके आआकर किसके, हाथ चूमते हैं इसके।

नामजशब्द ।

तद्धितप्रत्ययान्त शब्द—

१. संज्ञा ।

(क) भाववाचक—

प्रत्यय—आ, आई, आना, आपा, आस, इख, इत, ई, ठा, डा, त, नी, पन, हट, गी, इत्यादि।

शब्द—आपा। बुराई, भलाई। ठिकाना। बुढ़ापा, सुघड़ापा।

मिठास, खटास । कालिख । अपनाइत । गर्मी, सर्दी । कनैठी । दुखड़ा । रंगत, संगत । चांदनी । लड़कपन, बचपन । चिकनाहट, रुखड़ाहट । जिन्दगी, बन्दगी, उम्दगी, ताजगी, रंजगी, मर्दानगी (गी प्रत्यय फ़ारसी है) इत्यादि ।

संस्कृत प्रत्यय–अ (अण्), इमा (इमन्), ता, त्व, य, इत्यादि ।

संस्कृतशब्द–शैशव, लाघव, गौरव । लघिमा, गरिमा, लालिमा, महिमा । गुरुता, सुन्दरता, प्रभुता । गुरुत्व, सुन्दरत्व, प्रभुत्व, लघुत्व । आलस्य, चाञ्चल्य, माधुर्य, इत्यादि ।

(ख) ऊनवाचक (लाघवार्थक) × –

प्रत्यय–आ, वा, ई, क, चा, टा, डा, ड़ी, या, री, ली, इत्यादि ।

शब्द–पिलुआ, नौआ । बचवा, चमरवा । रस्सी, कटोरी । ढोलक, खुर्दक, बालक, तुपक । बागीचा, सन्दूकचा । रोंगटा । जोगड़ा, टुकड़ा । पलंगड़ी, टंगड़ी, खलड़ी । खटिया, डिबिया, कुतिया । कोठरी, छतरी । खटुली, बटुली । इत्यादि ।

(ग) कर्तृवाचक * —

प्रत्यय–आर, इया, ई, उआ, रा, वन, वाल, वाला, हारा । गर, गार, ची, दार । इत्यादि ।

शब्द–सुनार, लुहार, कुम्हार । अढ़तिया, मखनिया । भंडारी, कोठारी, तेली । मछुआ । सँपेरा, कसेरा । दँतवन । कोतवाल । गोवाला, अगरवाला । चुड़िहारा ।

क़लइगर, कारीगर, ज़रगर । यादगार । खज़ानची, मशालची । ज़मींनदार । (इनमें उर्दू ढंग के प्रत्यय हैं) इत्यादि ।

नोट–कर्तृवाचक प्रत्ययान्त शब्द वास्तव में विशेषण हैं, परन्तु ऊपर के शब्द प्रयोग में संज्ञाएँ हैं । (आगे देखो)

× ऊनवाचक से ऊनता या छोटापन का बोध होता है ।

* तद्धितीय कर्तृवाचक से किसी पदार्थ का बनानेवाला, रखनेवाला, आदि आशय हैं ।

(घ) सम्बन्धवाचक × –

प्रत्यय–आल, औती, औटी, जा, ठा, डा, रा, ल, हर। आना, ई, का, ची, दान, इत्यादि।

शब्द–ससुराल, ननिहाल। कठौती। हथौटी। भतीजा, भांजा। अंगेठी। मुखड़ा, नाकड़ा। कठरा, मँगरा, ककहरा। पीतल, नकेल। खंडहर, दोहर।

जुर्माना, तलवाना, नज़राना, बयाना, दस्ताना। आदमी, मिर्ज़ाई। एका, मैका। घड़ौची, दुमची। पानदान, गुलदान, जुज़दान, कलमदान, शमादान। (इनमें उर्दू ढंग के प्रत्यय हैं।) इत्यादि।

संस्कृत के कतिपय शब्दों के स्वरों को वृद्धि करने से अपत्यवाचक शब्द बनते हैं जो सम्बन्धवाचक ही के अन्तर्गत हैं। जैसे–वैष्णव, दानव, मानव, यादव, इत्यादि।

नोट–ये शब्द संज्ञाप्रयोग में हैं, परन्तु बहुत से सम्बन्धवाचक प्रत्ययों से विशेषण बनते हैं। (आगे देखो।)

२. विशेषण।

(१) प्रत्यय—आ, आइन, आहा, ई, ऊ, एरा, ऐ, ऐआ, ऐत, ऐला, ओ, ओं, का, ठा, तना, था, ना, रा, ल, ला, वाल, वाला, वाँ सा, हर, हरा, हा, इत्यादि।

शब्द–ठंढा, भूखा, निगोड़ा, कुबड़ा, पूर्बा। गोबराइन, घिनाइन। दखिनाहा, उतराहा। कई। पेटू, घरू, बाज़ारू, ग़र्ज़ू। चचेरा, फुफेरा, ममेरा। जै, कै, तै। घरैया, बनैया। नतैत, लठैत। बनैला, विषैला। बीसो, पचासो। बीसों, पचासों। मायका। छठा। इतना, उतना। चौथा। अपना। दूसरा, तीसरा।

× किसी पदार्थ का सम्बन्धी भी कर्तृवाचक है, परन्तु इसको हमने सम्बन्धवाचक नाम से एक अलग ही भेद मानलिया है। यदि कोई इसे कर्तृवाचक में ही गिनलें तो भी कोई विशेष आपत्ति नहीं।

बिगड़ैल, खपरैल, अगला, पिछला, पहला, सुनहला। दिल्ली-वाल, काशीवाल। रामवाला, आपवाला। पाँचवाँ, बारहवाँ। आपसा, आगसा, ऐसा, वैसा। छुतहर। सुनहरा, रुपहरा, इकहरा, दुहरा,। टकहा, भुतहा, पैसाहा। इत्यादि।

(२) उर्दू ढंग के प्रत्यय–आना, गीन, नाक, बान, मन्द, वर, सार, शाही, गार, दार, बाज, इत्यादि।

शब्द–दोस्ताना, सालाना। ग़मगीन। दर्दनाक, ख़ौफ़-नाक। निगहबान, मिहरबान, अक्लमन्द, दौलतमन्द। ताक़त-वर, कुवतवर। ख़ाकसार। आपाशाही, नादिरशाही। मदद-गार। मज़ेदार। दग़ाबाज़। इत्यादि।

(३) संस्कृत प्रत्यय–आलु, इक, इत, इष्ठ ई, ईय, तन, तम, तर, तीय, थ, म, मान, ल, वत्, वान्, वी, इत्यादि।

शब्द–दयालु, कृपालु। मानसिक, सामाजिक। आनन्दित, दुःखित, पुलकित। गरिष्ठ, कनिष्ठ, श्रेष्ठ। धनी, गुणी, रामानन्दी। भारतीय, स्वर्गीय। पुरातन। लघुतम, प्राचीनतम। लघुतर, अधिकतर। द्वितीय, तृतीय। चतुर्थ, षष्ठ। पञ्चम, सप्तम, अष्टम। श्रीमान्, बुद्धिमान्×। शीतल, श्यामल, वत्सल। चन्द्रवत्, पुत्रवत्, गुणवान्, दयावान्, ज्ञानवान्, मायावी, यशस्वी, तेजस्वी।

३. सर्वनाम।

प्रत्यय–स, ना।

शब्द–आपस, अपना।

४. अव्यय।

प्रत्यय–ओं, ए, ओं, तक, न, भर, यों, सों, हों, इत्यादि।

× संस्कृत का मतुप् (मान् वान्) प्रत्यय तद्धित में और शानच् (आन, मान) कृदन्त में आता है। मतुप्प्रत्ययान्त शब्द का अन्त्य न हलन्त होता है, परन्तु शानच् का नहीं। विद्यार्थियों को इस भेद पर ध्यान रखना चाहिये।

शब्द—वहाँ, यहाँ, जहाँ, कहाँ। ऐसे, कैसे, जैसे। कोसों, मुहतों, पहरों, घंटों। घरतक, लालतक, भीतरतक। दूधन, पूतन, मुसलन, मुश्किलन, जबरन*। अब, तब, जब, कब। घरभर, रातभर। यों, त्यों, ज्यों, क्यों। परसों, तरसों, नरसों, अतरसों। यहाँ, वहाँ, बारहाँ, अकसरहाँ। इत्यादि।

संस्कृत प्रत्यय-इन, चित, तः, त्र, था, दा, धा, शः, इत्यादि।

शब्द—सुखेन, येनकेन प्रकारेण। कदाचित्, किञ्चित्, क्वचित्। प्रथमतः, साधारणतः। एकत्र, सर्वत्र, अन्यत्र। यथा, अन्यथा, सर्वथा। एकदा, सर्वदा। द्विधा, बहुधा। क्रमशः, अल्पशः, शतशः। इत्यादि।

५. क्रिया।

पीछे क्रियाप्रकरण में नामजधातु देखो।

नोट—(१) पीछे लिङ्गपरिवर्तन के नियमों में आये हुए तथा और और स्थानों के कई प्रत्यय तद्धित हैं।

(२) यहाँ जितने प्रत्यय बतायेगये हैं, वे बहुतही थोड़े हैं। हिन्दी में सैकड़ों प्रत्यय हैं। जिनमें अधिकतर संस्कृत के शुद्ध या बिगड़ेहुए हैं। फ़ारसी इत्यादि अन्यभाषाओं के प्रत्यय भी थोड़े से आये हैं।

(३) जो प्रत्यय नहीं बतलायेगये हैं उन्हें परीक्षा द्वारा स्वयं अनुमान करना चाहिये। जैसे—' बबुआ ', इस शब्द की परीक्षा से जानपड़ता है कि इसमें आ लाघवार्थक प्रत्यय है, क्योंकि वह 'बाबू' शब्द से बना है।

(२) किसी शब्द के परे एकही अर्थ में एकबार दो प्रत्ययों का लगाना अशुद्ध है। जैसे—ऐक्यता, धैर्यता। (ये दोनों शब्द अशुद्ध हैं, इनके बदले ऐक्य और धैर्य या एकता और धीरता लिखना उचित है। यही बात कृत्प्रत्ययों के साथ भी है।)

अभ्यास।

१. हिन्दी व्याकरण में किन शब्दों को नामज मानना उचित है ?

---

* आगे कारकान्त प्रत्ययों के वर्णन में ' से ' का पाठ देखो।

२. नामज प्रत्ययों से कितने प्रकार के शब्द बनते हैं ? एक एक उदाहरण दो। ३. नामज सर्वनाम कौन कौन हैं ? ४. क्या जातिवाचक संज्ञाएँ भी नामज प्रत्ययों से बनती हैं ? उदाहरण दो। ५. नामज प्रत्ययों के पाँच उदाहरण दो। ६. नामज प्रत्ययों से बनी कर्तृवाचक संज्ञाओं के पाँच उदाहरण दो। ७. किसी शब्द के परे एकही अर्थ में एक बार दो प्रत्ययों को ला सकते हैं या नहीं ? ८. 'आलस्यता, ऐक्यता, धैर्यता' इन शब्दों का प्रयोग कर सकते हैं या नहीं ? क्यों ?

९. नीचे लिखे वाक्यों में कौन कौन शब्द किन किन तद्धित प्रत्ययों से किन किन अर्थों में बने हैं ?

किसी की बुराई मत सोचो। रंगत अच्छी नहीं जान पड़ती। को तुम श्यामल गौर शरीरा। आलस्य को छोड़ पुरुषार्थ करो। प्रभुता पाइ काहि मद नाहीं ? रोंगटे खड़े होगये। भंडारी से सीधा लेलो। मिर्ज़ाई पहनलो। फिर जब विरुद्ध पक्षवाला इसका चुटीला उत्तर देता था और चिथेड़ने लगता था तब पूरब के सूर्य को पच्छिम में उगवादेता था। इसमें जब एक आदमी खड़ा होकर कोई वक्तृता करता तब इधर की दुनिया उधर होजाती थी।

कारकान्त प्रत्यय (Case-endings).

शून्य चिन्ह।

शून्य चिन्ह नीचे लिखी अवस्थाओं में आता है—

१. उक्त कर्त्ता में। जैसे—मोहन आया। महाराज बोले। वह तो भूले थे हमें, हम भी उन्हें भूलगये। सीता एक ग्रन्थ लाई है। वह पीछे होलिया। श्रीकृष्ण मथुरा चल दिये। निकल आओ कि अब मरता है बूढ़ा।

२. उक्त कर्म में। जैसे-मैंने रोटी खाई। रावण से सीता हरीगई। योंही रात सारी उन्होंने गँवाई।

३. द्विकर्मक क्रिया के जब दोनों कर्म रहें तब मुख्य कर्म में। जैसे-उसने नंगों को वस्त्र दिये। मैंने उसे एक रीति सिखाई। हमको चालें बतायगा अब कौन ?

४. विधेयभाव में। जैसे-लड़की सूखकर काठ होगई।

क्या आपने उसे आदमी समझा है ?

५. सम्बोधन में। जैसे-छिपे हो कौन से पर्दे में, बेटा !

नोट—बहुवचन में चिन्हसंस्कार के अनुसार अर्द्धानुस्वार रहित ओ या यो लाते हैं। जैसे—हे बेटो !

६. किसी शब्द के केवल अर्थ मात्र में और लिङ्ग, वचन, परिमाण, संख्या या दर इत्यादि के अर्थ में। जैसे—बालक, सुन्दर, घोड़ियाँ, घोड़े, एक मन चावल, चार, दो रुपये सेर मिठाई, इत्यादि।

७. किसी किसी क्रियाविशेषण में। जैसे-न खाया, अच्छा ही हुआ ! होचुका, भला चलो भी तो। येढ़ब पड़ाहुआ है, झगड़ा इधर उधर। इत्यादि।

ने।

ने चिन्ह नीचे लिखी अवस्था में आता है+ –

अनुक्त कर्ता में (अर्थात्—

(क) सकर्मक क्रियाओं के सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्धभूत कालों में कर्त्ता के आगे ने चिन्ह आता है। जैसे-मैंने रोटी खाई। रानियों ने पेड़े खाये हैं। रानियों ने सखियों को बुलाया था। राम ने पुस्तक पढ़ी होगी।

अपवाद-

१. भूलना क्रिया के कर्ता में ने चिन्ह का प्रयोग हमें नहीं मिला है। जैसे -आप वह प्रतिज्ञा न भूले होंगे। वह तो भूले थे हमें हम भी उन्हें भूलगये। बुद्धिमती माँ का उपदेश गारफील्ड कभी न भूले।

नोट—'लाना क्रिया के लिये नीचे की टिप्पणी देखो।

२. 'बोलना, समझना, बकना, जनना, सोचना, और पुकारना' इन क्रियाओं के कर्ता 'ने' चिन्ह विकल्प से लेते हैं।

+ ने चिन्ह नीचे लिखी अवस्था में नहीं आता—

उक्तकर्ता में (अर्थात्—

बोलना—महाराज बोले। (प्रेमसागर)।

(कर्म लुप्त रहने पर **वह** झूठ बोला। (पं० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी)।

'ने' लुप्त रहता है, **रामचन्द्रजी ने** झूठ नहीं बोला (पं० रामजीलाल शर्मा)

परन्तु कर्म के साथ **उन्होंने** कभी झूठ नहीं बोला। (बालविनोद)

कोई कोई लाते हैं।) **उसने** कई बोलियाँ बोलीं। (पं० अ. प्र. वाजपेयी)

समझना—हमने तुम्हारी बात नहीं समझी।

हम तुम्हारी बात नहीं समझे।

हम को समझा है दिल में क्या **तूने**।

हम न समझे कि यह आना है या जाना तेरा। (भट्टजी)

बकना— **तुम** बहुत बके।

तुमने बहुत बका। (पं० अम्बिकादत्त व्यास)

जनना— **भैंस** पाड़ा जनी।

भैंस ने पाड़ा जना (पं अम्बिकादत्त व्यास)

बकरी तीन बच्चे जनी (पं० केशवराम भट्ट)

चित्राङ्गदा ने तुझे जना (लाला भगवानदीन)

आमन्त्रित कर सूर्यदेव को **मैंने** मन में,

मन्त्रशक्ति से तुझे जना था पितृभवन में।

(श्री मैथिलीशरण गुप्त)

सोचना— **उसने** यह बात सोची।

वह यह बात सोचा (पं० केशवराम भट्ट)

पुकारना— **पूतना** पुकारी। (पं० केशवराम भट्ट)

(कर्म लुप्त रहने पर ने भी लुप्त रहता है, नहीं तो नहीं।—भट्ट) **चोपदार** पुकारा—करा खाँ! निगाह रूबरू। (राजा शिवप्रसाद)

सत्पुरुषों ने जिसको बारंबार पुकारा, अच्छा है।

जिसने गली में तुमको पुकारा। (पं० केशवराम भट्ट)

(क) अकर्मक क्रिया के कर्त्ता में ने चिन्ह कभी नहीं आता। जैसे—वह आया। मैं गया हूँ। राम सोया था।

३. सजातीय कर्म लेने के कारण जो **अकर्मक क्रिया सकर्मक होजाती है उसके कर्त्ता के** आगे ने चिन्ह नहीं आता, परन्तु कोई कोई ऐसी कुछ क्रियाओं के साथ सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्ध भूतकालों में ने चिन्ह भी लाते हैं। जैसे—

सिपाही कई लड़ाइयाँ लड़ा।

वह शेर की बैठक बैठा। (प० कामताप्रसाद गुरु।)

मैं क्रिकेट खेला। (प० अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी।)

उसने टेढ़ी चाल चली।

मैंने बड़े खेल खेले हैं।

उसने चौपड़ खेली। (पं. अम्बिकाप्रसाद वाजपेयी)

(ख) सब खण्ड सकर्मकवाली संयुक्त क्रिया के कर्त्ता के आगे सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्ध भूत कालों में ने चिन्ह आता है। जैसे-मोहन ने ग्रन्थ को देखलिया। मैंने उत्तर देदिया था।

अपवाद—नित्यताबोधक+सकर्मक संयुक्त क्रिया का कर्त्ता ने चिन्ह कभी नहीं लेता।

(ख) सकर्मक 'भूलना' क्रिया के कर्त्ता में ने चिन्ह का प्रयोग नहीं होता तथा ' बोलना, समझना, बकना, जनना, सोचना और पुकारना' में विकल्प से होता है। (उदाहरण ऊपर देखो।)

(ग) सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्ध भूत भिन्न सभी कालों की सकर्मक क्रियाओं के कर्त्ता ने चिन्ह रहित होते हैं। जैसे-मैं भात खाता था। राम पुस्तक पढ़ता है।

(घ) एक, अधिक या सब खण्ड अकर्मक वाली संयुक्त क्रियाओं के कर्त्ता ने चिन्ह रहित होते हैं। जैसे-मैं एक पुस्तक लाया। श्याम पीछे होलिया। राम पढ़ लिख चुका। सीता सोगई।

नोट—लाना क्रिया ' ले ' धातु और ' आना ' के योग से बनी है। पहले इसका रूप ल्याना था, पर बाद लाना होगया। प० अ० प्र० वाजपेयी)

\+ पौनःपुन्य अर्थसूचक।

वे बारबार गिनाकिये, हाथ कुछ न लगा। (भारतेन्दु)

वह रात भर बैठेबैठे पढ़ाकिया।

वह चित्रसी चुपचाप खड़ी सुनाकी। (पं. अम्बिकादत्त व्यास)

इस दृश्य को **पाण्डव** सामने बैठे देखाकिये। (बालभारत)

वह तो भूले थे हमें, हम भी उन्हें भूलगये,

हजरत भी कल कहेंगे कि **हम** क्या कियाकिये। (पं० केशवराममट्ट)

(ग) संयुक्त अकर्मक क्रिया का अन्तिम खण्ड ' डालना ' हो तो सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्ध भूत कालों में कर्त्ता के आगे ने चिन्ह सर्वदा आता है, परन्तु यदि अन्तिम खण्ड ' देना ' हो तो विकल्प से आता है। जैसे-

उसने रातभर जागडाला। (पं. अम्बिकादत्त व्यास)

जब मानसिंह चढ़ आये तब पठानों की **सेना** चल दी।

(पं. केशवराम भट्ट)

श्री कृष्ण मथुरा चलदिये। (प्रेमसागर)

मैं अपनासा मुँह लेकर चलदिया। (विद्यार्थी)

उसने रातभर जागदिया। (पं. अम्बिकादत्त व्यास)

अपवाद—

'मुस्कुरादेना, हँसदेना और रोदेना' क्रियाओं के कर्त्ता 'ने' चिन्ह कभी नहीं छोडते। जैसे-**मोहन ने** नारद को देखकर मुस्कुरादिया। जब वह आये **यार** ने हँसदिया। **मुकद्दर** ने रोरो दिया हाथ मलकर (केशवराममट्ट) ×

अपवाद-संयुक्त अकर्मक क्रिया का अन्तिम खण्ड डालना हो तो सामान्य, आसन्न, पूर्ण और सन्दिग्ध भूत कालों में कर्त्ता के आगे ने चिन्ह सदा आता है, परन्तु यदि अन्तिम खण्ड ' देना ' हो तो विकल्प से आता है। (उदाहरण ऊपर देखो।)

(ङ) नित्यताबोधक सकर्मक संयुक्त क्रिया का कर्त्ता ने चिन्ह कभी नहीं लेता। (उदाहरण ऊपर देखो।)

× अनुक्त कर्त्ता में 'से' इत्यादि चिन्ह भी आते हैं।

को ।

'को' * चिन्ह नीचे लिखी अवस्थाओं में आता है--

१ अनुक्त कर्म में। जैसे-आमों को खाता है। तारों को देखता है। फूलों को बटोरता है। राम उसे पहचानता है। मैं-ने ब्राह्मण को सताया है।

२. व्यक्तिवाचक, अधिकारवाचक और व्यापार कर्तृवाचक में। जैसे-राम को पढ़ने दो। मालिक को समझाना। सिपाही को बुलाओ। वह अपने नौकर को कभी नहीं मारता।

३. गौणकर्म या सम्प्रदान कारक में। जैसे-

पूतना कृष्ण को दूध पिलानेलगी। भला, वह किसी को मुँह दिखावेगी! तूने मुझे क्या कहा। मैंने उसको पुस्तक खरीददी। उसने नङ्गों को वस्त्र दिये।

४. आना, छजना, पचना, पड़ना, भाना, मिलना, रुचना, लगना, शोभना, सुहाना, सूझना, होना, और चाहिये इत्यादि के योग में। जैसे-उन्हें याद आती हैं आपकी बातें। आपको यह टोपी नहीं छजती। उसको भोजन नहीं पचता। दिल को कल नहीं पड़ती। उसको क्या पड़ा है, बिगड़ता है मेरा। तुझको पराई क्या पड़ी अपनी निबेड़ तू। मुझे प्यारे के बिछोह में कुछ नहीं भाता। मुझे अपना स्वत्व कब मिलेगा? आपको क्या रुचता है, भात या रोटी? बच्चों को मिठाई बहुत रुचती है। अपना घर सभी को भला लगता है। तुझे यह चाल नहीं शोभती। तुम्हारी बात मुझे कुछ भी नहीं सुहाती। आपको क्या सूझा है? तुझे अठखेलियाँ सूझी हैं, हम बेजार बैठे हैं। यशोदा को लड़की के होने की भी सुध न थी। क्या

---

* सर्वनाम में 'को' के बदले कहीं कहीं 'ए' भी लगाते हैं। सम्प्रदान अर्थ में 'केलिये भी आता है। 'ए' के प्रयोग में ऊपर के सभी नियम और 'केलिये' के प्रयोग में सम्प्रदान अर्थ वाले नियम लगाते हैं।

मुझे आपसे कुछ भी लगाव नहीं है ? आपको सबेरे उठना चाहिये।

५ निमित्त, आवश्यकता और अवस्था द्योतन में। जैसे- राम हमसे मिलने को आये थे। वे स्नान को गये हैं। भोजन बनाने को सीधा तौलाते हैं। इसी के देखने को मैं बचा था। अब मुझको पढ़ने जाना है। तुमको यहाँ फिर आना होगा। उसको अपना पाठ सीखना है। उसको कल रोते रोते बीता।

६. योग्य, उपयुक्त, उचित, आवश्यक, नमस्कार, धिक्कार और धन्यवाद आदि तथा इनके अर्थवाची और और शब्दों के योग में। जैसे- यह आपको योग्य नहीं। क्या यह उसको उपयुक्त है ? स्वच्छ वायु सेवन आपको उपयोगी होगा। ऐसा करना आपको उचित नहीं। विद्यार्थी को ब्रह्मचर्य रखना उचित है। मुझको जाना आवश्यक है। पण्डितजी को प्रणाम। ऐसी स्वतन्त्रता को नमस्कार। पापी को धिक्कार। झूठे को फिटकार। आपको धन्यवाद।

७ समय, स्थान और विनिमयद्योतन में। जैसे-गाड़ी भोर को जायगी। वह रात को आवेगा। कल रात को अच्छी वर्षा हुई। मोहन घर को गया। घोड़ा कितने को दोगे ? पुस्तक कितने को ली है ?

विकल्प-ऐसी जगह कहीं **में** और कहीं **पर** भी लाते हैं। विनिमय में सम्बन्ध के चिन्ह भी आते हैं। जैसे-गाड़ी भोर में जायगी। वह रात में आवेगा। कल रात मे अच्छी वर्षा हुई। मोहन घर पर गया। घोड़ा कितने में (पर) दोगे। पुस्तक कितने में (पर या की) ली है।

८. समाना, चढ़ना, खुलना, लगाना, होना, डरना, कहना और पूछना आदि क्रियाओं के योग में। जैसे-आपको भूत समाया है। ऐसी क्या वू समागई तुमको ? आपको भूत चढ़ा है। मुझे इस चोरी का भेद खुलगया। वह किसी काम का

नहीं उसको आग लगाओ । कोठरी में क्यों नहीं रहते, उसको क्या हुआ है ? कायर को डरें तो कहाँ रहें ? तुमको एक बात कहता हूँ, घर पर कह देना । उसने आपको क्या पूछा ?

विकल्प—समाना, खुलना, लगाना और होना इत्यादि के योग में '**को**' के बदले कहीं '**में**' और कहीं '**पर**' तथा डरना, कहना और पूछना इत्यादि में '**को**' के बदले '**से**' चिन्ह भी लाते हैं । जैसे—आपमें भूत समाया है । ऐसी क्या बू समा गई तुममें ? आपपर भूत चढ़ा है । मुझ-पर इस चोरी का भेद खुलगया । वह किसी काम का नहीं, उसमें आग लगाओ । कोठरी में क्यों नहीं रहते, उसमें क्या हुआ है ? कायर से डरें तो कहाँ रहें ? तुमसे एक बात कहता हूँ, घर पर कह देना । उसने आपसे क्या पूछा ?

नोट—होना क्रिया के साथ अस्तित्व अर्थ में '**को**' के अर्थ में '**के**' भी लाते हैं । जैसे—नन्दजी के पुत्र हुआ है । उसके दाढ़ी है । मेरे एक बेटी है । चली थी बर्छी किसी पर किसी के आन लगी । (ऐसी जगह को भी लाते हैं ।)

नीचे लिखी अवस्थाओं में 'को' चिन्ह प्रायः लुप्त रहता है, परन्तु विशेष अर्थ में स्वराघात के बदले कहीं कहीं लाते भी हैं—

(१) छोटे छोटे जीवों तथा अप्राणिवाचक संज्ञाओं के साथ । जैसे-उसने बिल्ली मारी । मगर एक जुगनू चमकते जो देखा । मैं चिट्ठी लिखता हूँ । बैल घास खाता है ।

(२) अन्य उदाहरण-किधर तुम छोड़कर मुझको सिधारे । मैं सुबह आया । वह पटने गया । राम पढ़ने जाता है ।

मे ।

' से ' चिन्ह नीचे लिखी अवस्थाओं में आता है—

१. करणकारक में । जैसे—बाण से मारा । श्री कृष्ण दोनों

हाथों से छाती में मुँह भगा, लगे प्राण समेत पय पीने।

२. अनुक्तकर्त्ता में। जैसे-मुझसे रोटी खाईगई। आप-से ग्रन्थ पढ़ेगये। रानी से सोया नहीं जाता।

३. प्रेरककर्त्ता में। जैसे-यदि शत्रुओं से तेरा नाम न जपवाऊँ तो मैं चाणक्य नहीं! सभा में जाते हो तो मेरा प्रस्ताव लोगों से मनवाके छोड़ना। मैं राम से पत्र लिखवाता हूँ।

४. क्रिया करने की रीति या प्रकार बताने में। जैसे-वह सारी शक्ति से यत्न करता है। अन्तःकरण से पूजा करो। धीरे से बोलो। खुशी से रहो।

५. मूल्यवाचक संज्ञा और प्रकृतिबोध में। जैसे-कल्याण कञ्चन से मोल नहीं लेसकते। अनाज किस भाव से बेचते हैं? दो सौ रुपये से घोड़ा मोल लिया। छूने से गर्मी जान पड़ती है। देखने से धनी मालूम होता है।

विकल्प-ऐसी जगह कहीं 'में' और कहीं 'पर' भी लाते हैं।

६. कारण, साथ, द्वारा, चिन्ह, विकार, उत्पत्ति और निषेध में। जैसे-आलस्य से वह समय पर न आया। दया से हृदय पिघलगया। वह गर्मी से रुख तमतमाया हुआ, वह रोने से मुँह भरभराया हुआ। घृत और दुग्धाभाव से दुर्बल हुए हम रोरहे हैं। नदी में रहना, मगर से वैर। छाती से छाती मिलाओ। राजा मन्त्री से सलाह करते हैं। आप पुस्तकें रखजाइये, अपने नौकर से भेजदूँगा। अक्षरों से लेखक पहचाने जाते हैं। जटा से साधु जानपड़ता है। वह एक आँख से काना और एक पाँव से लंगड़ा है। कपास, ऊन आदि से वस्त्र बनते हैं। विद्या से ज्ञान होता है। आपसे आप कुछ नहीं होसकता। जितना भाग्य में होगा उतना ही मिलेगा, दौड़धूप से क्या लाभ? झगड़ने से क्या प्रयोजन?

विकल्प-साथ, निषेध, विकार इत्यादि अर्थ में 'से' के बदले कभी

कभी **सम्बन्ध का चिन्ह** भी आता है। जैसे—उसने उनपर क्रोध की दृष्टि की। झगड़े का क्या प्रयोजन ? एक आँख का काना। एक पाँव का लँगड़ा। आँखों के अन्धे नाम नैनसुख। कानों के बहरे।

'**से**' के बदले कहीं कहीं '**में**' भी आता है। जैसे—ऐसा काम करो जिसमें यश मिले।

नोट—हेतु, कारण, प्रकार इत्यादि शब्दों के साथ भी '**से**' चिन्ह लाते हैं। जैसे—इस हेतु से वह समय पर नहीं पहुँचा। इस कारण से उसका निवारण मैं नहीं कर सकता। इस प्रकार से तुम्हारा रहना ठीक नहीं।

७. अपादान (विभाग) में। जैसे—वृक्ष से पत्र गिरते हैं। वह ऐसे गिरा जैसे आकाश से वज्र गिरे।

८. पूछना, दुहना, जाँचना, कहना, रींधना (पकाना, राँधना) इत्यादि क्रियाओं के गौणकर्म में। जैसे—मैं आपसे पूछता हूँ। ग्वाला गाय से दूध दुहता है। दरिद्र धनी से जाँचता है। मोहन आपसे कई बातें कहचुका। रसोइया चावल से भात पकाता है।

विकल्प— यहाँ '**से**' के बदले '**को**' भी लाते हैं, परन्तु कहीं कहीं मुख्य कर्म को लोप करना पड़ता है (पीछे देखो)

९. भिन्नता, परिचय, अपेक्षा, आरम्भ, परे, बाहर, रहित, हीन, दूर, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, अतिरिक्त, लज्जा, बचाव, डर, निकलना, इत्यादि और इन्हीं शब्दों के अर्थवाले दूसरे शब्दों तथा दिग्वाचक शब्दों के योग में। जैसे—यह उससे भिन्न है। राम अपने भाइयों से अलग है। उसको इन सिद्धान्तों से अच्छा परिचय है। धन से विद्या श्रेष्ठ है। बुद्धिमान् शत्रु बुद्धिहीन मित्र से उत्तम है। उससे तो वह पशु भला जो काम सैकडों आता है। गङ्गा से हिमालय तक और कोशी से गण्डक तक मिथिला देश है। घर से बाहरतक खोजडाला। घर से परे बन है। अमेरिका समुद्र से परे है।

देश से बाहर जायाकरो। ऐ अटकल और ध्यान से बाहर, ज्ञान से और पहचान से बाहर। वह विद्या से रहित है। ईश्वर दोषों से रहित है। विद्या से हीन मनुष्य और पशु में भेद नहीं। मँझधार से किनारा दूर है। रहते हैं मुझसे दूर दूर आठ-पहर अलग अलग। मुझसे आगे। राम से पीछे। कृष्ण से ऊपर। मोहन से नीचे। उस जाति से अतिरिक्त वह जाति है। गुरु से लज्जा क्या? तुम्हें यारों से शर्मानापड़ेगा। दुष्टों से सदा बचते रहना। वह सिंह से बालबाल बचगया। मैं तुमसे क्यों डरनेलगा। ईश्वर से डरो। अब आपसे भय होता है। लोगों को मैदान से निकालदो। दूध से घी निकाला-जाता है। घर से दक्षिण नदी बहती है।

विकल्प—आगे, पीछे, ऊपर, नीचे इत्यादि और दिग्वाचक शब्दों के योग में 'से' के बदले सम्बन्ध का चिन्ह भी आता है।

१०. स्थान और समय की दूरता बताने में। जैसे—जनकपुर यहाँ से चार कोस है। पटना गया से प्रायः ६० मील दूर है। आज से कितने दिन पीछे आप आइयेगा? आज से हजार वर्ष पहले भारत की क्या दशा थी?

११. क्रियाविशेषण के योग में। जैसे—कहाँ से टपकपड़े? किधर से टहलकर आये? बाहर से भीतर गये।

१२. पूर्वकालिक क्रिया के अर्थ में। जैसे—पेड़ से उसने बन्दूक चलाई (पेड़ पर चढ़कर)। कोठे से देखो तब दीख-पड़ेगा (कोठे पर चढ़कर)।

१३. निर्धारण (निश्चय) में। जैसे—मोहन कौम हिन्दू से है।

विकल्प—इसी अर्थ में 'से' अधिकरण के चिन्हों के आगे भी आता है। ऐसी अवस्था में कभी 'से' गिर भी जाता है। जैसे—इन विद्यार्थियों में से किसको चुनते हो? दूर कर बालों को सिर पर से। पुरुषों में रामचन्द्र उत्तम थे। पत्थरों में हीरा बहुमूल्य है।

नीचे लिखे वाक्यों में 'से' चिन्ह प्रायः लुप्त रहता है, परन्तु विशेष अर्थ में कहीं कहीं लाते भी हैं। द्वारा शब्द के आगे 'से' कभी नहीं लाते। जैसे—

इस कारण उसका निवारण मैं नहीं कर सकता। इस हेतु वह समय पर नहीं आसका। इस प्रकार तुम्हारा रहना ठीक नहीं। इस तरह आप क्यों बोलते हैं? मन्त्री के द्वारा राजा से भेंट हुई। मैं तुम्हें जूतेजूते मारूँगा। चावल किस भाव बेचते हो? नौकर के हाथ पुस्तकें भेजी थीं। न आँखों देखा न कानों सुना। वे दाँतों अँगुलियाँ काटनेलगे। खिलगई मेरे दिल की कली आप ही आप। तुमने अपने हाथों ये बखेड़े खड़े किये। बच्चा घुटनों चलताहै। अब तेरे किये क्या होगा? किस के भरोसे लड़ूँ? आपके सहारे मेरे दिन कटते हैं। साँप पेट के बल चलता है। ठंढेठंढे सिधारिये घर को। दूधन नहाओ पूतन फलो। किसके मुँह खबर भेजी है? उसकी ओर तुम रहो।

में और पर* ।

नीचे लिखी अवस्थाओं में ऊपर के चिन्ह आते हैं-

१. अधिकरण में। जैसे-तिल में तेल है। पेड़ पर पक्षी है। पाठशाला में विद्यार्थी है। छप्पर पर चिड़ियाँ हैं। ईश्वर में मन लगा है।

२. निर्धारण, कारण, भीतर, भेद, मूल्य, विरोध, अवस्था और द्वारा अर्थ में। जैसे-पशुओं में हाथी बड़ा है। पहाड़ों में हिमालय सबसे ऊँचा है। ऐसा काम करो जिसमें वह कार्य सिद्ध हो। आप कितने दिनों में पहुँचेंगे? समुद्र में अथाह जल है। शिव और विष्णु में भेद नहीं। तुमने यह पुस्तक

* 'पे' भी अधिकरण का चिन्ह है, परन्तु इसका प्रयोग गद्य में अब कदाचित ही होता है।

कितने में (पर) ली है ? पैर में जूता, हाथ में कड़ा, गले में गोप। रामजी के ध्यान में लीन रहो। रामजी ने एक ही बाण में उसका भवबन्धन काटदिया।

नोट–निर्धारण, कारण और मूल्य बताने में दूसरे चिन्ह भी लाते हैं। (पीछे देखो।)

३. अनुसार, सातत्य, दूरी, ऊपर, संलग्न और अनन्तर के अर्थों और वार्तालाप के प्रसङ्ग में पर) चिन्ह लाते हैं। जैसे–नियम पर काम करो। पत्र पर पत्र भेजतेगये, कुछ उत्तर नहीं। यहाँ से चार कोस पर। घोड़े पर चढ़ो। द्वार पर खड़े रहो। इस पर वह क्रोध से बोला।

४. गत्यर्थ धातुओं के साथ । जैसे–मोहन घर पर गया। मैं तुम्हारी शरण में आया।

विकल्प–मोहन घर को गया। मोहन घर गया। मैं तुम्हारी शरण को आया। मैं तुम्हारी शरण में आया। (ऐसे वाक्य भी बोले जाते हैं।)

नीचे लिखे वाक्यों में 'में' या 'पर' चिन्ह प्रायः लुप्त रहता है, परन्तु विशेष अर्थ में कहीं कहीं लाते भी हैं।

इस समय तुम चले जाओ। सीधे जाओ, दायें बायें कभी मत झाँको। मैं आपके पाँव पड़ता हूँ। इस जगह रहना ठीक नहीं। आपको क्या हाथ लगा ? मुझे पढ़ना लिखना कुछ काम नहीं आया। एक ही बार इतना खर्च मत करो। वह आठो पहर ईश्वर का ध्यान करता है। जीतेजी सुख नहीं मिला। आने सेर चावल कब मिलेगा ? प्यारे दीनदयाल के भनक पड़ेगी कान। आँखों देखा खुसरू कहे। सामने रहो।

नोट–सम्बन्धबोधक अव्ययों के आगे भी अधिकरण के चिन्ह लुप्त रहते हैं। (पीछे देखो)

सम्बन्ध और सम्बोधन के चिन्ह ।

१. सम्बन्ध का चिन्ह ।

का

का चिन्ह नीचे लिखी अवस्थाओं में आता है ।

१. सम्बन्ध में । *जैसे–तुलसीदास की × रामायण । राम का भक्त । राम का पुत्र । हाथ की अँगुली । रानी की दासी । पीतल का थाल । स्वर्ण का भूषण । मिट्टी का घड़ा ।

२. सम्पूर्णता, मूल्य, समय, परिमाण, व्याप्ति, अवस्था, दर, बदला, केवल, स्थान, प्रकार, योग्यता, शक्ति के साथ, भविष्यत्, कारण, आधार, निश्चय, शुद्धता, भाव, लक्षण और शीघ्रता आदि में । जैसे–सब के सब चले गये । सात रुपये की थाली । एक दिनकी छुट्टी । एक हाथ का साँप । चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात । एक वर्ष का बच्चा । इसी भारत में कभी आठ मन के भाव से चावल बिकता था । राजा का रङ्क, राई का पर्वत । घर के घर ही में होजाय फ़ैसला दिल का । खुली की खुली रहगईं आँखें सब की । बहुत अर्मान ऐसे हैं कि दिल के दिल में रहते हैं । मिथिला की नारियाँ । अचम्भे की बात सुनने योग्य होती है । दुःख की बोली दुःख देती है ।

---

* 'सम्बन्ध' कई प्रकार के होते हैं–कर्तृकर्मभाव, सेव्यसेवकभाव, जन्यजनकभाव, अङ्गाङ्गिभाव, स्वस्वामिभाव, कार्यकारणभाव, इत्यादि । (उदाहरण ऊपर देखो ।)

× आकारान्त विशेषण के समान 'का' भी 'की' और 'के' में बदलता है तथा सर्वनाम में 'और रूपों में' आता है । जैसे–अच्छा घोड़ा–राम का घोड़ा, अच्छी घोड़ी–राम की घोड़ी, अच्छे घोड़े–राम के घोड़े, मेरा घोड़ा–मेरी घोड़ी, इत्यादि ।

यह पानी पीने का है। बूढ़ा होगया अब मैं चलने फिरने का नहीं। यह बात अब ठहरने की नहीं। अब यह विपत्ति की घड़ी टलने की नहीं। गया तो फिर यह नहीं मेरे हाथ आने का। राह का थका बटोही गाढ़ी नीन्द सोता है। समुद्र की मछलियाँ बड़ी होती हैं। सच्चे का सच्चा और झूठे का झूठा आजही आप जान सकेंगे। दूध का दूध और पानी का पानी। तेरी महिमा अपार, गुण गावे संसार। छिन का सोना और सदा एक वस्तु का खाना अच्छा नहीं। बात का ढीला। मुँह का हलका। शरीर की कोमल। बात की बात में बात निकलआई। रेलगाड़ी आन की आन में आपहुँची।

नोट–भाषा में '**का**' के पूर्व '**में**' और '**पर**' तथा लक्षण में '**का**' के बदले '**से**' भी लाते हैं। जैसे–समुद्र में की मछलियाँ। घोड़े पर का आसन। मुँह से हलका। शरीर से कोमल।

३. तुल्य, अधीन, समीप, ओर, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे, बाहर, बायाँ, दहिना, योग्य, अनुसार, प्रति साथ, इत्यादि और इन के अर्थवाची अन्यशब्दों तथा अव्ययों के योग में। जैसे–राम के तुल्य। कर्म के अधीन। घर के निकट। नदी की ओर। आप के आगे। मेरे पीछे। आपके ऊपर। घर के नीचे। पाठशाला के बाहर। राम का बाँया। तुम्हारे योग्य। कहने के अनुसार। उनके प्रति। पति के साथ। तुम्हें माता कब की पुकाररही है। वह कहाँ का कहाँ गया।

विकल्प–ऊपर के कई शब्दों के योग में '**से**' भी आता है। जैसे–तुम्हें माता कब से पुकाररही है। वह कहाँ **से** कहाँ गया। (शेष उदाहरण पीछे देखो।)

४. विशेष्य उपमान हो तो उपमेय में। जैसे–दया का समुद्र। प्रेम का बन्धन। प्रेम की गाँठ, कर्म की फाँस।

५. कभी कभी गौण कर्म में। जैसे-कोई गधा तुम्हारे लात मारे।

६. उन शब्दों के योग में जो कृदन्तीय शब्दों के कर्त्ता या कर्म के अर्थों में आसकें। जैसे-उसी के आने से तुम भागे जाते हो (वह आया, इसी लिये तुम भागे जाते हो)। क्या हुआ जग के रूठे से? तेरे पढ़ने से मुझे नहीं आवेगा। तुम्हारी कतरब्योंत नहीं जाती। रोटी के खाते ही जी मचलानेलगा (रोटी खाई, इसीलिये जी मचलानेलगा)।

नोट- (१) कभी कभी सम्बन्धी लुप्त रहता है। जैसे-तुम सबकी सुन लेते हो, लेकिन अपनी कुछ भी नहीं कहते। मन की मन ही में रहे। यह कभी नहीं होने का। मै तेरी न सुनूँगा। ऐसा तो न हो कि तकरार की ठहरे।

(२) सम्बन्ध का चिन्ह लुप्तावस्था में कदाचित् ही मिलता है। हाँ, समास करने पर लुप्त होजाता है।

(२) सम्बोधन चिन्ह।

(हे, ऐ, अरे, अरी, इत्यादि)

हे, ऐ, अरे, अरी इत्यादि चिन्ह, किसी को बुलाने, धिक्कारने अथवा हर्ष, शोक इत्यादि के साथ उसके नाम लेने में आते हैं। हमने ये चिन्ह विस्मयादिबोधक के पाठ में रखदिये हैं, परन्तु अन्य विस्मयादि चिन्हों से बहुत ही भिन्न हैं।

अरी, री इत्यादि को केवल स्त्रीलिङ्ग के सम्बोधन में लाते हैं। जैसे-अरी लड़की, री लुच्ची, इत्यादि।

सम्बोधन बिना चिन्ह के भी आता है। जैसे-राम! कुछ भी तो सुध लो। लड़के, क्या करते हो?

कारकादि के चिन्हभेद से अर्थभेद ।

एक ही शब्द में भिन्न भिन्न चिन्हों के लगाने से अर्थ में भेद पड़ता है । नीचे ऐसे थोड़े से उदाहरण दियेजाते हैं—

{ उस **के** बहन नहीं है = उसको बहन नहीं है ।
{ उस**की** बहन नहीं है = दूसरे की बहन है ।

{ चार दिन **पर** आये = चार दिन के बाद आये ।
{ चार दिन **में** आये = चार दिन के भीतर आये ।

{ लङ्का भारत **से** दक्षिण है = भारत के बाहर ।
{ कुमारी अन्तरीप भारत **के** दक्षिण है = भारत का भाग ।

{ पुस्तक कितने **को** लाये = निश्चित मूल्य ।
{ पुस्तक कितने **की** लाये } = सीमा ।
{ पुस्तक कितने **में** लाये }

अभ्यास ।

१. नीचे लिखे वाक्यों में कारक इत्यादि का कौन चिन्ह किस अर्थ में आया है ?

वामन से बलि छलागया । होचुका भला छोड़ भी तो दो । राजा ने ब्राह्मण को वस्त्र दिये । छिपे हो कौनसे पर्दे में बेटा ! मुझे मिठाई अच्छी लगती है । कायर को क्यों डरें ? राम ने उसे बड़ी मार मारी । मेरी गैया को कौन दुहेगा ? उनसे मुँह छिपाने को क्या पड़ा है । आपको सुख हो । आप को प्रणाम । राम ने बाण से बाली को मारा । मैं नौकर से भेजदूँगा । इस से बढ़कर कोई पाप नहीं । उसे सुन्दर वेश से देख खुशी हुई । इससे क्या काम, मुझसे कहो । जब पाँच बरस का बालक हुआ । छ छ पसेरी की बात । विपद की घड़ी टलने की नहीं । मुँह माँगा धन पाता है । उसके बहन नहीं । माँ कब की पुकाररही है । कवियों में कालिदास बड़े हैं । मैं उनसे किस बात में कम हूँ ? हाथ पैर तो कहने ही में नहीं हैं । एक ही तीर में काम तमाम किया ।

२. नीचे लिखे वाक्यों में कारक आदि के चिन्ह कहाँ कहाँ लुप्त हैं ? क्यों ?

मैं पुस्तक पढ़ता हूँ। वह यह बात कहता है। वे बारबार गिनाकिये हाथ कुछ न लगा। मैं अपनासा मुँह लेकर चलदिया। राम कलकत्ते गया। मैं तुम्हें जूते जूते मारूँगा। दूधन नहाओ पूतन फलो। अब तेरे किये क्या होगा? वह आठो पहर ईश्वर का ध्यान करता है। आँखो देखा खुसरू कहे।

३. पाँच ऐसे वाक्य कहो, जिनमें सम्बन्धी लुप्त हों। ४. पाँच ऐसे वाक्य कहो, जिनमें कर्म चिन्हरहित हों। ५. चार ऐसे वाक्य कहो, जिनमें करण चिन्हरहित हों। ६. तीन ऐसे वाक्य कहो, जिनमें अधिकरण चिन्हरहित हों। ७. नीचे लिखे प्रत्येक जोड़े के वाक्यों में क्या भेद है?

उसके बेटी नहीं है। उसकी बेटी नहीं है।

दो दिन में आये। दो दिन पर आये।

घोड़ा कितने को लाये। घोड़ा कितने में लाये।

८. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो—

उसने पीछे होलिया। सीता ने एक ग्रन्थ लाई है। जब मैंने आपके यहाँ जाकर बैठा तब आपने बोला—"कहो भाई, किधर पर आये हो।" राम ने दिनभर बैठ बैठे लिखाकिया। वह दिनभर सोडाला। जब उसने सोया, राम रोदिया। तुममें यह चाल नहीं शोभतो। उसके ओर तुम रहो। राम का बेटी आती है। सीता की बाप अच्छा है। वह सात रुपये लिये तब पुस्तक लाई। कल पानी ने बरसा था, इसलिये मैंने घर से बाहर नहीं निकला।

समास (Compounds).

कई पदों का मिलकर एक होजाना समास कहलाता है। जैसे-राजा के मन्त्री ने = राजमन्त्री ने, चक्र है पाणि में जिनके उनको = चक्रपाणि को, गौरी की और शङ्कर की = गौरीशङ्कर की।

समास से उत्पन्न यौगिकशब्दों को समस्त या सामासिक शब्द कहते हैं। ऊपर राजमन्त्री, चक्रपाणि और गौरीशङ्कर सामासिक शब्द हैं। इनसे विदित होता है कि समस्त शब्दों के केवल अन्त ही में कारक आदि के चिन्ह ला सकते हैं,

परन्तु प्रत्येक खण्ड पर चिन्हसंस्कार बना रहता है तथा शब्दों में कुछ हेरफेर भी होता है।

समस्त शब्दों में किसी में एक खण्ड प्रधान होता है, किसी में सब और किसी में एक भी नहीं। जैसे–राजमन्त्री ने गौरीशङ्कर की पुजा की। इस वाक्य में पूजा करनेवाला 'मंत्री' है, राजा नहीं तथा पूजा कीगई 'गौरी और शङ्कर' दोनों की, इसलिये राजमंत्री में अन्तिम खण्ड प्रधान है और गौरी-शङ्कर में दोनों।

समास वास्तव में चार प्रकार के हैं–तत्पुरुष, बहुव्रीहि, द्वन्द्व और अव्ययीभाव। तत्पुरुष का एक भेद कर्मधारय है और कर्मधारय का एक भेद द्विगु। इस कारण सब मिलाकर समास के ६ भेद होजाते हैं।

नोट–नञ् समास भी हिन्दी में आता है, जो एक उपभेद है।

सामासिक शब्दों के प्रत्येक खण्ड को अलग अलग करने का नाम विग्रह या व्यास है।

तत्पुरुष।

जिस समस्त शब्द का अन्तिम खण्ड प्रधान हो उसमें तत्पुरुष समास रहता है। जैसे–राजमन्त्री ने पूजा की। गङ्गाजल लाओ। इन वाक्यों में राजमन्त्री और गङ्गाजल तत्पुरुष समास हैं।

तत्पुरुष सामासिक शब्द के पूर्वखण्ड में कर्तृवाच्य के कर्त्ता को छोड़ अन्य कारकों और सम्बन्ध के चिन्हों में से कोई एक चिन्ह आता है। जैसे–तिलचट्टा (तेल को चाटनेवाला) शोकाकुल (शोक से आकुल), शरणागत (शरण को आया), बुद्धिहीन (बुद्धि से हीन), गङ्गाजल (गङ्गा का जल), आनन्दमग्न (आनन्द में मग्न)।

पूर्वखण्ड में कर्म के चिन्ह रहने से द्वितीया, करण से तृतीया, सम्प्रदान से चतुर्थी, अपादान से पञ्चमी, सम्बन्ध से षष्ठी और अधिकरण से सप्तमी तत्पुरुष के सामासिक शब्द बनते हैं। जैसे-

द्वितीयातत्पुरुष-चिड़ीमार, अँखफोड़ा, तिलचट्टा, विस्मयापन्न, गङ्गाप्राप्त, मुँहतोड़, इत्यादि।

तृतीयातत्पुरुष-शोकाकुल, दुःखाहत, दुःखार्त, इत्यादि।

चतुर्थीतत्पुरुष-ब्राह्मणदेय, हथकड़ी, राहखर्च, इत्यादि।

पञ्चमीतत्पुरुष-देशनिकाला, पदच्युत, ऋणमुक्त, इत्यादि।

षष्ठीतत्पुरुष-गङ्गाजल, लखपती, मुँहचोर, ननौरी, तिलौरी, दुधहर, दहेड़ी, ध्यानधरना, इत्यादि।

सप्तमीतत्पुरुष-गृहवास, वनवास, आपबीती, कामआना, पाँवपड़ना, राहचलना, बटमार, घरघुसा, इत्यादि।

कर्मधारय।

तत्पुरुष के जिस समस्त शब्द में विशेष्य विशेषण या उपमान उपमेय का बोध हो उसमें कर्मधारय समास रहता है। जैसे-परम है जो आत्मा=परमात्मा, दीर्घ है जो आकार=दीर्घाकार, कमल की उपमावाला है जो नयन (या कमल-स्वरूप नयन या कमलवत् नयन)=कमलनयन, * चन्द्र की उपमावाला है जो मुख (या चन्द्रसा मुख)=चन्द्रमुख, छोटा है जो भैया=छोटभैया, फूली हुई है जो बरी=फुलौरी, पकी हुई है जो बड़ी=पकौड़ी।

द्विगु।

कर्मधारय समास के जिस समस्त शब्द का पूर्वखण्ड

---

* उपमा के शब्द अन्त में भी रहते हैं। जैसे-चरणकमल।

संख्यावाचक हो उसमें द्विगु समास रहता है। जैसे-पाँच हैं जो तत्त्व उनका समूह - पञ्चतत्त्व, चार हैं जो वर्ण = चतुर्वर्ण. इसी प्रकार त्रिभुवन, त्रिराम, पञ्चरात्र, पञ्चपात्र, त्रिफला, चौमुहानी, चौहद्दी, तिपाई, चौपाई, दुअन्नी, चौअन्नी, अठन्नी, चौकोन, तिकोना, इत्यादि।

नोट-यह समास बहुधा समाहार (समूह) अर्थ में आता है।

बहुव्रीहि।

जिस समस्त शब्द का कोई खण्ड प्रधान न हो, बल्कि बाहर से आकर कोई विशेष अर्थ प्रधान होजाय उसमें बहुव्रीहि समास होता है। जैसे-चक्रपाणि (चक्र है पाणि में जिनके = विष्णु), चन्द्रशेखर (चन्द्र है शेखर पर जिनके = महादेव), चन्द्रचूड़ (चन्द्र है चूड़ा पर जिनके - महादेव), चतुर्भुज (चार हैं भुज एँ जिनकी = विष्णु), पीताम्बर (पीता है वस्त्र जिनका = विष्णु), चन्द्रमुखी (चन्द्रमासा मुख है जिसका वह स्त्री), इत्यादि।

केवल विशेष्यशब्दों से बने समस्त शब्द में 'व्यधिकरण' और विशेष्य विशेषण या उपमान उपमेय से बने शब्द में 'समानाधिकरण' बहुव्रीहि समास होता है। ऊपर के समस्त शब्दों में चक्रपाणि, चन्द्रशेखर और चन्द्रचूड़ 'व्यधिकरण' के तथा चतुर्भुज, पीताम्बर और चन्द्रमुख। 'समानाधिकरण' के उदाहरण हैं।

नोट-कई समस्त शब्द कर्मधारय और बहुव्रीहि दोनों में आते हैं। जैसे—

पीताम्बर { पीला है जो वस्त्र (कर्मधारय)
पीला है वस्त्र जिनका = विष्णु (बहुव्रीहि)

चतुर्भुज { चार हैं जो भुजाएँ (कर्मधारय का भेद द्विगु)
चार हैं भुजाएँ जिनकी=विष्णु (बहुव्रीहि)

द्वन्द्व ।

जिस समस्त शब्द के सब खण्ड प्रधान हों उसमें द्वन्द्व समास रहता है। समास होने पर बीच का योजक अव्यय लुप्त हो जाता है। जैसे—गौरी की और शङ्कर की=गौरीशङ्कर को, मन से और कर्म से और वचन से=मनकर्मवचन से। इसी प्रकार लोटाडोरी, भातदाल, हाथीघोड़ा, छत्तीस (छ और तीस), चौबीस, पढ़नालिखना, आनाजाना, खानापीना, मरनाजीना, इत्यादि।

अव्ययीभाव ।

जिस समस्त शब्द से अव्यय का बोध हो अर्थात् जिसका रूप लिङ्ग, वचन आदि के कारण कभी नहीं बदले उसमें अव्ययीभाव समास होता है। * जैसे—यथाशक्ति, प्रतिदिन, अनुरूप, आसमुद्र, हाथोंहाथ, बारबार, पहलेपहल, एकाएक, रोज़रोज़, हररोज़, रोज़ + रातोंरात, अनजाने, अनपूछे, निधड़क, दरहक़ीकत, इत्यादि।

नञ् समास ।

निषेधार्थक 'न' शब्द के योग में जब समास होता है तब उसे नञ् समास कहते हैं। जैसे—नहीं जो अन्त=अनन्त, नहीं है अन्त जिसका वह=अनन्त, नहीं है नाथ जिसका वह=अनाथ।

---

* जब दो शब्द मिलकर अव्यय हो जायँ, अर्थात् उनका स्वरूप विभक्तियों में न बदले तब ऐसे समास को अव्ययीभाव कहते हैं।-पं० रामावतार शर्मा।

+ बदले हँसने के 'रोज़' रोता था। प० केशवराम भट्ट।

संस्कृत के ऐसे सामासिक शब्द का उत्तर खण्ड यदि स्वर से आरम्भ हो तो न का 'अन्' और यदि व्यञ्जन से हो तो न का 'अ' होजाता है। जैसे—अनन्त, अनादि, अनाथ, अचेतन।

नीचे लिखे शब्दों में भी नञ् समास है-अपवित्र, अछूता, अनादर, अनसुना, निकम्मा, नाखुश, अनपढ़, अजात, नाराज, अनजान, इत्यादि।

नोट–(१) समासों के नीचे लिखे चार भेद भी होसकते हैं—

(क) संज्ञा और संज्ञा के योग में। जैसे—गङ्गाजल।

(ख) संज्ञा और धातु के योग में जैसे—मुँहतोड़।

(ग) धातु और धातु के योग में। जैसे—पढ़लिखलो।

(घ) अव्यय और भिन्न शब्दों के योग में। जैसे—आसमुद्र।

(२) बहुतेरे संस्कृत तथा कुछ अन्य भाषाओं के समस्त शब्द अपभ्रंश होकर हिन्दी में आये हैं। उनके अर्थ मूलरूपों में परिवर्तन करने ही पर स्पष्ट होते हैं। जैसे—अट्टावक्र (अष्टावक्र), सौत (सपत्नी), सलोना (सलवण), बादल (वारिद), कहार (स्कन्धधार), सोना (सुवर्ण), सवा (सपाद), साढ़े (सार्द्ध), पौन (पादोन) हथसार (हाथीशाला), भनसार (भानसशाला), कंसार (कान्दुशाला), इत्यादि

(३) संस्कृत नियमों से बने कतिपय समस्तशब्द जो हिन्दी में आये हैं। जैसे—

घृतान्न, व्यर्थ, अहर्निश, अहोरात्र, वाचस्पति, सरसिज, मनसिज, नवागत, सुखसुप्त, एकाह, सप्ताह, ग्रामान्तर, निर्भीक, अन्यमनस्क, सभीक, सदय, सभय, सपुत्र, चञ्चलाक्ष, कुक्कुटाक्ष, पुण्डरीकाक्ष, कमलाक्षी, चञ्चलाक्षी, शरचापहस्त, आबालवृद्धवनिता, यावज्जीवन, प्रत्यक्ष, समक्ष, परोक्ष, त्रिलोकी, सपत्नी, सोदर, सहोदर, नृपकुञ्जर, मद्यपायी, मिष्टभाषी, नष्टप्राय, नेत्राग्र, कापुरुष, कदन्न, दम्पति, अश्रुतपूर्व, वीरकेशरी, इत्यादि।

अभ्यास ।

१. समास किसे कहते हैं ? २. समास कितने प्रकार के हैं ? कौन कौन ? ३. विग्रह किसे कहते हैं ? ४. तत्पुरुष समास किसे कहते हैं ? उदाहरण दो। ५. तत्पुरुष और कर्मधारय में क्या भेद है ? ६. कर्मधारय और द्विगु में क्या भेद है ? उदाहरण देकर समझाओ। ७. बहुव्रीहि समास का कौन खण्ड प्रधान होता है ? उदाहरण देकर समझाओ। ८. पीताम्बर और चतुर्भुज कौन समास हैं, समझाओ। ९. द्वन्द्वसमास किसे कहते हैं ? उदाहरण दो। १०. अव्ययीभाव समास का क्या अर्थ है ? ११. नञ् समास के पाँच उदाहरण दो।

१. नीचे लिखे समस्तशब्दों में समास बताओ--

हाथोंहाथ, अनपढ़, सीताराम, चन्द्रमुख, चौकोन, दुधहर, शरणागत, चालचलना, पङ्कज, चौंतीस।

समासप्रयोग।

१. द्वन्द्वसमास में स्त्रीलिङ्ग, मान्य और अल्प स्वर वाले शब्द प्रायः पहले आते हैं। जैसे-राईनोन, राजारानी, राम-लक्ष्मण, सीताराम, राधाकृष्ण, दालरोटी, इत्यादि।

२. द्वन्द्वसमास से बने समस्त शब्द का लिङ्ग अन्तिम खण्ड के अनुसार होता है, परन्तु जिसमें पूर्व खण्ड की प्रधानता हो उसका लिङ्ग उसी खण्ड के अनुसार होता है। जैसे-आज ही हमारे राजा रानी आये हैं।

नोट-(१) "कुत्ते बिल्ली खाये डालते हैं। नरनारी आये हैं। पिता माता अच्छे हैं। कितने दिनरात गुजरगये।" इत्यादि वाक्य भी प्रयोग में हैं।

(२) हिन्दी में एक दशा के कई शब्दों को जब द्वन्द्व समास की रीति पर लाते हैं तब अन्तिम शब्द को छोड़, और शब्दों के आगे कार-कादि के चिन्हों को, कभी अकेले और कभी चिन्हसंस्कारों के साथ, लोप करदेते हैं। ऐसी दशा में 'और' इत्यादि समुच्चायक का भी लोप होता है, परन्तु प्रायः अन्तिम शब्द के पहले नहीं। जैसे-सोनपुर का मेला देखने

योग्य है। वह पुरुषों और स्त्रियों से और बालकों से और बूढ़ों से भरा-रहता है तथा वहाँ हाथियों का और घोड़ों का तो कुछ ठिकाना ही नहीं रहता=सोनपुर का मेला देखने योग्य है। वह पुरुषों, स्त्रियों, लड़कों और बूढ़ों से भरा रहता है तथा वहाँ हाथी घोड़ों का तो कुछ ठिकाना ही नहीं रहता।

३. तत्पुरुष, कर्मधारय और द्विगु के लिङ्ग अन्तिम अंश के अनुसार और बहुव्रीहि के विशेष्य के अनुसार होते हैं। जैसे-गङ्गाजल मीठा है। महारानी चली गई। विक्रमादित्य की सभा में नवरत्न थे। स्वच्छतोया नदी कलकल शब्द करती हुई बहरही है। *

नोट-बहुव्रीहि के समस्त शब्द विशेषण होते हैं, इसलिये उनके परे विशेषण के अर्थ में किसी प्रत्यय का प्रयोग नहीं होसकता, अतएव **नीरोग** और **निरपराध** इत्यादि के बदले **नीरोगी, निरपराधी** इत्यादि लिखना अशुद्ध है। यह समास प्रायः दीर्घान्त नहीं होता। अतः, निराशा, हताशा इत्यादि के बदले निराश, हताश इत्यादि होंगे।

(४) अव्ययीभाव का समस्त शब्द प्रयोग में अव्यय है। जैसे-वह मेरे पास प्रतिदिन आता है। मैंने भगवान् की पूजा यथाशक्ति की।

(५) पदों में समास होजाने पर यदि सन्धि भी होसके तो वे मिलाकर लिखेजाते हैं, परन्तु हिन्दी और दूसरी भाषाओं के शब्दों में इस नियम का पूरा पालन नहीं होता। जैसे-देशोन्नति, शिक्षानुसार, घरआँगन, रामआसरे, बेईमान, इत्यादि

अभ्यास।

१. द्वन्द्वसमास के पूर्वखण्ड में कैसे शब्द आते हैं? उदाहरण दो। २. द्वन्द्व समास से बने समस्त शब्द का लिङ्ग किस खण्ड के अनुसार होता है? उदाहरण दो। ३. बहुव्रीहि के समस्त शब्द के परे विशेषण अर्थ में कोई प्रत्यय

---

* यौगिक शब्दों के लिङ्ग 'लिङ्गप्रकरण' में भी दियेगये हैं।

लग सकता है या नहीं ? उदाहरण दो । ४. अव्ययीभाव समास का समस्त शब्द प्रयोग में क्या होता है ? वाक्य बनाकर उदाहरण दो ।

५. नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो ।

राम सीता बन चले गये । नोनराई लाओ । आपकी राजारानी कहाँ रहती हैं ? सीतामढ़ी का मेला बहुतसा घोड़ा, हाथी, बैल और मनुष्य से भरा रहता है । मेरे आज्ञा अनुसार चलो । नीरोगी मनुष्य के आनन्द का ठिकाना नहीं ।

द्विरुक्ति ।

समास के समान द्विरुक्ति भी व्याकरण का एक विषय है। कभी द्विरुक्ति के दोनों खण्ड एक से होते हैं और कभी कुछ विकृत । जैसे–घर घर देखा । चोर चोर मौसेरे भाई । एकाएक इस काम में हाथ मत डालो । दल के दल आनेलगे । मीठी मीठी बातों में पड़गये । एकएक पुस्तक सबके पास है ।

१. संज्ञा की द्विरुक्ति से 'प्रत्येक' का बोध होता है। जैसे–घर घर देखा एकै लेखा।

यदि संज्ञा की द्विरुक्ति के बीच में 'ही' आवे तो 'केवल' या 'अभ्यन्तर' का बोध होता है । जैसे–राम ही राम पुकारो । मन ही मन सोचो । यदि बीच में सम्बन्ध का कोई चिन्ह आवे तो 'लगातार' या 'अत्यन्त' का बोध होता है । जैसे–दल के दल आपड़े । गधों का गधा । यदि द्विरुक्ति का पहला खण्ड केवल बहुवचन का संस्कार रक्खे तो 'लगातार' का बोध होता है । जैसे–यह चीज हाथोंहाथ पहुँचगई । बात कानों-कान फैलगई । बातोंबात में भेद खुलगया ।

२. विशेषण के द्विरुक्ति से 'अत्यन्त' और 'समस्त' का बोध होता है , परन्तु संज्ञा की द्विरुक्ति से 'प्रत्येक' का अर्थ निकलता है । जैसे–मीठे मीठे बोल बोलो । एकएक आम दो । सबके दो दो बेटे हुए ।

यदि एक से दूसरे को 'उत्कृष्ट' या 'निकृष्ट' बताना हो तो

विशेषण की 'द्विरुक्ति' के बीच में 'से' चिन्ह लाते हैं। जैसे-अच्छे से अच्छे शिक्षक मेरे स्कूल में हैं। 'समुदाय' अर्थ में संख्या की द्विरुक्ति, बीच में सम्बन्ध का चिन्ह लेती है। जैसे-दोनों के दोनों लड़के मूर्ख निकले।

सौ से ऊपर की किसी संख्या की द्विरुक्ति केवल इकाई के दुहराने से और अपूर्णाङ्क संख्या की मुख्य संज्ञा के दुहराने से बनती है। जैसे-एक सौ पाँचपाँच, दो हजार चार सौ तीनतीन, पौने दोदो, सवा तीनतीन, साढ़े चारचार। अपवाद-सवासवा, डेढ़डेढ़, अढ़ाईअढ़ाई।

यदि संख्यावाचक विशेषण के आगे रुपया, मन या दिन इत्यादि अपने अंश या अंशों (आना, पाई, सेर, छटाँक, घंटा, मिनिट) के साथ आवे तो उसकी द्विरुक्ति केवल अन्तिम अंश के दुहराने से होती है। जैसे-दो रुपये चार आने एक एक पाई। पाँच मन दो दो सेर। तीन दिन चार घण्टे सात सात मिनट। दो महीने पाँच पाँच दिन। तीन वर्ष चार चार महीने।

३. क्रिया और अव्यय की द्विरुक्ति से 'बारबार' 'निश्चय' और 'धीरधीरे' का बोध होता है। जैसे-सीता रोरो कहने लगी। जबजब मैं दूध लाता हूँ बिल्ली पीपी जाती है। होतेहोते वह पहुँचगया। रगड़तेरगड़ते आग निकलगई। जबजब धर्म की ग्लानि होती है तबतब भगवान् अवतार लेते हैं। नयेनये वृक्ष लालाकर लगाये गये।

अभ्यास।

१. संख्या की द्विरुक्ति से क्या अर्थ निकलता है? उदाहरण दो। २. विशेषण की द्विरुक्ति के बीच में 'से' लाने से क्या अर्थ निकलता है? उदाहरण दो। ३. सौ से ऊपर की किसी संख्या की द्विरुक्ति किस प्रकार बनता है? उदाहरण दो। ४. अव्यय की द्विरुक्ति से क्या बोध होता है?

कुछ अशुद्ध शब्दों पर विचार ।

(Wrongly formed words).

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
अकाण्ड	अखण्ड	धैर्यता	धैर्य
अजानित	अज्ञात	निरपराधी	निरपराध
अत्योक्ति	अत्युक्ति	निराशा	नैराश्य
अधीनस्थ	अधीन	निर्दोषी	निर्दोष
आधिक्यता	आधिक्य	निर्धनी	निर्धन
आधीन	अधीन	निर्लज्जा	निर्लज्ज
आवश्यकीय	आवश्यक	नीरोगी	नीरोग
इतिपूर्व	इतःपूर्व	नैराश	निराश
उच्छ्वास	उच्छ्‌वास	पश्वाधम	पश्वधम
उत्कर्षता	उत्कर्ष	पार्वतीय	पर्वतीय
उपरोक्त	उपर्युक्त	पैत्रिक	पैतृक
कृतघ्नी	कृतघ्न	प्रवर्त्त	प्रवृत्त
गुणीगण	गुणिगण	फाल्गुण	फाल्गुन
घनिष्ट	घनिष्ठ	बारम्बार	वारंवार
जगवन्धु	जगद्बन्धु	बाहुल्यता	बाहुल्य
जागृत	जागरित	भरथ	भरत
त्रिवार्षिक	त्रैवार्षिक	भागवत्	भागवत
दर्शण	दर्शन	भागिरथी	भागीरथी
दारिद्रता	दारिद्य्	भाग्यमान	भाग्यवान्
दुरावस्था	दुरवस्था	भुजङ्गिनी	भुजंगी
द्वारिकानाथ	द्वारकानाथ	भ्राता गण	भ्रातृगण

अशुद्ध	शुद्ध	अशुद्ध	शुद्ध
मनान्तर	मतान्तर	सख्या	सख्य
मनोकष्ट	मनःकष्ट	सदोपदेश	सदुपदेश
महदुपकार	महोपकार	सन्मान	सम्मान
महानता	महत्ता	सन्मुख	सम्मुख
मैत्रता	मैत्री	सम्बन्धीय	सम्बन्धी
विद्यमान्	विद्यमान	सराहनीय	श्लाघनीय
विद्यामान्	विद्यावान	सशङ्कित	शङ्कित
व्यवहारित	व्यवहृत	साम्यत्व	साम्य
व्याकुलित	व्याकुल	सिञ्चन	सेचन
श्रीवान्	श्रीमान्	सिञ्चित	सिक्त
षष्ठम	षष्ठ	सिंघ	सिंह
सप्तम	सप्तम	सौन्दर्यता	सौन्दर्य

नोट–(१) हमने ऊपर जिन शब्दों को अशुद्ध बताया है, वे संस्कृत प्रणाली के अनुसार अशुद्ध हैं, परन्तु उनमें से कई को हिन्दी के विद्वानों ने अपने ग्रन्थों में स्थान दिया है। जैसे–

......हिन्दुओं का **साम्यत्व** निश्चय करके धीरे से कहते हैं।

(भारतेन्दु)

मेरे इस कथन को आपलोग बिना विचारे **अकाट्य** सिद्धान्त न मानलें।

(विभक्तिविचार)

हिन्दु जाति......की **महानता** का प्राण हिन्दी भाषा ही है।

(प्रभा)

आपकी **महानता** से परिचित होना चाहते हैं। (प्रभा)

......विचार रखना बहुत ही **आवश्यकीय** है। (पं०केशवरामभट्ट)

☞ 'अपने स्वाधीन, सावधानपूर्वक, सविनयपूर्वक, वास्तविक में' इत्यादि प्रयोग भी उचित नहीं, इनकी जगह 'स्वाधीन, सावधान, वास्तव में' इत्यादि प्रयोग शुद्ध हैं।

अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो—

भगवान् जगबन्धु कहलाते हैं। आपके दर्शण कब होंगे? उसकी पैत्रिक सम्पत्ति अच्छी है। आपके भ्रातागण कहाँ गये? ग्रन्थकर्त्ता ने सब अधिकार अपने स्वाधीन रक्खे हैं। सावधानपूर्वक आओ।

शब्दभेदों में परिवर्तन।

(The Same Word used as different parts of Speech).

हिन्दी में कुछ शब्द ऐसे हैं जो प्रयोग के अनुसार भिन्न भिन्न शब्दभेदों में आते हैं। नीचे थोड़े से ऐसे उदाहरण दिये जाते हैं।

अच्छा...**संज्ञा**—**अच्छों** से मिलिये, बुरों से बचिये।

विशेषण—राम ने **अच्छा** काम किया।

अव्यय—**अच्छा,** हम आवेंगे।

आगे...**संज्ञा**—पुस्तक आपके **आगे** में है।

क्रियाविशेषण—वह **आगे** आया।

सम्बन्धबोधक अव्यय—वाटिका मंदिर के **आगे** है।

और...**विशेषण**—**और** लड़कों ने क्या कहा?

अव्यय—राम **और** श्याम पढ़ने गये हैं।

इसलिये...क्रियाविशेषण-वह **इसलिये** नहाता है कि ग्रहण लगा है।
समुच्चायक-तू दुर्दशा में है, **इसलिये** मै तुझे दान दिया चाहता हूँ।

एक...विशेषण-एक दिन ऐसा हुआ।
सर्वनाम-१. **एक** आता है, **एक** जाता है।
२. पुनि बन्दौं शारद सुरसरिता।
युगल पुनीत मनोहर चरिता।
मज्जन पान पाप हर **एका**।
कहत सुनत **इक** हर अविवेका।
क्रियाविशेषण-एक तुम्हारे ही दुःख से हम दुःखी हैं।
की...क्रिया-आपने यह प्रतिज्ञा **की**।
सम्बन्ध का चिन्ह-आप**की** घोड़ी अच्छी है।
कुछ...सर्वनाम-घी मे **कुछ** मिला है।
विशेषण-कुछ पानी।
क्रियाविशेषण-लड़की **कुछ** छोटी है।
केवल...विशेषण-रामहिं **केवल** प्रेम पियारा।
क्रियाविशेषण-तू **केवल** चिल्लाता है।
समुच्चायक-करतीहुई विकटताण्डव सी मृत्यु निकट दिखलाती है,
केवल एक तुम्हारी आशा प्राणों को अटकाती है।
कोई...सर्वनाम-कोई गया है या **नहीं**।
विशेषण-तुम्हारी **कोई** पुस्तक अच्छी नहीं।
क्रियाविशेषण-इसमें **कोई** २०० पृष्ठ है।
क्या...सर्वनाम-राम ने आपको **क्या** कहा ?
विशेषण-वहाँ **क्या** बातें हुईं ?
क्रियाविशेषण-घोड़े दौड़े **क्या** हैं, उड़आये हैं।
जो...सर्वनाम-बाघ, **जो** बैठा था, मारागया।

विशेषण–**जो** किताब चाहो, लेलो।

अव्यय–उसकी सामर्थ्य नहीं, **जो** आपका सामना करे।

दोनों...**विशेषण**–**दोनों** लड़के।

सर्वनाम–दुविधा में **दोनों** गये, माया मिली न राम।

पत्थर...**संज्ञा**–**पत्थर** मत फेंको।

अव्यय–तुम मेरी मदद **पत्थर** करोगे!

साथ...**संज्ञा**–विपत्ति में कोई **साथ** नहीं देता।

सम्बन्धबोधक अव्यय–मैं आपके **साथ** गया।

क्रियाविशेषण–वे लड़के **साथ** खेलते हैं।

यह...**सर्वनाम**–**यह** किसका घर है?

विशेषण–**यह** किताब किसकी है?

क्रियाविशेषण–लीजिये, महाराज, मैं **यह** चला।

हाँ...**क्रियाविशेषण**–तुमने भात खाया? **हाँ**।

संज्ञा–उसने **हाँ** में **हाँ** मिलाया।

अभ्यास।

नीचे लिखे शब्दों को भिन्न भिन्न शब्दभेदों में रखकर वाक्य बनाओ—

कौन, जो, थोड़ा, दूर, न, प्रति, बहुत, सो, यहाँ, वाहवाह।

वाक्यविचार।

वाक्य (Sentence).

जिसके सुनने से कहनेवाले का पूर्ण अभिप्राय समझ में आजाय ऐसे शब्दसमूह को वाक्य कहते हैं। जैसे-बालक सोता है। फूल लाल है।

नोट–(१) कभी कभी हमलोग किसी घोड़े इत्यादि को देखकर

'घोड़ा क्या कर रहा है ? कौन पशु आता है ? ' इत्यादि प्रश्न किया करते हैं। ऐसे प्रश्नों के लिये 'चरता है। घोड़ा।' इत्यादि उत्तर पाते हैं और सुनते ही पूर्ण अभिप्राय भी सुगमता से समझ जाते हैं। अतएव ऐसे स्थानों में 'चरता है। घोड़ा।' इत्यादि पूर्णवाक्य हैं, यद्यपि ये 'घोड़ा चरता है। घोड़ा आता है।' इत्यादि के लिये आये हैं।'

(२) किसी ने पूछा—"आप खाइयेगा" ? उत्तर मिला 'हाँ'। ऐसी जगह 'हाँ'। इतना ही पूर्ण वाक्य है। इसमें कर्त्ता और क्रिया दोनों लुप्त हैं।

खण्डवाक्य (Clause) और वाक्यांश (Phrase).

१. जो वाक्य दूसरे की अपेक्षा रखसके उसे खण्डवाक्य कहते हैं। जैसे—तब वह परीक्षा देगा। वह ज्यों ही सोगया। जब वह आता है। यदि वह जाय।

खण्डवाक्य दो प्रकार के हैं—प्रधानवाक्य और अधीन-वाक्य। प्रधानवाक्य की अधीनता में अधीनवाक्य रहता है और उसके एक अंग का काम देता है। जैसे—मैं ने समझलिया कि वह चोर है। इस वाक्य में 'मैं ने समझलिया' प्रधान वाक्य है और 'वह चोर है, अधीन। यह अधीनवाक्य 'प्रधान' वाक्य की क्रिया का कर्म है।

नोट—वाक्य के बीच में भी छोटे छोटे वाक्य प्रयुक्त होते हैं जिन्हें गर्भितवाक्य कहते हैं। जैसे—क्या आपने आर्यपुत्र को, मैं उनका नाम कैसे लूँ, देखा है ? मैं कृष्ण को, वह बड़ा छली है, ढूँढ़ते ढूँढ़ते हारगई।

२. वाक्य के परस्पर सम्बन्धी दो या अधिक शब्दों को, जिनसे पूरी बात नहीं जानीजाती, वाक्यांश कहते हैं। जैसे—इतना सुनते ही, आपके पीछे भलीभाँति परीक्षा कर लेने पर।

उद्देश्य और विधेय (Subject & Predicate)

प्रत्येक वाक्य के दो अङ्ग हैं—उद्देश्य और विधेय।

जिनके विषय में कुछ कहाजाय उसे उद्देश्य और उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहाजाय उसे विधेय कहते हैं। जैसे—बालक सोता है। इस वाक्य में 'बालक' उद्देश्य है और 'सोता है' विधेय।

नोट—(१) कितना ही बड़ा या छोटा वाक्य क्यों न हो, परन्तु ये दोनों मोटे भाग उसमें अवश्य रहते हैं। कभी कभी वाक्य में कहीं उद्देश्य, कहीं विधेय और कहीं दोनों लुप्त रहते हैं। पीछे 'वाक्य' के दोनों नोट देखो।)

उद्देश्य और विधेय दोनों, 'विशेषण, क्रियाविशेषण इत्यादि शब्दों से' बढ़ाये जासकते हैं। जो शब्द उद्देश्य की विशेषता बतलाते हैं उन्हें उद्देश्य का विस्तार और जो विधेय की बतलाते हैं उन्हें विधेय का विस्तार कहते हैं। जैसे—सुशील बालक खाकर सोता है।

नोट—विस्तार के विचार से उद्देश्य और विधेय दोनों के दो दो भेद होसकते हैं—साधारण और वर्द्धित।

उद्देश्य और उद्देश्य का विस्तार

(Subject and its Adjuncts).

१. उद्देश्य में नीचे लिखे शब्दभेद होसकते हैं—

(क) संज्ञा। जैसे—बालक पढ़ता है। टहलना अच्छा है।

(ख) सर्वनाम। जैसे—मैं पढ़ता हूँ।

(ग) विशेषण (संज्ञावत्)—लोभी दुःख सहते हैं।

२. उद्देश्य किस कारक में रहता है?

(क) कर्त्ताकारक में। जैसे—मोहन रोटी खाता है।

श्याम ने रोटी खाई। रानी ने सहेलियों को बुलाया। राम से रोटी खाईगई। मुझसे बैठा नहीं जाता।

(ख) योग्यता, कर्तव्य और आवश्यकता इत्यादि के जताने में उद्देश्य सम्प्रदान कारक में आता है। जैसे–आपको यह कहना योग्य नहीं। सोहन को काम करना चाहिये। राम को लिखनापड़ेगा। आपको पाठ पढ़ना है। ×

नोट–जो संज्ञा सम्बोधन कारक में आती है वह मुख्य उद्देश्य नहीं होसकती, क्योंकि वह विधेय से साक्षात् सम्बन्ध नहीं रखती। सम्बोधन के आगे 'उद्देश्य' मध्यमपुरुष सर्वनाम में गुप्त या प्रकट रहता है। *जैसे–हे प्यारे, कहां जाते हो? भगवन्! तू मेरी खबर कब लेगा?

३. उद्देश्य के विस्तार में नीचे लिखे शब्द भेद होसकते हैं—

(क) विशेषण। जैसे–काल घोड़ा आता है। पढ़ता सुग्गा उड़गया। आयाहुआ नौकर सोगया।

(ख) समानाधिकरणशब्द। मैं मोहनलाल इकरार करता हूँ। राम के पिता दशरथजी यह नहीं चाहते थे।

(ग) सम्बन्ध। जैसे–राम का घोड़ा घास खाता है।

विधेय का विस्तार।

(Predicate and its Extension).

१. विधेय से, उद्देश्य के विषय में नीचे लिखी कोई एक बात पाईजाती है—

(क) करना। जैसे–मैं खाता हूँ। वह पढ़ता है।

×कोई कोई कहते हैं कि इन वाक्यों में 'क्रिया का साधारण रूप' ही उद्देश्य होसकता है।

* वाक्यविभजन में सम्बोधन कारक को छोड़देते हैं या सर्वनाम के साथ उद्देश्य में रख देते हैं।

(ख) होना। जैसे—फूल लाल है। सन्ध्या हुई।

(ग) सहना। जैसे—नौकर मारागया। खेत बोया जायगा।

२. साधारण विधेय में केवल एक क्रिया रहती है। जैसे—बालक सोता है। सीता जाती है।

नोट—कई अकर्मक अपूर्ण क्रियाएँ ऐसी हैं जिनके पूरकशब्द विधेय के नित्य साथी समझेजाते हैं।

पूरक के नीचे लिखे शब्दभेद होसकते हैं—

(क) विशेषण। जैसे—वह लड़का **पागल** है।

(ख) संज्ञा। जैसे—राम का भाई **चोर** निकला।

(ग) सम्बन्ध। जैसे—चार बैल **उसके** हुए।

३. विधेय के विस्तार में नीचे लिखे शब्दभेद होसकते हैं—

(क) कर्म। जैसे—घोड़ा घास खाता है।

(ख) विधेयार्थवर्द्धक। जैसे—मेरा भाई रातदिन पढ़ता है। स्त्रियाँ उदास बैठी थीं। मोहन धीरेधीरे पढ़ता है। वह उठकर भागा! मैंने छुरी से कलम काटी।

☞ कर्म इत्यादि अन्यान्य कारकों में भी उद्देश्य ही के समान शब्दभेद और विस्तार होसकते हैं। इसी प्रकार विस्तार का प्रत्येक अंश आवश्यकतानुसार विशेषण इत्यादि शब्दों से बढ़ाया जासकता है।

अभ्यास।

१. वाक्य किसे कहते हैं? २. खण्डवाक्य और वाक्यांश किसे कहते हैं? ३. खण्डवाक्य कितने प्रकार के हैं। उदाहरण दो। ४. गर्भितवाक्य किसे कहते हैं? उदाहरण दो। ५. वाक्य के कितने अङ्ग हैं? उदाहरण देकर समझाओ। ६. उद्देश्य और विधेय के विस्तारों में क्या भेद है? ७. उद्देश्य के कौन कौन कारक हैं? उदाहरण दो। ८. क्या सम्बोधन कारक की संज्ञा भी उद्देश्य है? क्यों? ९. अकर्मक अपूर्ण क्रियाओं के पूरक में कौनकौन शब्दभेद हो सकते

है ? उदाहरण दो । १०. नीचे लिखे वाक्यों में प्रत्येक अङ्ग को अलग अलग करो—

तुम अपने मन में ऐसा कभी न सोचो । तुमलोग भारत के पुत्र हो। चरित्रबल पाकर ही तुमलोगों का हृदय बलिष्ठ होगा। एक एक गुण का अभ्यास करके लोग गुणों से अपने को अलंकृत कर सकते हैं।

वाक्यभेद (Kinds of Sentences).

(१)

स्वरूप के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं–साधारण (अमिश्र), मिश्र (सङ्कीर्ण) और संयुक्त (संसृष्ट)।

जिस वाक्य में केवल एक उद्देश्य और एक विधेय हो उसे साधारण वाक्य कहते हैं। जैसे–राम पढ़ता है।

जिस वाक्य में एक साधारण वाक्य तथा इसी के आश्रित एक या अधिक अङ्गवाक्य होते हैं उसे मिश्रवाक्य कहते हैं। जैसे–मैं देखता हूँ कि श्याम खेलता है । इसमें 'मैं देखता हूँ' यह साधारण वाक्य है जो मुख्य है और 'श्याम खेलता है' यह अङ्ग है, क्योंकि क्रिया का कर्म है। अन्य उदाहरण· साधु कहता है कि भूखों को भोजन दो। यह आदमी, जो कल आया था, आज भी आया है । जब पानी बरसता है तब मेढ़क बोलते हैं ।

जिस वाक्य में दो या अधिक साधारण या मिश्रवाक्य रहते हैं उसे संयुक्तवाक्य कहते हैं । संयुक्तवाक्य के मुख्य वाक्यों को समानाधिकरण **वाक्य कहते हैं, क्योंकि वे एक दूसरे के आश्रित नहीं रहते। जैसे–**

(१) राम पढ़ता है और श्याम खेलता है। (दो साधारण वाक्य)

(२) श्याम माखनचोर है, इसलिये जब मैं ढूँढ़ती हूँ तब वह छिप जाता है। (एक साधारण और मिश्रवाक्य ।

(३) जब भाफ ज़मीन के पास इकट्ठी दिखाईदेती है तब उसे कुहरा कहते हैं और जब वह हवा में कुछ ऊपर इकट्ठी दीखपड़ती है तब उसे बादल कहते हैं । (दो मिश्रवाक्य)

अङ्गवाक्य (आश्रितवाक्य)

(Subordinate sentences).

ऊपर कह आये हैं कि मिश्रवाक्यों के अङ्गवाक्य होते हैं, जो मुख्य वाक्यों के अधीन रहते हैं ।

अङ्गवाक्य तीन प्रकार के होते हैं—संज्ञावाक्य, विशेषण-वाक्य और क्रियाविशेषणवाक्य ।

१. जब किसी अङ्गवाक्य का प्रयोग मुख्य वाक्य की किसी संज्ञा के स्थान में आता है तब उसे संज्ञावाक्य कहते हैं । जैसे—इससे जान पड़ता है कि बुरी संगति का फल बुरा होता है । साधु कहता है कि भूखों को भोजन दो । उसका यह कथन कि सूर्य्य चलता है, मैं नहीं मानता । यहाँ तीनों वाक्यों के अङ्गवाक्य क्रमशः कर्त्ता, कर्म और समानाधिकरण संज्ञा के बदले आये हैं ।

नोट—'संज्ञावाक्य' संयोजक अव्यय 'कि' से आरम्भ होता है । कभी 'कि' का लोप भी करते हैं । जैसे—तुम सुशील हो, यह सब जानते हैं । मेरे मित्र ने कहा, "अब मुझे इसकी आवश्यकता नहीं ।"

२. जब कोई अङ्गवाक्य मुख्यवाक्य की किसी संज्ञा के विशेषण का काम देता है तब उसे विशेषणवाक्य कहते हैं । जैसे—वह आदमी जो कल आया था, आज भी आया है । वह अपने विद्यार्थी को, जो भागगया था, मारते हैं । वह अपने विद्यार्थी को उस छड़ी से मारते हैं, जो मेले में खरीदी गई थी । यहाँ तीनों वाक्यों के अङ्गवाक्य क्रमशः कर्त्ता, कर्म और करण के विशेषण होकर आये हैं ।

नोट–विशेषणवाक्यों को '**जो, जैसा, जितना, जब, जहाँ, जैसे इत्यादि**' शब्दों से आरम्भ करते हैं और मुख्य वाक्यों में उनके '**नित्यसम्बन्धी शब्द**' आते हैं। कभी कभी ये शब्द लुप्त भी रहते हैं। जैसे–जो आवे सो जाय। जो बचे सो भागे। जिसकी लाठी उसकी भैंस। जो हुआ सो हुआ। सच हो सो कह दो। उन्होंने जितना काम किया उतना कोई न करेगा।

३. जब कोई अङ्गवाक्य किसी क्रिया के विशेषण का काम देता है तब उसे क्रियाविशेषणवाक्य कहते हैं। जैसे– "जब पानी बरसता है **तब मेढ़क बोलते हैं**। जहाँ पहले थल था **वहाँ अब जल है**। ज्योंही वह आया **त्योंही चलागया**। **कोई नहीं उतना खाता**, जितना वह खाता है।" **यहाँ चारों वाक्यों के अङ्गवाक्य क्रमशः कालवाचक, स्थानवाचक, रीतिवाचक और परिमाणवाचक क्रियाविशेषण हैं।**

नोट–क्रियाविशेषण वाक्यों को **जब, जहाँ, जिधर, जैसे, ज्यों, यदि, यद्यपि, कि** इत्यादि शब्दों से आरम्भ करते हैं और मुख्यवाक्यों में उनके नित्यसम्बन्धी शब्द आते हैं। कभी कभी ये शब्द लुप्त भी रहते हैं। जैसे-यदि जासको तो जाना। यह रसीद लिखदी कि सनद रहे। बुरा न मानो तो एक बात कहूँ।

समानाधिकरणवाक्य (Co-ordinate Sentences).

हम पीछे लिखआये हैं कि संयुक्तवाक्य के मुख्यवाक्यों को समानाधिकरणवाक्य कहते हैं, क्योंकि वे एक दूसरे के आश्रित नहीं रहते।

समानाधिकरणवाक्य चार प्रकार के होते हैं–संयोजक, विभाजक, विरोधदर्शक और कारणसूचक।

१. संयोजक में केवल एक वाक्य दूसरे से समान या असमान अवधारण के साथ युक्त रहता है। जैसे– मैं आगे

बढ़गया और तू पीछे रहगया । वस्त्र केवल शोभा ही के लिये नहीं हैं, परन्तु उनसे स्वास्थ्य की रक्षा भी होती है। एक तो मेरे पाँव में दाभ की पैनी अनी लगी है दूसरे कुरे की डाल में अंचल उलझा है।

२. विभाजक के मुख्यवाक्यों में व्यावृत्ति या विकल्प का सम्बन्ध रहता है। जैसे-पुलिस प्रजा की रक्षक है, भक्षक नहीं। न वहाँ कोई मनुष्य मिला न कोई पशु दिखाईदिया।

३. विरोधदर्शक के मुख्यवाक्यों में परस्पर विरोध रहता है। जैसे-आपसे बहुत कुछ आशा थी, परन्तु वह फलवती न हुई। मुझे सत्य बोलना चाहिये, परन्तु वह अप्रिय न हो।

४. कारणसूचक के मुख्यवाक्यों में परस्पर फल और कारण का सम्बन्ध रहता है। जैसे-आप उसे बहुत चाहते थे, इसीलिये वह नष्ट हुआ। हिमालय पर्वत परम रमणीय है, क्योंकि वहाँ प्रकृति के वास्तविक दर्शन होते हैं।

नोट—जब संयुक्तवाक्य के अंशों में उद्देश्य, विधेय इत्यादि की पुनरावृत्ति नहीं करके अव्यय इत्यादि से काम चलाते हैं तब उसे **सङ्कुचितवाक्य** कहते हैं। जैसे—राम और श्याम एक शिक्षक से पढ़ते हैं। मैंने पुस्तकें खरीदीं और पढ़ीं। न उसमें मनुष्य थे न जानवर। अब वह राजर्षि के नाम से नहीं, वरन ब्रह्मर्षि के नाम से प्रसिद्ध होगये। गुरुजी बीमार हैं, इसलिये पढ़ाने नहीं आये।

वाक्यभेद।

(२)

क्रिया के अनुसार वाक्य तीन प्रकार के होते हैं-कर्तृप्रधान, कर्मप्रधान, और भावप्रधान।

कर्तृप्रधान की क्रिया कर्तृवाच्य, कर्मप्रधान की कर्मवाच्य और भावप्रधान की भाववाच्य होती है। जैसे-(१) राम

पुस्तक पढ़ता है। (२) राम ने पुस्तक पढ़ी। सीता से ग्रन्थ पढ़ागया। (३) रानी ने सहेलियों को बुलाया। चलाजाय। बैठाजाय। रानी से सोया नहींजाता। (आगे वाच्यपरिवर्तन देखो।)।

वाक्यभेद।

(३)

सभी वाक्य नीचे लिखे सात रूपों में मिलते हैं-

१. विधानार्थक-जिससे किसी बात का होना पायाजाय। जैसे-रामजी लंका गये। लड़कियाँ लिखरही हैं।

२. निषेधार्थक-जिससे किसी बात का न होना पाया-जाय। जैसे-उसने पुस्तकें नहीं लिखीं।

३. आज्ञार्थक-जिससे आज्ञा समझीजाय। जैसे-वहाँ जाओ। बैठाजाय। भात मत खाना।

४. प्रश्नार्थक-जिससे प्रश्न समझाजाय। जैसे-कहाँ जाते हो? यह सड़क कहाँ गई है?

५. विस्मयादिबोधक-जिससे विस्मय आदि समझाजाय। जैसे-वाह! क्या ही उत्तम दृश्य है!

६. इच्छार्थक-जिससे इच्छा जानीजाय। जैसे-जय हो। भगवान् आपका भला करे।

७. संदेहार्थक-जिससे सन्देह या संभव का बोध हो। जैसे-शायद मैं आऊँ। राम जाता होगा।

अभ्यास।

१. स्वरूप के अनुसार वाक्य कितने प्रकार के होते हैं? उदाहरण दो। २. समानाधिकरणवाक्य किसे कहते हैं? उदाहरण दो। ३. आश्रित वाक्य और समानाधिकरण में क्या भेद है? उदाहरण दो। ४. आश्रितवाक्य कितने प्रकार के होते हैं? उदाहरण दो। ५. समानाधिकरण-

वाक्य कितने प्रकार के हैं ? उदाहरण दो। ६. संकुचितवाक्य किसे कहते हैं ? उदाहरण दो । ७. क्रिया के अनुसार वाक्य कितने प्रकार के हैं? उदाहरण दो । ८. सभी प्रकार के वाक्य किन किन रूपों में मिलते हैं? एक एक उदाहरण दो । ९. नीचे लिखे वाक्यों में कौन किस प्रकार का है ? तीनों वाक्यभेदों के अनुसार बताओ ।

"जो किसी अच्छे काम मे आप प्रवृत्त होता है उसकी सहायता ईश्वर करते है । " यह उपदेश माँ के मुँह से बचपन में मातृभक्त गारफील्ड को बारबार सुनने में आता था। बुद्धिमती माँ का उपदेश गारफील्ड कभी न भूले।

वाक्यरचना (Syntax).

व्याकरण से सिद्ध किये पदों को लाघव, रोज़मर्रे और मुहावरे इत्यादि पर ध्यान रखकर मेल के अनुसार यथाक्रम रखने को वाक्यरचना कहते हैं ।

वाक्यरचना में मुख्यतः 'मेल, क्रम, लाघव, रोज़मर्रा और मुहावरा' इन पाँच विषयों की चर्चा रहती है ।

मेल (Concord).

वाक्य का एक पद दूसरे से लिङ्ग, वचन, पुरुष, काल और नियम इत्यादि का जो सम्बन्ध रखता है, उसे मेल कहते हैं । जब वाक्य में दो शब्द एक ही लिङ्ग, वचन, पुरुष, काल और नियम के हों तब वे आपस में मेल, समानता या सादृश्य रखनेवाले कहेजाते हैं ।

हिन्दी में कर्त्ता या कर्म के साथ क्रिया का, संज्ञा के साथ सर्वनाम का, सम्बन्ध + के साथ सम्बन्धी का और विशेष्य के

+ का, की, के चिन्हयुक्त सम्बन्ध पद जब विशेषण मानाजाय तब सम्बन्ध और सम्बन्धी का, नहीं तो केवल सम्बन्ध के चिन्ह और सम्बन्धी का।

साथ विशेषण का मेल रहता है। कुछ शब्द भी आपस में सम्बन्ध रखते हैं जो नित्यसम्बन्धी कहलाते हैं।

कर्त्ता और क्रिया से मेल।

१. चिन्हरहित कर्त्ता की क्रिया कर्त्ता के अनुसार होती है, चाहे वाक्य में कर्म किसी अवस्था में रहे या न रहे। जैसे-श्याम पढ़ता है। सीता पढ़ती है। राम का बालक आता है। सब बालक आते हैं। मैं आता हूँ। वे आते हैं। स्त्री जाती है। स्त्रियाँ जाती हैं। श्याम रोटी खाता है। सीता दासी को पुकारती है।

२. यदि वाक्य में एक ही लिङ्ग, वचन और पुरुष के कई चिन्हरहित कर्त्ता 'और' (या इसी अर्थ के किसी अन्य योजक शब्द) से *संयुक्त हो तो क्रिया उसी लिङ्ग में बहुवचन होगी, परन्तु यदि उनके समूह से एकवचन का अर्थ समझाजाय तो क्रिया एकवचन होगी। जैसे-राम और श्याम आते हैं। सीता, सावित्री और माधुरी वाटिका में गई हैं। उसका उत्साह और आनन्द बड़ा है। भेड़ियाँ और बकरियाँ चररही हैं। वह और वह जाते हैं।

३ यदि वाक्य में दोनों लिङ्गों और वचनों के अनेक चिन्ह-रहित कर्त्ता हों तो क्रिया बहुवचन के सिवा लिङ्ग में अन्तिम कर्त्ता के अनुसार होगी। जैसे-एक घोड़ा दो बैल और बहुतसी बकरियाँ चरती हैं। एक बकरी, दो गायें और बहुतसे बैल चरते हैं।

नोट-(क) ऐसी जगह प्रायः बहुवचन और पुल्लिङ्ग कर्त्ता अन्त में रहते हैं। (प्रयोग में इसका विशेष विचार नहीं देखाजाता)

---

* 'समासप्रयोग' और 'विराम चिन्ह' देखो।

(ख) यदि पिछला कर्त्ता एकवचन हो तो क्रिया एकवचन और बहुवचन दोनों होती है। जैसे—तुम्हारी बकरियाँ, उसकी घोड़ी और मेरा बैल उस खेत में **चरता है (चरते हैं)**।—पण्डित अम्बिकादत्तव्यास।

(ग) यदि दोनों लिङ्गों के एकवचन कर्त्ता **और** (या इसी अर्थ के किसी अन्य योजक शब्द) से संयुक्त हो तो **क्रिया प्रायः पुल्लिङ्ग और बहुवचन होती है**। जैसे—"किसी गाँव में एक बुढ़वा और एक बुढ़िया रहते थे। आज ही तो राजा रानी गये हैं। इस राज्य में बाघ और बकरी एक घाट पानी पीते हैं।"

(घ) समस्त शब्दों की क्रियाओं के नियम '**समासप्रयोग**' में देखो।

४. यदि चिन्हरहित अनेक कर्त्ता हों और उनके बीच में विभाजक शब्द लावें तो क्रिया लिङ्ग और वचन में अन्तिम कर्त्ता के अनुसार होता है। **जैसे-मेरी बेटी या उसका बेटा आता है। आज मोहन का घोड़ा या राम की बकरियाँ बिकेंगी।**

५. यदि चिन्हरहित अनेक कर्त्ताओं और क्रिया के बीच में कोई-समुदायवाचक शब्द आपड़े तो क्रिया, लिङ्ग और वचन में समुदायवाचक शब्द के अनुसार होगी। **जैसे—लड़ाई में बालक युवा, नर नारी, राजा रानी सबके सब पकड़ेगये या भीड़ की भीड़ पकड़ीगई।** (छठा नियम देखो)।

६. यदि चिन्हरहित अनेक कर्त्ताओं से बहुवचन का अर्थ निकले तो क्रिया बहुवचन **और यदि एकवचन का अर्थ लें तो** क्रिया एकवचन होती है, **चाहे कर्त्ताओं के आगे समुदायवाचक शब्द हो या न हो। जैसे—इसके मोल लेने में दो रुपये सात आने तीन पैसे लगे हैं। धन, जन, स्त्री और राज मेरा क्यों न गया? खेतबारी, घरद्वार मेरा सब चलागया। चार मास और तीन बरस इसके करने में लगा है। मेरा**

उत्साह, धैर्य्य और आनन्द बढ़ताजाता है। इसके मोल लेने में दो रुपया आठ आना लगा है। दाल और भात अच्छा बना है। (यह नियम जीवधारी के लिये नहीं है) ।

७. यदि वाक्य में उत्तमपुरुष, मध्यम और अन्यपुरुष दोनों के साथ या किसी एक के साथ कर्त्ता होकर आवे तो क्रिया उत्तमपुरुष के अनुसार होगी। यदि कर्त्ता केवल मध्यम और अन्य पुरुषों में हो तो क्रिया मध्यमपुरुष के अनुसार होगी। जैसे-तुम, वह और हम चलेंगे। तुम, वह और मैं चलूँगा। तुम और हम चलेंगे। तुम और मैं चलूँगा। वह और हम चलेंगे। वह और मैं चलूँगा। तुम और वह (श्याम) चलोगे। *

नोट-वाक्य में पहले मध्यमपुरुष आता है और अन्त में उत्तमपुरुष। अन्यपुरुष दोनों के बीच में लाते हैं। ×

८. आदर केलिये चिन्हरहित एकवचन कर्त्ता की क्रिया भी बहुवचन होती है। जैसे-पंडितजी आये हैं। वह जाते हैं।

नोट-परमेश्वर केलिये एकवचन ही क्रिया का प्रयोग होता है। जैसे-ईश्वर जानता है, हम झूठ नहीं बोलते।

९. जब कोई स्त्री, अपने पति या परिवार की ओर से या किसी ऐसे समुदाय की ओर से जिसमें स्त्री पुरुष सब हों कुछ कहती है तब वह भी अपने लिये पुंलिङ्ग और बहुवचन क्रिया का प्रयोग करती है। जैसे-"ब्राह्मणी ने कुन्ती से कहा कि न जानें, हम बकासुर राक्षस के अत्याचार से कैसे छुटकारा पावेंगे।"

१०. क्रिया मुख्य कर्त्ता के अनुसार होती है, कर्त्ता के विधेयस्वरूप के अनुसार नहीं। जैसे-लड़की बीमारी से सूखकर काठ

---

* ऐसी जगह दिल्ली के नईवाले पण्डित क्रिया को सदा पुल्लिङ्ग, बहुवचन और अन्यपुरुष में रखते हैं।

× इस क्रम को कोई कोई नहीं भी पालते।

होगई। वह राजा स्त्री होगया। 'यह विरोध ही का फल है कि अर्जुन विराट के घर स्त्री रूप में बृहन्नला कहलाता है।' स्त्रियाँ झुंड बनगईं। औरतें भी आदमी कहलाती हैं।

११. एक कर्त्ता की दो या अधिक क्रियाएँ भिन्न भिन्न कालों में हों तो कर्त्ता का चिन्ह केवल पहली क्रिया के अनुसार आता है, परन्तु शेष क्रियाएँ भी नियमबद्ध रहती हैं। जैसे-'मेरे सब लड़कों ने साथ साथ एक ही स्थान में विद्या सीखी और खेलेकूदे।'

१२. दो या अधिक क्रियाओं के समान कर्त्ता को बारबार न लाकर केवल एकही बार लाते हैं और यदि क्रियाओं के उत्तर अंश समान हों तो उन्हें सबों में नहीं रखते केवल अन्तिम क्रिया में रखते हैं। जैसे-सीता खाती पीती थी।

१३. एक वाक्य में पूर्वकालिक का वही कर्ता होता है जो समापिका क्रिया का होता है, परन्तु कर्त्ता का चिन्ह पूर्वकालिक के अनुसार नहीं होता। जैसे-मैं पाठशाला में बैठकर पढ़ता हूँ।

कर्म और क्रिया में मेल।

१. यदि कर्म चिन्हरहित हो तो चिन्हसहित कर्त्ता की क्रिया कर्म के अनुसार होती है, परन्तु यदि दोनों चिन्हयुक्त हों तो क्रिया सदा एकवचन, पुल्लिङ्ग और अन्यपुरुष में रहती है। जैसे-मैंने रोटी खाई। मुझसे रोटी खाई गई। रानी ने भात खाया। रानी ने सहेलियों को बुलाया। दासी कहती है कि रानी ने मुझे मारा। उन्होंने उसे अधिक आदर की चीज़ समझा है।

नोट-'श्रोताओं ने खूब ही उत्साह और आनन्द प्रकट किया।' इस वाक्य में 'उत्साह और आनन्द' से एकवचन का अर्थ लियागया है।

(पीछे 'कर्त्ता और क्रिया में मेल' शीर्षक पाठ का छठा नियम देखो।)

२. यदि कर्म न होसके या लुप्त हो तो चिन्हसहित कर्त्ता की क्रिया सदा एकवचन, पुल्लिङ्ग और अन्यपुरुष में रहती है। जैसे-मुझसे बैठा नहीं जाता। मैंने पढ़ा है। रानी ने देखा था।

कर्त्ता, कर्म और क्रियासम्बन्धी नोट—

(१) अङ्गवाक्य, और क्रियार्थक संज्ञा के अनुसार होनेवाली क्रियाएँ सर्वदा एकवचन, पुल्लिङ्ग और अन्यपुरुष में होती हैं। जैसे-तूने कहा कि पुस्तक अच्छी है। इस कार्य केलिये उसका दौड़ना धूपना कुछ लाभदायक नहीं हुआ। टहलना अच्छा है।

(२) क्रिया जिसके अनुसार होनेवाली है, यदि उसके लिङ्ग में सन्देह हो तो क्रिया पुल्लिङ्ग ही होती है। जैसे-उसने कुछ न किया। महाभारत में लिखा है। दरवाजा कौन खटखटाता है ?

(३) कतिपय संज्ञाओं के केवल बहुवचन प्रयोग मधुर जानपड़ते हैं। जैसे-"प्राण निकलगये। उसने प्राण छोड़दिये। बूँदें पड़ रही हैं। आँसू टपकपड़े। आपके दर्शन कब होंगे ? अक्षत छोटगये। ओठ फड़कने लगे।"

संज्ञा और सर्वनाम में मेल।

१. सर्वनाम में उसी संज्ञा के लिङ्ग और वचन होते हैं जिसके बदले वह आता है, परन्तु कारकों में भेद रहता है। जैसे-राम ने कहा कि मैं आऊँगा। सीता कहती है कि मैं यहाँ नहीं रहूँगी, मुझको वन ही में सुख मिलेगा।

२. सम्पादक, ग्रन्थकार किसी सभा के प्रतिनिधि और बड़े बड़े अधिकारी अपने लिये मैं के बदले हम का प्रयोग करते हैं। जैसे-हमने पहले किसी अङ्क में यह बात लिखी है। हम चौथे अध्याय में यह बात लिख आये हैं। हम अपने

सभासदों से इसके विषय में फिर राय लेंगे। हम अपने राज्य का प्रबन्ध कर लगे।

नोट- (१) वक्ता केवल अपने लिये भी **मैं** के स्थान में बहुधा **हम** का प्रयोग करते हैं। जैसे-'**हम** आधी दक्षिणा लेके क्या करें ?' **हम** ने यह घर गतवर्ष बनवाया।

३. एक प्रसंग में किसी एक संज्ञा के बदले पहली बार जिस वचन में सर्वनाम का प्रयोग करें आगे के लिये भी वही वचन रखना उचित है। एक ही संज्ञा के लिये आप और तुम अथवा महाराज और आप कहना असंगत है। जैसे-राम ने श्याम से कहा कि मैं तुझे कभी न पढ़ाऊँगा, क्योंकि तुमने हमारी पुस्तकें, जिन्हें हमने तुम्हारे बाप से खरीदा था, चुरा ली हैं।' जिस बात की चिन्ता महाराज को है सो कभी न हुई होगी, क्योंकि तपोवन के विघ्न तो केवल आपके धनुष की टङ्कार ही से मिटजाते हैं।' 'आपने बड़े प्यार से कहा कि आ बच्चे, पहले तू ही पानी पीले। उसने तुम्हें विदेशी जान तुम्हारे हाथ से जल न पिया।'

नोट-कभी कभी एक ही वाक्य में **मैं** और **हम** एक ही संज्ञा केलिये क्रमशः **व्यक्ति** और **प्रतिनिधि** के अर्थ में आते हैं। जैसे-**मैं** चाहता हूँ कि आगे को ऐसी सूरत न हो और **हम** सब एकचित्त होकर रहें।'

४. कई संज्ञाओं के बदले का एक सर्वनाम वही लिङ्ग और वचन लेगा जो उनके समूह से समझेजायँगे। जैसे-राम और श्याम पढ़ने गये हैं, परन्तु वे शीघ्र आवेंगे। श्रोताओं ने जो उत्साह और आनन्द प्रकट किया उसका वर्णन नहीं होसकता।

५. 'तू' अनादर और प्यार अर्थ में, किसी संज्ञा के बदले तथा देवताओं के लिये आता है। जैसे-अरे शठ, तू क्या करता है ? अरे बेटा, तू मुझसे क्यों रूठगया है ? हे ईश्वर तू !

संसार का स्वामी है । तू अनन्त है । तू घटघट की जानता है । तेरी महिमा अपरम्पार है । (अब ऐसी जगह ' तुम ' भी आने लगा है)

६. मध्यमपुरुष में आप शब्द की अपेक्षा अधिक आदर सूचित करने केलिये, किसी संज्ञा के बदले ये शब्द आते हैं- (१) पुरुषों केलिये-' कृपानिधान ' महाशय, महानुभाव, कृपासागर, श्रीमान्, हुजूर, हुजूरवाला साहिब इत्यादि । (२) स्त्रियों केलिये-श्रीमती, देवी, इत्यादि । जैसे- यदि कृपानिधान की आज्ञा होती तो यह दास घर जाता । हजूर का क्या हुक्म होता है ? श्रीमती की आज्ञा कब होगी ?

७. बड़ों के सामने अपनी हीनता और दीनता दिखलाने केलिये उत्तमपुरुष के बदले ये शब्द आते हैं-(१) पुरुषों केलिये-सेवक, दास, सेवकाधम, विनयावनत, अपराधी, बन्दा, इत्यादि । (२) स्त्रियों केलिये-दासी, आज्ञाकारिणी, इत्यादि । जैसे-इस सेवक को भी याद में रखियेगा । इस दासी ने क्या अपराध किया है ?

८. आदरार्थ अन्यपुरुष ' आप ' के बदले ये शब्द आते हैं- (१) पुरुषों केलिये-श्रीमान्, प्रभुवर, मान्यवर, हुजूर, इत्यादि (२) स्त्रियों केलिये-श्रीमती, देवी, इत्यादि । जैसे-क्या तुम जानते हो कि श्रीमान् कब आवेंगे ? श्रीमती के विषय में आप के पास कोई समाचार आया है ?

सम्बन्ध * और सम्बन्धी में मेल ।

१. सम्बन्ध के चिन्ह में वही लिङ्ग और वही वचन होते हैं जो सम्बन्धी के होते हैं । जैसे-सीता का घर । सीता के दो पुत्र । राम की घोड़ी । राम की घोड़ियाँ ।

---

* पीछे मेल शीर्षक पाठ की पादटिप्पणी देखो ।

२. आकारान्त विशेषण के **परिवर्तन में जो जो नियम लगते हैं वे** ही नियम सम्बन्ध के चिन्ह केलिये भी हैं । **जैसे- अच्छा घोड़ा – राम का घोड़ा । अच्छे घोड़े – राम के घोड़े । अच्छे घोड़े को-राम के घोड़े को । अच्छे घोड़ों को-राम के घोड़ों को । अच्छी घोड़ी- राम की घोड़ी । अच्छी घोड़ियाँ-राम की घोड़ियाँ ।**

नोट–समस्त शब्द जब सम्बन्धी होकर आवे तब भी ऊपर ही के नियम लगते हैं । (समासप्रयोग देखो ।)

३. यदि सम्बन्धी में कई संज्ञाएँ बिना समास के आवें तो सम्बन्ध का चिन्ह उस संज्ञा के अनुसार होगा जिसके पहले वह रहेगा । **जैसे–राम के बैल, गाय और बकरियाँ चरती हैं । मेरी माता और पिता जीवित हैं ।**

विशेषण और विशेष्य में मेल ।

☞ कई बातें पीछे ' विशेषण ' में देखो ।

१. विशेषण के लिङ्ग और वचन आदि विशेष्य के अनुसार होते हैं, चाहे वह विशेषण के आगे रहे या पीछे । जैसे-यह पीली धोती है । यह धोती पीली है । पीले कपड़े लाओ । कपड़े पीले हैं ।

नोट–(१) जब कर्मकारक के आगे चिन्ह न रहे तब उसका विधेयविशेषण ठीक ऊपर के नियम से कर्म ही के अनुसार होता है । जैसे–अपनी **लाठी सीधी** करो । कोई **चीज़** समझो न **अपनी बुरी** तुम । मैंने **लाठी सीधी** की । मैंने यह **बात पूरी** की ।

(२) जब कर्मकारक के आगे चिन्ह रहे तब उसका विधेय-विशेषण या तो कर्म के अनुसार होता या सदा एकवचन पुल्लिङ्ग रहता है । जैसे-उसने **लाठी को सीधी** किया या उसने **लाठी को सीधा** किया । 'रहो **बात को अपनी** करते **बड़ी** तुम ।' 'हम आप जल बुझे, मगर इस

दिल की आग को, सोने में हम ने 'ज़ौक़' न पाया बुझा हुआ।'

(३) समय, परिमाण या धन का विशेषण यदि बहुवचन संख्यावाचक हो तो विशेष्य, कारकादि के प्रत्यक्ष चिन्हों के साथ प्राय: एकवचन रूप में रहता है, परन्तु जब चिन्ह प्रत्यक्ष नहीं रहते तब बहुवचन रूप में भी आता है। जैसे-तीन घण्टे की छुट्टी मिली। पाँच रुपये की पुस्तक लाये। चार सेर का आटा बिका। तीन घण्टे लगे। मैं चार रुपये दूंगा।

२. यदि कई विशेषणों का एक ही विशेष्य हो तो सबके सब उसी विशेष्य के अनुसार होंगे तथा अन्तिम विशेष्य के पहले 'और, या' इत्यादि में से कोई एक समुच्चायक आवेगा। जैसे-काला और उजला घोड़ा लाओ। काले और उजले घोड़े लाओ। काले और उजले घोड़ों को लाओ। मैंने स्वप्न में एक बड़ी ऊँची और डरावनी मूर्ति देखी।

३. यदि एक विशेषण की कई समासरहित संज्ञाएँ विशेष्य हों तो विशेषण लिङ्ग और वचन में उसी संज्ञा के अनुसार होगा जिसके समीप वह रहेगा। जैसे-छोटे लड़के और लड़कियाँ। ऐसी माता और पिता।

नोट-समस्त शब्द के विशेषण केलिये 'समासप्रयोग' देखो। उदाहरण-अच्छे मा बाप। हमारे राजारानी।

४. यदि क्रिया का साधारण रूप किसी संज्ञा के आगे विधेयविशेषण होकर सम्प्रदान या क्रिया की पूर्ति का अर्थ दे तो वह लिङ्ग वचन आदि में उसी संज्ञा के अनुसार होगा, परन्तु यदि वह, उस संज्ञा के सम्बन्धी का अर्थ दे तो ज्यों का त्यों रहेगा। जैसे-'मुझे प्रतीक्षा करनी होगी, बुद्धदेव की है यह उक्ति-कब तक जब तक तुच्छ जीव तक पा न सकें पृथ्वी पर मुक्ति।' दुःख की व्यथा उठानी पड़ेगी। जो बात न होनी थी, होगई। जो उपदेश करना था, करदिया। जो रुपये देने थे देदिये। मुझे रोटी

खानी चाहिये। उसे दस काम करने चाहिये ×। क्या जान देना आसान है ? झूठमूठ कसम खाना छोड़दो। रोटी बनाना सीखलो।

नोट–ऊपर के उदाहरणों में जहाँ हमने सम्प्रदान इत्यादि या सम्बन्ध का अर्थ लिया है वहाँ कोई कोई प्रतिकूल अर्थ भी करते हैं और अपने अर्थ के अनुसार वाक्यों में भेद डालते हैं। जैसे–"जो बात होनी थी, होगई। रुपये की हानि सहना पड़ेगी। दुःख की व्यथा उठाना पड़ेगी। उसे भिक्षा माँगना पड़ेगी। झूठमूठ कसम खानी छोड़दो। रोटी बनानी सीखलो।" हमारे जानते ये वाक्य मधुर नहीं जानपड़ते, अतएव प्रतिकूल अर्थ करना भी खटकता है।

५–भूतकालिक और वर्तमानकालिक कृदन्त विशेषण जब क्रिया की विशेषता बतलाते हैं तब उनके अन्त्य स्वर 'आ' के बदले सर्वदा 'ए' लाते हैं। जैसे–लड़की दौड़ते दौड़ते थकगई। 'थकगई मैं दुःख सहते सहते, थकगये आँसू बहते बहते।'

नित्यसम्बन्धी शब्द।

वाक्यों में कुछ शब्द ऐसे आते हैं जो नित्यसम्बन्धी होते हैं। बहुतसे अव्यय, कतिपय सर्वनाम और थोड़ेसे अन्य शब्द नित्यसम्बधी हैं। * नित्यसम्बन्धी शब्दों में भेद डालने से वाक्य अशुद्ध होजाता है। नीचे थोड़ेसे प्रयोग दिये-जाते हैं।

१. यद्यपि और तथापि में नित्यसम्बन्ध है। 'तथापि' के बदले किन्तु, पर या परन्तु का लिखना खटकता है, परन्तु 'तौभी' लिखसकते हैं। जैसे–यद्यपि वह नहीं आया, तथापि

× कोई 'चाहिये' का बहुवचन चाहियें बनाते हैं, परन्तु यह खटकता है।

* 'नित्यसम्बन्धी शब्द' पीछे स्थान स्थान पर दियेगये हैं।

मैंने वहाँका सारा वृत्तान्त सुनलिया। यद्यपि वह नहीं आता है, तौभी हम उसको प्यार करते हैं।

२–'जब' के साथ 'तब' का सम्बन्ध है। 'तब' के बदले 'तो' का प्रयोग खटकता है। जैसे–जब राम आया तब मैं गया।

३. 'यदि' के साथ 'तो' का सम्बन्ध है 'तो' के बदले 'तब' लिखना खटकता है। जैसे–'यदि मनुष्य मरणशील न होता तो उसकी श्रेष्ठता का कहना ही क्या था!'

नोट–(१) '**यदि**' के बदले इसी अर्थ में '**जो**' भी आता है। जैसे–'**जो**' आना हो तो कल ही आओ।

(२) कभी कभी नित्यसम्बन्धी शब्द **गुप्त** भी रहते हैं। जैसे–आप आवेंगे तो मैं जाऊँगा। जब आप आवें, मेरी पुस्तक लाइयेगा।

अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो–

१. सीता ने दासी को पुकारता होगा। रोटी और दाल अच्छा है। एक बैल, दो घोड़ा और बहुत सी गायें चरता है। आपके राजा और रानी कहाँ रहती हैं? आज मेरी बेटी या उसका भाई आवेंगे। मैं, तू और वह चलेगा। ईश्वर जानते हैं, हम झूठ नहीं बोलता। वह स्त्री बीमारी से सूखकर काठ होगया। स्त्रियाँ भी मनुष्य कहलाता है। श्रोता खूब ही उत्साह और आनन्द प्रकट किये। रानी भात खाई थी। राम ने कहा कि पुस्तक अच्छी है। रानी से बैठी नहीं जाती। रामायण में लिखी है। राम प्राण छोड़दिया। आप खाये? हाँ, हम खाये। आप कहा था? जी नहीं, हम नहीं कहा था।

२. राम श्याम से कहा कि मैंने तुझे कभी न पढ़ाऊँगा, क्योंकि तुम हमारी पुस्तकें, जिसे हम तुम्हारे बाप से खरीदी थी, चुरालिया है। जिस बात की चिन्ता महाराज को है सो कभी न हुआ होगा, क्योंकि तपोवन के विघ्न तो केवल आपके धनुष की टंकार ही से मिटजाता है। आप बड़े प्यार से कहा कि आ बच्चे, पहले तू ही ने पानी पी ले। तुम्हें वह विदेशी जान तुम्हारे हाथ से जल न पिया। श्रोता जो उत्साह और आनन्द प्रकट किये उनके वर्णन नहीं होसकते। मैं पाँचवें अध्याय में यह बात लिखा हूँ।

३. चार घण्टों का छुट्टी मिला। मैंने तीन रुपयों का पुस्तक लाई। मैं रोटी को पतली बनाई। छोटी लड़के और लड़कियाँ आई हैं। दुःख की व्यथा उठाना पड़ेगा। बातें करना पड़ेगी। आप को दाल खाना चाहिये। रोटी बनानी सीख लो। मैं पीड़ा सहती सहती थकगई। यदि आप नहीं आते तब मुझे कौन सहायता देता ? यद्यपि आप नहीं आया, परन्तु मैं सभी बातें जान लिया। मैं ज़रा ही सा घुड़का था कि वह फूट कर रोदिया। वह चोर को पकड़िस है।

क्रम (Order).

(१)

१. वाक्य में उद्देश्य या कर्त्ता को पहले और विधेय या क्रिया को अन्त में रखते हैं। जैसे–बालक खाता है।

नोट–कर्त्ता या क्रिया चाहे एक हो या अनेक, दोनों अपने ठीक स्थानों पर आते हैं और जब अनेक हों तब अन्तिम कर्त्ता या क्रिया के पहले **और, या** इत्यादि समुच्चायक अव्यय लाते हैं। जैसे–राम या मोहन आता है। सीता आई, बैठी और रोई।

२–उद्देश्य के विस्तार को उद्देश्य के पहले और विधेय के विस्तार को विधेय के पहले रखते हैं। जैसे–सुशील **बालक** धीरेधीरे **पढ़ता है।**

३. कर्म कारक को सकर्मक क्रिया के पहले और गौण कर्म को मुख्य कर्म के पहले रखते हैं। जैसे–राम ने घर में पुस्तक **निकाली। राजा ने** दरिद्रों **को वस्त्र दिये।**

४. ' करण। सम्प्रदान, अपादान, और अधिकरण ' ये चार कारक कर्त्ता और कर्म के बीच में उलटे क्रम से **आते हैं, अर्थात्** पहले **अधिकरण, तब अपादान, तब सम्प्रदान और तब करण। जैसे–राम ने** घर में आलमारी से श्याम केलिये हाथ से **पुस्तक निकाली।**— पं० रामावतार शर्मा।

नोट–जब एक साथ अनेक अधिकरण आवें तब **पहले काला-**

धिकरण लाते हैं। जैसे—**सन्ध्या में** घरघर आनन्द रहता है। **वर्षा ऋतु में** आकाश में बादल छायेरहते हैं।

५. सम्बोधन वाक्य में सबसे पहले आता है। जैसे– हे राम! मेरी ख़बर क्यों नहीं लेते ?

६. सम्बन्धी के पहले सम्बन्ध को, विशेष्य के पहले विशेषण को और क्रिया के पहले क्रियाविशेषण को लाते हैं, परन्तु विधेयविशेषण और उपाधिसूचक विशेषण विशेष्य के आगे आते हैं। जैसे–राम का **सिपाही** अच्छे **घोड़ों** को खूब पहचानता है। आपका **पुत्र** सुशील है। **मोहनलाल** मिश्र आये हैं।

नोट–विशेषण का भी विशेषण होता है जो उसके पहले आता है। जैसे–**अत्यन्त** सुन्दर बालक **बहुत ही** अच्छा घोड़ा। **बड़ा** भारी वृक्ष।

(२) सम्बन्धी का विशेषण सम्बन्धी के पहले रखना उचित नहीं, परन्तु यदि भ्रम न हो तो रख भी सकते हैं। जैसे–'आश्रम की **शीतल, मन्द और सुगन्ध वायु** श्रम को नाश करती है। सरोवर के समीप **एक बड़ा भारी** शाल्मली का **वृक्ष** था।' (कादम्बरी)

(३) जब एक ही विशेष्य के कई विशेषण एक साथ आवें तब अन्तिम विशेषण के पहले **और, या** इत्यादि समुच्चायक अव्यय लाते हैं। जैसे–' महाराज, यह सूआ सकलशास्त्रवेत्ता, राजनीतिज्ञ, सद्वक्ता, चतुर, सकलकलाभिज्ञ, महाकवि **और** गुणी है।' (कादम्बरी)

(४) 'केवल, सिर्फ़, प्रधानतः, कठिनता से' इत्यादि शब्द जिसके पहले आते हैं उसी की विशेषता बतलानेलगते हैं। इनको प्रयोग करते समय विशेष ध्यान रखना चाहिये, नहीं तो अर्थ में उलटफेर होजायगा। जैसे–**केवल राम** चिट्ठी को पढ़ सकता है। राम **केवल चिट्ठी** को पढ़सकता है। राम चिट्ठी को **केवल पढ़ सकता है**।

(५) यदि एक सम्बन्धी के कई अधिकारी हों तो सम्बन्ध के चिन्ह को कभी **अन्तिम अधिकारी के आगे और कभी सभी के आगे** लाते हैं। जैसे—यह माधुरी और **कुन्ती की** माता है। वह **तुम्हारा और मेरा** घर है।

(६) सम्बन्ध के समानाधिकरण में कई संज्ञाओं के रहनेपर भी सम्बन्ध का चिन्ह केवल अन्तिम संज्ञा के आगे आता है। जैसे—यह ग्रियर्सन साहब, स्थानीय कलक्टर और **मजिस्टर की** चिट्ठी है।

(७) क्रिया की पूर्ति उसी के पहले आती है। जैसे—एक पलंग **बिछा हुआ** था। उसका लड़का **चोर निकला**।

७ प्रश्नवाचक शब्द को उसी के पहले रखना चाहिये जिसके विषय में मुख्यतः प्रश्न किया जाता है। जैसे— " वह कौन शिक्षक **है ? वह शिक्षक** कौन है ? **राम** क्या बनाता है ? क्या राम **बनाता है ? " इन चारों वाक्यों में प्रश्नवाचक शब्दों ही के कारण अर्थभेद होगये हैं।**

यदि पूरा वाक्य ही प्रश्न हो तो प्रश्नवाचक शब्द को वाक्य के आरम्भ में रखते हैं। जैसे—क्या, आपको यही करना था ?

नोट—जब वाक्य में प्रश्नवाचक शब्द नहीं आता तब बोलने के **ढंग** और वक्ता के मुख की **आकृति** से प्रश्न समझाजाता है। जैसे—मुझे ठहरना होगा ? कुछ पूछना चाहते हो ?

८. पूर्वकालिक क्रिया समापिका क्रिया के पहले आती है। जैसे—राम खाकर पढ़ता है। मोहन सोकर पढ़ेगा। सीता ने देखभालकर खाया।

नोट—(१) पूर्वकालिक और समापिका दोनों क्रियाएँ अपने अपने विस्तार को अपने से पहले रखती है। जैसे—राम **अपने घर में रोटी** खाकर **स्कूल में पुस्तकों को भलीभाँति** पढ़ता है।

(२) यदि पूर्वकालिक और समापिका दोनों क्रियाओं का एकही

विस्तार हो तो उसे पूर्वकालिक ही से पहले रखते हैं। जैसे—राम ने पाठशाला में मेरी पुस्तक लेकर पढ़ली।

९. विस्मयादिबोधक शब्द को प्रायः वाक्य के आरम्भ में लाते हैं। जैसे—वाह ! आपने खूब कहा।

१०. वाक्य में आनेवाले दूसरे दूसरे पदों में से जो पद जिसके साथ अन्वित होसके उसको उसीके पास रखना चाहिये। जैसे—वह घर पर किस हेतु गया है? देवमन्दिर घर के आगे है।

ऊपर क्रमनिर्णय के जितने नियम दिये गये हैं, यद्यपि वे मुख्य हैं तथापि उनका निर्वाह भलीभाँति नहीं होता। कारण नीचे लिखे जाते हैं।

(२)

१. वाक्य के जिस भाग या पद की प्रधानता दिखानी हो उसे पहले रखते हैं। इससे वाक्य के अन्य अंशों में भी स्थानपरिवर्तन होजाता है। जैसे—

क्रिया कर्त्ता से पहले—जाता तो हूं मैं, आप क्यों दुःखी होते हैं? बुलाहट थी मेरी, गया वह। **पूर्वकालिक क्रिया कर्त्ता से पहले**—मुझे देखकर वह घर में घुसगया। साँप देखकर सभी डरजाते हैं। **कर्म पहले**—तुम्हीं को वह बुलाता है। उसी को मैं मारूँगा। **करण पहले**—छुरी से उसने हाथ काटा। **सम्प्रदान पहले**—आप के लिये मैंने सब कुछ किया। **अपादान पहले**—छत से वह गिरी तो सही, परन्तु सखियों ने बीच ही में रोकलिया। **सम्बन्ध पहले**—मेरी तो आपने कोई पुस्तक नहीं देखी। **सम्बन्ध से सम्बन्धी पहले**—घर किसका है? यह पुस्तक मोहन की है। घर मेरा **और** झगड़ा तुमलोगों में। **अधिकरण पहले**—तिल में तेल है। सिंहासन पर राजा है। **अन्यशब्द सम्बोधन से पहले**—सुनते हो, लड़के! अभी अभी, बेटा! **क्रियाविशेषण पहले**—अभी अभी वह यहाँ से उठके गया है। **क्रियाविशेषण कर्म से**

पहले–वह भलीभाँति आपको पहचानता है। **विधेयविशेषण पहले**–सच्चे और निराले तो तुम्हारे सभी कार्य होते हैं। **पूरक पहले**–चोर तो उसका लड़का निकला, इसका क्या अपराध? इत्यादि।

२. कविता में प्रायः सभी पद और किसी किसी के टुकड़े भी स्थानपरिवर्तन करते हैं। जैसे—

दो प्राणी भी अवनि व्रज के साथ जो बैठते थे।
तो आने की न मधुवन से बात ही थे चलाते॥
पूछा जाता परसपर भी व्यग्रता से यही था।
दोनों प्यारे कुँवर अबलौं लौटके क्यों न आये॥

(प्रियप्रवास)

अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों को शुद्ध करो।

जब नल का ऐसा दुर्दसा हुई तब उसने दमेन्ती से बोला कि अपसी आपती में हम और तू अलग हो जायँ। दमेन्ती कहा "हे राजा तेरा बात सुनकर मेरा छाती फटता है। ऐसे विपत्ती में हम तुमको छोड़कर किस तरह जा सकते हैं! जब तुम मारग का थाका अउर भूषा अपजा पूरव सुध समरन करेगा तो हम तेरी दुख का साथी हूँगा।"

मंदिर का भीतर वाला चारिका भीत पर पाथर में खोदा हुआ अनेक प्रकार का देवमूर्तियाँ बना हैं जिनका आक्रित आरजों का मूरतियों से बहुत मिलते हैं। इनके अतीत्रिक्त उश मंदीर में पाथरों पर अपसी अद्भुत चितरकारीआँ हैं जिशको देखने से असचरज होता है।

बिल्ली उत्तर दी–"हाँ आपकी प्रभुता मुझे शक्तिमान् बिल्ली बनाई है। अभी हम दूसरे बिल्लियों से डर नहीं करता हूँ, पर मैं एक नई वैरी पाई हूँ।

मैं आपका कृपापत्र पाया। बाँच के बड़ा प्रसन्न हुए। आप जो पुस्तकें हमारे पास ऐसे कृपा से भेजे हैं सो बहुत ही अच्छे हैं। मैंनि संस्कृत में दो नवीन ग्रन्थ बनाया हूँ।

लाघव (Abbreviation).

१. कोई आशय जितने ही थोड़े पदों से प्रकाश कियाजाय उतनाही वह उत्कृष्ट समझाजाता है। जैसे—'हम तो यहाँ अब बैठगये, अब हम यहाँ से उठनेवाले नहीं हैं।' 'जो लोग उठादेने से उठजाते हैं वे हमारे सदृश नहीं हैं।' लाघव के विचार से इसकी जगह यों बोलना चाहिये—'हम जहाँ बैठगये, बैठगये। उठनेवाले कोई और होंगे।'

लाघव करने में इस बात पर पूरा ध्यान रखना चाहिये कि अर्थ भ्रष्ट न होनेपावे।

निश्चय, आवश्यकता आदि के कारण किसी विषय को जोर देकर कहना हो तो वहाँ लाघव का विचार नहीं कियाजाता। जैसे 'सच बोलना कितना अच्छा है, सच बोलना कितना आवश्यक है, सच बोलने में कितनी बड़ी वीरता है—मैं सब कुछ दिखाचुका। उस लड़के में कौनसा दोष नहीं है? झूठ वह बोलता है, चोरी वह करता है, जूआ वह खेलता है।'

गम दिया, रंज दिया, दाग़ दिया, ज़हर दिया—
खूब बीमारे * मुहब्बत की दवा तुमने तो की।

३. (क) जो शब्द बहुत प्रसिद्ध हो, या जिसे बारबार लिखनापड़े उसका अक्सर पहला अक्षर लिखते हैं। जैसे—सन के लिये स०, तारीख केलिये ता०, मिति केलिये मि०, नम्बर के लिये न०। नाटक आदि में राम, कृष्ण, शकुन्तला या और कोई नाम बारबार न लिखकर रा०, कृ०, श०, आदि लिखते हैं।

(ख) पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, छठा

---

* यह रीति उर्दू की है, हिन्दी की नहीं।

इत्यादि क्रम से '१ ला, २ रा, ३ रा, ४ था, ५ वाँ, ६ ठा' आदि से लिखते हैं।

(ग) किसी शब्द को दोबार लिखना हो तो अक्सर उसे एकबार लिखके उसके परे (अङ्क) लिखदेते हैं, पर यह चाल अच्छी नहीं × । पं. केशवराम भट्ट ।

रोज़मर्रा (Common Use).

१. हिन्दी जिनकी मातृभाषा है वह अपनी नित्य की बोलचाल में वाक्यरचना जिस रीति से करते हैं उसे रोज़मर्रा कहते हैं। जैसे-'कलकत्ते से पेशावर तक सात आठ कोस पर एक पक्की सराय और एक कोस पर चबूतरा बना हुआ था'। यह वाक्य रोजमर्रे के अनुसार नहीं है। इसकी जगह यों होना चाहिये-कलकत्ते से पेशावर तक सात सात आठ आठ कोस पर एक एक पक्की सराय और कोस कोस भर पर एक एक चबूतरा बना हुआ था।

२. बोलने और लिखने में यथा सम्भव रोज़मर्रे का विचार रखना बहुत ही आवश्यक है। बिना इसके लिखना या बोलना कौड़ी काम का नहीं।

३. रोज़मर्रे के प्रयोग का ऐसा कुछ नियम नहीं बन सकता। अच्छे अच्छे लेखकों के लेख बारबार ध्यान देकर पढ़ना और अच्छे अच्छे बोलनेवालों की बातचीत ध्यान देकर सुनना-सिवा इसके कदाचित् और कोई उपाय नहीं है।

४. बोलचाल का रोज़मर्रा नया गढ़ा नहीं जा सकता। जैसे-'पाँचसात', 'सातआठ' या 'आठसात' पर अनुमान

× इस वर्ग के अच्छे २ लड़कों को पुस्तकें दीगईं। ऊपर की रीति से इस वाक्य के आगे लिखे दो अर्थ होते हैं-(क) अच्छे दो लड़कों को और (ख) अच्छे अच्छे लड़कों को।

करके 'छआठ', 'आठ छ' या 'सातनौ' बोलाजाय तो उसे रोज़मर्रा नहीं कहेंगे। क्योंकि भाषा में कभी ऐसा नहीं बोलते।

पं० केशवराम भट्ट।

लेखक को उचित है कि वाक्यों में एकही ढंग के शब्द प्रयोग करें। उच्च भाषा के शब्दों के साथ साधारण भाषा के शब्द रहने से वाक्य मधुर नहीं होसकते। यदि अन्यान्य भाषाओं के शब्दों की आवश्यकता हो तो उन्हीं को लाना चाहिये जो प्रयोग में भली भाँति आगये हों। वाक्यों में सन्दिग्ध शब्दों का लाना भी उचित नहीं। इन कारणों से "उसने मेरा दस्त पकड़ा। मैंने राम का हाथ धारण किया। यह काव्य उच्च दर्जे का है। अभी इक्ज़ामिनेशन के फ़िफ़्टीन डेज़ हैं। शायद मौर्निङ्गट्रेन से तुम्हारी स्टार्ट हो जाऊँ। इस पोस्ट में पब्लिक का क्या ओपिनियन है?" इत्यादि वाक्य हिन्दी केलिये योग्य नहीं।

वाग्धारा या मुहावरा (Idiom).

"१. कोई वाक्य या वाक्यांश अपना सामान्य अर्थ न जताकर कुछ और ही विलक्षण अर्थ जताये तो उसे वाग्धारा कहते हैं। जैसे—रणजीतसिंह ने पटानों के दाँत खट्टे कर दिये। घर में बैठेहुए यों 'पाँव निकाले' तुमने। इतना कहते ही वह 'पानी पानी होगया'। उसे अच्छे से 'पाला पड़ा है'। इस बात के सुनते ही उसके 'पेट में चोड़ा कूदने लगा'।

२. मौलवी अल्ताफ़ हुसैन हाली का मत रोज़मर्रे और मुहावरे के विषय में पढ़ने योग्य है। "रोज़मर्रे की पाबन्दी जहाँ तक सम्भव हो लिखने और बोलने में ज़रूरी समझी गई है। यहाँ तक कि वाक्य में जितनी ही रोज़मर्रे की पाबंदी कम होगी उतना ही उसमें लालित्य कम होगा, परन्तु

मुहावरे के लिये यह बात नहीं है। मुहावरा जो उत्कृष्ट रीति से बाँधा जाय तो निस्सन्देह निकृष्ट आशय को उत्कृष्ट और उत्कृष्ट को उत्कृष्टतर कर देता है, पर हर जगह मुहावरे का बाँधना ऐसा कुछ आवश्यक नहीं। बिना मुहावरे के भी ओजस्वी वाक्य हो सकता है। मुहावरा मानो मनुष्य के शरीर में कोई सुन्दर अङ्ग है और रोज़मर्रे को ऐसा जानना चाहिये जैसे अङ्गों का तारतम्य मनुष्य के शरीर में। लोग साधारणतः उसी लेख को बहुत पसन्द करते हैं जो रोज़मर्रे पर ध्यान देकर लिखा गया हो और जो रोज़मर्रे के साथ मुहावरे की चाशनी भी हो तो वह उनको और भी अधिक स्वाद देती है।" —पं० केशवराम भट्ट।

वाक्यार्थबोध।

वाक्यार्थबोध केलिये आगे लिखी बातों का होना भी आवश्यक है--आकांक्षा, योग्यता और आसत्ति।

१. आकांक्षा–वाक्य में एक पद को दूसरे पद के साथ अन्वय केलिये जो चाह होती है, उसे आकांक्षा कहते हैं। जैसे—'घोड़ा, बैल, हाथी' इत्यादि अकेले रहकर वाक्यार्थ नहीं दे सकते जब तक उनके साथ 'चरता है, जाता है, आवेगा' इत्यादि चाहक पद न आवें।

२. पदों के परस्पर उचित सम्बन्ध को योग्यता कहते हैं। जैसे–यदि कोई कहे कि "आग से सींचते हैं" तो यह शुद्ध वाक्य नहीं हुआ, क्योंकि 'सींचते हैं' क्रिया की योग्यता आग से नहीं बल्कि 'जल' से है। इस कारण 'जल से सींचते हैं'–शुद्ध

वाक्य हुआ। इसी प्रकार 'गत दिवस को काशी जाऊँगा। आगामी सोमवार को मित्र आये थे' इत्यादि वाक्य भी अशुद्ध हैं।

३. पदों की समीपता को आसत्ति कहते हैं। जैसे-यदि कोई भोर को 'बालक' कहकर साँझ को 'पढ़ता है' बोले तो यह अर्थबोधक वाक्य नहीं होगा। 'बालक' के साथ ही 'पढ़ता है' कहने से शुद्धवाक्य होगा।

अभ्यास।

नीचे लिखे वाक्यों का लाघव, रोज़मर्रा, मुहावरे इत्यादि पर ध्यान रखकर ठीक करो—

मेरे पास चार करोड़ चौरासी लाख सत्तावन हजार पाँच सौ बयालीस रुपये चौदह आने और तीन पैसे निकले। वे इतना हँसेंगे और इतना हँसायेंगे कि सबके मुँह थक जायँगे, पर वे न उन्नति के डेगों को आगे की ओर बढ़ायँगे और वे न अगली अटारियों को ऊँचा उठायँगे। गर्दा उड़ उड़कर पड़जाने से सड़क पर के मकान ठीक नहीं रहते। कई दिन के बाद आज दो चावल भात खाया है। ऐसे ऐसे गाँहक सब हाथ में मिलजायँगे कि उनका एक एक फूल केसर की क्यारी के मोल में बिकजायाकरेगा।

वाक्यविभजन * (Analysis).

वाक्य विभजन में वाक्य के अङ्ग अलग अलग कर दिये जाते हैं और यह दिखाया जाता है कि वे आपस में क्या सम्बन्ध रखते हैं?

---

* वाक्यविश्लेषण, वाक्यपृथक्करण, वाक्य विग्रह, वाक्यविच्छेद इत्यादि भी वाक्यविभजन के नाम हैं।

नोट—पीछे लिख आये हैं कि स्वरूप के अनुसार वाक्य के तीन भेद हैं—अमिश्र, संकीर्ण और संसृष्ट। आगे इन्हीं वाक्यों के विभजन बताये जाते हैं।

(१) अमिश्रवाक्य (Simple Sentences).

अमिश्रवाक्य के विभजन में मुख्यतः चार भाग दिखाये जाते हैं—उद्देश्य, उद्देश्य का विस्तार, विधेय और विधेय का विस्तार। विधेय के विस्तार में कर्म, कर्म का विस्तार और विधेयार्थवर्द्धक नाम के तीन भाग किये जाते हैं। इसलिये सब मिलाकर छ भाग हुए—

१. उद्देश्य।
२. उद्देश्य का विस्तार।
३. क्रिया और यदि क्रिया अपूर्ण हो तो पूरक भी।
४. कर्म।
५. कर्म का विस्तार।
६. विधेयार्थवर्द्धक।

उदाहरण।

विभजन केलिये वाक्य—

१. मोहन का भाई मेरी पुस्तक धीरे धीरे पढ़ता है।
२. वह कुत्ता परसों से पागल होगया है।
३. आयेहुए मनुष्य ने पाठशाला में मुझे एक चित्र दिखाया।
४. एक सेर दूध ठीक होगा।
५. मुझे कल रुपये देने पड़ेंगे।
६. छिपे हो कौनसे पर्दे में बेटा!
७. बिना सफ़ाई के जीना कठिन है।

विभजन—

उद्देश्य		विधेय			
			विस्तार		
उद्देश्य	विस्तार	क्रिया	कर्म	कर्म का वि.	विधेयार्थवर्द्धक
(१) भाई	मोहन का	पढ़ता है	पुस्तक	मेरी	धीरे धीरे
(२) कुत्ता	वह	पागल (पू०) होगया है	—	—	परसों से
(३) मनुष्य ने	आये हुए	दिखाया	चित्र (मु) मुझे (गौ)	एक	पाठशाला में
(४) दूध	एक सेर	ठीक (पू०) होगा	—	—	—
(५) मुझे	—	देने पड़ेंगे	रुपये	—	कल
(६) (तुम) बेटा	—	छिपे हो	—		कौन से पर्दे में
(७) जीना	—	कठिन (पू०) है	—	—	बिना सफाई के

(मु) = मुख्य । (गौ) = गौण ।

(२) सङ्कीर्णवाक्य (Complex sentences).

सङ्कीर्णवाक्य में पहिले यह ढूँढ़ना होगा कि कौन अंश प्रधान है और कौन अङ्गवाक्य। फिर अङ्गवाक्य को पदविशेष समझकर समूचे वाक्य का विभजन 'अमिश्रवाक्य' के समान करनापड़ेगा। इसके पीछे अङ्गवाक्य का भी विभजन अमिश्रवाक्य के समान करना होगा।

उदाहरण—

विभजन केलिये वाक्य—

१. श्याम कहता है कि शीघ्र पढ़ो।

२. मेरा भाई, जो यहाँ बैठा था, परसों आया

३. जब राम का बैल आता है तब काली गाय जाती है।

विभजन—

वाक्य	वाक्यभेद		समुच्चयबोधक	उद्देश्य		विधेय			
				उद्देश्य	विस्तार	क्रिया	विस्तार		
							कर्म	कर्म का वि.	विधेयार्थवर्द्धक
(१) श्याम कहता है	संकीर्ण	प्रधान	कि	श्याम	...	कहता है	(तुम) शीघ्र पढ़ो	...	...
कि (तुम) शीघ्र पढ़ो।		अङ्ग (संज्ञा)		तुम	...	पढ़ो	...	...	शीघ्र
(२) मेरा भाई परसों आया	संकीर्ण	प्रधान	...	भाई	मेरा, जो यहाँ बैठा था	आया	...	...	परसों
जो यहाँ बैठा था		अङ्ग (विशेषण)		जो	...	बैठा था	...	...	यहाँ
(३) काली गाय तब जाती है	संकीर्ण	प्रधान	...	गाय	काली	जाती है	...	...	तब, जब राम का बैल आता है
जब राम का बैल आता है		अङ्ग (क्रियावि.)		बैल	राम का	आता है	...	...	जब

संसृष्ट वाक्य (Compound Sentences).

जिन सब वाक्यों के मिलाने से संसृष्ट वाक्य बना हो, उन्हें अलग अलग करदो और समुच्चायक को भी दिखाओ। यदि संसृष्ट वाक्य अमिश्र वाक्यों से बना हो तो अमिश्रवाक्य की रीति से और यदि संकीर्ण वाक्यों से बना हो तो सङ्कीर्ण वाक्य की रीति से 'वाक्यविभजन' करो।

उदाहरण--

१. राम पढ़ेगा, पर भोजन नहीं करेगा।

२. श्याम दुष्ट है, इसलिये जब वह आता है, मैं चल देता हूँ।

३. जब बच्चा रोता है, मा आती है और जब सोता है, चली जाती है।

विभजन—

वाक्य	भेद		
१. राम पढ़ेगा[1]	संसृष्ट	अमिश्र[1]	
पर			
(वह) भोजन नहीं करेगा।[2]		अमिश्र[2]	
२. श्याम दुष्ट है[1]	संसृष्ट	अमिश्र[1]	
इसलिये			
मैं (तब) चलदेता हूँ।[2]		संकीर्ण	प्रधान[2] ... ...
वह जब आता है[3]।			अंग(क्रि०वि०)[3] ...
३ मा (तब) आती है[1]	संसृष्ट	संकीर्ण	प्रधान[1] ... ...
बच्चा जब रोता है[2]			अङ्ग(क्रि०वि) [2] ...
और			
(वह तब) चलीजातीहै[3]		संकीर्ण	प्रधान[3] ... ...
(वह) जब सोता है[4]			अङ्ग(क्रि०वि०) [4]...

शेष के लिये संकीर्ण वाक्य का विभजन देखो।

अभ्यास ।

नीचे लिखे वाक्यों का विभजन करो–

१. राम के पास एक सुन्दर चित्र था ।

२. किसी समय दो मित्र साथ चले जाते थे ।

३. आदिनाथ बाबू उस लड़के को पानी में डूबते हुए देखकर अपने प्राणों का मोह न करके उसके उद्धारार्थ कुएँ में कूदपड़े ।

४. आदिनाथ ने एक हाथ से लड़के को पकड़ा और दूसरे हाथ से डोरी पकड़ी ।

५. जिनका चरित्र अच्छा है वे भद्र हैं ।

६. जो लोग स्थायी ऐश्वर्य केलिये क्षणभंगुर शरीर और चञ्चला लक्ष्मी का मोह नहीं रखते वे देवत्व प्राप्त करके महाधन के अधिकारी होते हैं ।

७. जो सब मनुष्यों को प्यार करता है वह ईश्वर का प्यारा होता है ।

८. उन्होंने निर्भय होकर पूछा "आप इस पुस्तक में क्या लिख रहे हैं?"

९. तुम्हारा कोई पड़ोसी यदि दुर्जन है तो उसके साथ तुम सर्वदा सदय व्यवहार करो ।

१०. जब उसमें से निकलने का कोई उपाय न देखा तब वे कबूतर जाल लेकर उड़े ।

परिवर्तन (Conversion).

१. पद, वाक्यांश और खण्डवाक्य ।

(Words, Phrases and Clauses)

नोट–पद, वाक्यांश और खण्डवाक्य के परस्पर परिवर्तन के मुख्य आधार 'समास, कृत और तद्धित' हैं ।

(क) पद के बदले वाक्यांश–

सुखद–सुख देनेवाला । द्रुत–शीघ्र चलनेवाला । यथाशक्ति–शक्ति के अनुसार । आपादमस्तक–पैर से सिर तक । शाक्त–शक्ति के उपासक ।

(ख) पद के बदले खण्डवाक्य-

कृतज्ञ-जो की हुई भलाई को मानता है। स्वदेशी-जो अपने देश का है। सधवा-जिस स्त्री का पति जीवित है। देय जो देने योग्य हो। दुःखी-जिसको दुःख हो।

(ग) वाक्यांश के बदले खण्डवाक्य-

मेरे बैल के आते ही-जब मेरा बैल आता है। निन्दा का पात्र-जिसकी निन्दा सभी करते हैं। नीति का जाननेवाला-जो नीति को जानता है। पहचान से बाहर-जो पहचाना न जा सके।

२. कई वाक्यों के बदले एक वाक्य।

(वाक्यसंयोजन Synthesis of Sentences).

(क) नियम-समापिका क्रिया को असमापिका में बदलने, मिलतेहुए अंशों को एक ही बार रखने और अव्ययों के प्रयोग से कई वाक्य एक वाक्य में बदलेजाते हैं। जैसे-

१. **कई वाक्य**-राम ने रोटी खाई। राम ने पुस्तक पढ़ी।

एक वाक्य-राम ने रोटी खाकर पुस्तक पढ़ी।

२. **कई वाक्य**-श्याम रोटी खाता है। श्याम दाल खाता है। श्याम तरकारी खाता है। श्याम पानी पीता है।

एक वाक्य-श्याम रोटी, दाल और तरकारी खाकर पानी पीता है।

३. **कई वाक्य**-मोहन गरीब है। मोहन सन्तोषी है। मोहन सुखी है।

एक वाक्य-यद्यपि मोहन गरीब है, तथापि सन्तोषी होने से सुखी है।

(ख) नियम-यदि अर्थ में बाधा न पड़े तो वाक्यों के शब्दों को कुछ उलटफेर करके कम करदो। कतिपय वाक्यों को पद, वाक्यांश और अङ्गवाक्य भी बना दे सकते हैं। जैसे-

१. **कई वाक्य**–अर्जुन धनुर्धर थे। उन्होंने लड़ाई में आश्चर्यजनक काम किये। लड़ाई कुरुक्षेत्र में हुई।

एक वाक्य–धनुर्धर अर्जुन ने कुरुक्षेत्र की लड़ाई में आश्चर्यजनक काम किये।

२. **कई वाक्य**–गंगाप्रसाद रामपुर गये हैं। वह मोहनलाल के भाई हैं। मोहनलाल मेरे स्कूल के शिक्षक हैं।

एक वाक्य-मेरे स्कूल के शिक्षक मोहनलाल के भाई गंगाप्रसाद रामपुर गये हैं।

३. **कई वाक्य**-वैदेहीशरण राधाउर रहता है। वह एक विद्यार्थी है। राधाउर सुरसंड के समीप है। राधाउर एक ग्राम है।

एक वाक्य– वैदेहीशरण विद्यार्थी सुरसंड के समीप राधाउर ग्राम में रहता है।

३. एक वाक्य के बदले कई वाक्य।

(वाक्यवियोजन-Resolution of sentences).

वाक्यसंयोजन का उलटा वाक्यबियोजन है, इसलिये संयोजन के नियमों को विपरीतभाव से काम में लाकर 'वियोजन' करते हैं। जैसे–

१. **एकवाक्य**–रात बीतते ही चिड़ियाँ चहचहानेलगीं।
कई वाक्य–रात बीतगई। चिड़ियाँ चहचहानेलगीं।

२. **एकवाक्य**–सबेरा होते ही ठंढी हवा बहनेलगी।
कईवाक्य–सबेरा होगया। ठंढी हवा बहनेलगी।

३. **एकवाक्य**–साहसी राम ने एक बाघ को मारा।
कई वाक्य–राम साहसी है। उसने एक बाघ को मारा।

४. **एकवाक्य**–परीक्षा समाप्त होने पर मुझे खलके समय क्यों खराब करते हैं?

कई वाक्य—परीक्षा समाप्त होगई । अब मुझे मत रखिये । मेरा समय खराब जाता है ।

अभ्यास ।

१. नीचे लिखे प्रत्येक पद को वाक्यांश में परिवर्तन करो—

सादर, अलौकिक, सन्यासी, नास्तिक, आपादमस्तक ।

२. नीचे लिखे प्रत्येक खण्डवाक्य को पद में परिवर्तन करो—

जो की हुई भलाई को नहीं मानता । जिस स्त्री का पति नहीं है । जिस को सुख हो । जो दुःख देनेवाला हो ।

३. नीचे लिखे प्रत्येक खण्डवाक्य को वाक्यांश में परिवर्तन करो—

जब मेरी गाय आती है । जिस की प्रशंसा सभी करते हैं । जो गणित अच्छा जानता है । जिस पर दया कीजाय । जो सुख देनेवाला है ।

४. नीचे लिखे वाक्यों को एकवाक्य में बदलो—

रामलाल एक प्रसिद्ध पुरुष है । उसकी प्रशंसा सब करते हैं । रामलाल मोहनपुर का रहनेवाला है । मोहनपुर गंगा के किनारे है । प्रशंसा करनेवाले लोग सारे बिहार में रहते हैं । रामलाल राजेन्द्रप्रसाद का भाई है ।

५. नीचे लिखे प्रत्येक वाक्य को कई मधुर वाक्यों में परिवर्तन करो—

इस संकट में सिवा भगवान् के मेरी सहायता कोई नहीं कर सकता । मुझे रखकर समय खराब करने के बदले जाने की आज्ञा दीजिये ।

४. वाक्यपरिवर्तन ।

(Interchange of Sentences).

अमिश्र, संकीर्ण और संसृष्ट वाक्य ।

(१) अमिश्र से संकीर्ण और संकीर्ण से अमिश्र—

नियम—अमिश्रवाक्य के एक या अधिक पदों के अङ्ग—

वाक्य में बदल देने से वह संकीर्णवाक्य बनजाता है।

१. **अमिश्र**–सुशील बालक बड़ों की आज्ञा मानते हैं।

संकीर्ण–जो बालक सुशील होते हैं बड़ों की आज्ञा मानते हैं।

२. **अमिश्र**–चोर ने अपने बचाव का कोई उपाय नहीं देखा।

संकीर्ण–चोर ने देखा कि मेरे बचाव का कोई उपाय नहीं है।

३. **अमिश्र**–मेरे बैल के आते ही काली गाय चली जाती है।

संकीर्ण–जब मेरा बैल आता है तब काली गाय चलीजाती है।

☞ संकीर्णवाक्य के अङ्गवाक्य को पद या वाक्यांश में बदल-देने से वह अमिश्रवाक्य बनजाता है। (उदाहरण ऊपर देखो।)

(२) अमिश्र से संसृष्ट और संसृष्ट से अमिश्रवाक्य-

नियम–अमिश्रवाक्य के किसी वाक्यांश को एक अपेक्षा-रहित वाक्य में बदलदेने से वह संसृष्टवाक्य बनजाता है। ऐसी अवस्था में योजक अव्यय का प्रयोग होता है।

यदि वाक्यांश में कोई असमापिका क्रिया हो तो उसे समापिका में बदलकर निरपेक्षवाक्य बनाना चाहिये।

१. **अमिश्र**– { आगे बढ़कर शत्रुओं का सामना करो।
शत्रुओं का सामना करने केलिये आगे बढ़ो।

संसृष्ट–आगे बढ़ो और शत्रुओं का सामना करो।

२. **अमिश्र**–बिल्ली के पञ्जों में नख होते हैं।

संसृष्ट–बिल्ली के पंजे होते हैं और उनमें नख होते हैं।

३. **अमिश्र**–सूर्योदय होते ही हम अपने कार्य में लगे।

संसृष्ट–सूर्योदय हुआ और हम अपने कार्य में लगे।

☞ संसृष्टवाक्य में एक निरपेक्षवाक्य को छोड़ शेष को पदों या वाक्यांशों में बदलने से वह अमिश्रवाक्य बनजाता है। कभी कभी समापिका क्रिया को पूर्वकालिक में बदलकर

अमिश्रवाक्य बनाते हैं। अमिश्रवाक्य बनाने पर योजक अव्यय छूटजाता है। (उदाहरण ऊपर देखो।)

(३) संकीर्ण से संसृष्ट और संसृष्ट से संकीर्ण वाक्य-

नियम-संकीर्णवाक्य के अङ्गवाक्य को प्रधान में बदलदेने से वह संसृष्टवाक्य बनजाता है। ऐसी अवस्था में संकीर्ण के नित्यसम्बन्धी अव्यय इत्यादि शब्दों और 'कि' के बदले योजक या विभाजक अव्यय लाते हैं। जैसे-

१. **संकीर्ण**-यद्यपि तू धनी है, तथापि सुखी नहीं है।
  संसृष्ट-तू धनी है, परन्तु सुखी नहीं है।

२. **संकीर्ण**-तू जानता है कि वह खराब लड़का है।
  संसृष्ट-वह खराब लड़का है और तू यह जानता है।

३. **संकीर्ण**-यदि अकाल पड़ेगा तो मरेंगे।
  संसृष्ट-अकाल पड़ेगा और मरेंगे।

☞ संसृष्ट वाक्य के एक निरपेक्ष वाक्य को छोड़ शेष को अप्रधान में बदलने से वह संकीर्ण वाक्य बनजाता है। ऐसी अवस्था में योजक और विभाजक अव्ययों के बदले नित्यसम्बन्धी शब्दों और 'कि' का प्रयोग होता है।

(उदाहरण ऊपर देखो)

५. कर्तृप्रधान, कर्मप्रधान और भावप्रधान वाक्य।

(वाच्यपरिवर्तन–Changes of Voice).

वाच्यपरिवर्तन की सभी बातें पीछे क्रियाप्रकरण में लिखीजाचुकी हैं। यहाँ केवल थोड़ेसे उदाहरण दियेजाते हैं।

१. **कर्तृप्रधान**-मैं पुस्तक पढ़ता हूँ।
  कर्मप्रधान-मुझसे पुस्तक पढ़ीजाती है।

२. **कर्तृप्रधान**-राम पुस्तक देगा।

कर्मप्रधान–राम से पुस्तक दीजायगी ।

१. **कर्तृप्रधान**–तू बैठता है । *

भावप्रधान–तुझसे बैठाजाता है ।

२. **कर्तृप्रधान**–आइये ।

भावप्रधान–आयाजाय ।

३. **कर्तृप्रधान**–वह सोवे ।

भावप्रधान–उससे सोयाजाय ।

नोट–(१) 'मैं ग्रन्थ पढ़जाता हूँ । राम पुस्तक देजायगा । तू बैठजाता है । आजाइये । वह सोजावे ।' इन वाक्यों के 'कर्म और भावप्रधान वाक्य' भी क्रमशः ऊपर ही के अनुसार * होते हैं, परन्तु कहीं कहीं अर्थों में कुछ भेद होजाता है । इसी प्रकार '**मैं रोटी खागया**' का कर्मप्रधान वाक्य '**मुझसे रोटी खाईगई**' है ।

(२) '**मैंने रोटी खाई**' यह वाक्य कर्मप्रधान है । इसके कर्म में '**को**' लाने से '**मैंने रोटी को खाया**' भावप्रधान वाक्य बनजाता है ।

६. उक्तिभेद ।

(Reported Speech).

जब किसी की कही हुई बात को दूसरे से कहते हैं तब उसे या तो वक्ता ही की उक्ति में प्रकाश करते हैं या अपनी उक्ति में ।

जब वक्ता के वक्तव्य को ठीक ठीक उसीके शब्दों में प्रकाश करें तब उसे प्रत्यक्ष या साक्षात् उक्ति और जब अपने शब्दों में करें तब उसे परोक्षउक्ति कहते हैं ।

☞ **प्रत्यक्ष उक्ति को " " के बीच में रखते हैं ।**

*** पीछे वाक्यप्रकरण देखो ।**

१. **प्रत्यक्ष** — राम ने कहा था, "मैं आऊँगा।"
परोक्ष — राम ने अपने आने की बात कही थी।
२. **प्रत्यक्ष** — पिता ने मुझे कहा—"राम की पुस्तक पढ़ो।"
परोक्ष — पिता ने मुझे राम की पुस्तक पढ़ने को कहा।
३. **प्रत्यक्ष** — ब्राह्मण ने आशीर्वाद दिया, "कल्याण हो।"
परोक्ष — ब्राह्मण ने कल्याण होने केलिये आशीर्वाद दिया।
४. **प्रत्यक्ष** — मैंने पूछा, "आप कहाँ जाते हैं?"
परोक्ष — मैंने उनके जाने के बारे में पूछा।
५. **प्रत्यक्ष** — गुरुजी ने कहा—"पृथ्वी चलती है।"
परोक्ष — गुरुजी ने कहा कि पृथ्वी चलती है।

अभ्यास।

(१) नीचे लिखे अमिश्र, संकीर्ण और संसृष्ट वाक्यों का परस्पर परिवर्तन करो।

मनुष्यसमाज को सुखी बनाने के हेतु कितने ही उपाय हैं। मनुष्य जो कुछ काम करते हैं, सुख केलिये ही करते हैं। इस पवित्र विशाल भारतवर्ष में आदर्श पुरुषों का बिलकुल अभाव हो जाना क्या कभी असंभव है? इस वर्तमान भारत में भी अनेक महापुरुषों ने जन्म ग्रहण करके अपने उदार चरित्रों से लोगों को अनेक उपदेश दिये हैं। आदर्श पुरुष उच्चहृदय के हुए तो जाति उन्नत होती और आदर्श नीचप्रकृति के हुए तो जाति की अवनति होती है।

(२) नीचे लिखे वाक्योंका वाच्य के अनुसार परिवर्तन करो—

मनुष्य जो कुछ काम करते हैं, सुख केलिये ही करते हैं। आइये, आप ही का घर है, कोई संकोच मत कीजिये। तारापद ने स्थिर किया था कि वह रुपये को लौटादेगा। भगवान्! तूने भी मुझे योंही त्यागदिया! यह भी आशीर्वाद दीजिये कि मैं सच्चरित्र पुरुषों के पदाङ्क का अनुसरण करसकूँ।

(३) नीचे लिखे वाक्यों को उक्तिभेद के अनुसार परिवर्तन करो—

कुछ देर तक चुप रहकर तारापद ने कहा—"अच्छा जाइये।" राम ने कहा—"कुछ नहीं।" श्याम ने बहुत देर के बाद मुझसे पूछा—"आप कहाँ

जाते हैं ? " कातरता से और कुछ दिन ठहरने केलिये कहा । गुरुजी ने घर जाने केलिये कहा ।

अनुक्त पदों की पूर्ति ।

(Filling up of Ellipses).

अनुक्त पदों की पूर्ति केलिये कोई विशेष नियम नहीं दिया जासकता । शब्दप्रकरण के भिन्न भिन्न प्रयोगों और वाक्य-रचना के नियमों पर ध्यान रखकर वाक्यार्थबोध के अनुसार शब्दों की पूर्ति करनी चाहिये ।

प्रत्येक रिक्त स्थान केलिये केवल एक शब्द या एक पद को चुनना चाहिये । दो तीन पदों का रखना अनुचित है ।

(१) आदर्श-

---किताब लिखी । उसने --- पढ़ीं । राम ने रोटी --- ।

श्याम ने किताब लिखी । उसने पुस्तकें पढ़ीं । राम ने रोटी खाई ।

अनुक्त पदों की पूर्ति करो —

(१)---पत्र लिखा है । --- आम दिये हैं । --- बातें कही हैं । ---मछली मारी थी । --- फल खाये होंगे । --- किताब पढ़ी होगी ।

(२) राम ने --- मारे । लड़कों ने --- लिखे हैं । कौओं ने --- खाडाले हैं । विद्यार्थी ने --- लिखी होंगी । सीता ने --- सुनी थी ।

(३) आपने ग्रन्थ --- । सीता ने चिट्ठियाँ --- । व्याध ने चिड़ियाँ --- । मोहन ने दूध --- । श्याम ने मक्खन --- ।

(२) आदर्श—

मोहन—सोहन—। गाय—बकरी —।

मोहन और सोहन जाते हैं। गाय या बकरी बिकेगी।

राम का—घोड़ा—आता है। तुम्हारी—पुस्तक—है।

राम का लाल घोड़ा धीरे धीरे आता है। तुम्हारी यह पुस्तक अच्छी है।

यदि—पढ़ोगे—बुद्धि और—रहोगे।

यदि विद्या पढ़ोगे तो बुद्धि होगी और सुखी रहोगे।

अनुक्त पदों की पूर्ति करो—

(१) सीता — — — राम को — — — भेज — — —। तेरा — — — उसका — — — घर — — — भाई — — —। गाय — — — बकरी का — — — दूध — —।

(२) सीता का — — — बेटी — — — चलीगई। मेरा — — — विद्यार्थी — — — पढ़ता है। — — — घर की — — — दीवालपर — — — बिल्ली — — — बैठी है।

(३) — — — वह — — — तथापि — — — बुद्धि — — —। — — — जब — दुष्ट — — आता है — — — राम का — — — चुपचाप — — —। — — — लाठी — — — भेम

(३) आदर्श—

इस...जो...सुखी...चाहता हो......क्रोध......प्रयत्न... चाहिये। ......क्रोध को......वश में...रख सकता वह...... वस्तुओं के......हुए......सुख......भोग सकता।

इस संसार में जो मनुष्य सुखी रहना चाहता हो उसे क्रोध छोड़ने का प्रयत्न करना चाहिये। जो क्रोध को अपने वश में नहीं रखसकता वह सुख की वस्तुओं के रहते हुए भी सुख नहीं भोगसकता।

अनुक्त पदों की पूर्ति करो—

मनुष्य...कुछ...करते हैं, सुख केलिये...करते हैं। ...पानेकी... सब को...। ..उद्देश्य ...रहता है ...हम को ...मिले,...गला...सुख... चिल्लाने...सुख...मिल सकता।

चिन्हविचार (Punctuation).

वाक्यों में कुछ चिन्ह लगायेजाते हैं जो ठीक ठीक ठहराव के साथ उनके बोलने में सहायक होते, उनके पदों, वाक्यांशों और खण्डवाक्यों में परस्पर सम्बन्ध सूचित करते तथा उन के अर्थों को भलीभाँति स्पष्ट करते हैं।

१. विराम या ठहराव के चिन्ह (Stops).

(,) अल्पविराम-[Comma].

जहाँ यह चिन्ह (,) रहे वहाँ उतने समय तक ठहरना चाहिये जितना एक के उच्चारण करने में लगता है।

प्रयोग के नियम—

१. यदि कई शब्द, पद, वाक्यांश या खण्डवाक्य एकही दशा में हों तो अन्तिम शब्द या पद इत्यादि को छोड़ शेष के आगे अल्पविराम लाते हैं, परन्तु अन्तिम शब्द या पद इत्यादि के पहले प्रायः ' और, या ' इत्यादि समुच्चायक आते हैं।

जैसे—राम, श्याम और मोहन ने यह कार्य किया। धर्म और विद्या की शिक्षा प्राप्त कर उस समय के शिष्य जितेन्द्रिय, सत्यवादी, परोपकारी, दयालु और विवेकी होजाते थे। उनका यहाँ रहना, लोगों से प्रेमपूर्वक मिलना, बड़ों का आदर करना और सीधीसादी चाल सबों को पसंद

है। यदि आप अपने पुत्र के पढ़ाने का समुचित प्रबन्ध न करेंगे तो वह आलसी बनजायगा, उसका समय व्यर्थ जायगा, उसकी उन्नति के स्थान में अवनति होगी और वह समाज में मूर्ख गिनाजायगा। प्रायः इस बात को सभी जानते हैं कि माता, पिता, गुरु आदि बड़े सभी पूज्य हैं।

२. **जहाँ अर्थ में बाधा पड़े वहाँ भी अल्पविराम (,) दियाजाता है।** जैसे—राजा स्वदेशी हो या विदेशी, राजा का प्रधान कर्तव्य है कि प्रजा में विद्या का प्रचार करे।

३. **सम्बोधन के परे अल्पविराम (,) लाते हैं और यदि सम्बोधन पद वाक्य के बीच में पड़जाय तो उसके पहले भी।** जैसे—बालको, परिश्रम करो। सुनो, बच्चो, जंगल में मत जाओ। (आगे विस्मयादिबोधक चिन्ह देखो।)

४. **यदि दो परस्पर अन्वित पदों को, कोई पद, वाक्यांश या खण्डवाक्य, बीच में आकर अलग अलग करदे तो उनकी दोनों ओर अल्पविराम (,) लाते हैं।** जैसे—राम, जिसे सब जानते हैं, बड़ा नेक है। मेरी, आपके परिवार से, कौन बात छिपी है? मेरा घर, आपकी दुहाई, कभी नहीं बिकसकता। वह ग्रन्थ, जो कल खरीदा है, ज़रा ले तो आओ। उस दिन, जब मैं पुस्तक लिख रहा था, आपसे भेंट हुई। (आगे निर्देशक चिन्ह का तीसरा नियम देखो।)

५. **नित्यसम्बन्धी शब्दों के प्रत्येक जोड़े का दूसरा शब्द यदि लुप्त रहे तो वहाँ अल्पविराम (,) लाते हैं।** जैसे—यदि आप आवें, मेरे लिये कुछ फल लाइयेगा। वह जहाँ जाता है, बैठरहता है। यदि पढ़ना है, पढ़ो, नहीं तो घर जाओ।

६. **'वह, यह' जब लुप्त हों तब अल्पविराम (,) लाते हैं।** जैसे-कब छुट्टी मिलेगी, मैं कह नहीं सकता। राम कब आवेगा, हम

नहीं जानते। मनुष्य जो कुछ करते हैं, सुख के लिये ही करते हैं।

७. किसी की उक्ति के पहले अल्पविराम (,) लाते हैं। जैसे—राम ने कहा, "मैं परसों आऊँगा।" [ऐसी जगह अल्पविराम के बदले निर्देशक चिन्ह (–) भी लगाते हैं।]

८. यदि कोई खण्डवाक्य 'वरन्, पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, क्योंकि, इसलिये, तौभी, कारण' या इसी प्रकार के किसी अन्य शब्द या संस्कार से आरम्भ हो तो उसके पहले अल्पविराम (,) लाते हैं। जैसे—माँ उसे व्याकरण का नियम नहीं समझाती, **वरन् शुद्ध** बात बता देती है। पहलेपहल केवल बोली हुई भाषा का प्रचार था, **पर** पीछे से विचारों को स्थायीरूप देने केलिये कई प्रकार की लिपियाँ निकालीगईं। लिखित प्राकृत का विकास रुकगया, **परन्तु** कथित प्राकृत विकसित अर्थात् परिवर्तित होतीगई। उसका यह रूप नया नहीं है, **किन्तु** उतना ही पुराना है जितने कि उसके दूसरे रूप। खाने में तो अच्छा है, लेकिन वह स्वास्थ्य बिगाड़देता है। आजकल इस काव्य की मूलभाषा का ठीक ठीक पता नहीं लग सकता, **क्योंकि** भिन्न भिन्न प्रान्त के लेखकों और गवैयों ने इसे अपनी अपनी बोलियों का रूप देदिया है। वह बीमार है, **इसलिये** नहीं आया। स्वच्छवायु आवश्यक है, **कारण** मैली वायु से रोग होते हैं। दिखलाई तो नहीं देते, **तौभी** ये पानी में अवश्य मिलेरहते हैं। वह रुपया मेरा न था, मेरे मालिक का था। राम रोरहा है, कोई नहीं सुनता। आप दौड़धूप मत करें, कुछ फल नहीं मिलेगा। (अर्द्धविराम का नोट देखो)।

९. वाक्य के आरम्भ में आनेवाले पद या वाक्यांश में पूर्व के किसी विषय के सम्बन्ध की कुछ भी गंध हो तो उसके

आगे अल्पविराम (,) लाते हैं। जैसे-हाँ, एक एक गुण का अभ्यास करके लोग गुणों से अपने को अलंकृत करसकते हैं। बस, एक सत्य का आश्रय ग्रहण करने से और जितने गुण हैं, आपसे आप आकर तुम्हारा हाथ पकड़ेंगे। प्रथम, नागर अपभ्रंश और द्वितीय, अर्धमागधी। अन्यथा, प्राकृतभाषा का व्यवहार भारत में उस समय से चलाहोगा।

१०. अन्य स्थानों में भी ठहराव के कारण यदि अल्प-विराम (,) देने की आवश्यकता हो तो देसकते हैं। जैसे-क, थ, म, इत्यादि। जैनहितैषी, नवाँ भाग, बारहवाँ अङ्क (आश्विन १९७०)। प्रकाशक, हिन्दीपुस्तकभण्डार, लहेरिया-सराय, दरभंगा।

(;) अर्द्धविराम (Semicolon)-

जहाँ यह चिन्ह (;) रहे वहाँ अल्पविराम की अपेक्षा कुछ अधिक काल तक ठहरना चाहिये।

नियम-जहाँ अल्पविराम की अपेक्षा कुछ अधिक काल तक ठहरने की आवश्यकता हो तथा एकवाक्य या वाक्यांश के साथ दूसरे का दूर का सम्बन्ध बताना हो वहाँ अर्द्धविराम लाते हैं। जैसे-व्यवसाय बन्द है; वाणिज्य बन्द है; कृषिकार्य बन्द है; चारों ओर हाहाकार रव उत्थित हो रहा है। पृष्ठ संख्या ३००; आकार मझोला; छपाई और कागज उत्तम; जिल्द बँधी हुई; मूल्य १) रुपया। वे हमारी चिट्ठी साफ़ हजम करगये; डकार तक न ली।

नोट-(१) बहुतसे विद्वान अर्द्धविराम की जगह अल्पविराम या पूर्णविराम ही से काम लेते हैं। हमने भी ऐसा ही किया है।

(२) कोई कोई 'पर, परन्तु, इसलिये, किन्तु, क्योंकि, लेकिन, तोभी,

कारण' इत्यादि के पहले भी अर्द्धविराम लाते हैं। (देखो, अल्पविराम का आठवाँ नियम।)

(:) अपूर्णविराम (Colon)–

जहाँ यह (:) चिन्ह रहे वहाँ अर्द्धविराम की अपेक्षा कुछ अधिक कालतक ठहरना चाहिये।

नोट–अकेले अपूर्णविराम से विसर्ग का भ्रम होता है, इसलिये उससे आगे एक छोटी लकीर लगाकर इस (:—) रूप में लिखते हैं।

नियम–किसी वक्तव्य को कुछ अलग करके बताना या गिनाना हो तो उसके पहले अपूर्णविराम (:—) लाते हैं। ऐसी जगह केवल एक लकीर (—) से भी काम चलाते हैं। जैसे—

नीचे के वाक्यों को शुद्ध करो:—

नीचे के वाक्यों को शुद्ध करो—

नोट–आगे ' निर्देशक चिन्ह ' देखो।

(।) पूर्णविराम (Full Stop)

जहाँ यह चिन्ह (।) रहे वहाँ भली भाँति ठहरना चाहिये।

नियम–प्रत्येक वाक्य की समाप्ति पर पूर्णविराम (।) आता है। जैसे–हिन्दी हमारी मातृभाषा है।

नोट–(१) परिभाषा या सूत्र लिखकर उदाहरण दिखानेमें **'जैसे, यथा'** इत्यादि शब्दों के पहले अर्द्धविराम देने से वाक्य की जटिलता दूर होजाती है। अन्यथा, उनके पहले अर्द्धविराम भी ला सकते हैं।

(२) नीचे के दो चिन्ह (? !) पूर्णविराम के अपवाद में हैं।

(?) प्रश्नबोधक (Note of interrogation)–

प्रश्नबोधकवाक्य के आगे पूर्णविराम के बदले यह (?) चिन्ह आता है। जैसे—तुम कहाँ जाते हो ?

नोट-जिस शब्द के शुद्ध या उचित प्रयोग होने में लेखक को सन्देह होता है उसके आगे कोष्ठ में प्रश्न का चिन्ह लिखाजाता है। जैसे-सच बोलना कितना आवश्यकीय (?) है, सचबोलने में कितनी बड़ी वीरता है-मैं सबकुछ दिखाचुका।

(!)विस्मयादिबोधक(Note Of Admiration)-

नियम—(१) विस्मय, शोक, करुणा आदि चित्तवृत्तियाँ जतानेवाले शब्द, पद, वाक्यांश या वाक्य के आगे विस्मयादिबोधकचिन्ह (!) लाते हैं। जैसे-हाय ! ऐसा अन्धेर ! यदि मैं परिश्रम करता तो मैं भी न आज गुलछर्रे उड़ाता ! "अहा ! ओहो !! हुर्रे हुर्रे !!!......उड़गये धुर्रे !

(२) यदि किसी वाक्य में प्रश्न की झलक रहने पर भी उत्तर की कांक्षा न हो तो उसके आगे भी विस्मयादिबोधक चिन्ह (!) लाते हैं। जैसे-बुढ़ापे पर दया मेरे जो करते, तो बन की ओर क्यों तुम पैर धरते !

(३) जिस सम्बोधन से विस्मय, शोक, आनन्द इत्यादि भाव प्रकाशित करें उसके आगे विस्मयादि बोधक चिन्ह (!) लाते हैं। जैसे-छिपे हो कौनसे पर्दे में बेटा ! प्यारे ! अब फिर कब दर्शन होंगे ? भाग्य ! तेरी भी क्या प्रशंसा करें !

नोट-जो शब्द, पद, वाक्यांश या वाक्य किसी असम्भव बात का सूचक हो और उसपर विस्मय भी प्रकाश कियाजाय तो उसके आगे कोष्ठ में यह चिन्ह (!) लाते हैं। जैसे-त्रिकालदर्शी (!) लेडबीटर।

(—)निर्देशक (Dash)-

नियम-(१) जहाँ वाक्य एकाएक टूटगया हो, जहाँ कोई पद या वाक्यांश किसी कारण से लिखने योग्य न हो और जहाँ किसी पद या वाक्य की भूल सुधारने या उसपर अधिक प्रकाश डालने केलिये विवरण करना हो, वहाँ

निर्देशक चिन्ह लाते हैं। जैसे-जिनको ऐश्वर्य का मद—हाँ हाँ, मैं सुन रहा हूँ, मुझीको कहते हो × ! गत परीक्षा में तुमने –की थी, यह बात सब जानगये। वह तुम्हारी बात-बात नहीं करामात है।

(२) विषयविभाग सम्बन्धी प्रत्येक शीर्षक के आगे तथा वार्तालापविषयक लेखों में वक्ता के नाम के आगे निर्देशक चिन्ह (–) लगाते हैं। जैसे-राजभक्ति के लाभ-राजा की भक्ति से........। शकुन्तला-मैं बड़ों का अपराध न लूँगी!

(३) यदि वाक्य के बीच में कोई स्वतन्त्र पद, वाक्यांश या वाक्य आजाय तो इसकी दोनों ओर निर्देशक चिन्ह (–) लगाते हैं। जैसे-' मेरे पति ने-परमात्मा उनकी रक्षा करे !-विदेशयात्रा की है।'

(४) कोष्ठ और विराम के बदले भी निर्देशक चिन्ह (–) कभी कभी लाते हैं। जैसे-'अपना जीवन-अपनी जिन्दगी-भलीभाँति सार्थ करलो।'

तेरी उल्फ़त की चिंगारी ने, जालिम, एक जहाँ फूँका-
इधर चमकी-उधर सुलगी-यहाँ फूँका-वहाँ फूँका।

(५) यदि बोलने में ठिठकनापड़े तो निर्देशक चिन्ह लाते हैं। जैसे-'हमें-चिन्ता है-कि-आपके-दर्शन-नहीं होंगे।

नोट-अल्पविराम का सातवाँ नियम देखो।

(२) अन्यचिन्ह (Other Signs).

[{ ( ) }] कोष्ठचिन्ह (Brackets)–

नियम-(१) किसी पद, वाक्यांश या वाक्य के अर्थ को

× वक्ता के मुँह से 'जिनको ऐश्वर्य का मद' यह वाक्यांश सुनते ही बात काटकर श्रोता ने कहा-' हाँ हाँ, मैं सुनरहा हूँ, मुझीको कहते हो।'

अथवा किसी अन्य वाक्य, वाक्यांश या पद को कोष्ठचिन्हों के भीतर रखते हैं। जैसे—बातों का क्रम (सिलसिला) ठीक है। सरस्वती (प्रयाग) के पाँचवें अङ्क में छपा था।

(२) यदि कई पद, वाक्यांश या वाक्य ऊपर नीचे लिखकर घेरेजायँ तो इन [{ }] चिन्हों से घेरते हैं।

नोट—कोष्ठ के चिन्ह गणित में अधिकता से आते हैं।

" " उद्धरणचिन्ह (Inverted Commas).

नियम—दूसरे की जिस उक्ति को अविकल उद्धृत करना हो या लेख के जिस छोटे या बड़े अंश पर विशेष ध्यान की आवश्यकता हो, उसे इन " " के भीतर रखते हैं। जैसे—शिक्षक ने कहा—"बालको, ध्यानपूर्वक सुनो"। "ने चिन्ह के प्रयोग" भलीभाँति सीखो।

नोट—यदि दूसरे की उक्ति के भीतर तीसरे की उक्ति आजाय तो उसे एकहरे उद्धरण चिन्हों (' ') के भीतर रखते हैं। जैसे—गुसाईं जी ने लिखा है—"रामजी ने ब्राह्मण को प्रणाम किया। उन्होंने 'दीर्घ-जीवी हो' कहकर आशीर्वाद दिया।"

(–) योजक (Hyphen)—

नियम—(१) लिखते समय यदि कोई शब्द पंक्ति के अन्त में समूचा न लिखा जासके तो उसके एक या अधिक खण्डों को उस पंक्ति में लिखकर योजक चिन्ह (–) लगाते हैं और शेष दूसरी पंक्ति के आरम्भ में लिखते हैं। जैसे—

> दिनभर में पेटभर भोजन भी कठिन-
> ता से मिलता था।

नोट-१. उच्चारण के अनुसार प्रत्येक शब्द में एक, दो या अधिक खण्ड होसकते हैं। जैसे-श्री-मान्, कला-धर। यदि ये दोनों शब्द बाँट कर लिखेजाँय तो ठीक ऊपर लिखे अनुसार बाँटना चाहिये, उन्हें श्रीमा-न् और कलाध-र में बाँटना उच्चारणविरुद्ध होगा। पुस्तकों में प्रेसों की असावधानी से शब्दों के खण्ड प्राय: ठीकठीक अलगाये नहीं रहते। प्रेसवालों को इस भूल पर ध्यान देना चाहिये।

२. आजकल दो चार को छोड़ शेष सभी विद्वान् '**ने, को, से, का, में**' इत्यादि चिन्हों को **शब्दों से अलग*** **ही लिखते हैं**। इसी परिपाटी के अनुसार हमने भी इन्हें अलग ही लिखा है, परन्तु जो साथ लिखनेवाले हैं वे ऊपर लिखी अवस्था में अलगाने के समय योजकचिन्ह लगाते हैं।

३. आजकल कोई कोई विद्वान् समस्त शब्दों के मूल खण्डों को अलग अलग लिखने लगे हैं। ऐसी अवस्था में वे योजकचिन्हों से काम लेते हैं। जैसे—

जयति मनुज-कुल-दया-द्रवाति, दुखियन-दुख-भंजन।
जय भारत-निज-प्रजा-प्रणय-भाजन, जन-रंजन॥

(श्रीधर पाठक)

(– – – – – – – – – –या......या × × × इत्यादि)

वर्जन या लोपचिन्ह—

नियम-(१) लेख में जब एक या अधिक वाक्य, शब्द या अक्षर अप्रकाशित रखना चाहें तब वर्जनचिन्ह लाते हैं। जैसे-
उसने- – – – – – – – कहकर गाली दी।

(२) यदि किसी वर्णन का कुछ अंश लिखने से सम्पूर्ण का बोध होजाय तो शेष केलिये वर्जनचिन्ह लाते हैं। जैसे-

---

* 'ने, को, से, का, में' इत्यादि चिन्हों को अलग लिखना चाहिये या साथ? इस प्रश्न के उत्तर केलिये पं० अम्बिकादत्त व्यास कृत **विभक्तिविभाग** और प० गोविन्दनारायणमिश्र कृत **बिभक्तिबिचार** नाम की पुस्तकें पढ़ो।

आगे चले बहुरि........परबत नियराई ।

(०,,) लाघव चिन्ह–

नियम–जो शब्द बहुत प्रसिद्ध हो या जिसे बारबार लिखना पड़े उसका प्रायः पहला अक्षर लिखते हैं और आगे लाघवचिन्ह लाते हैं । जैसे—तारीख केलिये ता०, मिती केलिये मि०, इत्यादि ।(पीछे ' लाघव ' का पाठ देखो ।)

(‸) त्रुटि चिन्ह–

नियम–यदि लेख के बीच में कोई अक्षर, शब्द, पद, वाक्यांश या वाक्य लिखने से छूटजाय तो वहाँ त्रुटिचिन्ह लगाकर छूटे हुए अंश को किनारे पर लिखदेते हैं । जैसे—

बाजार से आटा ‸ और चीनी लाना । ‸,दाल

☞ हस्तचिन्ह–

नियम—किसी प्रधान बात को लक्षित करना हो तो हस्तचिन्ह लगाते हैं । जैसे-

☞ ने चिन्ह पर ध्यान रक्खो ।

(*, ×, †, ‡, §, ¶, इत्यादि) तारक–

नियम–किसी अक्षर, शब्द, पद, वाक्यांश या वाक्य के सम्बन्ध में कुछ अन्यत्र लिखना हो तो उसके आगे तारक चिन्ह लगाते हैं और पृष्ठ के अधोभाग में रेखा के नीचे फिर वैसा ही चिन्ह लगाकर तत्सम्बन्धी बातें लिखते हैं। (उदाहरण इसी पुस्तक में अन्यत्र देखो ।)

(३) अनुच्छेद (Paragraph).

जब कई वाक्यों में किसी विषय का एक भावगत खण्ड समाप्त होता है और उसपर लेखक को कुछ कहना

शेष नहीं रहता तब उसका विच्छेद कियाजाता है और दूसरा खण्ड नई पंक्ति से आरम्भ होता है।

नोट—लघुता और गुरुता के विचार से एक भाव कई खण्डों में लिखाजासकता है, परन्तु एक खण्ड में कई भावों का समावेश करना अनुचित है।

अभ्यास।

नीचे जहाँ जहाँ उचित हो, विरामादि चिन्हों को लगाओ और अनुच्छेदों को अलग करो—

उनकी मुद्रा भी देखने ही योग्य थी वह पद्य इस भाँति पढ़ते कि आप आशय का रूप बनजाते थे और लोग भी नक़ल उतारते थे पर वह बात कहाँ वह पढ़ने में अंगों से भी काम लेते थे जैसे प्रदीप का विषय बाँधते तो पढ़ते समय एक हाथ से प्रदीप और दूसरे की ओट वहीं फ़ानूस बनाकर बताते क्रोध या अप्रसन्नता का विषय होता था तो आप भी त्योरी चढ़ाकर वहीं बिगड़जाते क़हक़हों के शब्द आने हैं देखना कवियों का झुंड आन पहुँचा इनका आना ग़ज़ब का आना है ये ऐसे खुले चौड़े होंगे कि इनकी ढिठाई गम्भीरता से ज़रा न छिपेगी इतना हँसें और हँसायँगे कि मुँह थक जायँगे पर न उन्नति के डेग आगे बढ़ायँगे न अगली अटारियों को ऊँचा उठायँगे उन ही कोठों पर कूदते फाँदते फिरेंगे इन भाग्यवानों को पठंगा भी अच्छा मिलेगा ऐसे गाँहक हाथ आयँगे कि एक एक फूल इनका केसर की क्यारी के मोल बिकेगा।

छन्दविचार (Prosody).

जिस वाक्य में मात्राओं या वर्णों की गिनती होती है और प्रायः चार चरण होते हैं उसे छन्द (पद्य) कहते हैं।

नोट—गद्य में मात्राओं या वर्णों की गिनती नहीं होती। गद्य में शब्द क्रमानुसार रहते हैं, परन्तु पद्य में शब्दों के क्रम का कोई नियम नहीं। कवि की इच्छा और बुद्धि के अनुसार पद्य में शब्दों के क्रम भिन्न भिन्न होते हैं।

छन्द दो प्रकार के होते हैं—मात्रावृत्त या मात्रिक और वर्णवृत्त। जिसमें मात्राओं की गिनती होती है उसे मात्रिक और जिसमें वर्णों की गिनती होती है उसे वर्णवृत्त या वर्णिक छन्द कहते हैं।

मात्राओं की गिनती—

अक्षरप्रकरण में कह आये हैं कि कुछ स्वर ह्रस्व होते हैं और कुछ दीर्घ। ह्रस्व स्वर और जिन व्यञ्जनों में ह्रस्व स्वर हों वे लघु या एकमात्रिक तथा दीर्घ स्वर और जिन व्यञ्जनों में दीर्घ स्वर हों वे गुरु या द्विमात्रिक कहलाते हैं। जैसे—

निशिचर ने वैदेही को यहाँ हर लिया। (२२ मात्राएँ)
यहाँ हरा निशिचर वैदेही (१६ मात्राएँ)

नोट—(१) अनुस्वार और विसर्ग तथा इनसे युक्त ह्रस्व वर्ण भी दीर्घ ही गिने जाते हैं, परन्तु चन्द्रबिन्दु की एक मात्रा होती है। जैसे—अं, अः, अँ, कं, कः कँ।

(२) एक शब्द के भीतर संयुक्ताक्षर के पहले का लघुवर्ण गुरु गिना जाता है तथा दीर्घाक्षर के आगे हलवर्ण की मात्रा अलग नहीं गिनी जाती। जैसे—उद्योग, ख्यात्।

(३) संस्कृत के छन्दों में होनेवाली हिन्दी की कविता में भी कभी कभी उच्चारण के अनुसार लघु अक्षर को गुरु और गुरु को लघु मानलेते हैं तथा कविलोग जिस अक्षर को लघु पढ़ें वह भी लघु समझाजाता है।

☞ कविलोग मात्राओं की गिनती सरलता से दिखाने के लिये लघु अक्षर को सीधी लकीर (।) से और गुरु को टेढ़ी लकीर (ऽ) से दिखाते हैं।

गण—

गणों के विचार से मात्रिक छन्दों के पाँच गण होते हैं। जिनके नाम और रूप नीचे दियेजाते हैं—

१. टगण	SSS	छः मात्राओं का।
२. ठगण	SSI	पाँच मात्राओं का।
३. डगण	SS	चार मात्राओं का।
४. ढगण	SI	तीन मात्राओं का।
५. णगण	S	दो मात्राओं का।

नोट—मात्रागणों में मात्राओं को उलटपुलट भी दें तौभी गण का नाम नहीं बदलता।

वर्णिक छन्दों के तीन तीन वर्णों के आठ गण होते हैं। इन के नाम, रूप, देवता और फल नीचे दिये जाते हैं।

नाम	रूप	देवता	फल
१. मगण	SSS	पृथ्वी	मंगल
२. यगण	ISS	जल	वृद्धि
३. रगण	SIS	अग्नि	मृत्यु
४. सगण	IIS	वायु	विदेश
५. तगण	SSI	आकाश	शून्य
६. जगण	ISI	भानु	रोग
७. भगण	SII	चन्द्र	कीर्ति
८. नगण	III	नाग	सुख

नोट—१. क्रम से आदि, मध्य और अन्त में यगण, रगण और तगण के लघु वर्ण तथा भगण, जगण और सगण के गुरु वर्ण आते हैं। मगण में तीनों गुरु और नगण में तीनों लघु वर्ण आते हैं।

आदि मध्य अवसान, 'यरता' में लघु जानिये।
'भजसा' गुरु प्रमान, 'मन' तिहु गुरु लघु मानिये।

२. रगण, सगण, तगण और जगण (रसतज) के फल अशुभ माने-जाते हैं, इसलिये ये छन्द के आदि में नहीं रक्खेजाते।

दग्धाक्षर—

'झ, ह, र, भ और ष' छन्द के आदि में नहीं रक्खे जाते, क्योंकि कवियों ने इन्हें दग्धाक्षर माना है।

दीजो भूल न छन्द के, आदि 'झ ह र भ ष' कोय।
दग्धाक्षर को दोष तें, छन्द दोषयुत होय॥

नोट—'झ, ह, र, भ और ष' को गुरु करदें या वे देवता और मंगलवाची शब्दों के आदि में आवें तो दग्धाक्षर का कलंक मिट जाता है और अशुभ गणों का दोष भी जातारहता है।

मंगल सुरवाचक शब्द, गुरु होवे पुनि आदि।
दग्धाक्षर को दोष नहिं, अरु गण दोषहुँ वादि॥ +

अन्त्यानुप्रास ×—

'अन्त्यानुप्रास' तुकबन्दी या तुकान्त को कहते हैं। इसमें छन्दों के कम से कम दो चरणों के एक या अधिक अन्त्याक्षर समान होते हैं। तुकबन्दी से छन्दों में मधुरता आजाती है और वे श्रवणसुखद होजाते हैं। भिन्नतुकान्त छन्द भी रचेजाते हैं। संस्कृत में ऐसे छन्दों का बाहुल्य है, अब हिन्दी में भी ऐसे छन्द रचेजानेलगे हैं। *

नोट—(१) चरणों के विचार से वृत्त तीन प्रकार के होते हैं—समवृत्त, अर्द्धसमवृत्त और विषमवृत्त। जिनके चारों चरण सम हों वे **सम,**

+ गणागण विचार एवं दग्धाक्षर को हम बखेड़ामात्र समझते हैं। इनमें कोई सार पदार्थ नहीं समझपड़ता। (मिश्रबन्धुविनोद)

× यह अलङ्कार का विषय है। इसका पूर्ण वर्णन हमारे 'अलङ्कार चन्द्रोदय' में मिलेगा।

* श्री पण्डित अयोध्यासिंहजी उपाध्याय कृत 'प्रियप्रवास' हिन्दी में भिन्नतुकान्त छन्दों का एक अनूठा ग्रन्थ है।

जिनके दो सम और दो विषम हों वे **अर्द्धसम** और जिनके सब विषम हों वे **विषमवृत्त** कहलाते हैं। 'चौपाई' समवृत्त का उदाहरण है और 'दोहा' अर्द्धसमवृत्त का। 'विषमवृत्त' प्रायः अप्रयुक्त हैं।

(२) मात्रिक छन्दों में जिन छन्दों की मात्राएँ ३२ से अधिक होती हैं वे **मात्रिक दण्डक** कहलाते हैं। वर्णक छन्दों में १२ अक्षरों से अधिक वाले को **स्रग्धरा** और २६ अक्षरों से अधिकवाले को **दण्डक** कहते हैं। ऐसे दण्डक दो प्रकार के होते हैं-गणबद्ध और मुक्तक। गणबद्ध में वर्णों की गिनती गणों के अनुसार होती है और मुक्तक में केवल वर्णों की गिनती रहती है, गण नियत नहीं होते।

☞ छन्दों में '**प्रस्तार, उद्दिष्ट, नष्ट, मेरु**' इत्यादि और कई बातें होती हैं जिन्हें हमने विस्तारभय से छोड़दिया है।

छन्दोभेद।

छन्द कई प्रकार के होते हैं। हमने यहाँ उन्हीं मुख्य छन्दों को दिया है जो विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तकों में अधिकता से आते हैं।

मात्रिक छन्द।

[क] समवृत्त।

१. तोमर — ... ... १२ मात्राएं।

तोमर छन्द के प्रत्येक चरण में १२ मात्राएँ होती हैं, परन्तु अन्त में एक **गुरु** और एक लघुवर्ण लाते हैं। जैसे—

जब कीन्ह ते पाखण्ड। भय प्रगट जन्तु प्रचण्ड॥
बैताल भूत पिशाच। कर धरे धनु नाराच॥

२. उल्लाला— ... ... १३ मात्राएँ

उल्लाला छन्द के प्रत्येक चरण में १३ मात्राएँ होती हैं। जैसे—

अब भी कुछ बिगड़ा नहीं, क्यों आलस में हो पड़े।
मेरे कर को पकड़कर, सत्वर होजाओ खड़े॥

नोट—इस छन्द के चरणों के पहले और तीसरे में पन्द्रह पन्द्रह तथा दूसरे और चौथे में तेरह तेरह मात्राएँ भी रखते हैं। जैसे—

के रासरमन में हरि मुकुट, आभा जल दिखरात है।
के जल उर हरिमूरति बसति, ता प्रतिबिम्ब लखात है॥

३. जयकरी— ... ... १५ मात्राएँ।

जयकरी के प्रत्येक चरण में १५ मात्राएँ होती हैं, परन्तु अन्त में गुरु और एक लघु वर्ण लाते हैं। जैसे—

पूरब पच्छिम दिसि अवदात। नभ में कछु कालिमा लखात।
सो क्रम सों बढ़ि ओज बढ़ाय। लीन्हेसि व्योममंडलहि छाय।

४. चौपाई— ... ... १६ मात्राएँ।

चौपाई × के प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं। जैसे—
जहँ लगि नाथ नेह अरु नाते। पियबिनु तियहि तरनिते ताते।
तनु धन धाम धरनि पुरराजू। पति विहीन सब सोक समाजू।

५. सुमेरु— ... ... १९ मात्राएँ।

सुमेरुछन्द के प्रत्येक चरण में १९ मात्राएँ होती हैं। जैसे—
अरे तू पेट पापी जो न होता। तो लम्बी तानकर मैं खूब सोता॥
नहींनिजहाथसेनिजमानखोता। नहीं दो रोटियों के हेतु रोता॥

× बन्धु, सुपथा, पादाकुलादि इसीके भेद हैं।

६. रोला या काव्य— ... २४ मात्राएँ।

रोलाछन्द के प्रत्येक चरण में २४ मात्राएँ होती हैं। जैसे-

परनिन्दा ठगपनो कबहुँ नहिं चोरी करिहैं।
जंतुन को दै पीर कबहुँ नहिं जीवन हरिहैं॥
मिथ्या अप्रिय वचन नाहिं काहू छन कहिहैं।
परउपकारन हेतु सबै विधि सब दुख सहिहैं॥

७. गीतिका— .... २६ मात्राएँ।

गीतिका छन्द के प्रत्येक चरण में २६ मात्राएँ होती हैं, परन्तु विश्राम के कारण इसके कई भेद हैं। जैसे—

नाथ के तीखे वचन उर में लगे जब तीरसे।
दास तब निज नेत्र को भरने न देता नीर से॥
मुसकराकर भाव अपना वह छिपाता है अहो।
कौन ऐसा कष्ट भोगे पेट पापी जो न हो॥

८. सरसी— ... ... २७ मात्राएँ।

सरसी छन्द के प्रत्येक चरण में २७ मात्राएँ होती हैं और आरम्भ से १६ मात्राओं के आगे विश्राम होता है। जैसे—

सावित्रीसी पतिव्रता से, भूषित हो यह देश।
अबलाएँ अब सहें न ईश्वर, विधवापन के क्लेश॥
पितावचनपालक बालक भी, होवें रामसमान॥
ग्रन्थकार हों यहाँ व्याससे, पाणिनिसे विद्वान॥

९. हरिगीतिका— ... ... २८ मात्राएँ।

हरिगीतिका छन्द के प्रत्येक चरण में २८ मात्राएँ होती हैं और आरम्भ से १६ मात्राओं के आगे विश्राम लेते हैं। जैसे—

जिस अङ्कविद्या के विषय में वाद का मुँह बन्द है।
वह भी यहीं के ज्ञानरवि की रश्मि एक अमन्द है॥
डर कर कठोर कलङ्क से वा सत्य के आतङ्क से।
कहते अरबवाले अभी तक 'हिन्दसा' ही अङ्क से॥

नोट—यह छन्द 'सगण, दो जगण, भगण, रगण, सगण और एक लघुगुरु' से भी बनता है।

१०. ताटङ्क— .... ३० मात्राएँ।

ताटङ्क छन्द के प्रत्येक चरण में ३० मात्राएँ होती हैं, परन्तु प्रायः १६ मात्राओं पर विश्राम होता है। जैसे-

जैसे दासवृत्ति करने से मान नहीं रहजाता है,
जैसे सूर्यग्रहण लगने पर अन्धकार होजाता है।
जैसे अग्नियोग से पारा उड़जाता वैसेही-
अच्छे गुण भी मिटजाते हैं नर के याचक बनतेही॥

११. वीर— ... ... ३१ मात्राएँ।

वीर छन्द के प्रत्येक चरण में ३१ मात्राएँ होती हैं, परन्तु प्रायः १६ मात्राओं पर विश्राम लेते हैं। जैसे-

इतना काम अवश्य कीजियो तुझे शपथ है मीत समीर—
अपना दास समझ तू मुझको जब तक मेरा बना शरीर।
तुझे बहुत क्या मैं समझाऊँ तू ही मनमें देख विचार,
जितने काम जगत में उनमें सबमें अच्छा परउपकार॥

१२. आल्हा— ... ... ३१ मात्राएँ।

आल्हाछन्द के प्रत्येक चरण में भी ३१ मात्राएँ होती हैं, परन्तु आरम्भ से आठ आठ मात्राओं पर दो जगह विश्राम लेते हैं। जैसे—

सुमिरि भवानी, जगदम्बा का, श्रीसारद के चरन मनाय।
आदि सरस्वति, तुमका ध्यावों, माता कण्ठ विराजौ आय॥
जोति बखानो, जगदम्बा कै, जिनकी कला बरनि ना जाय।
शरदचन्द सम, आनन राजै, अति छबि अंग अंग रहि छाय॥

१३. त्रिभङ्गी— .... ३२ मात्राएँ।

त्रिभंगी छन्द के प्रत्येक चरण में ३२ मात्राएँ होती हैं तथा आरम्भ से १० और १८ मात्राओं के बाद विश्राम लेते हैं। जैसे—

जिमि जिमि दिनराऊ अधिक प्रभाऊ बढ़ि अकास में प्रगट कियो।
तिमि तिमि बलधारी तेज बगारी सबही को हठि कष्ट दियो॥
इति भूमि कँपावत लखि दल धावत सघन धूरि उड़ि व्योम चली।
अति घाम घनेरो लखि रविकेरो कीन्ह मनो तेहि छाँह भली॥

नोट—यह छन्द ३० मात्राओं से भी बनता है जिसको कोई कोई 'चौपैया' कहते हैं। जैसे—भे प्रगट कृपाला दीनदयाला कौशल्याहितकारी॥

(ख) अर्द्धसमवृत्त।

१४. दोहा— .. (१३, ११, १३, ११ मात्राएँ)

दोहे के चरणों के पहले और तीसरे में तेरह तेरह तथा दूसरे और चौथे में ग्यारह ग्यारह मात्राएँ होती हैं। जैसे-

मेरी भवबाधा हरो, राधा नागरि सोइ।
जा तन की झाँई परे, श्याम हरित दुति होइ।

१५. सोरठा— ... (११, १३, ११, १३ मात्राएँ)

दोहे को उलटदेने से सोरठा बनता है अर्थात् इसके चरणों के पहले और तीसरे में ग्यारह ग्यारह तथा दूसरे और चौथे में तेरह तेरह मात्राएँ होती हैं। जैसे—

मूक होइ वाचाल, पंगु चढ़े गिरिवर गहन।
जासु कृपासु दयाल, द्रवौ सकल कलिमलदहन॥

१६. बरवा— ... ... (१२, ७, १२, ७ मात्राएँ)

बरवा छन्द के चरणों के पहले और तीसरे में बारह, बारह तथा दूसरे और चौथे में सात सात मात्राएँ होती हैं। जैसे-

केश मुकुल सखि मरकत, मणिमय होत।
हाथ लेत पुनि मुक्ता, करत उद्दोत॥

१७. आर्य्या— ... ... (१२, १८, १२, १५, मात्राएँ)

आर्य्याछन्द के पहले और तीसरे में बारह बारह, दूसरे में १८ और चौथे में १५ मात्राएँ होती हैं। जैसे-

ऊँच नीच दोनों में, सज्जन कुछ भी न भेद रखता।
फूल सुगन्धित करता, है देखो युग्म हाथों को॥

१८. गीति— ... (१२, १८, १२, १८, मात्राएँ)

आर्य्याछन्द के पहले दो चरणों की मात्राओं के समान क्रमशः तीसरे और चौथे चरणों की मात्राएँ भी लावें तो इस प्रकार के चारों चरणों से 'गीतिछन्द' बनता है। जैसे-

छोटा भी परदुर्गुण, दुर्जन देखे बिना नहीं रहता।
कोटि यत्न करिये पर, वह खलता को कभी न छोड़ेगा।

१९. उपगीति— ... (१२, १५, १२, १५ मात्राएँ)

आर्य्याछन्द के तीसरे और चौथे चरणों की मात्राओं के समान क्रमशः पहले और दूसरे चरणों की मात्राएँ भी लावें तो इस प्रकार के चारों चरणों से उपगीति छन्द बनता है। जैसे-

फूल सुगन्धित करता, है देखो युग्म हाथों को।
आतप सहकर भी तरु, छाया देता पथिक जन को।

(ग) मिश्रित ।

२०. कुण्डलिया— ... ... (दोहा+रोला)

दोहे के आगे रोलाछन्द मिलाने से कुण्डलिया बनती है, परन्तु दोहे का अन्तिम चरण रोलाछन्द के आदि में दोहराया जाता है तथा दोहे के प्रथमचरण का कुछ या सब अंश प्रायः कुण्डलिया के अन्त में मिला दिया जाता है। जैसे-

साँई एकै गिरि धरै, गिरिधर गिरिधर होय।
हनूमान बहु गिरि धरे, गिरिधर कहै न कोय॥
गिरिधर कहै न कोय हनू धवलागिरि लायो।
ताको तिनका टूट परे सो कृष्ण उठायो॥
कह गिरिधर कविराय बड़न की बड़ी बड़ाई।
थोरे ही यश होय यशी पुरुखन को साँई।

२१. छप्पय— ... ... (रोला+उल्लाला)

रोलाछन्द के आगे उल्लाला मिलाने से छप्पयछन्द बनता है। जैसे—

क्यों मिश्री को छोड़ हुए हो गुड़ पर राजी ?
छोड़ सुधा क्यों भला प्रेम से पीते काँजी ?
कल्पद्रुम को छोड़ सींचते क्यों करीर हो ?
कुक्कुट को कर दूर पालते क्यों न कीर हो ?
क्या कह सकते हो कभी मैं किस भाषा से बुरी ?
हा ! अपने ही हाथ से मुझको मत मारो छुरी !

नोट—कई कवि सरसी, ताटङ्क, चौपैया, वीर इत्यादि में किसी दो छन्दों के दो दो चरणों को मिलाकर भी छन्दरचना करते हैं।

वर्णवृत्त ।

१. मनमोहन— .... (६ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक सगण और एक जगण रखते हैं । जैसे—

छबि है सिराम, जनु रूप काम ।
रघुनाथ बीर, धनु खंडि धीर ॥

२. हरि— .... (७ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में दो नगण और दो लघु रखते हैं । जैसे—

बहु सुभट जमकि, उठि गहत तमकि ।
बल विपुल करत, हरिपद न टरत ॥

३. अनुष्टुप्— .... (८ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में आठ अक्षर रखते हैं, परन्तु इसमें अक्षरों के लघु गुरु का विशेष नियम प्रायः नहीं लगता । जैसे—

देखो आही गया लोगो, ग्रीष्मकाल भयावना ।
सन्ताप नित्य देते ये, मित्र भी शत्रु होगये ॥

४. भुजंगी— .... (११ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में तीन यगण, एक लघु और एक गुरु रखते हैं ।

बनाया गया कोयला रत्न है ।
मरे भी जिये हो रहा यत्न है ॥

कलें काम देने लगी हैं सभी।

करेगा न विज्ञान क्या क्या अभी॥

५. सुपथ— .... (११ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक एक रगण, नगण, भगण, और दो गुरु रखते हैं।

मैं, अतीत अब मुक्त हुआ हूँ,

वर्त्तमान ! इति युक्त हुआ हूँ।

किन्तु दूर तुझसे न रहूँगा,

पत्र भेज निज वृत्त कहूँगा॥

६. शालिनी या बासर— ... (११ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक मगण, दो तगण और दो गुरु रखते हैं। जैसे—

आके जाना चाहती है कहाँ तू।

बैठी मेरे चित्त में है यहाँ तू॥

लेती है क्या तू प्रतीक्षा परीक्षा।

क्या ऐसी ही है प्रिये प्रेमदीक्षा॥

७. इन्द्रवज्रा— ... ... (११ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण और दो गुरु रखते हैं। जैसे—

क्या कौमुदी क्या मणिमञ्जुमाला।

है काँपती दीपशिखा विशाला॥

जो सामने हो वह दिव्य बाला।

तो अंध भी देख उठे उजाला॥

८. उपेन्द्रवज्रा– .... (११ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक जगण, एक तगण, एक जगण और दो गुरु रहते हैं। जैसे—

समीर जेता रथ जासु सोहै।
विलोकि सोभा रणवीर मोहै॥
महाबली नाग सुता विहारी।
उपेन्द्रवज्रा मम बानधारी॥

९. द्रुतविलम्बित– ... ... (१२ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक नगण, दो भगण, और एक रगण रखते हैं। जैसे–

यह हुआ मणिकांचन योग है।
मिलन है यह स्वर्ण सुगन्ध का॥
यह सु औसर पा बहु पुण्य से।
अवनि में अति भाग्यवती हुई॥

१०. वंशस्थ .... (१२ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक एक जगण, तगण, जगण और रगण रखते हैं। जैसे—

जहाँ लगा जो जिस कार्य बीच था।
उसे वहाँ ही वह छोड़ दौड़ता॥
समीप आया रथ के प्रमत्तसा।
विलोकने को घनश्याम माधुरी॥

११. त्रोटक– .... (१२ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में चार सगण रखते हैं। जैसे–

सुखकारक ऊपर श्याम घटा ।

दुखहारक भूपर शश्य छटा ॥

दिन में रवि लोक प्रकाशक हैं ।

निशि में शशि-ताप विनाशक हैं ॥

१२. भुजङ्गप्रयात— ... ... (१२ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में चार यगण रखते हैं। जैसे—

सभी भाँति है तू हमें मोद दायी ।

न तेरे बिना है हमारी भलाई ॥

सदा पूजनीया तुही है हमारी ।

अहो ! कष्ट तोभी गई तू बिसारी ॥

१३. लक्ष्मीधर— ... ... (१२ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में चार रगण रखते हैं। जैसे—

अच्युतं केशवं राम नारायणं ।

कृष्ण दामोदरं वासुदेवं हरिं ॥

श्रीधरं माधवं गोपिकावल्लभं ।

जानकीनायकं रामचन्द्रं भजे ॥

१४. इन्द्रवंशा— ... . (१२ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में दो तगण, एक जगण और एक रगण रखते हैं। जैसे—

यों ही बड़ा हेतु हुए बिना कहीं,

होते बड़े लोग कठोर यों नहीं।

वे हेतु भी यों रहते सुगुप्त हैं,

ज्यों अद्रि अम्भोनिधि में प्रलुप्त हैं ॥

१५. वसन्ततिलका— ... (१४ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक तगण, एक भगण, दो जगण और दो गुरु रखते हैं। जैसे—

जो यूथमानव स्वकर्म्म निपीड़नों से।
नीचे समाजवपु के पग लों पड़ा है॥
देना उसे शरण मान प्रयत्नद्वारा।
है भक्ति लोकपति की पद सेवनाख्या॥

१६. मालिनी— ... . (१५ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में दो नगण, एक मगण और दो यगण रखते हैं। जैसे।

प्रिय पति वह मेरा प्राणप्यारा कहाँ है॥
दुखजलनिधि डूबी का सहारा कहाँ है॥
लख मुख जिसका मैं आजलौं जी सकी हूँ॥
वह हृदय हमारा नैनतारा कहाँ है॥

१७. मन्दाक्रान्ता- ... ... (१७ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एकएक मगण, भगण, नगण, दो तगण और दो गुरु रखते हैं। जैसे-

हा! वृद्धा के अतुल धन हा! वृद्धता के सहारे।
हा! प्राणों के परम प्रिय हा! एक मेरे दुलारे॥
हा! शोभा के सदन सम हा! रूप लावण्यवारे।
हा! बेटा हा! हृदयधन हा! नैनतारे हमारे॥

१८. शिखरिणी— ... ... (१७ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक एक यगण, मगण, नगण, सगण, भगण, लघु और गुरु रखते हैं। जैसे-

अनूठी आभा से सरस सुखमा से सुर ससे।
बना जो देती थी बहुगुणमयी भू विपिन को॥
निराले फूलों की विविध दलवाली अनुपमा।
जड़ी बूटी नाना बहु फलवती थीं बिलसती॥

१९. शार्दूलविक्रीड़ित— ... ... (१९ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में एक एक मगण, सगण, जगण, सगण, दो तगण और एक गुरु रखते हैं। जैसे–

मेरे हो तुम बन्धु विश्ववर हो आनन्द की मूर्ति हो।
क्यों मैं जा ब्रज में सका न अब लौं हो जानते भी इसे॥
कैसी हैं अनुरागिनी हृदय से माता, पिता, गोपिका।
प्यारे है यह भी छिपी न तुम से जाओ अतः प्रात ही॥

२०. सवैया– ... (२२, २३, २४, २५, या २६ अक्षर)

सवैयाछन्द के प्रत्येक चरण में २२ से २६ तक अक्षर होते हैं। आदि अन्त के हेरफेर के कारण इसके कई भेद हैं। प्रत्येक छन्द के बीच के प्रायः सब गण एकसे रहते हैं। नीचे थोड़ेसे उदाहरण दियेजाते हैं।

(क) मदिरा या मालिनी सवैया–.. (२२ अक्षर

इस छन्द के प्रत्येक चरण में सात भगण और एक गुरु रखते हैं। जैसे–

भासत गौरि गुसाँइन को बर राम धनू दुइ खण्ड कियो।
मालिन को जयमाल गुहो हरिके हिये जानकि मेलिदियो॥
रावन को उतरी मदिरा चुपचाप पयान जु लंक कियो।
राम वरी सिय मोद भरी नभ मैं सुर जै जयकार कियो॥

(ख) मत्तगयन्द या मालती सवैया–(२३ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में सात भगण और दो गुरु रखते हैं। जैसे–

पोथिहुँ बीन लसैं करमें तिमि माल मृनाल बिसाल बिराजैं।
वाहन हंस बनो सुखमाकर ध्यान धरे भ्रम संकट भाजैं॥

सारद मातु कबीसन पारद मोह नदारद कै सुख छावे ॥
पूरित कै किरनें जसकी जग सों जड़ता अँधियार नसावें ॥

(ग) दुर्मिल सवैया— ... ... (२४ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में आठ सगण रखते हैं। जैसे-
तनु की द्युति श्याम सरोरुह लोचन कंज कि मंजुलताइ हरें ॥
अति सुंदर सोहत धूरि भरे छबि भूरि अनंग कि दूरि धरें ॥
दमकैं दँतियाँ द्युति दामिनि ज्यों किलकैं कलबाल बिनोद करें ॥
अवधेश के बालक चारि सदा तुलसी मनमंदिर में बिहरें ॥

(घ) सुन्दरी सवैया- ... ... (२५ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में आठ सगण और एक गुरु रखते हैं। जैसे-
सुख पंकज कंज विलोचन मंजु मनोज सरासन सी बनि भौंहें ॥
कमनीय कलेवर कोमल श्यामल गौर किशोर जटा सिर सोहें ॥
तुलसी कटि तून धरें धनुबान अचानक दृष्टि परी तिरछौंहें ॥
केहि भाँति कहौं सजनी तोहिसों मृदु मूरति द्वै निवसी मनमोहें ॥

(ङ) सुखसवैया- ... ... (२६ अक्षर)

इस छन्द के प्रत्येक चरण में आठ सगण और दो गुरु रखते हैं। जैसे—
सब बात सहैं कड़वी न कहैं कलु मानस में अरु मैल न लावत ।
पर कै अपवाद विवाद वृथा हठ रंचक हू सपने नहिं भावत ॥
सुनिकै अपनो गुनगान रहें चुप दोस छिपा सबकै गुन गावत ।
जिनमें गुन ये सब हों भरपूर वही नर साधु महान कहावत ॥

२१. कवित्त—

इनके प्रत्येक चरण में ३१, ३२ या ३३ अक्षर रहते हैं। इन में गुरुलघु का नियम नहीं, परन्तु आदि से प्रायः आठ आठ

अक्षरों पर तीन विश्राम लेते हैं। ३१ अक्षरों के चरण में अन्त्याक्षर गुरु और शेष में लघु होते हैं। ३२ अक्षरों के चरण में अन्तिम दो पद द्विरुक्ति के होते हैं और प्रायः लघुवर्णों से बनते हैं। इस छन्द के भी कई सूक्ष्म भेद हैं।

(क) मनहरण— .... (३१ अक्षर)

इन्द्र जिमि जंभ पर वाडव सुअंभ पर रावन सुदम्भ पर रघुकुल राज हैं। पौन बारिबाह पर शंभु रतिनाह पर त्यों सहस्रबाह पर राम द्विजराज हैं॥ दावा द्रुम दुंड पर चित्ता मृगझुण्ड पर भूषण वितुंड पर जैसे मृगराज हैं। तेज तम अंश पर कान्ह जिमि कंस पर त्यों विपक्ष वंश पर शेर शिवराज हैं॥

(ख) रूपघनाक्षरी—— ... ... (३२ अक्षर)

हाड़न को परी तलबेली है समरहित देखिकै प्रबल यह गौरन को अभिमान। राज मैं बिलोकि पद अरपन बैरिन को भय ते सरोख पद परसित नागमान॥ कहैं जुरि वीर यदि आयो गौर संगर को दबिकै रहैंगे नहीं जौलों तन माहिं प्रान। काटि समसेरन सकल दल बैरिन को चलौ रन चण्डिहि चढ़ावैं आजु बलिदान॥

(ग) कवित्त—— ... ... (३३ अक्षर)

उमड़े हैं घनकै घुमण्ड घमासान घोर चपला चपल पुनि जात है फरकि फरकि। इन्द्र के धनुष राजे भेक बाजने से बाजे बकहू को पाँति उठि चली है खरकि खरकि। कवि अम्बादत्त सोभा पावस की पूरी लसी बोलत है मोर अति आनन्द लरकि लरकि। धरकि धरकि उठि छाती बिरही जन की नदिन को बार धाई चली है ढरकि ढरकि॥

॥ इति ॥